



प्राचीन हस्तलिखित
वृहद् यन्त्र महार्णवम्
यन्त्र-चित्र सहितम्









ॐ

अथ बृहद् यन्त्रमहार्णवम्

(यन्त्र-चित्रसहितम्)

सम्पादक :

श्री विद्या-वारिधि आचार्य पं. राजेश दीक्षित



क्रियेटिव पब्लिकेशन

4422, नई सड़क, दिल्ली-110 006

फोन : 23261030, 23985175, 23279417

visit us at www.creativepublication.com,

E-mail : hans@ndf.vsnl.net.in



महा०

© देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली

सम्पादक:

विद्या-वारिधि, आचार्य पं. राजेश दीक्षित
(सहस्राधिक ग्रंथों के सुप्रसिद्ध लेखक)

फोटो स्टेट वाले ग्रन्थ नकली हैं। असली ग्रन्थ ऑफसेट द्वारा छापे गये हैं।

न्यौछावर

स्वदेश में: सजिल्द मूल्य: 1100/-

मुद्रक : रुबी प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली-६



VRIHAD YANTRA MAHARNAWA

Edited by P. RAJESH DIXIT
(Author of Over Thousand of Books)

तन्त्र शास्त्र और यन्त्र महार्णव

यन्त्र
३

'तन्त्र' शब्द का अर्थ है—तन्तु अपना सूत्र । ऐसा सूत्र, जिसमें भाव मोक्षियों की भाँति फिरोगे गये हो; अतः 'तन्त्र शास्त्र' का अर्थ हुआ—'ऐसा शास्त्र, जिसमें विभिन्न प्रकार की व्यापनाओं को सूत्रबद्ध अर्थात् एकिकृत किया गया हो। यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र— ये तीनों एक ही सत्य के तीन प्रकार हैं। जो क्रिया मनुष्य की सामान्य-शक्ति को उद्दीप्त कर, उसमें गुरुतर-शक्ति का संसार करती हो, उसके गुरु-वहस्य को 'मन्त्र' कहा जाता है। 'मन्त्र' का चिन्तात्मक रूप 'यन्त्र' और क्रियात्मक रूप 'तन्त्र' है। इन तीनों का जिसमें वर्णन किया गया हो, उसे 'तन्त्र शास्त्र' कहते हैं। अर्थात् 'तन्त्र शास्त्र' के अन्तर्गत तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र— ये तीनों ही समाहित हैं।

मन्त्र विद्या अपना तन्त्र विद्या का आदि-प्रवर्तक महाशिव को माना गया है। शिव का अर्थ ही 'कल्पाण' है, अतः शिव कल्पाण, मङ्गल तथा क्षेम के देवता माने जाते हैं। दशनि शास्त्र में 'आत्मा' को भी 'शिव' कहा गया है। सांसारिक-बन्धनों से मुक्त को जीव-तत्वा मय-बन्धनों से मुक्त को 'शिव' कहते हैं। 'सदाशिव' का अर्थ हुआ—सदा काल से होते आये शिवयोगी अर्थात् सर्वकाल में कल्पाण स्वरूप। इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि महान् योगियों की सर्वोच्च अवस्था का ही अपरनाम 'सदाशिव' है। इसका तात्त्विक आशय यह हुआ कि जिन्होंने लोक कल्पाण के लिए मन्त्रोपदेश किया, वे सभी महागुरु 'सदाशिव' थे, अतः तन्त्र शास्त्र में ऐसे सदाशिवों को ही तन्त्र का जनक कह कर सम्मानित किया गया है।

महा०

'वायु पुराण' में सदाशिव के २८ अवतारों का उल्लेख पाया जाता है, जो प्रत्येक कल्प में एक-एक करके हुए हैं। इससे सिद्ध हुआ कि पूर्वकाल में २८ 'सदाशिव' हो चुके हैं। बौद्ध-धर्म में इसी सदाशिव-अवस्था को 'सम्भु कुटुम्ब' कहा गया है। जैन-धर्म के 'अर्हत' अथवा तीर्थंकरों का भी इनसे सामंजस्य बैठता है। बौद्ध-धर्म में २८ बुद्धों तथा जैन-धर्म में २४ तीर्थंकरों का उल्लेख पाया जाता है। इन सबके समत्व का द्योतक है। इतना ही नहीं, सदाशिव, बुद्ध तथा तीर्थंकर - इन सबके स्वहृद की परिकल्पना भी एक जैसी ही की गई है - सभी गौरवर्ण, चक्षुःमग्न, पद्मासन स्थित, शार्ङ्ग, तपोनिष्ठ, अर्द्ध-निमीलित नेत्रों वाले, महायोगी तथा दान हृदय हैं।

तन्त्रशास्त्र के आदि-उपनिषत् सदाशिव हैं तथा ब्राह्मण धर्मानुयायी वायु पुराण के 'वायुपुत्र योग' के अनुसार उन्हीं को इसके जगत् होते का क्रेष भी देते हैं, तथापि बौद्ध-धर्म के अनुयायी इस ब्राह्मण को बौद्ध-धर्म की देन बनाते हैं। इसमें सन्देह क्या है, इसका निरूपण अभी तक नहीं हो पाया है, तथापि यह निश्चित है कि इन दोनों धर्मों के मनीषियों - महात्माओं ने तन्त्रशास्त्र को व्यवस्था रख देने तथा लोक में उसे उच्चारित करने का उपलक्ष्य किया है। दोनों ही धर्मों में एतद्-विषयक उच्चर साहित्य उपलब्ध होता है। यदि वर्तमान स्थिति को देखें तो हिन्दू धर्म की अपेक्षा बौद्ध धर्म में तन्त्र-साधक कहीं अधिक पाये जाते हैं।

हिन्दू तथा बौद्ध महात्माओं के आलोचक जैन तथा इस्लामी मत में भी इस विषय का उत्प-
धिक उचलन है तथा इन धर्म-सम्प्रदायों के महापुरुषों ने भी इस ब्राह्मण को समझ बनाने में

अपने हँग का योगदान भी किया है। इनके अतिरिक्त लोक भाषाओं में भी ऐसे मन्त्र विपुल संख्या में उपलब्ध होते हैं, जो अपना चमत्कारी गुणक उत्पन्न उद्देशित करने में किसी से पीछे नहीं रहते। अस्तु, वर्तमान समय में तन्त्रशास्त्र के जो प्रयोग उपलब्ध होते हैं, उनमें हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई तथा लोक भाषाई - सभी रूपों का समन्वय पाया जाता है। यों, प्रत्येक धर्म - सम्प्रदाय के तन्त्र गुण अलग - अलग भी देखने को मिलते हैं।

तान्त्रिक - साधना अत्यन्त जटिल विषय है। यह जहाँ मनोमिलावाओं की श्रृंखला है, वहीं यथाविधि प्रयोग में न लाई जाने पर हाथीका भी सिद्ध होती है। इसी कारण तान्त्रिक - साधना के लिए सर्वत्र गुरु - निर्देश की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है। समुचित - ज्ञान के अभाव में किए गए तान्त्रिक - प्रयोग कभी - कभी प्रयोगकर्ता के लिए प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं। यह विद्या ऐसी नहीं है, जिसे केवल पुस्तक पढ़ कर ही भली भाँति जाना जा सके। पुस्तकें तो उपलक्षण मात्र होती हैं, उनके अध्ययन द्वारा सैद्धान्तिक - ज्ञान तो प्राप्त किया जा सकता है। विषय - वस्तु के स्वरूप का अनुमान भी लगाया जा सकता है, तथापि क्रियात्मक ज्ञान, जिसके द्वारा सिद्धि मिलती है, प्रयोग सिद्ध होकर मनोमिलावा की की श्रृंखला होती है, केवल गुरु द्वारा मिल जाना ही संभव है। अतः किसी भी तान्त्रिक - प्रयोग को आरंभ करते से पूर्व किसी सु योग्य गुरु से दिशा - निर्देश अवश्य प्राप्त करना चाहिए। इससे विषय का निवारण तो होगा ही, समय, शक्ति और धन का अपव्यय भी रुकेगा तथा साधना की सिद्धि से चित्त को भी उसनाता प्राप्त होगी।

हमने सैकड़ों व्यक्ति ऐसे देखे हैं, जो किसी तन्त्र-विषयक पुस्तक के हाथ लगते ही, उसमें उल्लिखित उपायों को तुरन्त कोन बैठ जाते हैं और जब असफलता एवं निराशा हाथ लगती है, तब उनके लेश्वको को, सम्पूर्ण तन्त्रशास्त्र ही को तपस्वाग्नि में को कोसने लगते हैं।

कोई भी उपाय किस मुहूर्त में आरंभ करना चाहिए, किस प्रकार करना चाहिए, वह अपने लिए सिद्धि पुद्द होगा अथवा नहीं, उसके लिए किन-किन उपायों को शक्य करना आवश्यक है, आदि विषयों की जब तक सम्पद जानकारी नहीं होगी और उनका समुचित उपयोग नहीं किया जायगा, तब तक किसी सामान्य से दिखने वाले उपाय की सफलता भी संदिग्ध ही बनी रहेगी। कुछ अपने अशुभक के साधन पर विश्वास को यथोचित दिशा-निर्देश देने का कार्य करते हैं, जिसके कारण साधन में किया गया विश्वास का फल निष्फल नहीं जाता। सद्गुरु का मिलना कोई अलम्बन बात नहीं है। "जिन रंगों का तिन-पाइयाँ गहरे जानी बैठ" - वाली कहावत चरितार्थ होनी चाहिए। परन्तु सद्गुरु के स्थान पर किसी वारणपुरी से वाला न पड़ जाय, इस सम्बन्ध में भी स्पष्ट बने रहना आवश्यक है।

तन्त्रशास्त्र को सरल हिन्दी भाषा में उद्घुस्त कर उसे सर्वसाधारण को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से हमने तन्त्र-विषयक जिन अनेक ग्रंथों का लेखन तथा सम्पादन किया है, उद्घुस्त ग्रंथ उसीमाला की एक कड़ी है - इसे (१) मन्त्र महार्णव, (२) यन्त्र महार्णव तथा (३) तन्त्र महार्णव - इन तीन भागों में संकलित किया गया है। 'मन्त्र महार्णव' खण्ड इससे पहले प्रकाशित हो चुका है। (उसमें विभिन्न देवी-देवताओं के अतिरिक्त उपदेवता भैरव, यक्षिणी, श्वेत, प्रेत आदि के साधन सम्बन्धी मन्त्र तथा उनकी उपाय-विधि)

का विस्तृत वर्णन किया गया है। देवी-देवताओं से सम्बन्धित विभिन्न कर्म, स्तोत्र आदि भी (उसमें संकल्पित हैं)। 'तन्त्र महारवि' नामक खण्ड में केवल उन तान्त्रिक प्रयोगों को संकल्पित किया गया है, जिनके लिए किसी मन्त्र अथवा यन्त्र के साधन की आवश्यकता प्रायः नहीं पड़ती। एक सामान्य से लागे वाले मन्त्र पर आधारित विभिन्न काम्य-प्रयोग भी (उसमें संगृहीत हैं)।

उत्सृत 'यन्त्र महारवि' खण्ड में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले यन्त्र संकल्पित किए गए हैं। इनमें से कुछ यन्त्र ऐसे हैं, जिन्हें सम्बन्धित देवी अथवा देवता के मन्त्र-साधन में प्रजापत्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे यन्त्रों के साथ उनके मन्त्र तथा जप-संख्या आदि का संक्षिप्त उल्लेख कर दिया गया है। जो लोग ऐसे मन्त्र-यन्त्रों की प्रयोग-विधियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें तद्विषयक अन्य ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

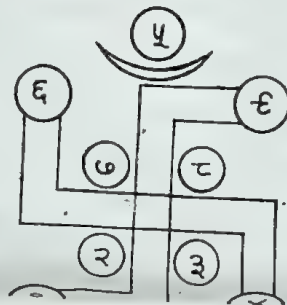
माण्डूक्य, मोहन, वशीकरण, उच्चारण, स्तम्भन, विद्वेषण तथा शान्तिकरण सम्बन्धी यन्त्र-प्रयोगों का शङ्खरीप उल्लेख एक अलग खण्ड में किया गया है। ऐसे यन्त्रों के साथ यदि किसी मन्त्र का जप करना भी आवश्यक होता है, तो उसका वर्णन भी साथ ही कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त ज्ञान-साधनी एवं विधि-कामी प्रथास्थान उल्लेख हुआ है।

अन्य खण्डों में लोक-प्रचलित सामान्य मेथी के यन्त्र संकल्पित हैं। प्रत्येक यन्त्र के चित्र को उसके साथ ही दिये गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है तथा सभी यन्त्रों के साथ उनकी संक्षिप्त लोक-प्रचलित प्रयोग विधि भी दे दी गई है।

यन्त्र
 १
 इस ग्रंथ में संकल्पित सभी यन्त्र विभिन्न प्राचीन तथा अनिचीत ग्रंथों एवं संता-महाभाष्यों
 ककीरों तथा तान्त्रिकों के माध्यम से एकत्र किये गए हैं, अतः जिन-जिन सूत्रों से इसे 'सामग्री-
 संचय' में सहायता प्राप्त हुई है, उन सभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं। एकसंगत से, इस ग्रंथ
 में जो कुछ भी है, वह विद्वान्-मनीषियों तथा प्राचीन ग्रंथों का भूषण-प्रसाद ही है। हम तो इसे एकत्र
 कर देने भर के माध्यम हैं।

ग्रंथ के सीमित-कलेवर के कारण इसमें उतने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा जा सका, जिसे हम
 लिखना चाहते थे, तथापि आशा है कि तन्त्र-प्रेमियों के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध होगा। यदि
 इसमें कहीं कोई त्रुटि परिलक्षित हो तो मनीषीजन उस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें,
 ताकि आगामी-संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके। इस ग्रंथ में उल्लिखित किसी विषय को
 स्पष्ट करने की आवश्यकता समझे तो हमसे जवाबी-पत्राचार किया जा सकता है।

महाविद्या कॉलोनी,
 मथुरा (उ.प्र.)
 (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, सं. २०४५ वि.)



विकल्पन किंकर

राधा प्रीति
 (य. राजेश दीक्षित)

विषयावुक्रमणिका

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
प्रथम खण्ड	
१ तन्त्र-मन्त्रों के भेद, बीज, कार, मास आदि	२५ - २८
२ कुलाकुल-चक्र	३१
३ राशि-चक्र विचार	३२
४ नक्षत्र-चक्र विचार	३३
५ अक्षरम-चक्र	३४
६ अक्षरम-चक्र (१)	३५
७ अक्षरम-चक्र (२)	३६
८ ग्रहणी-धनी-चक्र विचार	३८
९ मन्त्रों के दस संस्कार	३८
१० अर्धयामेश विचार	४१
११ प्रथम जय-चक्र	४२
१२ द्वितीय जय-चक्र	४३

क्रमाङ्कः	पृष्ठाङ्कः
१३ सेवाचक्र विचार	४४
१४ नर-चक्र	४५
१५ विष्टि-राहु-चक्र विचार	४६
१६ कूर्म-चक्र निर्णय	४७
१७ कूर्म-चक्र विचार	४८
१८ मण्डल सत्र विधान	६४
१९ रंग-योजना	६५
२० पंचावज मण्डल	६७
२१ यन्त्र और मन्त्र	६८
२२ सर्वलोमय यन्त्र	६९
२३ स्मरहर यन्त्र (१)	७०
२४ स्मरहर यन्त्र (२)	७१
(प्रथम खण्ड समाप्त)	

द्वितीय खण्ड

१ श्रीयन्त्र विज्ञान	८१
२ श्रीयन्त्र की रचना	८४
३ कुण्डलिनी और चक्र	१००
४ त्रिपुरा यन्त्र प्रयोग	१०४
५ तारिता यन्त्र प्रयोग	१०५
६ नित्या यन्त्र प्रयोग	१०६
७ वागीश्वरी यन्त्र प्रयोग	१०७
८ ज्वाला मालिनी यन्त्र प्रयोग	१०८
९ इन्द्राक्षी यन्त्र प्रयोग	१०९
१० श्री गणेश यन्त्र प्रयोग	११०
११ हरिद्रा गणेश यन्त्र प्रयोग	११२
१२ शिव मन्त्र-यन्त्र प्रयोग	११३
१३ लघु मृत्पुञ्जय प्रयोग	११४
१४ हनुमत् मन्त्र-यन्त्र प्रयोग	११५

१५ कात्तवीर्य सज्जुति मन्त्र-यन्त्र प्रयोग	११६
१६ चण्डाकर्ण यन्त्र प्रयोग	११७
१७ नृसिंह यन्त्र प्रयोग	११८
१८ सूर्य यन्त्रोपासना	१२०
१९ राम यन्त्रोपासना	१२१
२० विष्णु यन्त्र प्रयोग	१२५
२१ सिद्ध गौपाल यन्त्र प्रयोग	१२७
२२ विष्णु बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग	१२८
२३ कृष्ण बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग	१२९
२४ चाक्रुण्डा बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग	१३०
२५ देवी यन्त्र प्रयोग	१३१
२६ लक्ष्मी यन्त्र प्रयोग	१३२
२७ दुर्गा मन्त्र-यन्त्र प्रयोग	१३३
२८ सप्तशती महायन्त्र प्रयोग	१३४
२९ सर्व सिद्धिदाता श्री गीता यन्त्र	१३५

क्रमांकः	पृष्ठाङ्कः
३० काली यन्त्र प्रयोग	१३६
३१ तारा यन्त्र प्रयोग	१३८
३२ षोडशी यन्त्र प्रयोग	१३९
३३ भुवनेश्वरी यन्त्र प्रयोग	१४०
३४ त्रिपुरभैरवी यन्त्र प्रयोग	१४१
३५ दिग्गमस्ता यन्त्र प्रयोग	१४२
३६ धूम्रावली यन्त्र प्रयोग	१४३
३७ जगलामुखी यन्त्र प्रयोग	१४४
३८ मातङ्गी यन्त्र प्रयोग	१४५
३९ कमलालिका यन्त्र प्रयोग	१४६
४० परकाय-प्रवेश यन्त्र-मन्त्र	१४७
४१ रक्षा-यन्त्र	१४८
४२ ब्रह्महान-चक्रम्	१५०

(द्वितीयखण्ड समाप्त)

क्रमांकः

तृतीय खण्ड

क्रमांकः	पृष्ठाङ्कः
१ सर्ववशीकरण 'दिव्य स्तम्भन यन्त्रम्'	१५५
२ स्त्री सौभाग्यकर 'सौभाग्यवृद्धक यन्त्रम्'	१५६
३ दुष्टमोहन कर कण्टक यन्त्रम्'	१५७
४ दुष्टवश्य कर 'उच्छिष्टपिशाचि यन्त्रम्'	१५८
५ 'यावज्जीवि जनवश्यकर यन्त्रम्'	१५९
६ 'विवाद-विजय यन्त्रम्'	१६०
७ स्त्री-सौभाग्यकर लंलिता यन्त्रम्'	१६१
८ राजस्त्री वश्य करक 'कामाक्ष यन्त्रम्'	१६२
९ स्त्री-वशीकरण 'मदन मर्दन यन्त्रम्'	१६३
१० स्त्री-वश्य कर 'कामराज यन्त्रम्'	१६४
११ महामृत्युञ्जय यन्त्रम्	१६५
१२ स्त्री सौभाग्यकर यन्त्रम्	१६६
१३ सौभाग्य जनन 'विजय यन्त्रम्'	१६७
१४ सौभाग्य जनन 'कमलारव्य यन्त्रम्'	१६८

क्रमांकः	पुष्पांकः
१५ यावज्जीव स्वामि वश्यकर यन्त्रम्	१६८
१६ महामोहन यन्त्रम्	१७०
१७ जगद् वश्यकर यन्त्रम्	१७१
१८ बीज-सम्पुट यन्त्रम्	१७२
१९ क्रोध-शमन 'जामदग्न्य यन्त्रम्'	१७३
२० मायामय यन्त्रम्	१७४
२१ यावज्जीव वश्यकर 'गणपत्य यन्त्रम्'	१७५
२२ ललाटकृति 'श्री कामराजारव्य यन्त्रम्'	१७६
२३ दुष्टवश्यकर 'कालानल यन्त्रम्'	१७६
२४ मानिन्याकर्षण 'देवमातृक यन्त्रम्'	१७७
२५ माणिभद्र यन्त्रम्	१७८
२६ मित्र-दशनि यन्त्रम्	१७८
२७ आकर्षक त्रैपुरारव्य यन्त्रम्	१७८
२८ दुष्ट मोहन यन्त्रम्	१८१
२९ व्यवहार-विवाद जयद यन्त्रम्	१८२

क्रमांकः	पुष्पांकः
३० विवाद विजय यन्त्रम्	१८३
३१ राजकोष नाशक दुष्टमुख स्तम्भन यन्त्रम्	१८४
३२ दिव्य स्तम्भन यन्त्रम्	१८५
३३ उच्छिष्ट-पिशान्य यन्त्रम्	१८६
३४ क्रूर वश्यकर 'कालानल यन्त्रम्'	१८७
३५ शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्रम् (१)	१८८
३६ शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्रम् (२)	१८८
३७ शत्रु गति मति मुख स्तम्भक जिह्वावेधन यन्त्रम्	१८८
३८ पिशुन-मुख स्तम्भन यन्त्रम्	१८९
३९ प्रतिवादि-मुख स्तम्भन यन्त्रम्	१८९
४० यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम् (१)	१८९
४१ यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम् (२)	१८९
४२ अग्नि-स्तम्भन यन्त्रम्	१८९
४३ सर्प-स्तम्भन यन्त्रम्	१८९
४४ वह्नि-स्तम्भन यन्त्रम्	१८९

क्रमांक	पृष्ठांक
४५ शान्ति चौरिक पत्रम्	१८८
४६ बाल-ज्वर-नाशन पत्रम्	१८९
४७ ज्वर-शमन पत्रम्	२००
४८ रुकान्तर-ज्वर-नाशक पत्रम्	२०१
४९ तृतीयक-ज्वरनाशन पत्रम् (१)	२०२
५० भूततृतीयकज्वरनाशन पत्रम् (२)	२०३
५१ बाल-रक्षाकर पत्रम्	२०४
५२ बालानां ज्वरादि नाशन पत्रम्	२०५
५३ बालदोषनाशक त्रिपुर त्रैरव पत्रम्	२०६
५४ भूत-त्रासन पत्रम्	२०७
५५ दुष्ट-सत्त्व प्रमोचन पत्रम्	२०७
५६ सर्प, व्याध, चौरादि भय-नाशन पत्रम्	२०८
५७ सौभाग्य-जनक बन्धुप्रागर्भधारण पत्रम्	२०९
५८ गर्भरक्षाकर पत्रम्	२१०
५९ गर्भिणीरक्षण मुखप्रसूतिकरणं पत्रम्	२११

क्रमांक	पृष्ठांक
६० बन्धुप्रागर्भधारण पत्रम्	२१२
६१ मृतवत्सा-दोष-शान्ति पत्रम्	२१२
६२ बन्धु-मोक्ष पत्रम्	२१३
६३ बन्धु-मोक्षण पत्रम्	२१४
६४ निगड-मोचन पत्रम्	२१५
६५ बन्धुमोक्षकर पत्रम्	२१६
६६ भय-मोचन पत्रम्	२१६
६७ सास, श्वसुर एवं सर्वविषीकरण पत्रम्	२१७
६८ सर्वतोभद्र पत्रम्	२१८
६९ दुःस्वप्ननाशक पत्रम्	२१८
७० नर-नारी विद्वेषण पत्रम्	२१९
७१ स्वामि-भृत्य विद्वेषण पत्रम्	२२०
७२ बन्धु-विद्वेषण पत्रम्	२२१
७३ शत्रु-विद्वेषण पत्रम्	२२२
७४ विश्व-विद्वेषण पत्रम्	२२३

क्रमाङ्कः

७५	स्त्रियाः उच्चारण यन्त्रम्	२२४
७६	सर्वजनोच्चारण यन्त्रम्	२२५
७७	सद्य उच्चारणकर यन्त्रम्	२२६
७८	परमोच्चारण यन्त्रम्	२२७
७९	त्रैलोक्योच्चारण यन्त्रम्	२२८
८०	शत्रोरुच्चारण यन्त्रम्	२२९
८१	शत्रूच्चारण यन्त्रम्	२३०
८२	गर-नारी मारण यन्त्रम्	२३१
८३	देशान्तरस्थ शत्रु मारण यन्त्रम्	२३२
८४	शत्रु प्रणाशक यन्त्रम्	२३३
८५	सर्वजन मारण यन्त्रम्	२३४
८६	शत्रु मारण यन्त्रम्	२३५

(चतुर्थ खण्ड समाप्त)

पृष्ठाङ्कः

क्रमाङ्कः

चतुर्थ खण्ड

१	मृत्युवशीकरण पिशाचि यन्त्रम्	२३६
२	धूत-विजयकर पुसल यन्त्रम्	२३७
३	डाकिनी-नाशन-यन्त्र	२३८
४	घैत-बाधा-नाशन यन्त्र	२३८
५	बालाघ्नी का यन्त्र	२३९
६	सेना भगाने का यन्त्र	२३९
७	सर्वसिद्धिदाता पद्मे का यन्त्र	२४०
८	शत्रु उच्चारण यन्त्र	२४१
९	देशाटन कारक यन्त्र	२४१
१०	प्रसिद्धिदाता यन्त्र	२४२
११	दुःस्वप्ननाशक यन्त्र	२४२
१२	लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र	२४३
१३	हौलदिली का यन्त्र	२४४
१४

क्रमांक	पृष्ठांक
१५ ज्वर-नाशक यन्त्र	२४५
१६ मनोभिलाषा पूरक यन्त्र	२४५
१७ द्यूत-विजयकर यन्त्र	२४६
१८ पुत्र-प्रदाता यन्त्र	२४६
१९ चौत्तीसा यन्त्र	२४७
२० मृतवासा-दोष-निवारण यन्त्र	२४८
२१ डब्बा रोग-निवारक यन्त्र	२४९
२२ गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र	२५०
२३ छेत-काष्ठा-नाशक यन्त्र	२५१
२४ पुत्र-प्रदाता यन्त्र	२५२
२५ भय-विनाशन यन्त्र	२५२
२६ वायुशूल-नाशक यन्त्र	२५३
२७ शत्रु को दुःखी करने का यन्त्र	२५३
२८ शत्रु-नाशक यन्त्र	२५४
२९ राजा-प्रजा वशीकरण यन्त्र	२५४

क्रमांक	पृष्ठांक
३० वशीकरण यन्त्र	२५५
३१ गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र	२५५
३२ स्वप्न-निवारक यन्त्र	२५६
३३ वशीकरण यन्त्र	२५६
३४ मनवांछित फलदाता यन्त्र	२५६
३५ गण्ड दुःख मनुष्य को (पौराणे का यन्त्र)	२५७
३६ छेत वशीकरण यन्त्र	२५७
३७ प्रयोगसिद्धि यन्त्र	२५८
३८ सूंड़ी की पीड़ा का यन्त्र	२५८
३९ बालक को नजर न लगने का यन्त्र	२५९
४० छट्कोण यन्त्र	२५९
४१ सवर्ष स्थापन यन्त्र	२६०
४२ शत्रु-उच्चाटन यन्त्र	२६०
४३ सुखदाता यन्त्र	२६१
४४ कल्याणकर यन्त्र	२६१

क्रमांक:

पृष्ठांक:

४५ रक्तापित्त नाशक यन्त्र	२६२
४६ आकर्षण यन्त्र	२६२
४७ तिजारी ज्वर नाशक यन्त्र	२६३
४८ स्तम्भन यन्त्र	२६३
४९ शकान्तर ज्वर नाशक यन्त्र	२६४
५० क्षाकिनी भय.हरण यन्त्र	२६४
५१ विद्या-बुद्धि उदात्त यन्त्र	२६५
५२ सर्व-रक्षा यन्त्र	२६५
५३ वाणीस्तम्भन यन्त्र	२६६
५४ दिव्य-स्तम्भन यन्त्र	२६७
५५ आकर्षण यन्त्र	२६७
५६ आधासीसी नाशक यन्त्र	२६८
५७ मसान-भय नाशक यन्त्र	२६९
५८ विरोध कारक यन्त्र	२६९
५९ मिर्गी (मली) रोग नाशक यन्त्र	२७०

क्रमांक:

पृष्ठांक:

६० वाचास्तम्भन यन्त्र	२७०
६१ सूखारोग निवारण यन्त्र	२७१
६२ सम्मानदाता यन्त्र	२७२
६३ बच्चे का रोना बन्द करने का यन्त्र	२७२
६४ धन-लाभ का यन्त्र	२७३
६५ स्त्री-हित-साधक यन्त्र	२७५
६६ शूलदि-दोष-निवारक यन्त्र	२७६
६७ बत्तीसा यन्त्र	२७७
६८ स्त्री मोहन यन्त्र	२७७
६९ अश्व-वशीकर्ता यन्त्र	२७८
७० गो दुग्ध-वर्द्धक यन्त्र	२७८
७१ बिक्री-वर्द्धक यन्त्र	२७८
७२ दूरगामी यात्रा स्तम्भन यन्त्र	२७९
७३ लीफ्टन यन्त्र	२७९
७४ साधारण यात्रा यन्त्र	२७९

क्रमांक	पृष्ठांक
७५ नौका-स्तम्भन यन्त्र	२८०
७६ सर्प-स्तम्भन यन्त्र	२८०
७७ हिंसक-पशु-स्तम्भन यन्त्र	२८०
७८ अग्नि-स्तम्भन यन्त्र	२८१
७९ बाजी-स्तम्भन यन्त्र	२८१
८० चौरादि-स्तम्भन यन्त्र	२८१
८१ पारिवारिक-सुरक्षदाता यन्त्र	२८२
८२ ऋण-मोचक यन्त्र	२८२
८३ आजीविका-दाता यन्त्र	२८२
८४ आरोग्य-वर्द्धक यन्त्र	२८३
८५ आयु-वर्द्धक यन्त्र	२८३
८६ सुख-वर्द्धक यन्त्र	२८३
८७ विद्या-वर्द्धक यन्त्र	२८४
८८ बुद्धि-वर्द्धक यन्त्र	२८४
८९ सम्मान-वर्द्धक यन्त्र	२८४

क्रमांक	पृष्ठांक
९० विवाद-विजय यन्त्र	२८५
९१ शास्त्रार्थ-विजय यन्त्र	२८५
९२ प्रतिपोगिता-विजय यन्त्र	२८५
९३ क्रोध-शमन यन्त्र	२८६
९४ रोग-शमन यन्त्र	२८६
९५ चिन्ता-हरण यन्त्र	२८६
९६ मन्दिर-निर्माण का यन्त्र	२८७
९७ जलाम्बाय-निर्माण का यन्त्र	२८७
९८ गृह-निर्माण का यन्त्र	२८७
९९ शक्ति-लाभ यन्त्र	२८८
१०० पुण्य-लाभ यन्त्र	२८८
१०१ आलोन्नतिकारक यन्त्र	२८८
१०२ पदोन्नतिदाता यन्त्र	२८९
१०३ स्थानान्तरणकर्ता यन्त्र	२८९
१०४ वाहन-प्राप्ति का यन्त्र	२८९

क्रमांक	पृष्ठांक
१०५ कला-क्षेत्र में सफलता का यन्त्र	२८०
१०६ चरोहर की सुरक्षा का यन्त्र	२८०
१०७ धान की सुरक्षा का यन्त्र	२८०
१०८ स्नेह-वृद्धि यन्त्र	२८१
१०९ प्रेमी-मिलन यन्त्र	२८१
११० प्रेम में सफलता का यन्त्र	२८१
१११ साम्प्रदायी में सफलता का यन्त्र	२८२
११२ दृढ़-मैत्री निर्वह का यन्त्र	२८२
११३ शृणु से छुटकारे का यन्त्र	२८२
११४ परीक्षा में सफलता का यन्त्र	२८३
११५ निर्वचन में सफलता का यन्त्र	२८३
११६ वृद्धावस्था में सुख-लाभ का यन्त्र	२८३
११७ सन्तानि-सुरवदाना यन्त्र	२८४
११८ विवाह कारक यन्त्र	२८४
११९ पुत्र प्रदाना यन्त्र	२८४

क्रमांक	पृष्ठांक
१२० खोई वस्तु मिलने का यन्त्र	२८५
१२१ गलत व्यक्ति को लौटाने का यन्त्र	२८५
१२२ राजदण्ड-भय नाशक यन्त्र	२८५
१२३ कुटुम्ब-वृद्धि यन्त्र	२८६
१२४ शत्रु-सुरवर्द्धक यन्त्र	२८६
१२५ कन्या-विवाह यन्त्र	२८६
१२६ गेह-धान की आदि का यन्त्र	२८७
१२७ आकस्मिक-धान-लाभ का यन्त्र	२८७
१२८ शृणु-आदि का यन्त्र	२८७
१२९ शत्रु को जूनी लगाने का यन्त्र	२८८
१३० बैरी को डेर करने का यन्त्र	२८८
१३१ कैदी को छुड़ाने का यन्त्र	३००
१३२ जालमय-नाशक यन्त्र	३०१
१३३ अवासीद का यन्त्र	३०२
१३४ चेचक का यन्त्र	३०२

क्रमक	पृष्ठांक
१३५ पिंती का यन्त्र	३०२
१३६ आधासीसी का यन्त्र	३०२
१३७ दाया भस्म करने का यन्त्र	३०३
१३८ छैल दूर करने का पलीला यन्त्र	३०३
१३९ व्यवसाय-वृद्धि का यन्त्र	३०४
१४० धूल-विजय यन्त्र	३०४
१४१ पानी बन्द करने का यन्त्र	३०४

(चतुर्थ खण्ड समाप्त)

पंचम खण्ड

१ विरिमल्लाह का मन्त्र-यन्त्र	३०५
२ दरुद का मन्त्र	३०५
३ अजमान का मन्त्र	३०५
४ बीसा यन्त्र	३०६
५	३०७

क्रमक	पृष्ठांक
६ दस जर्बी बीसा यन्त्र	३०८
७ आठ जर्बी बीसा यन्त्र	३०८
८ चार जर्बी बीसा यन्त्र	३०८
९ छः जर्बी बीसा यन्त्र	३०९
१० यन्त्र की दिशाएँ	३०९
११ सौलह कोठे के यन्त्र	३०९
१२ 'याबुदूह' यन्त्र	३१०
१३ पन्दहिया यन्त्र	३११
१४ अलिफ का मन्त्र और यन्त्र	३१२
१५ ७८६ का यन्त्र	३१३
१६ प्रश-प्राप्ति का यन्त्र	३१३
१७ राज्य-सम्मान पाने का यन्त्र	३१४
१८ नहर न लगने का यन्त्र	३१४
१९ बलाय दूर करने का यन्त्र	३१४
२० आधासीसी नामाक यन्त्र	३१४

कमांक

२१ काली देवी की प्रसन्नता का यन्त्र	३१५
२२ हनुमान्जी की प्रसन्नता का यन्त्र	३१५
२३ भूत, यक्ष, देवी की प्रसन्नता का यन्त्र	३१५
२४ अलिगन्धा यक्षिणी का यन्त्र	३१५
२५ प्रसिद्धि-प्राप्त करने का यन्त्र	३१६
२६ विघ्न-विनाशक यन्त्र	३१६
२७ गई-वस्तु आने का यन्त्र	३१६
२८ सर्वरक्षाकर यन्त्र	३१६
२९ विघ्ना-नुद्धिदायक यन्त्र	३१७
३० रत्नी-वशीकरण यन्त्र	३१७
३१ शीत-प्लव नाशक यन्त्र	३१७
३२ पुकष-वशीकरण यन्त्र	३१७
३३ शत्रु-बल-नाशक यन्त्र	३१८
३४ शत्रु-मारण यन्त्र (१)	३१८
३५ शत्रु-मारण यन्त्र (२)	३१८

कमांक

३६ शत्रु के शरीर को गलाने का यन्त्र	३१८
३७ कान दुखने का यन्त्र	३१८
३८ धनंजय-वायु का यन्त्र	३१८
३९ आधासीसी का यन्त्र	३१८
४० शत्रु का शरीर फटने का यन्त्र	३१८
४१ धावरा-रोग-नाशक यन्त्र (१)	३२०
४२ धावरा-रोग-नाशक यन्त्र (२)	३२०
४३ बकडवाय का यन्त्र	३२०
४४ कौंच निकलने का यन्त्र	३२०
४५ स्तन न पकने का यन्त्र	३२१
४६ भूत न लगने का यन्त्र	३२१
४७ सर्प न आने का यन्त्र	३२१
४८ भूत-प्रेत भय-नाशक यन्त्र	३२१
४९ कलह होने का यन्त्र	३२२
५० विरोध होने का यन्त्र	३२२

क्रमांक

पृष्ठांक

- ११ नृसिंहाकारक यन्त्र
 १२ कामना-नाशक यन्त्र
 १३ राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र
 १४ सभा-सम्मान प्राप्ति यन्त्र
 १५ जीति-नाशक यन्त्र (१)
 १६ जीति-नाशक यन्त्र (२)
 १७ तिजारी-नाशक यन्त्र
 १८ जीति-उत्पादक यन्त्र
 १९ बोध-प्राप्ति का यन्त्र
 २० व्यवहार-धर्मिष्ठता यन्त्र
 २१ सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (१)
 २२ सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (२)
 २३ सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (३)
 २४ सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र (४)
 २५ मनोमिलावा-पूरक यन्त्र

- ३२२
 ३२२
 ३२३
 ३२३
 ३२३
 ३२३
 ३२४
 ३२४
 ३२४
 ३२४
 ३२५
 ३२५
 ३२५
 ३२५
 ३२६

क्रमांक

पृष्ठांक

- २६ प्रयोग-सिद्धि यन्त्र (१)
 २७ प्रयोग-सिद्धि यन्त्र (२)
 २८ वचन-सिद्धि यन्त्र
 २९ अन्तर पर फल आने का यन्त्र
 ३० आम पर फल आने का यन्त्र
 ३१ स्वप्न में डूँट दीखने का यन्त्र
 ३२ स्वप्न में वानर दीखने का यन्त्र
 ३३ स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र (१)
 ३४ स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र (२)
 ३५ गधे मनुष्य को लौटाने का यन्त्र
 ३६ गधे पशु को लौटाने का यन्त्र
 ३७ शुक्र-सम्मान यन्त्र
 ३८ नाश दूरने का यन्त्र
 ३९ मसान जगने का यन्त्र
 ४० बहुत भोजन करने का यन्त्र

- ३२६
 ३२६
 ३२६
 ३२७
 ३२७
 ३२७
 ३२७
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८
 ३२८

क्रमिक

८१	अन्न सन्नेका यन्त्र	पृष्ठांक
८२	चाफ से बर्तन न उतरनेका यन्त्र	३३०
८३	कमान न चढ़ने देने का यन्त्र	३३०
८४	कुत्ते के भीकने का यन्त्र	३३०
८५	प्रवहार-घनिष्ठता यन्त्र	३३१
८६	रुन्नीकष्ट-मुक्ति यन्त्र	३३१
८७	शत्रु-आमक यन्त्र	३३१
८८	शत्रु-नाशक यन्त्र	३३१
८९	रुन्नी-वशीकरण यन्त्र	३३२
९०	सर्व-वशीकरण यन्त्र (१)	३३२
९१	सर्व-वशीकरण यन्त्र (२)	३३२
९२	शत्रु-वशीकरण यन्त्र	३३२
९३	भट्टी फूटने का यन्त्र	३३३
९४	गर्भ-रक्षा का यन्त्र	३३३
९५	ओल फूटने का यन्त्र	३३३

क्रमिक

९६	कष्ट-रुन्नी का यन्त्र	पृष्ठांक
९७	बैरी के जूता मारने का यन्त्र	३३३
९८	गाय का यन्त्र	३३४
९९	मनोरथदाता यन्त्र	३३४
१००	बाल-रक्षा यन्त्र	३३४
१०१	शत्रु-नाशक यन्त्र-मन्त्र	३३५
१०२	सर्वजित-वशीकरण यन्त्र	३३६
१०३	स्वामी-वशीकरण यन्त्र	३३७
१०४	घूँहे भगाने का यन्त्र	३३७
१०५	टिड्डी भगाने का यन्त्र	३३८
१०६	पेट-दर्द दूर करने का यन्त्र	३३८
१०७	दर्भ न डिगने का यन्त्र	३३८
१०८	काले कौवे का यन्त्र	३३८
१०९	शीतला का यन्त्र	३३९
११०	निजारी का यन्त्र	३३९

क्रमांक	पृष्ठांक
१११ मुद्राएं	३४०
११२ विभिन्न प्रकार की मुद्राएं	३४१
११३ सूर्य चन्त्र	३४२
११४ लक्ष्मी चन्त्र	३४२
११५ वह्नि-पूजन चन्त्र	३४३
११६ मधुमती-पूजन चन्त्र	३४३
११७ वटवह्निणी देवी चन्त्र	३४४
११८ स्वर्णाकर्षण भैरव चन्त्र	३४४
११९ चण्डी-पूजन चन्त्र	३४५
१२० कर्तवीर्य अर्जुन पूजन चन्त्र	३४५
१२१ गोपाल-पूजन चन्त्र	३४६
१२२ चरणामुख-पूजन चन्त्र	३४६
१२३ देव-पूजन चन्त्र	३४७
१२४ देवी-पूजन चन्त्र	३४७
१२५ बीसा चन्त्र	३४८

क्रमांक	पृष्ठांक
१२६ चण्डी बीसा चन्त्र	३४८
१२७ श्री दुर्गा नवार्ण बीसा चन्त्र	३४८
१२८ श्री विष्णु बीसा चन्त्र	३४८
१२९ स्वस्तिक बीसा चन्त्र	३४९
१३० सिद्धिदाता बीसा चन्त्र	३४९
१३१ मनोरथ दाता बीसा चन्त्र	३४९
१३२ धनदाता बीसा चन्त्र	३५०
१३३ विद्या-प्रदायक बीसा चन्त्र	३५०
१३४ सम्मानदाता बीसा चन्त्र	३५०
१३५ वशीकरण बीसा चन्त्र	३५१
१३६ बाल्य-नाशक बीसा चन्त्र	३५१
१३७ चिन्ताहरण बीसा चन्त्र	३५१
१३८ विजय-प्रदाता बीसा चन्त्र	३५१
१३९ चित्रगुप्त चन्त्र	३५२
१४० व्यंकटेश चन्त्र	३५२

क्रमांक

१४१	ज्वाला मालिनी यन्त्र
१४२	शान्तचण्डी यन्त्र
१४३	शिवयन्त्राक्षरी यन्त्र
१४४	महामृत्युञ्जय यन्त्र
१४५	रामरक्षा यन्त्र
१४६	गायत्री यन्त्र
१४७	गृह-रक्षाकर, पुत्रदायक यन्त्र
१४८	सकसौ अस्त्री का यन्त्र



पृष्ठांक

३५३
३५३
३५४
३५४
३५५
३५५
३५६
३५६

समाप्त

क्रमांक

१४९	मोहन-वशीकरण यन्त्र
१५०	गति, विद्या एवं कोष सम्पन्न यन्त्र
१५१	पुरुष-वशीकरण यन्त्र
१५२	आकर्षण यन्त्र
१५३	योगिनी-स्थापन यन्त्र
१५४	कामदेव यन्त्र
१५५	परमानन्द प्रदान यन्त्र
१५६	भय-भय-मोचन यन्त्र

पृष्ठांक

३५७
३५७
३५८
३५८
३५९
३५९
३६०
३६०

महा०



अथ यन्त्रमहार्णव (प्रथम खण्ड)

तन्त्र- 'तन्त्र शास्त्र' के तीन विभाग हैं - (१) मन्त्र, (२) यन्त्र और (३) तन्त्र। ये तीनों एक ही शक्ति के तीन रूप अथवा एक ही सत्य के तीन प्रकार हैं। जपकर्मा की शक्ति को उदीप्त कर, उसमें गुरुतर शक्ति का संचार करने वाले वर्णात्मक रूप को 'मन्त्र' कहते हैं। 'यन्त्र' को मन्त्र का चित्रात्मक रूप माना जाता है तथा 'तन्त्र' उसका क्रियात्मक रूप होता है।

तान्त्रिक-कर्म ६ प्रकार के बताये गए हैं - १ शान्तिकारण, २ वशीकरण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन और वशीकरण। इन ६ कर्मों के ८ प्रयोग हैं - १ मारण, २ मोहन, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन, ६ वशीकरण, ७ आकर्षण, ८ दक्षिणी-साधन और ९ रसाधन-क्रिया। ये सभी प्रयोग मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र के माध्यम से अलग-अलग अथवा दो या तीनों के संयुक्त प्रयास द्वारा सिद्ध किए जाते हैं।

यन्त्रों द्वारा सिद्ध किए जाने वाले कर्मों को ८ भागों में बाँटा गया है - १ वशीकरण, २ आकर्षण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ मारण, ६ उच्चाटन, ७ शान्तिकर्म तथा ८ मोहक-कर्म (१) किसी स्त्री-पुरुष अथवा अन्य प्राणी को वश में करने के लिए जो प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'वशीकरण' की श्रेणी में रखा जाता है। (२) किसी स्त्री-पुरुष अथवा अन्य प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किए जाने वाले प्रयोग 'आकर्षण' की श्रेणी में आते हैं। (३) किसी प्राणी अथवा पदार्थ को स्तम्भित कर देने (जहाँ का तहाँ निश्चल कर देने अथवा रोक देने) के लिए किये गए साधनों को 'स्तम्भन' कहते हैं। (४) किसी दो प्राणियों में

भगड़ा कराने के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले साधनों को 'विशेषण' कहा जाता है। (५) 'भारण' प्रयोग उन्हे कहा जाता है, जिन्हे किसी प्राणी की मृत्यु के उद्देश्य से सम्पन्न किया जाता है। (६) किसी प्राणी अथवा वस्तु को अपने स्थान से हटाने अथवा भगाने के लिए जो प्रयोग किए जाते हैं, उन्हे 'उच्चाटन' कहते हैं। (७) उपद्रवों की शान्ति हेतु किए जाने वाले साधन 'शान्तिकरण' कहलाते हैं तथा (८) किसी की बन्धन-मुक्ति हेतु किए गए साधनों को 'मोक्ष-कर्त' कहा जाता है। इसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति के बन्धन अथवा कारागार से छुटकारा पाने के अतिरिक्त संसार से छुटकारा पाने अर्थात् मोक्ष के उपाय भी सम्मिलित हैं। देवी-देवताओं की उपासना हेतु भी यन्त्र-साधन किया जाता है। देवी-देवताओं के यन्त्रों का साधन मोक्ष-प्राप्ति के अतिरिक्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है।

यन्त्रों के मुख्य भेद - यन्त्रों के मुख्य भेद दो प्रकार के होते हैं। एक वह, जिसमें केवल यन्त्र का ही साधन किया जाता है और दूसरा वह, जिसमें यन्त्र-साधन के साथ-साथ मन्त्र-जप करना भी आवश्यक होता है। देवी-देवता आदि से सम्बन्धित यन्त्रों के साथ मन्त्र-जप प्रायः संलग्न रहता ही है। बटुकर्मों से सम्बन्धित प्राचीन गुंणों में उल्लिखित यन्त्रों के साथ भी किसी-न-किसी दोटे छोटे मन्त्र का जप करना आवश्यक होता है, तथापि कुछ यन्त्र ऐसे भी होते हैं, जिनके साथ मन्त्र-जप नहीं करना पड़ता। उनका पूजन अथवा धारण मात्र ही फल-दायक सिद्ध होता है। ऐसे यन्त्रों की गणना प्रायः 'लोक-पुजलित' यन्त्रों के अन्तर्गत की जाती है। प्राचीन गुंणों में ऐसे यन्त्रों का बहुत कम उल्लेख मिलता है। बिना मन्त्र वाले यन्त्रों का साधन भी सरल होता है।

बीज, समय, वार, मास आदि का विचार - मन्त्र - बीज तथा मन्त्र चार प्रकार के होते हैं - (१) सिद्ध, (२) साध्य,

(३) अरि और (४) सुसिद्ध / इस सम्बन्ध में आगे विस्तार पूर्वक लिखा जाएगा।

(१) समय - 'वशीकरण' तथा 'आकर्षण' के लिए प्रातः १० बजे तक का, 'विद्वेषण' के लिए मध्याह्न का, 'उच्चाटन' और 'शान्तिकरण' के लिए दिन के तीसरे प्रहर का तथा 'स्तम्भन' और 'मारण' के लिए सन्ध्या और रात्रि का समय श्रेष्ठ रहता है। मोक्ष-कर्म के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है।

(२) ऋतु - लैंगिक रूप में ऋतुओं का परिवर्तन प्रति दो मास बाद होता है, परन्तु सूक्ष्म रूप से प्रत्येक दिन रात की ६० घड़ी (ठाई बड़ी का १ घण्टा होता है) में दहों ऋतुएँ १०-१० घड़ी के लिए भोग करती हैं। प्रातः ६ बजे से १० बजे तक वसन्त, १० से २ बजे तक ग्रीष्म, मध्याह्न २ से ६ बजे तक वर्षा, सायं ६ बजे से रात्रि १० बजे तक शिशिर, रात्रि १० से २ बजे तक शरद्वरात्रि २ से प्रातः ६ बजे तक हेमन्त ऋतु रहती है। हेमन्त ऋतु में शान्ति-कर्म, वसन्त ऋतु में वशीकरण, ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण, वर्षा ऋतु में उच्चाटन, शिशिर ऋतु में स्तम्भन तथा शरद्व ऋतु में मारण-कर्म करना पु शस्त माना गया है। ऋतु के रहते ही कर्म समाप्त कर लें।

(३) तिथि - शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावास्या तक ३० दिन होते हैं। इनमें प्रारंभ के १० दिन उत्तम, मध्य के १० दिन मध्यम तथा अन्त के १० दिन निम्न माने जाते हैं। षट्कर्मों के लिए - शुक्ल पक्ष की द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी एवं सप्तमी को बुध अथवा गुरुवार हो तो उस दिन 'शान्ति-कर्म' करने चाहिए। 'वशीकरण' के लिए शुक्ल-पक्ष की चतुर्थी, षष्ठी, नवमी एवं त्रयोदशी को सोमवार एवं वृहस्पतिवार होना शुभ माना गया है। 'विद्वेषण' के लिए अष्टमी, नवमी, दशमी तथा सकादशी को

शुक्र अथवा शनिवार हो तो वह शुभ रहता है। 'उच्चाटन' हेतु कृष्णपक्ष की अष्टमी एवं चतुर्दशी तिथि को शनिवार प्रशस्त माना गया है। कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी एवं अमावास्या तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को रविवार, मङ्गलवार अथवा शनिवार हो तो इन्हें 'स्तम्भन' एवं 'मारण' कर्म के लिए श्रेष्ठ बनाया गया है।

(४) वार - शुक्लपक्ष के प्रारंभ में पहला गुरुवार, सोमवार तथा रविवार - ये तीनों दिन अत्यन्त शुभ होते हैं। इनमें जिस कार्य को भी आरम्भ किया जाय, वह शीघ्र सिद्ध होता है। रविवार, सोमवार तथा गुरुवार को वशीकरण, आकर्षण, धन-लाभ, गर्भ-स्थिति, शारीरिक-बल तथा आरोग्य-प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं। शुक्रवार तथा बुधवार को स्तम्भन, विद्वेषण, भूतादिक-दोष निवारण एवं वस्तु-विवेचना आदि के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं। शनिवार, मङ्गलवार के दिन उच्चाटन, मारण, धन-हानि, भय, छद्मधन तथा गर्भ-व्यवहन आदि से सम्बन्धित कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं।

(५) मास - फाल्गुन, ज्येष्ठ, आश्विन तथा मार्गशीर्ष - इन 'श्रेष्ठ' महीनों में वशीकरण, आकर्षण तथा शान्ति कर्म आदि करने चाहिए। ज्येष्ठ, ज्येष्ठ, आषाढ एवं आश्विन के महीने 'मध्यम' होते हैं; इनमें स्तम्भन, विद्वेषण आदि कर्म करने चाहिए। माघ, वैशाख, ज्येष्ठ तथा कार्तिक के महीने 'उत्तम' माने गए हैं, इनमें मारण, उच्चाटन आदि कर्म करने चाहिए। मोक्ष-कर्म के लिए सभी महीने प्रशस्त कहे गए हैं।

(६) सूर्य-चन्द्र प्रवल्य - कृष्णपक्ष की प्रारंभिक नौ तिथियों में सूर्य प्रवल रहता है तथा दशमी से अमावास्या तक चन्द्रमा प्रवल रहता है। इसी प्रकार माघ मास की प्रारंभिक नौ तिथियों में सूर्य प्रवल रहता है तथा दशमी से

रहता है, तदुपरान्त सूर्य प्रज्वाल रहता है। सूर्य की प्रज्वाला वाली तिथियों में 'चर-कार्य' तथा चतुर्मा की प्रज्वाला वाली तिथियों में 'स्थिर-कार्य' करने चाहिए। जोड़ी देर के कार्यों, जैसे - छोड़े पर अफवा नाच पर चढ़ना आदि को 'चर' तथा अधिक समय के कार्यों, जैसे - रोग से छुटकारा पाने को चिकित्सा आदि को 'स्थिर' कार्य कहते हैं।

(७) अन्य विचारणीय विषय - मन्त्र-जप अथवा जन्म-स्नान हेतु दिशाशूल, योगिनी, चतुर्मा, नन्दा-भद्रा आदि तिथि तथा कुछ अन्य बातों पर भी विचार किया जाता है। इनके विषयमें संक्षेप में इस प्रकार जानें - (१) - यदि किसी संश्रानि में रविवार के दिन सप्तमी तिथि हो तो उस दिन किया हुआ कार्य अवश्य सिद्ध होता है। (२) - रविवार तथा सोमवार को पूर्व दिशा में, बुधवार और रविवार को पश्चिम दिशा में, मङ्गलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिशाशूल रहता है। अतः इन दिनों में वर्णित दिशाओं की यात्रा नहीं करनी चाहिए। किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय दिशाशूल का विचार करना आवश्यक है। (३) - पूर्णिमा को पूर्व में, द्वितीया को उत्तर में, तृतीया को अग्नि कोण में, चतुर्थी को नैऋत्य कोण में, पंचमी को दक्षिण में, षष्ठी को पश्चिम में, सप्तमी को वायव्य कोण में, अष्टमी को ईशान कोण में, नवमी को पूर्व में, दशमी को उत्तर में, एकादशी को अग्नि कोण में, द्वादशी को नैऋत्य कोण में, त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्दशी को पश्चिम में, पूर्णिमा को वायव्य कोण में तथा अमावास्या को ईशान कोण में 'योगिनी' का वास रहता है। पीठ पीछे की तथा बाँई ओर की योगिनी शुभ फलदायक तथा सामने और दाँई ओर की अशुभ फलदायक होती है। यात्रा के समय योगिनी का विचार आवश्यक है।

(४) मेष, सिंह तथा चतु राशि का चन्द्रमा पूर्व में; मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशि का पश्चिम में; मकर, वृष तथा कन्या राशि का दक्षिण में एवं कर्क, मीन तथा वृश्चिक राशि का उत्तर में रहता है। किस दिन या तिथि को चन्द्रमा किस राशि का होगा— यह बात ज्ञात (पता) द्वारा ज्ञात की जा सकती है। अपनी राशि का चौथा कलहउद, पाँचवाँ हान एवं बृद्धि वृद्धि, छठा लाभउद, सातवाँ राज्य सम्मान उदात्त, आठवाँ सुरज एवं मृत्यु (कष्ट) दायक, नवाँ धर्म-वृद्धि, दसवाँ सुरज-दायक, ग्यारहवाँ सर्वसिद्धि दाता तथा बारहवाँ हानिकारक होता है। पहली, दूसरी, तीसरी तथा चौथी राशि का चन्द्रमा मस्तक पर रहने से सुख जाँको पर रहने से बर-बर पुमाना है तथा सातवीं, दसवीं एवं ग्यारहवीं राशि का हृदय पर रहने से सुरजदायक होता है। (५) प्रतिपदा, वष्ठी और एकादशी को 'नन्दा', द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी को 'भद्रा', तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी को 'जया', चतुर्थी, नवमी और-चतुर्दशी को 'रिक्ता' तथा पंचमी, दशमी और पूर्णिमा अथवा अमावास्या को 'पूर्णा' लिखि कहते हैं। शुक को नन्दा, बुध को भद्रा, मंगल को जया, शनि को रिक्ता एवं गुरु को पूर्णा लिखि हो तो उस दिन 'सिद्धि योग' होता है। रविवार अथवा गुरु वनता है। 'सिद्धि योग' में कार्य-साधन करने से सिद्धि प्राप्त होती है तथा 'मृत्यु योग' में कार्य-साधन करने से हानि होती है।

कुलाकुल चक्र

वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ॡ ॢ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	ळ	स	ह

कुलाकुल चक्र - मन्त्रशास्त्र में कुलाकुल का अन्तर्गुह्यगुह्य विषय है। तत्त्वज्ञान को अत्यन्त गुह्य विषय माना गया है। अनुकूल मन्त्रों का तत्त्वज्ञान से निर्णय होता है। अतः 'कुलाकुल चक्र' को सिद्धिदायी कहा गया है। 'कुलाकुल चक्र' का स्वरूप नीचे और उल्लिखित है।

साधक के नाम का पहला अक्षर तथा मन्त्र का पहला अक्षर एक कोष्ठक में आये तो 'स्व-कुल' जानना चाहिए। पृथ्वी का मित्र जल है, पृथ्वी के शत्रु वायु तथा अग्नि है। अग्नि का मित्र वायु है। जल का शत्रु अग्नि है। आकाश सब का मित्र है।

शत्रु-कुल का होने पर मन्त्र गृहण नहीं करना चाहिए। स्वकुल तथा मित्र होने पर मन्त्र गृहण करने योग्य होता है।

स्मरणीय है कि सृष्टि पञ्चभूतात्मक है। (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) वायु तथा (५) आकाश— इन पाँच तत्वों द्वारा ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। 'कुलाकुल चक्र' इसी पाँचों तत्वों के बहस्य को उल्लिखित करता है।

'कुलाकुल' चक्र द्वारा तत्वों का विचार करने के उपरान्त राशि-चक्र, नक्षत्र-चक्र, अकउम-चक्र, अकषह-चक्र, ऋणी-धानी चक्र— इतके आधार पर आगे लिखे अनुसार विचार करना चाहिए।

राशि - चक्र

बुध उ ऊ ऋ मिथुन शुक्र	शुक्र अ आ मेघ ५ ऋ मकर	मीन य र ल व पशुपत ५ ऋ
र क		मकर त घ द ५ ऋ
सिंह ओ औ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३	३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३ ३३

राशि-चक्र विचार - अपनी राशि के अनुकूल मन्त्र ग्रहण करने से कल्याण का लाभ होता है, अतः विद्वज्जनों को उचित है कि वे नाम के आदि वर्ण तथा मन्त्र के आदि वर्ण को लेकर अपनी राशि से मन्त्र-राशि तक गणना द्वारा राशि की शुद्धता का विचार करें।

इस प्रकार की गणना द्वारा छठी, आठवीं तथा बारहवीं राशि स्थित मन्त्र त्याग करने योग्य होते हैं। एक, पाँच और नौ राशि के मन्त्र मित्र, दो, दस के हितकारी, तीन, सात और ग्यारह के सम और चार, आठ तथा बारह के घातक समझने चाहिए।

जल-राशि स्थित मन्त्र से मन्त्र-सिद्धि, धन-स्थान से धन-वृद्धि, भ्रातृ-स्थान से भ्रातृ-वृद्धि, बन्धु-स्थान से बन्धु-प्रियता एवं पुत्र-स्थान से पुत्र-लाभ होता है।

शत्रु-स्थान से शत्रु-वृद्धि, कलत्र-स्थान से मध्यम-फल, मृत्यु-स्थान से मृत्यु, नवम-स्थान से धर्म-वृद्धि, कर्म-स्थान से कार्य-सिद्धि, आय-स्थान से धन-आय-वृद्धि तथा व्यय-स्थान से धन का नाश होता है। राशि-चक्र के बाद नक्षत्र-चक्र का विचार करना चाहिए। नक्षत्र-चक्र के विषय में आगे लिखा जा रहा है।

नक्षत्र-चक्र विचार कोष्ठकम्

अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
अआ	इ	ईउऊ	ऋॠ ॡ ॢ	ए	ऐ	ओ औ	क	खग
देव	नर	राक्षस	नर	देव	नर	देव	देव	राक्षस
मघा	पूर्वा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
घउ.	च	झज	झज	टठ	उ	ढण	तथर	ध
राक्षस	नर	नर	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
मूल	पूर्वा.	उ. पा.	श्रवण	धनि.	शत.	पूर्वा.	उ. भा.	रेवती
नपफ	ब	भ	म	यर	ल	वश	षसह	कक्ष अं अः
राक्षस	नर	नर	देव	राक्षस	राक्षस	नर	नर	देव

नक्षत्र-चक्र-विचार-

नक्षत्र-चक्र के आधार पर अपना तथा मन्त्र का गण निश्चित करना चाहिए। यदि साधक मनुष्य-गण है तो उसके लिए मनुष्य-गण का मन्त्र ही श्रेष्ठ रहेगा। देव-गण का मन्त्र भी उत्तम रहता है, परन्तु राक्षस-गण के मन्त्र को ध्यातु समझना चाहिए।

देव-गण के लिए मनुष्य-गण का मन्त्र मध्यम होता है तथा राक्षस-गण का शत्रु। देवगण के लिए देवगण शुभ माना गया है।

राक्षस-गण के लिए केवल राक्षस-गण का ही मन्त्र उप-योगी होता है, अन्यगण अनुपयोगी होते हैं।

'नक्षत्र-विचार-चक्र' के अनुसार अपना और मन्त्र का नक्षत्र निश्चित करके अपने नक्षत्र से मन्त्र के नक्षत्र तक गिनना चाहिए और उन्हें कुमरा. १ जन्म, २ सम्पत्, ३ विपत्, ४ क्षेत्र, ५ प्रत्पारि, ६ साधक, ७ बध, ८ मित्र और ९ परम मित्र समझना चाहिए। यदि मन्त्र इतनी संख्या के भीतर न आवे तो उन्हें दुबारा और तिबारा गिन लेना चाहिए।

<p>ओ क प ह</p> <p>रे ज न स</p>	<p>ओ अ इ उ</p>	<p>अं इ उ अः र म</p>
<p>र घ ष ष</p>		<p>अ क उ म</p>
<p>क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ</p>	<p>अ अ अ अ</p>	<p>आ इ उ अ अ अ अ अ अ अ</p>

(अकडम चक्र)

अकडम की भाँति ही रुका-वक्र 'अ क ण ट' भी है। इसके माध्यम से भी साध्यादि का विचार किया जाता है।

अ क ड म चक्र - इस चक्र का स्वरूप नीचे और उदरित है। यह चक्र अ क ड म - इन अक्षरों से प्रारंभ होता है, अतः इसका यही नाम भी है।

इस चक्र में साधक के नाम का अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, उससे गिनना प्रारंभ करना चाहिए और मन्त्र का अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, वहाँ तक गिनते जाना चाहिए।

यदि मन्त्र का अक्षर पहले ही प्रकोष्ठ में हो तो वह 'सिद्ध', दूसरे में हो तो 'साध्य', तीसरे में हो तो 'सुसिद्ध' और यदि चौथे में हो तो 'अरि' समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए साधक का नाम 'श्याम' है और 'रे' मन्त्र का विचार करना है तो जिस प्रकोष्ठ में 'श' है, उससे ग्यारहवें प्रकोष्ठ में 'रे' पड़ता है। अतः 'श्याम' के लिए 'रे' मन्त्र 'सुसिद्ध' है।

'अरि' मन्त्र तृतीय तथा 'साध्य' मन्त्र मध्यम होता है। 'सिद्ध' और 'सुसिद्ध' मन्त्र उत्तम होते हैं।

अ क थ ह चक्र विचार (१)

सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु
१ अ क थ ह	२ उ उ. प	३ आ ख द	४ ऊ च फ
५ ओ ड व	६ लृ रु म	७ औ ढ श	८ लृ अ य
९ ई उ	१० ऋ ज भ	११ इ ग घ	१२ ऋ ङ व
१३ अः त स	१४ रे ठ ड	१५ अं ण ष	१६ ए ट र

अ क थ ह चक्र (१) - इस चक्र द्वारा १ सिद्ध, २ सुसिद्ध, ३ साध्य, तथा ४ अरि (शत्रु) मन्त्र का ज्ञान होता है।

सिद्ध-मन्त्र बाणध्व, साध्य-मन्त्र सेवक, सुसिद्ध-मन्त्र दोषक तथा शत्रु-मन्त्र घातक होता है।

साधक के नाम का आदि-अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, उससे मन्त्र के आदि अक्षर वाले प्रकोष्ठ तक गिनते चले। पहले प्रकोष्ठ में मन्त्राक्षर हो तो 'सिद्ध', दूसरे में हो तो 'साध्य', तीसरे में हो तो 'सुसिद्ध' और चौथे में हो तो 'अरि' समझना चाहिये। इस प्रकार जब तक मन्त्राक्षर न मिले, तब तक गिनते रहना चाहिये। इसकी गिनती क्रमशः दौरे और ओ चलती है।

अ क थ ह चक्र (२) - 'विश्वसार तन्त्र' में अ क थ ह चक्र का वर्णन निम्नानुसार किया गया है -

एक चतुष्कोण क्षेत्र खींच कर उसे चार कोठों में विभक्त करें। फिर उन चार कोठों को चार-चार भागों में विभक्त करने से सोलह कोठों का चक्र तय्यार हो जाएगा। इस सोलह कोठे वाले चक्र के कोठों में अकारादि सभी वर्णों को प्रदक्षिण क्रम से लिखना चाहिये। यथा-

अकथहचक्र का स्वरूप

अकथह	उडप	आखद	अचफ
ओडब	लृभम	औठश	लृअय
ईघन	ऋजभ	इगदा	ऋछव
अःतस	ऐठल	अंणष	एटर

पहले कोठे में अ, तीसरे में आ, ग्यारहवें में इ, नवे में ई, दूसरे में उ, चौथे में ऊ, बारहवें में ऋ, दसवें में ॠ, दठे में लृ, आठवें में लृ, सोलहवें में ए, चौदहवें में ऐ, पाँचवें में ओ, सातवें में औ, पन्द्रहवें में अं तथा तेरहवें में अलिखें। इस प्रकार सोलह कोठों में सोलह वर्ण लिखकर पुनर्वा उक्त नियम से ककारादि से 'ह' पर्यन्त सभी वर्णों को लिखना चाहिए। जब तक सभी वर्ण शेष न हों, तब तक उक्त रीति से सोलह कोठों में वर्ण लिखते जायें।

उक्त विधि से चक्र लिखने के बाद मन्त्र-गुहीता के नाम के आदि अक्षर पर्यन्त १ सिद्ध, २ साधय, ३ सुसिद्ध और ४ अरि-इस क्रम से गणना करनी चाहिए। चक्रमें वर्ण बिन्दास तथा गणना दक्षिणावर्त से करें - यह नियम है।

किस मन्त्र के ग्रहण करने से मन्त्र स्वयं सिद्ध होता है तथा मन्त्र के ग्रहण से कैसा फल होता है, इसे निम्नानुसार

समझें— (१) साधय-मन्त्र ग्रहण करने से जप-होम आदि के द्वारा मन्त्र सिद्ध होता है। (२) सुसिद्ध-मन्त्र ग्रहण करने से मन्त्र तत्काल सिद्ध होता है। (३) अरि-मन्त्र ग्रहण करने से मन्त्र-गुहीता का कुल सहित नाश होता है।

अन्य तन्त्र ग्रंथों में यह कहा गया है— (१) सिद्ध-मन्त्र ब्रह्मण, साध्व-मन्त्र सेवक, सुसिद्ध-मन्त्र पोषक

यन्त्र
७३

तथा शत्रु-मन्त्र घातक होता है। (२) बन्धु-मन्त्र जप के द्वारा तथा सेवक-मन्त्र अधिक सेवा के द्वारा सिद्ध होता है। पोषक-मन्त्र पुष्टिकारक तथा घातक-मन्त्र अमीष्ट का नाश करने वाला होता है। (३) सिद्ध-गृह स्थित सिद्ध-मन्त्र जप द्वारा सिद्ध होता है। इसी प्रकार सिद्ध-साध्व मन्त्र दूने जप से तथा सिद्ध-सुसिद्ध मन्त्र साध्वे जप से सिद्ध होता है। सिद्धारि-मन्त्र का जप करने से बन्धु-विनाश होता है। (४) साध्व-गृह स्थित सिद्ध-मन्त्र दूने जप से सिद्ध होता है। साध्व-साध्व मन्त्र के जपने से कोई फल नहीं होता। साध्व-सुसिद्ध मन्त्र साध्वे जप से, सुसिद्ध-साध्व मन्त्र दूने जप से तथा सुसिद्ध-सुसिद्ध मन्त्र ग्रहणमात्र से ही सिद्ध होता है। (५) सुसिद्ध-अरि मन्त्र अपने गोज का नाश करता है। अरि-सिद्ध मन्त्र पुत्र का, अरि-साध्व मन्त्र कन्या का, अरि-सुसिद्ध मन्त्र पत्नी का तथा अरि-गृह स्थित मन्त्र साध्वक का नाश कर देता है।

महा०

‘अ-क-थ-ह चक्र’ को देखकर सिद्धादि की गणना से शुद्ध-मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। अरि-मन्त्र को कभी ग्रहण नहीं करना चाहिए। यदि भ्रमवशा अरि-मन्त्र ग्रहण करले तो उसे त्याग देना उचित है।

अरि-मन्त्र को त्यागने की दो रीतियाँ बताई गई हैं— (१) एक द्रोण परिमाण गाय के दूध के ऊपर १०८ बार अरि-मन्त्र जप कर उस दूध को स्वयं पीले, फिर १०८ बार वही मन्त्र जप कर मन्त्रो-च्चारण पूर्वक उसका परित्याग कर दे। अरि-मन्त्र को जान लेने पर फिर उसका जप नहीं करना चाहिए तथा उस मन्त्र को त्याग कर उसी देवता का दूसरा मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। (२) बरगद के पत्ते पर अरि-मन्त्र लिख कर उसे नदी के जल में डाल दे। इस प्रकार अरि-मन्त्र का परित्याग करना चाहिए।

पन्ना
३
८

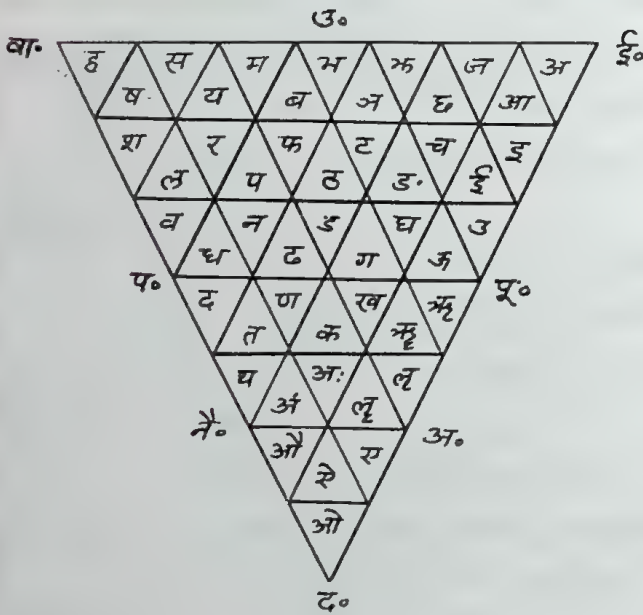
६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
अ	इ	उ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

कृणी-धनी चक्र विचार-

ऋणी-धनी चक्र विचार- बाँई ओर उदबिम्बि ऋणी-धनी चक्र 'रुद्रयामल' की प्रक्षिपाकारा अङ्कित है। इसमें ऊपर मन्त्र-वर्णों के अङ्क तथा नीचे साधक-वर्णों के अङ्क हैं। मन्त्र तथा साधक के स्वर तथा वर्ण अलग-अलग करके छल्लेक के अङ्क अलग-अलग जोड़ लेने चाहिए। फिर दोनों में अलग-अलग ८ का भाग दें। शेष में मन्त्र का अङ्क अधिक हो तो वह ऋणी होता है और कम होने पर धनी होता है। ऋणी-मन्त्र से बहुत शीघ्र सिद्धि मिलती है, बराबर होने पर भी उत्तम रहता है, धनी होने पर विलम्ब से सिद्धि मिलती है तथा शून्य शेष बचे तो उसे मृत्युकारक समझना चाहिए।

कुछ मन्त्र इसके अपवाद भी होते हैं, ऐसे मन्त्र हैं - १. जो स्वप्न में प्राप्त हुआ हो, २. जिसकी दीक्षा स्त्री-गुरु ने दी हो, ३. जिसमें तीन ही अक्षर हों। इनके अतिरिक्त वैदिक-मन्त्रों के लिए भी सिद्धादि-शोधन की आवश्यकता नहीं होती। वंश मन्त्र, पेचाद्यामन्त्र, अष्टाक्षर मन्त्र तथा रुक् दो तीन आदि की अपेक्षा मन्त्र - इनमें भी सिद्धादि शोधन की आवश्यकता नहीं पड़ती। श्रीहृषण मन्त्र, गोपाल मन्त्र

के अतिरिक्त दश महाविद्यालयों में शिक्षा के माध्यम से भी समाज को जागरूक किया जा रहा है।



मन्त्रों के दस संस्कार - दोष-निवृत्ति हेतु मन्त्रों के दस संस्कार किये जाते हैं-- १. जनन, २. दीपन, ३. बोधन, ४. ताडन, ५. अभिषेक, ६. विमलीकरण, ७. जीवन, ८. तर्पण, ९. गोपन तथा १०. आध्यापन। इनके विषय में क्रमशः निम्नानुसार समझें-

(१) जनन— भोजपत्र के ऊपर गीरोधन तथा कुंकुम-चंदन आदि से आत्माभिमुख त्रिकोण लिखें। फिर तीनों कोणों में ६-६ समान रेखाएँ खींचें। ऐसा करने पर ४८ त्रिकोण बौद्ध तन्त्रों में होंगे। उनमें ईशानकोण से मातृकावर्ण लिखकर देवताओं का आवाहन पूजन करके मन्त्र के एक-एक वर्ण का उद्गार करके अलग पत्र पर लिखें। ऐसा करने से 'जनन' नामक पहला संस्कार होता है। (देखिए बौद्ध और का चित्र)। मन्त्रोद्धार के बाद पन्त्र को धोकर जल में डाल दें।

(२) दीपन - अपने मन्त्र को 'हं' से सम्पुटित करके एक हजार की संख्या में जपने से 'दीपन-संस्कार' होता है।

(३) बोधन - 'हूं' बीज से सम्पुटित मन्त्र का पाँच हजार की संख्या में जप करने से 'बोधन' कहलाता है। (४) ताडन - 'फट' से सम्पुटित मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करने से 'ताडन-संस्कार' सम्पन्न होता है।

(५) अभिषेक - गोपमन्त्र के अणु अपना मन्त्र लिख कर 'ऐं हंस ओं' मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित जल से इसी मन्त्र के द्वारा अपने मन्त्र का अभिषेक करना 'अभिषेक-संस्कार' कहलाता है।

(६) विमलीकरण - 'ओं गो वषट्' इस मन्त्र से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करना 'विमलीकरण' कहलाता है।

(७) जीवन - 'स्वप्ना वषट्' से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करने को 'जीवन संस्कार' कहते हैं।

(८) तर्पण - दूध, दही, ग्राहद अथवा जल से, मूलमन्त्र से १०० बार तर्पण करना ही 'तर्पण' है।

(९) गोपन - माया-बीज से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप 'गोपन' कहलाता है।

(१०) आप्यायन - 'ह्रस्वे' बीज से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करना 'आप्यायन' कहा जाता है।

उक्त दस-संस्कार करने से मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है।

दीक्षा - दीक्षा के ३ मुख्य भेद होते हैं—(१) शाक्ती, (२) शाम्भवी स्वरूप (३) मान्त्री । शाक्ती-दीक्षा में गुरु शिष्य के शरीर में कुण्डलिनी को जगाया, अपनी वाक्ति से उसे परम शिव में मिला देते हैं। शाम्भवी-दीक्षा में गुरु अपने स्पर्शमार्ग से ही शिष्य को अपने स्वरूप में स्थित कर देते हैं। मान्त्री-दीक्षा मन्त्र, पूजा, आसन, पास स्वरूप ध्यान द्वारा होती है। इसमें गुरु शिष्य को मन्त्रोपदेश करते हैं, इसमें पुरश्चरणादि से सिद्धि मिलती है।

अर्ध यामेश चक्र

वार	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०
४८८	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०
४८८	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०
४८८	बु०	वृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०
४८८	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०	सू०
४८८	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	वृ०	शु०
४८८	वृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०
४८८	मं०	बु०	वृ०	शु०	श०	सू०	चं०
४८८	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०

अर्ध यामेश विचार- जिस तरह ४ अर्ध का एक दिन होता है, उसी प्रकार एक दिन में ८ अर्ध-प्रहर होते हैं। यदि दिनमान ३२ घण्टा का हो तो एक अर्ध-प्रहर ४ घण्टा का होगा। दिनमान-प्रमाण में ८ का भाग देने पर जो लब्धि होगी, वही एक अर्ध-प्रहर का मान होता है।

रवि आदि सात वारों में प्रत्येक अर्ध-प्रहर का स्वामी क्रम-सागुह होगा - इस पर विचार करते हुए केवल रविवार के दिन के प्रत्येक अर्ध-प्रहर के स्वामियों के विषय में यहाँ बताया जा रहा है।

रविवार में १ से लेकर ८ अर्ध-प्रहरों के स्वामी क्रमशः सूर्य, शुक्र, बुध, सोम, शनि, गुरु, मङ्गल तथा बृहस्पति होते हैं। इनमें जिस विभाग का स्वामी शनि होता है, उसे 'वार केला' कहते हैं और वह समस्त शुभ कार्यों में लघु है। शनि, सूर्य तथा गुरु को पीछे पीछे रखना शुभ होता है।

रविवार के अर्ध-यामेशों को देखने से यह पता चलेगा कि रवि वार के अनुरिक जिस दिन का अर्ध-यामेश जानना हो तो पहला अर्ध-यामेश जो दिन का स्वामी ही रहेगा और बाद के अर्ध-यामेशों के स्वामी ६ संख्या वाले गुह होंगे। इसी आधार पर रविवार से लेकर शनिवार तक के अर्ध-यामेशों के स्वामी ऋषि और प्रदक्षिण क्रम में दिए गए हैं।

प्रथम जय-चक्र

१०	६	७	१२	४	११	१४	२४	१८	४	२७	२४
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	लृ	ॡ	रे	ओ
औ	अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प
फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

प्रथम जय-चक्र विचार- पूर्व से पश्चिम तक तेरह रेखाएँ सीधी खींचकर, फिर उत्तर से दक्षिण तक छः रेखाएँ लिखी बचीं हैं। इस प्रकार जिस जय-चक्र का निर्माण हो, उसमें 'अ' से 'ह' तक के अक्षरों को लिखें तथा १०।६।७।१२।४।११।१४।२४।१८।४।२७।२४ - इन अक्षरों का भी न्यास करें। अक्षरों को ऊपर लिखकर, अकारादि अक्षरों को उसके नीचे लिखना चाहिए। इस प्रकार जो चक्र तैयार होगा, उसके स्वरूप को बाँई ओर उदाहरित किया गया है।

शत्रु के नामाक्षर के स्वर तथा व्यञ्जन वर्ण के सामने जो अक्षर हों, उन सबको जोड़कर पिण्ड बनायें, उसमें ७ का भाग देने पर १ आदि शेष के अनुसार सूर्यादि ग्रहों का भाग जानना चाहिए। १ शेष में सूर्य, २ में चन्द्र, ३ में मंगल, ४ में बुध, ५ में गुरु, ६ में शुक तथा ७ में शनिका भाग होता है - यह समझना चाहिए।

जब सूर्य, शनि और मंगल का भाग आये तो विषय होती है तथा शुभ ग्रह के भाग में सन्धि होती है।

'अग्नि पुराण' के १३१ वे अध्याय में इस 'जय-चक्र' का उल्लेख है। इसी में एक अन्य 'जय-चक्र' का भी वर्णन मिलता है, उसे अगले पृष्ठ पर देंगे।

द्वितीय जय-चक्र

१४	२०	२	१२	१४	६	४	३	१०	८	८
अं	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	लृ	लृ	ए
ऐ	ओ	औ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

द्वितीय जय-चक्र विचार - पूर्व से पश्चिम तक बराबर रेखाएं लिखें तथा दक्षिण से उत्तर तक कर्णों के लिखी जायें। इस प्रकार से दूसरा 'जय चक्र' बनता है।

इस चक्र में सर्वप्रथम ऊपर वाले कोष्ठक में १४, २०, २, १२, १४, ६, ४, ३, १०, ८, ८ - इन अंकों को लिखें तथा कोष्ठक में 'अ' आदि स्वरों से लेकर 'ह' तक के अक्षरों को लिखें। फिर नाम के अक्षरों द्वारा बने हुए पिण्ड में ८ से भाग दे, आदि शेष के अनुसार क्रमशः वायस, मण्डल, रासम, वृषभ, कुम्भार, सिंह, स्वर और घूम - ये आठ शेषों के नाम होते हैं। इनमें 'वायस' से प्रथम 'मण्डल' और 'मण्डल' से प्रथम 'रासम' - इस प्रकार उत्तरोत्तर बली होते हैं। संग्राम में यात्री तथा स्थायी नामाक्षर के अनुसार मण्डल बना कर एक दूसरे से बली तथा दुर्बल का हान प्राप्त कर लेना चाहिए।

उक्त विधि से तय्यार होने वाले द्वितीय जय-चक्र का स्वरूप नीचे और उदाहरित है। कम शेष से अधिक शेष बली होता है।

युद्ध में विजय-प्राप्ति की कामना वालों को जय-चक्र के अनुसार जय-पराजय का हान प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

सेवा-चक्र

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
ङ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
सिद्ध १	साध्य २	सुसिद्ध ३	शत्रु ४	मृत्यु ५

सम्बन्ध में विचार करना चाहिए अर्थात्

सेवा-चक्र विचार-

पूर्व से पश्चिम को ६ सीधी रेखाएँ तथा उत्तर से दक्षिण को ८ तिरछी रेखाएँ खींचें। इस प्रकार ३५ कोष्ठकों वाला सेवा-चक्र तैयार हो जाएगा। इस चक्र के ऊपरी कोष्ठकों में जाँच स्वरो को लिखकर, पुनः स्पर्श वर्णों को लिखना चाहिए अर्थात् 'क' से लेकर 'ह' तक के वर्णों का न्यास करना चाहिए। उनमें तीन वर्ण—'उ, अ तथा ण'—इन्हें छोड़कर लिखना चाहिए। नीचे वाले कोष्ठों में कुमशा: सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु तथा मृत्यु—इन्हें लिखना चाहिए। इस विधि से जो चक्र बनेगा, उसका स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

इस चक्र में शत्रु तथा मृत्यु नामक कोष्ठक में जो स्वर तथा व्यञ्जन हैं, उनका प्रत्येक कार्य में परित्याग कर देना चाहिए; परन्तु सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु एवं मृत्यु—इन नामों वाले कोष्ठक में यदि सेवक तथा सेव्य के नाम का आदि अक्षर पड़े तो उसे सर्वथा शुभ समझना चाहिए। इसमें द्वितीय कोष्ठक पोषक, तृतीय धनदायक, चतुर्थ आत्मनाशक तथा पंचम मृत्युदायक बताया गया है।

इस चक्र द्वारा भित्त, नीकर एवं बाग्याय से लाभ-हानि के सम्बन्ध रखना लाभदायक हो सकता है—यह देखना चाहिए।

नर - चक्र



नर-चक्र - नर-चक्र द्वारा ध्याता; - निर्णय किया जाता है। इसकी विधि यह है कि एक मनुष्य के आकार का चक्र (चित्र) बनाए तथा उसमें नक्षत्रों का न्यास करे। सूर्य के नक्षत्र से नाम के नक्षत्र तक गिन कर संख्या जान लेनी चाहिए। पहले तीन नक्षत्रों को नर के मस्तक पर, एक मुख पर, दो नेत्रों में, बाएँ हाथों में, दो कानों में, पाँच हृदय में तथा छः पाँवों पर लिखे। फिर नाम-नक्षत्र को स्पष्ट रूप से हृदय में न्यासित करे। इस प्रकार नर-चक्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

उक्त नर-चक्र में नर के नेत्र, सिर, दाँया कान, दाँया हाथ, दोनों पाँव, हृदय, ग्रीवा, बाँया हाथ तथा गुह्याङ्ग में जहाँ शनि, मंगल, सूर्य तथा राहु नक्षत्र पड़ते हों, युद्ध में उसी अंग में घात (चोट) होता है।

'अग्नि पुराण' के १३१ के अध्याय में इसका वर्णन किया गया है, किसी युद्ध आदि के लिए प्रस्थान अथवा प्रारम्भ करते समय इस चक्र के द्वारा शुभाशुभ का विचार करना चाहिए।

अष्टगन्ध - मन्त्रादि के निर्माण में 'अष्टगन्ध' का प्रयोग किया जाता है। अष्टगन्ध में यह वस्तुएँ होती हैं-- (१) सफेद चन्दन, (२) लाल चन्दन, (३) केसर, (४) कुंकुम, (५) कपूर, (६) कस्तूरी, (७) अगर और (८) तगर।

विष्टि-राहु चक्र



इन सब के साथ रह कर राहु शत्रुओं का संहार करता है। अग्निपुराण के १४२ वे अध्याय में इसका उल्लेख है।

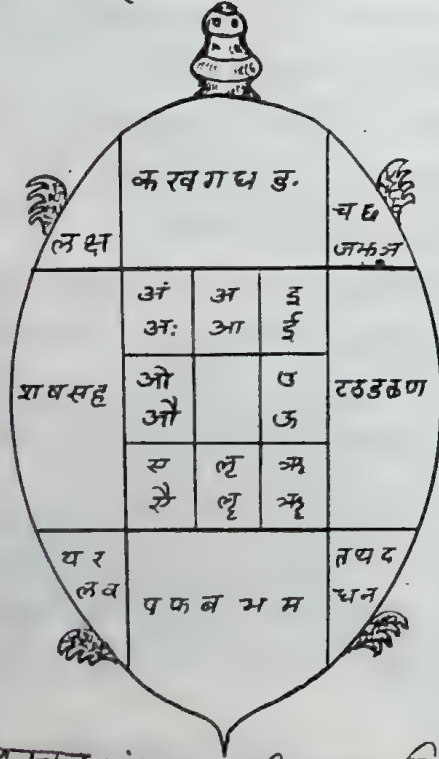
विष्टि-राहु चक्र विचार - बाँई ओर उदवर्ति चित्र के अनुसार रेखाएँ खींच कर 'विष्टि राहु चक्र' तय्यार करें। इन ८ रेखाओं पर विष्टि (भडा) के साथ महाबली राहु विचरण करते हैं।

कुष्णपक्ष की तृतीया आदि तिथियों में विष्टि-राहु की स्थिति ईशान कोण में होती है तथा सप्तमी आदि तिथियों में दक्षिणदिशा में (इसी प्रकार शुक्लपक्ष की अष्टमी आदि में तैर्ज्य कोण में तथा चतुर्थी आदि में उत्तर दिशा में होती है) बाँई ओर का चित्र देखें।

कुष्ण एवं शुक्ल पक्ष में वायु के आश्रित रहने वाले समुद्र-रक्ष राहु शत्रुओं का नाश करते हैं।

विष्टि राहु-चक्र की प्रत्येक दिशाओं में इन्द्र आदि आठ दिक्पालों, महाभैरव आदि आठ महाभैरवों, ब्रह्माणी आदि आठ शक्तियों तथा सूर्य आदि आठ ग्रहों को स्थापित कर, पूर्व आदि प्रत्येक दिशा में ब्रह्माणी आदि आठ शक्तियों के अष्टको की स्थापना करनी चाहिए। दक्षिण आदि दिशाओं में वातयोगिनी का उल्लेख करें। वायु जिस दिशा में बहती है, उसी दिशा में

कूर्म - चक्र



पुरुरत गुंघ का परिपाद्य - विषय पन्त-साधन होने के कारण इस विषयको संक्षेप में ही प्रस्तुत किया गया है।

कूर्म-चक्र निर्णय - जिस स्थान, क्षेत्र, नगर अथवा घर में 'पुरश्चरण' करना हो, उसके चार समान भागों की कल्पना करके, मध्य-भाग में स्वर लिखे तथा पूर्वदिक्क से कवर्गादि लिख कर ईशान कोण में 'लक्ष' लिखे। मन्त्र -

जिस कोष्ठक में पहला अक्षर हो, उसे मुख समझना चाहिए, उसके दोनों ओर के कोष्ठक दो भुजा, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठक कुक्षि, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठक पाँव तथा शेष कोष्ठक पुच्छ समझने चाहिए।

कूर्म-चक्र के मुख-स्थान में जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। भुजा में जप करने से स्वस्थ-जीवन, कुक्षि में जप करने से उदासीनता, पाँवों में जप करने से दुःख तथा पुच्छ में जप करने से बध-व्यथनादि की पीड़ा होती है।

अन्त - इसके अतिरिक्त १. मन्त्र-चैतन्य, २. मन्त्रार्थ, ३. मन्त्रों की कुल्लुका, ४. मन्त्र-सेतु, ५. महासेतु, ६. निर्वर्ण, ७. मुख-शोधन, ८. प्राणयोग, ९. मन्त्र-दोष तथा १०. मन्त्र-सिद्धि के उपायों की जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक है। ये सभी विषय मन्त्र-साधकों के लिए जानने योग्य हैं, अतः उद्देश्य इस हेतु 'मन्त्र महोदधि' आदि ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

कर्म-चक्र (2)

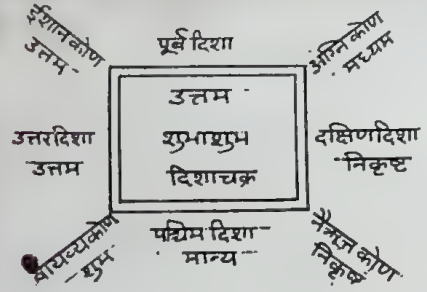


कर्म-चक्र विचार (2) - कर्म-चक्र का उनके दूसरा चित्र (बाईं ओर) देकर विषय-वस्तु को और अधिक सरलता से समझने का प्रयत्न किया गया है। जिस स्थान पर मन्त्र अथवा घन्ट साधन अथवा पूजन के लिए बैठें, वहाँ के नौ भाग करके, स्थान के नाम से मस्तक के अक्षर को मिला कर, अक्षर को जिस भाग में देखें, उसके भी नौ भाग कर लें। फिर, पूर्व अक्षर में जो मात्रा हो, उसी मात्रा के स्थान में आसन बिछाये। जैसे - कोठे का पहला अक्षर 'क' कर्म के मस्तक पर है तो उस स्थान के नौ भाग करके देखें कि 'ओ' की मात्रा उत्तर दिशा वाले बीच के स्थान में है। बस, इसी स्थान को कर्म का सिर जानकर वहाँ आसन बिछाना चाहिए। कर्म-चक्र में लिखने भी स्थान हैं, उन सबको कर्म का सिर ही समझना चाहिए। जहाँ भी अक्षर ठीक बैठता हो, वही आसन बिछाना चाहिए।

जप की दिशाएँ - वशीकरण घन्ट को पूर्व दिशा की ओर मुँह कर के, अभिचार-कर्म के लिए दक्षिण की ओर, घन-प्राप्ति की अभिलाषा से पश्चिम की ओर तथा शान्ति-कर्म के लिए उत्तर दिशा की ओर मुँह करके जप करना चाहिए। उत्तर दिशा की ओर मुँह करके जप करने से आधु की शक्ति तथा पुष्टि होती है।

आसन-विचार - पुष्टिकर्म के लिए 'वक्रासन' से, शान्ति-कर्म के लिए 'स्वस्तिकासन' से, विवेक्षण-कर्म में 'कुक्कुटासन' से, उच्चारण-कर्म में 'अर्द्ध-स्वस्तिकासन' से तथा मारण-कर्म के लिए 'विकटासन' से बैठना चाहिए। शान्ति-कर्म के लिए 'भद्रासन' भी प्रशस्त कहा गया है। ये आसन योग-क्रियाओं के हैं।

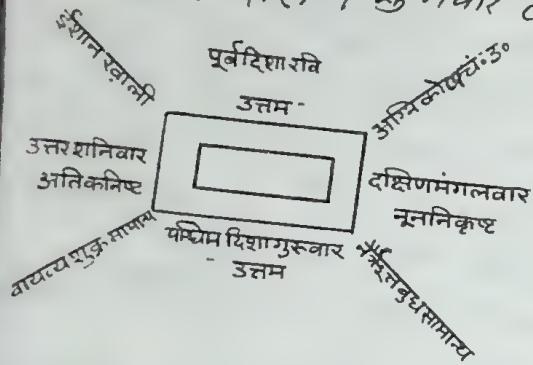
पाप की जा सकती है। दूसरे प्रकार के आसन किसी वस्तु द्वारा निर्मित होते हैं, जन्हें बंधाकर, ऊपर बांधा जाता है। ऐसे आसनों का प्रयोग निम्नानुसार करना चाहिए—



भारण-प्रयोग के लिए भौंसे के चमड़े के आसन पर बैठकर प्रयोग करें। विद्वेषण प्रयोग के लिए घोड़े के चमड़े का आसन; बन्धन-मोक्ष प्रयोग के लिए हाथी के चमड़े का आसन; वशीकरण के लिए मेंढे के चमड़े का आसन; आकर्षण प्रयोग के लिए बाघ के चमड़े का आसन तथा उच्चाटन-कर्म के लिए ऊँट के चमड़े का आसन प्रयोग में लाना चाहिए। यदि किसी समय उपयुक्त आसन सुलभ न हो तो उस स्थिति में कुश के आसन का प्रयोग किया जा सकता है।

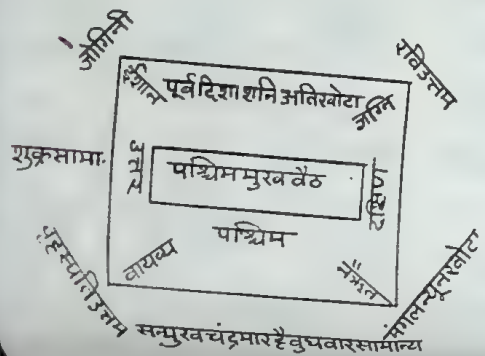
वैश्वानुसार बैठने की विधियाँ - चन्द्र लिखने तथा मन्त्र जपने के लिए जिस दिन बैठे, उस दिन पूर्व दिशा की ओर मुँह रखें। दूसरे दिन अग्नि कोण में, फिर दक्षिण दिशा की ओर रखें। इस प्रकार सातों दिन प्रत्येक दिशा को बदलता रहे। ईशान कोण को खाली रहने दे। शुभ-कार्य हो तो चन्द्रमा, शुभ दिशा को तथा शुभ दिन को सामने रखना चाहिए। योगिनी, दिशाशूल तथा निकृष्ट वार को पीछे पीछे अथवा बाँई ओर रखना चाहिए। निकृष्ट-कार्य हो तो योगिनी, निकृष्ट वार एवं दिशाशूल को सामने अथवा दाँई ओर रखना चाहिए। चन्द्रमा तथा मध्यम वार को पीछे अथवा बाँई ओर रखना चाहिए। मध्यम-कार्य हो तो चन्द्रमा और मध्यम वार को सामने अथवा दाँई ओर रखें।

तथा योगिनी को पीछे की ओर रखें। शुभवार यदि कोण में हो तो सामने के कोण में और निष्कृष्टवार हो तो दिशा में रखें। शुभवार हो तो सामने की दिशा में निष्कृष्टवार को रखें। पिछले दृष्ट में 'उदभिति' 'शुभाशुभ दिशा-चक्र' द्वारा विषय को भलीभाँति समझ लें।



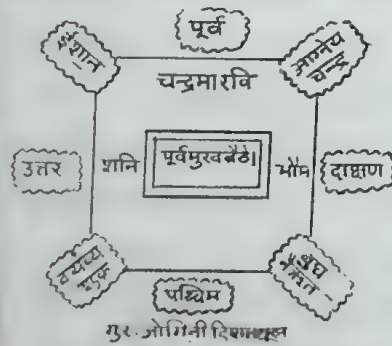
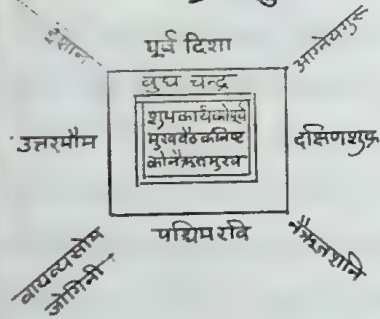
किसी कार्य के लिए रविवार को बैठना हो तो उस समय बाँई ओर उदभिति चित्र के अनुसार बैठक रखनी चाहिए।

यदि किसी कार्य के लिए शनिवार को बैठना हो तो बाँई ओर को नीचे उदभिति चित्र की स्थिति में बैठना चाहिए। पश्चिम की ओर मुँह करके बैठने से चन्द्रमा, सामान्य दिशा एवं सामान्य वार सामने, शुक्र सामान्य वार दाँये, योगिनी ईशान कोण में, पीठ पीछे के दिन सामान्य, अल्पन्त निष्कृष्ट दिन शनिवार पीठ पीछे, उत्तम वार चन्द्र बाँई ओर तथा शुक्र उत्तर की ओर सामान्य रहता है। योगिनी की दृष्टि बाँई ओर मङ्गल पर रहती है तथा वृहस्पतिवार रविवार को देखता है।



यदि किसी अधिकार वृद्धि के लिए बुधवार के दिन बैठना हो तो अगले दृष्ट पर उदभिति चित्र के अनुसार बैठना चाहिए, इससे कार्य-सिद्धि में शीघ्रता होती है। इस स्थिति में बैठने से चन्द्रमा का

शुक्र दाँये रहते हैं, मंगल बाँये रहता है एवं योगिनी तथा शानि पीछे पीछे रहते हैं। ईशान-सुरख बैठने से चन्द्र, बुध तथा गुरु दाँये; योगिनी बाँये, शानि पीछे तथा मंगल भी बाँई ओर तुल्य रहते हैं।



मारण, एच्छादन का आरंभ करना हो तो नैऋत्य-सुरख बैठने से शानि सामने, योगिनी दाँये, बृहस्पति बाँये तथा चन्द्रमा बाँई ओर रहते हैं। (ऊपर का चित्र) किसी अधिकारकी प्राप्ति हेतु कही जाने का उपाय करना हो तो रविवार के दिन बैठना चाहिए। छुट्ट पूर्व की ओर, चन्द्रमा और रवि सामने, बृहस्पति, योगिनी और दिशाशूल पीछे पीछे, शानि बाँई ओर रहने से मनोरथ सिद्ध होता है (बाँई ओर नीचे वाला चित्र देखें)। इस स्थिति में योगिनी सामने, शानि दाँये, दिशाशूल बाँये, बुध तथा शुक्र पीछे; सूर्य-चन्द्र उत्तम तथा शुक्र पर मंगल भी टाँहि रहती है।

किसी मनोरथ, वैर और क्रोध के लिए शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को बाँये स्तर में बैठना चाहिए। छुट्ट पूर्व दिशा की ओर तथा योगिनी शुभ कोण में और शुभ दिशा में हो तो बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। इस स्थिति में चन्द्रमा, बृहस्पति सामने; चन्द्र पीछे; योगिनी ईशान में; शानि बाँये, दिशाशूल दाँये; शुक्र, मंगल सामने के कोण में; रवि तथा योगिनी सामने-सामने के कोणों में तथा बुध और शानि सामने-सामने की दिशाओं में रहते हैं।

अन्य ह्वातव्य - यन्त्र-मन्त्र साधक को निम्नलिखित विषयों का ज्ञान होना भी आवश्यक है -

(१) षड्-कर्मों के लिए छेय पदार्थ - षड्-कर्मों के लिए १६ पदार्थों की जानकारी आवश्यक होनी चाहिए -

१ देवता, २ देवता का वर्ण, ३ ऋतु, ४ दिशा, ५ दिन, ६ आसन, ७ विन्यास, ८ मण्डल, ९ मुद्रा, १० अक्षर, ११ मूले-द्वय, १२ समिधा, १३ माला, १४ अग्नि, १५ लेखन-द्रव्य, १६ कुण्ड, १७ सुवा, १८ मुचि, १९ लेखनी। इनमें से कुछ के विषय में पहले लिखा जा चुका है। अन्यो के विषय में यहाँ लिखा जा रहा है।

देवता और उनके वर्ण - रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा, काली - ये सब यथाक्रम से षड्-कर्मों के देवता हैं। शान्ति-कर्म की अधिष्ठात्री देवी 'रति' है। स्तम्भन की 'लक्ष्मी', वशीकरण की सरस्वती, विड्वेषण की ज्येष्ठा, उच्चाटन की दुर्गा तथा मारण की भद्रकाली हैं। अतः जो भी कर्म करना हो उसकी अधिष्ठात्री देवी का पूजन एवं च्छान सर्वप्रथम करना आवश्यक है। रति का वर्ण श्वेत, सरस्वती उरुण, लक्ष्मी का हल्दी जैसा पीला, ज्येष्ठा का मिश्रित, दुर्गा का काला तथा काली का धूसर है। प्रत्येक कार्य के आरंभ में उसके देवता का उसके अपने वर्ण जैसे ही रंगीन धुपों द्वारा पूजन करना चाहिए।

आकर्षण, क्षोभन तथा वशीकरण में लाल रंग का, शान्ति-कर्म में श्वेत रंग का, स्तम्भन में पीले रंग का, उच्चाटन में धूमवर्ण का, विड्वेषण में गहरे लाल रंग का तथा मारण-कर्म में काले वर्ण का च्छान करना चाहिए।

षड्-कर्मों की दिशाएँ - शान्ति-कर्म की ईशान, वशीकरण की उत्तर, स्तम्भन की पूर्व, विड्वेषण की नैऋत्य, उच्चाटन की वायव्य तथा मारण की स्वामिनी आग्नेय दिशा है। जैसा कर्म करना हो, उसीके अनुकूल

दिशा में मुँह करके बैठना चाहिए।

जप के भेद - जप तीन प्रकार के होते हैं - (१) वाचिक, (२) उपांशु तथा (३) मानसिक। जप करते समय दूसरे को भी शब्द सुनाई दे, उसे 'वाचिक' कहते हैं। जप करते समय स्वयं को तो शब्द सुनाई दे, परन्तु दूसरे को सुनाई न दे, उसे 'उपांशु' कहते हैं। जिस जप में केवल होठ तथा जिह्वा हिलती हुई दिखाई दे और मन ही-मन जप किया जाय, किसी को भी शब्द सुनाई न दे, उसे 'मानसिक' जप कहते हैं। मारण आदि कर्मों में 'वाचिक', शान्ति तथा पुष्टि कर्मों में 'उपांशु' तथा मोक्ष-कर्म में 'मानसिक' जप करना श्रेष्ठ माना गया है।

मन्त्रों के लिङ्ग भेद - 'स्वाहा' अन्त वाले मन्त्र 'स्त्री-लिङ्ग', 'नमः' अन्त वाले नपुंसक लिङ्ग तथा 'हुं फट्' अन्त वाले 'पुल्लिङ्ग' संज्ञक होते हैं। विद्वेषण, उच्चाटन तथा वधन आदि में 'हुं' पद का जप, द्वेदन में 'फट्' का, अग्नीष्ट तथा ग्रह-निवारण में 'हुं फट्' का, आयन तथा बोधन में 'वौषट्' का, अग्नि-कर्म में 'स्वाहा' का तथा सब प्रकार के पूजन में 'नमः' पद का प्रयोग करना चाहिए। वशीकरण तथा शान्ति-कर्म में 'पुल्लिङ्ग' संज्ञक, क्षुद्र-कर्म में 'स्त्री-लिङ्ग' संज्ञक तथा अन्यत्र नपुंसक संज्ञक मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

कलिपुग में सिद्धि दायक मन्त्र - नृसिंह का अक्षर, शक्राक्षर एवं अनुष्टुप् - ये तीन प्रकार के मन्त्र, एकाक्षर तथा अनुष्टुप् - ये दो प्रकार के अर्जुन (कार्तवीर्यपुर्जित) मन्त्र, द्विविध हयग्रीव मन्त्र, चिन्तामणि मन्त्र तथा क्षेत्रपाल, भैरव, यक्षराज, गोपाल, गणपति, चैतक यक्षिणी, मातङ्गी, सुन्दरी, श्यामा, तारा, कर्णपिशा-चिनी, शायरी, शकजटा, वामाकाली, नील सरस्वती, त्रिपुरा एवं काल रात्रि के मन्त्र कलिपुग में अग्नीष्ट फल देते हैं।

विभिन्नवर्णों को देय मन्त्र - अक्षर, दक्षिणामूर्ति, उमामहेश्वर, हयग्रीव, वाराहवलक्ष्मीनारायण के मन्त्र, पुणव आदि चार वर्ण वाले अग्नि के मन्त्र, सूर्य के मन्त्र, पुणव सहित गणपति एवं हरिद्रा गणपति के मन्त्र, अष्टाक्षर सूर्य मन्त्र, षडक्षर राम मन्त्र, नृसिंह मन्त्र, पुणव एवं वैदिक मन्त्र - ये सब शूद्रों के अतिरिक्त तीनों वर्णों के लोगों को देय हैं। सुदर्शन, पाशुपत, आग्नेयास्त्र तथा नृसिंह मन्त्र केवल ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को ही देय हैं, अन्यो को नहीं। हिलनस्तग, मातङ्गी, त्रिपुरा, कालिका, विष्व, लघु श्यामा, कालरात्रि, गोपाल, राम, उग्रनारायण भैरव के मन्त्र चारों वर्णों को देय हैं।

ब्राह्मणों को माया (ही), काम (क्ली), मी (मी) तथा वाक् (रें) बीज देने चाहिए। माया बीज (ही) को छोड़ कर शेष (क्ली, मी तथा रें) बीज क्षत्रियों को देय हैं। मी (मी) तथा वाक् (रें) बीज वैश्यों को; वाक् (रें) बीज शूद्रों को तथा वर्म (हुं) वषट् एवं नमः - ये अन्यो को देय हैं।

कलश-स्थापन - शान्ति-कर्म में नवरत्नों से अलंकृत स्वर्ण-कलश की स्थापना श्रेष्ठ होती है। स्वर्ण-कलश के अभाव में चाँदी अथवा ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए। अभिचार-कर्म में लोहे का कलश, विद्वेषण में काँच का कलश, मोहन में चाँदी का कलश तथा उच्चाटन में मिट्टी का कलश श्रेष्ठ माना गया है। यदि किसी अवसर पर विशेष धातु का कलश उपलब्ध न हो तो ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए, क्योंकि ताँबे का कलश सभी कार्यों के लिए उत्तम माना जाता है। यदि वह भी उपलब्ध न हो तो देवता से क्षमा-याचना पूर्वक मिट्टी के कलश का ही प्रयोग करना चाहिए। परन्तु मन में यह कल्पना अवश्य करनी चाहिए कि यह अमुक धातु का प्रतिरूप है।

हवन - सामग्री - शान्ति - कर्म में दूध, ची, तिल, गुलर तथा पीपल की लकड़ी अथवा अमर बेल और खीर का उपयोग हवन में करना चाहिए। पुष्टि - कर्म में दूध, बेलपत्र अथवा चमेली के फूलों से हवन करें। कल्याण - प्राप्ति की इच्छा रखने वाला खीर का हवन करें। लक्ष्मी - प्राप्ति के लिए कमलगट्टा दही अथवा घृतप्लुत अन्न का हवन करें। समृद्धि के लिए घृत, बिल्वपत्र तथा तिल का हवन करना चाहिए। आकर्षण के लिए चिरौंजी तथा बिल्व-फल का हवन करें। उच्चाटन के लिए कोए के पंखों का हवन करें। वशीकरण के लिए राई तथा लवण का हवन करें। मोहन के लिए चहूरे के बीजों का हवन तथा मारण के लिए चिम और रुधिर का हवन करना चाहिए।

फलों के होम से सुख प्राप्ति, पलाश के होम से इष्ट सिद्धि तथा फनेर के होम से रिचपाँवरा में होती है। गिलोय के होम से रोगों का नाश होता है। दूरी के होम से बुढ़ि बढ़ती है तथा गुड़ के होम से लोग वश में होते हैं। बेलपत्र, घृत, कमल, गुलाब एवं चमेली के फूलों से हवन करने पर लक्ष्मी का लाभ होता है। सकेद सरसों तथा चमेली के होम से कीर्ति बढ़ती है। जालीपुष्पों के होम से वाक्सिद्धि होती है। धान, घव, प्लाक्ष, उदुम्बर एवं पीपल की समिधा तथा त्रिमधुर सहित तिलों के होम से इष्ट सम्पत्ति का लाभ होता है। बाक, लिसौड़ा, राजवृक्ष तथा गुलाब के होम से जालान आदि वर्ण वशीभूत होते हैं। कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं के होम से सौभाग्य-वृद्धि होती है। बटेड़ों के होम से शत्रुओं को रोग तथा पागलपन होता है। मोर पंखों के होम से शत्रु को भय, उड़द के होम से शूकता तथा शालमली के होम से शत्रुओं का नाश होता है। विधिवत् उपासना तथा होम करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

हवन की मुद्रा - हवन करने की मुद्राये तीन प्रकार की होती हैं-- (१) शुकरी, (२) हंसी और (३) मृगी। हाथ को सिकोड़ का दी जाने वाली आहुति को 'शुकरी मुद्रा'; कनिष्ठा अंगुली को छोड़ कर जो आहुति दी जाती है उसे 'हंसी मुद्रा' तथा कनिष्ठा और तर्जनी अंगुली के योग से जो आहुति दी जाती है, उसे 'मृगी मुद्रा' कहते हैं।

समिधा - शान्ति-कर्म में गाय का घी मिश्रित दूर्वा की समिधा, वशीकरण में बकरी का घृत मिश्रित अनार की समिधा, स्तम्भन में भेड़ का घी मिश्रित अमलतास की समिधा, विद्वेषण में आतसी का तेल मिश्रित धतूरे की समिधा, उच्चाटन में सरसों का तेल मिश्रित आम की समिधा तथा मारण में कुड़-तेल मिश्रित खैर की समिधा से होम करना प्रशस्त होता है।

शुभ-कर्मों में बेल, आक, डाक एवं दूध वाले वृक्षों की लकड़ियों से तथा अशुभ-कर्म में कुचिला, बहेड़ा, नींबू, धतूरा एवं लिसोड़े की लकड़ियों से अग्नि प्रज्वलित करनी चाहिए।

अग्नि की लिखाओं का पूजन - शान्ति-कर्म में अग्नि की 'सुप्रभा' नामक लिखा का पूजन करना चाहिए। वशीकरण में 'रक्षा' संलोक, स्तम्भन-कर्म में 'हिरणा' संलोक, विद्वेषण में 'गगना' संलोक, उच्चाटन में 'अतिरजिता' संलोक तथा मारण-कर्म में 'हृणा' संलोक लिखा का पूजन करना चाहिए।

कुण्ड-निर्माण - शान्ति आदि बड़े कर्मों में क्रमशः वृत्ताकार, पद्माकार, चतुरस्र, त्रिकोण, षट्कोण एवं उद्बुध-चक्राकार कुण्ड पश्चिम, उत्तर, पूर्व, नैऋत्य, वायव्य एवं दक्षिण दिशा में बनाने चाहिए।

गुण एवं भुवि - शान्ति में स्वर्ण के, वशीकरण में यक्षचूष के तथा स्तम्भन में लोहे के बनाने चाहिए।

माला-निर्णय - 'पुष्टि' तथा 'वशीकरण' के लिए मोती अथवा हीरे की माला से जप करना चाहिए। 'आकर्षण' के लिए मान वाले हाथी के दाँत की माला; 'विद्वेषण' के लिए तथा 'उच्चाटन' के लिए बहेड़े की माला से जप करना चाहिए। मारण-कर्म के लिए जिस मनुष्य की सखु बुधवार को न हुई हो, उसके दाँत अथवा अपने आप मेरे हुए गदहे के दाँत की माला से जप करना चाहिए। धार्मिक-आकांक्षओं की पूर्ति के लिए मणि अथवा शरव की माला से जप करें। सब कार्यों की सिद्धि के लिए कमलगढ़ की माला से जप करना चाहिए। रुद्राक्ष की माला पर बिछा हुआ जप भी सब फलों को देता है। स्फटिक मणि, मोती, रुद्राक्ष एवं पुनर्जीवी (जिंदा पोता) की माला पर जप करने से विद्या का लाभ होता है।

'मन्त्र महोदधि'कार ने षड्कर्मों के लिए क्रमशः शङ्ख, कमलगढ़, नींबू, नीम, छोड़े के दाँत तथा गदहे के दाँत की माला को पुष्टास्त बताया है।

शान्ति तथा पुष्टि-कर्म में कमलगढ़ का सूत्र (जोरा), आकर्षण तथा उच्चाटन-कर्म में छोड़े की छँद के बालों का सूत्र, मारण-कर्म में मनुष्य की नसों का सूत्र तथा अन्य कार्यों के लिए तथ्याक्ष की लोने वाली माला के मनकों को कपास के सूत्र (जोरे) में पिरोना पुष्टास्त कहा गया है।

सत्ताईस दानों की माला सिद्धि देने वाली होती है। अभिचार-कर्म में पन्ध्र दानों की माला फलदायक होती है। एक सौ आठ दानों की माला सभी शुभकार्यों के लिए शुभ बलाई गई है।

मोती की माला में सत्ताईस मोती, बहेड़े की माला में पन्ध्र बहेड़े तथा रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ दाने होने चाहिए।

शान्ति, आकषण, वशीकरण, पुष्टि, भोग एवं मोक्ष के लिए लप करते समय मध्यमा अँगुली में स्थित माला को अँगूठे से घुमाना चाहिए। स्तम्भन आदि में साधक को अनामिका अँगुली एवं अँगूठे द्वारा माला को घुमाना चाहिए। निदेषण तथा उच्चाटन में अँगूठा एवं तर्जनी अँगुली द्वारा माला घुमाना चाहिए। मारण-कर्म में कनिष्ठिका एवं अँगूठे से माला के दानों को घुमाना चाहिए।

होम-अग्नि - शान्ति एवं वशीकरण कर्म में लौकिक-अग्नि (सामान्य घरेलू अग्नि) में; स्तम्भन के लिए बरगद की लकड़ी के संधन से उत्पन्न अग्नि में; निदेषण में बहेड़े की लकड़ी से उत्पन्न अग्नि में तथा उच्चाटन एवं मारण-कर्म में घूमघान की अग्नि में होम करना चाहिए।

श्राद्ध-भोजन - शान्ति एवं वशीकरण में होम के दशांश तुल्य श्राद्धों को भोजन करना चाहिए। यह ३ तम माना गया है। होम की संख्या के पच्चीसवें भाग तुल्य श्राद्ध-भोजन 'मध्यम' तथा दशांश तुल्य श्राद्धों को भोजन करना अधम माना गया है।

अत्यन्त कुलीन वंश में उत्पन्न, षड् वेदों के हाता, पवित्र एवं सदाचार परायण श्राद्धों को विविध प्रकार के भोजन कराने चाहिए। उनका सुन्दर वस्त्रों से पूजन कर, उन्हें देवता मानकर बारम्बार पुणाम करना चाहिए तथा मधुरवाणी से स्वर्ण आदि देकर उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए।

लेखन-द्रव्य - शान्ति आदि षड् कर्मों में चन्दन, गोरोचन, हल्दी, गुहधूम, चिता का अङ्गूर तथा विषाष्टक (आठ प्रकार के धिस) - इन द्रव्यों द्वारा कुम्भ, विभिन्न कर्मों के यन्त्र लिखने चाहिए (पीपल, काली-मिर्ची, सोठ, वाज की बीट, अण्ठी, गुहधूम, चहरे का रस तथा लवण - इन आठ वस्तुओं को 'विषाष्टक' कहते हैं)।

लेखनाधार - शान्ति एवं वशीकरण में भोजपत्र पर, स्तम्भन में बाधम्बर पर, विद्वेषण में गदहे की खाल पर, उच्चाटन में खज्जा के वस्त्र पर तथा मारण में मनुष्य की हड्डी पर यन्त्र लिखना चाहिए। यदि किसी यन्त्र के साथ किसी विशिष्ट वस्तु पर यन्त्र-लेखन का निर्देश दिया गया हो तो उसी पर यन्त्र लिखना आवश्यक होगा।

लेखनी - शान्ति-कर्म में सोने की, चाँदी की अथवा चमेली की लेखनी का प्रयोग करना चाहिए। वशीकरण में दूर्वा की, स्तम्भन में अगस्त्य-वृक्ष अथवा अमलतास की लकड़ी की; विद्वेषण में करञ्ज की; उच्चाटन में बटेड़े की तथा मारण-कर्म में मनुष्य की हड्डी की लेखनी बनानी चाहिए।

शुभ कर्मों के लिए शुभ-मुहूर्त में तथा अशुभ-कर्मों के लिए रिक्ता-तिथि (चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी), मंगलवार तथा 'विष्टि' करण में लेखनी का निर्माण करना चाहिए।

मध्य-वस्तुएं - शान्ति एवं वश्यकर्म करते समय हविष्यान्न, स्तम्भन-कर्म के समय खीर, विद्वेषण के समय उड़द एवं मूँग, उच्चाटन के समय गेहूँ तथा मारण-कर्म करते समय मसूर तथा काली बकरी के दूध की खीर खानी चाहिए।

तर्पण की वस्तुएं - शान्ति एवं वशीकरण में हल्दी-मिश्रित जल; स्तम्भन एवं मारण-कर्म में मिर्ची-मिश्रित गुनगुना जल तथा विद्वेषण एवं उच्चाटन-कर्म में भेड़ का बक्का मिश्रित जल 'तर्पण' के लिए प्रसारित करा है।

शान्ति एवं वशीकरण में सोने के पात्र में, स्तम्भन में मिट्टी के पात्र में, विद्वेषण में खैर के पात्र में, उच्चाटन में लोहे के पात्र में तथा मारण-कर्म में मुगी के अण्डों में तर्पण करना चाहिए।

शान्ति एवं वशीकरण में मृदु आसन पर बैठ कर तर्पण करना चाहिए। स्नान में घुटनों से उठ कर तथा विद्वेषण आदि में एक पाँव से खड़े होकर तर्पण करना चाहिए।

पञ्चभूतों का उदय - जब दोनों नासापुटों के नीचे श्वास चलता हो, तब जल-तत्त्व का उदय जानना चाहिए - यह शान्ति-कर्म में सिद्धिदायक होता है। नाक के मध्य से दण की भाँति सीधी श्वास की गति होने पर 'पृथ्वी-तत्त्व' का उदय होता है - यह स्नान में सिद्धिदायक माना गया है। नासा-दिष्टों के बीच में ही श्वास की गति होने पर आकाश-तत्त्व का उदय होता है - यह विद्वेषण में श्रेष्ठ फलदायक होता है। नासापुटों से ऊपर श्वास की गति होने पर 'अग्नि-तत्त्व' का उदय होता है - यह मारण तथा वशीकरण-दोनों में सफलतादायक होता है। श्वास की तिर्यक् गति होने पर 'वायु-तत्त्व' का उदय जानना चाहिए - यह उच्चाटन के लिए प्रशस्त माना गया है।

त्रिलोह - पन्नों को भोजपत्र पर लिखकर प्रायः तौबा, चाँदी, स्वर्ण अथवा त्रिलोह के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण किया जाता है। 'त्रिलोह' में (१) सोना, (२) चाँदी और (३) तौबा - ये तीनों धातुएँ मिश्रित रहती हैं। कुछ आचार्य 'त्रिलोह' के अन्तर्गत सोना, चाँदी तथा लोहा की गणना करते हैं।

अष्टधातु - (१) सोना, (२) चाँदी, (३) तौबा, (४) लोहा, (५) जस्ता, (६) रौंदा, (७) काँसा और (८) पारा - इन आठ धातुओं को सम्मिलित रूप में 'अष्टधातु' कहा जाता है। जिस प्रकार 'त्रिलोह' के ताबीज तथा चन्क आदि बनते हैं, उसी प्रकार अष्टधातु के भी बनाये जाते हैं। पूजा-पन्नों के निर्माण तथा तान्त्रिक-अंगूठी बनाने में भी अष्टधातु का प्रयोग किया जाता है।

यन्त्र-लेखन विधि - स्नानादि से निवृत्त हो, ध्यान (सुमधु) तथा मन्त्रों का प्रयोग करके मन से कुल-देवता का ध्यान एवं पूजन करने के उपरान्त एकान्त-स्थान में यन्त्र-लेखन का कार्य आरम्भ करे। जिस यन्त्र को जिस वस्तु पर तथा जिन पदार्थों द्वारा जिस प्रकार से लिखने का निर्देश दिया गया हो, तदनुसार ही लेखन-कार्य करना चाहिए।

अभीष्ट यन्त्र को लिखने के बाद तीन दिनों तक विधि-विधान सहित उसका पूजन करे। इस अवधि में ब्रह्मचर्य धारण कर पृथ्वी पर शयन करना चाहिए तथा सात्विक-पदार्थों का भोजन करना चाहिए। इस अवधि में अधिष्ठाता-देवता साधक को स्वप्न में यह बतादेगा कि उसका साधन सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध अथवा अरि - किस भाव का है? यदि स्वप्न न हो तो प्रयोग को असिद्ध समझना चाहिए। स्वप्न में देवता के मुख से जैसा सुने, उसी के अनुसार विधि-विधान पूर्वक कार्य करते से सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

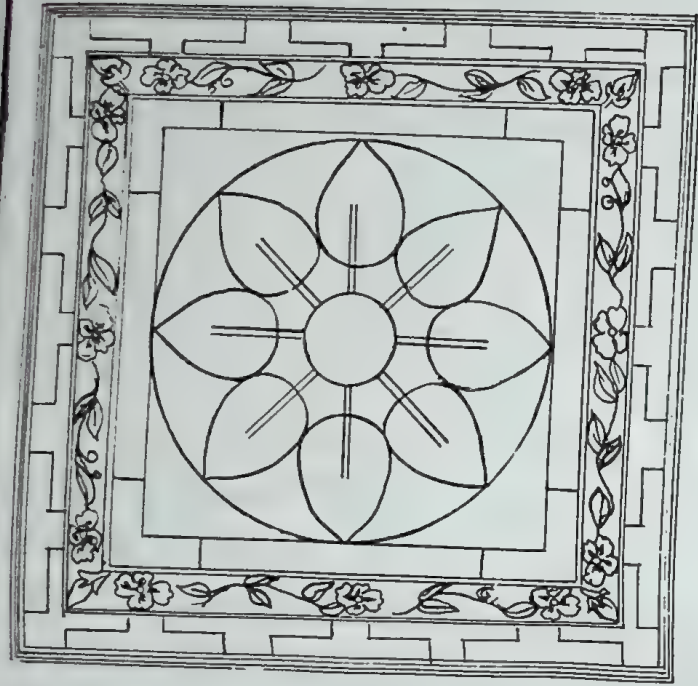
यन्त्र-लेखन के समय साधक नाम के अन्त में षष्ठी-विभक्ति लगाकर लिखे। बीच में बीजों को लिखे नीचे साध्य के नाम के अन्त में द्वितीया विभक्ति लगाकर लिखे। दोनों ओर नीचे 'कुं-कुं' उसके नीचे त्रियदयुक्त सर्गबीज (अः) को लिखे। फिर इशानादि-चारों कोनों में 'हंसः' 'सोऽहं' तथा 'पुणव-बीज' (ॐ) के चारों ओर दिग्बीजों को तथा प्रत्येक दिशा में 'यन्त्र-गायत्री' के तीन वर्णों को लिखना चाहिए। यन्त्र-गायत्री यह है - "यन्त्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।" - इस यन्त्र-गायत्री के द्वारा प्राण-परिष्ठा के मन्त्रों के वर्णों से यन्त्र को चारों ओर से

वेष्टित करें। इस प्रकार सावधानी से यन्त्र को लिखकर, स्वर्णादि से यन्त्र को वेष्टित कर, यन्त्र की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। 'सर्वतो भद्रमण्डल' में (जिनके स्वरूप को आगे उद्दिष्ट किया गया है), अष्टदलों में कलशों की स्थापना कर, उसके ऊपर यन्त्र को रखना चाहिए। मण्डल के चारों कोनों में चार कलशा कूर्च-बीज लगाकर, हजार बार जपें। फिर उस यन्त्र को चारों कलशों के जल द्वारा अभिषेक के मन्त्रों से उभिषेक कर, गन्ध-गुप्पादि से पूज कर, यन्त्र में 'प्राण-प्रतिष्ठा' के मन्त्रों द्वारा यन्त्र-देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करके, पूर्वोक्त 'यन्त्र गायत्री' के द्वारा षोडशोपचार पूजन करें। फिर ब्राह्मणों, सुवासिनी तथा कन्याओं को भोजन करा, दक्षिणा देकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण करें। फिर जिस अङ्क में यन्त्र को धारण करने का निर्देश दिया गया हो, उस अङ्क में यन्त्र को धारण करें।

जहाँ किसी विशिष्ट वस्तु पर यन्त्र लिखने का विधान न दिया गया हो, वहाँ यन्त्र को भोजयन्त्र पर लिखना चाहिए। जहाँ यन्त्र को लिखने के लिए किसी विशिष्ट लेखन-द्रव्य का निर्देश न हो, वहाँ केशर, गोरोचन, कपूर, कैसर, गज-मद, कस्तूरी, चन्दन और जगार — इनमें से किसी एक अथवा सब वस्तुओं के सम्मिश्रण से उसे लिखना चाहिए। जहाँ किसी लेखनी का विधान न हो, वहाँ सोने की सलाई से अथवा चन्दन की सलाई से यन्त्र को लिखना चाहिए। जहाँ किसी में भर कर यन्त्र को धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ सोने के ताबीज में अथवा उसके अभाव में चाँदी के ताबीज में यन्त्र को भर कर धारण करना चाहिए। जहाँ किसी अङ्क-विशेष में धारण करने

का निर्देश न हो वहाँ पुत्र को अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में स्पर्श करनी को बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए। कुछ यन्त्र धारण करने के लिए नहीं, अपितु केवल पूजन करने के लिए ही तैयार किए जाते हैं। ऐसे यन्त्रों को स्वर्ण, चाँदी, ताम्र अथवा अष्टधातु के पात्र में अंकित करा लेना अधिक उपयुक्त रहता है, क्योंकि धातु-पात्र पर निर्मित यन्त्र स्थायी होते हैं और वे पूजनादि के पदार्थों का संस्पर्श पाकर विकृत भी नहीं होते। मकान अथवा दूकान आदि में टँगने के लिए भोजपत्र, कागज अथवा धातु पर अंकित यन्त्रों को भी उपयोग में लाया जा सकता है।

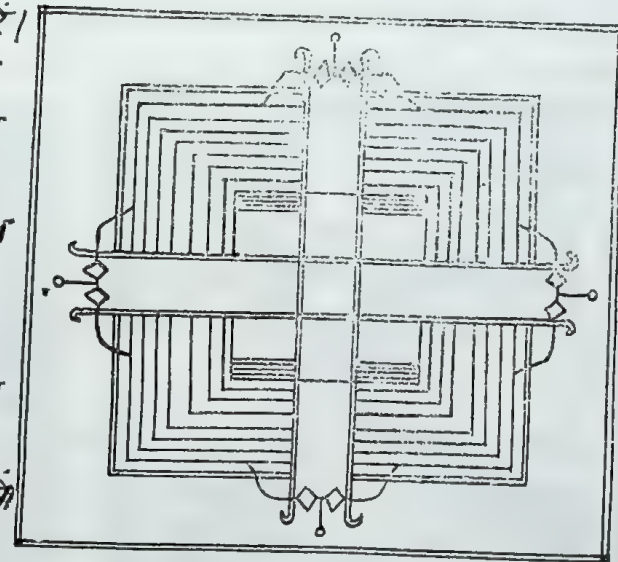
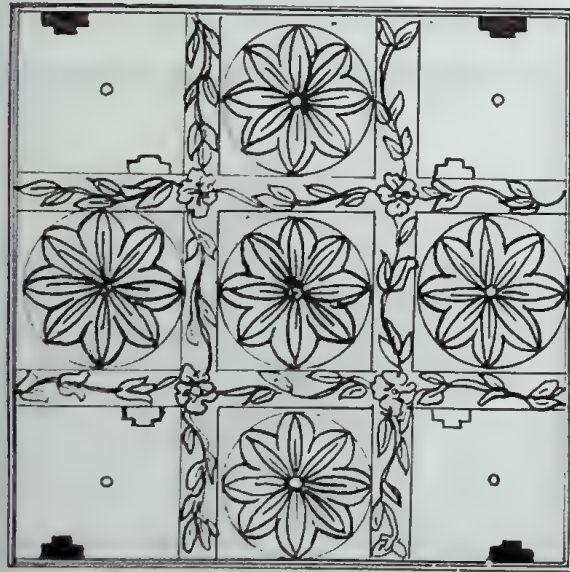
मैत्री के लिए यन्त्र को लिखना हो तो मिट्टी अथवा गाध के घृत को मुँह में रख कर लिखना चाहिए तथा अगर, तगर, चन्दनचूरा, गुग्गुलु, मिट्टी, गाध का घृत, शहद, कथूर, दालचीनी, जायफल तथा मेवा को एकत्र कर धूप देनी चाहिए। यदि मारण अथवा उच्चाटन के लिए यन्त्र लिखना हो तो सेंधा नमक और नीम का पत्ता मुँह में रख लेना चाहिए और इन्दी की धूप देनी चाहिए। यदि जिह्वा-साम्भन के लिए लिखना हो तो मुँह में मोम रख लेना चाहिए तथा उसी की धूप देनी चाहिए। जिस यन्त्र के साथ जिस मन्त्र के जप का निर्देश दिया गया हो, उसका विधि पूर्वक जप करना चाहिए। यन्त्र-साधना की अवधि में हर प्रकार की अपवित्रता, हर प्रकार के मैथुन तथा हर प्रकार के अविश्वास एवं सन्देह से दूर रहना चाहिए। जो साधक शुद्धचित्त से, पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा के साथ तथा सन्देह-रहित होकर विधि-विधान से साधना करते हैं, उन्हें इच्छित-फल की प्राप्ति होती है। कलश-स्थापन के लिए 'सर्वतोभद्रमण्डल' आदि की निर्माण-विधियों का उल्लेख आगे किया जा रहा है।



मण्डल - रचना - विधान - साधक को अपनी साधन क्रिया
प्रारंभ करने से पूर्व 'सर्वतोमद' आदि मण्डल की रचना करनी
चाहिए। यहाँ तथा अगले पृष्ठों पर सर्वतोमद मण्डल, स्वल्प
सर्वतोमद मण्डल, नवनाभ मण्डल, पञ्चाक्षर मण्डल, चतु-
र्लिंग तोमद चक्र, सामान्य मण्डल तथा सर्वतोमद चक्र - इनके
स्वरूप को अलग - अलग चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया
जा रहा है। इनमें से किसी भी एक मण्डल की रचना करके कार्य
को सम्पन्न किया जा सकता है।

मण्डल की रचना करके उसे पञ्चवर्णों द्वारा चित्रित
करना चाहिए। पञ्चवर्णों के सम्बन्ध में निम्नानुसार समझे:-

- (१) पीतवर्ण - हल्दी का धूर्ण।
- (२) वैश्ववर्ण - चावलों का धूर्ण।
- (३) रक्तवर्ण - कुसुम के फूलों का धूर्ण।
- (४) कृष्णवर्ण - शस्य होत - चान्द (समा के कावरा आदि)
को जालाकर उसका बनाया हुआ धूर्ण।
- (५) हरितवर्ण - किल्व पत्र का धूर्ण।

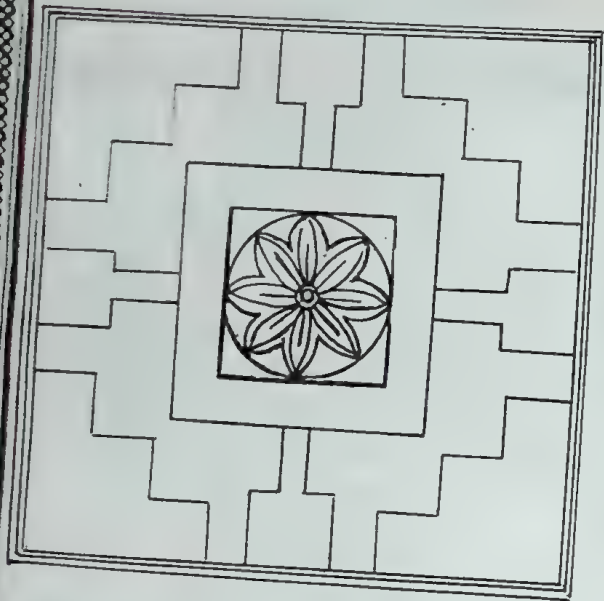


द्वारा सभी सीमा-रेखाएँ
एक अंगुल ऊँची चिह्नित करें।
पीतवर्ण द्वारा कर्णिका, रक्त
वर्ण द्वारा केशर तथा शुक्ल
वर्ण द्वारा सभी पत्र रंजित
करके श्यामवर्ण द्वारा समस्त
सन्धि-स्थानों को चिह्नित
करना चाहिए।

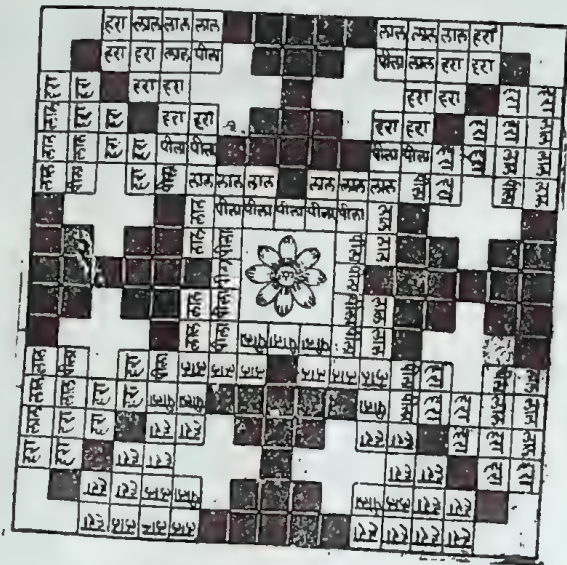
प्रकारान्तर से कर्णिका
को पीतवर्ण, केशर को
पीत-रक्तवर्ण, सन्धि-स्थानों
को कृष्णवर्ण, पीठ-गर्भ
को शुक्ल अथवा हरित वर्ण

पीठ पद को रक्तवर्ण रंगना चाहिए तथा पीठ गात्र को शुक्लवर्ण से चिह्नित करके बीचियों में पत्र-पुष्पों
सहित कल्पलता को सभी वर्णों द्वारा रंजित करना शुश्रूषा माना गया है।

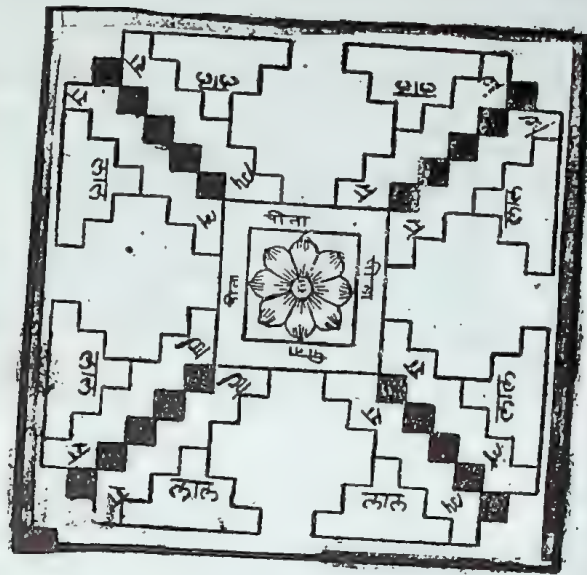
स्वल्प सर्वतो भद्र मण्डल



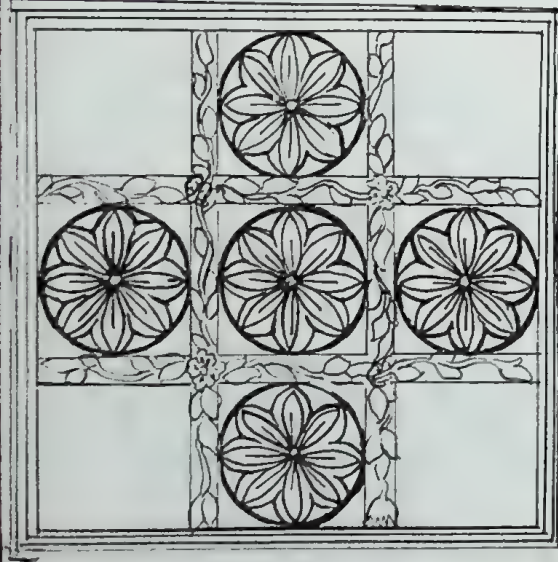
चतुर्लिङ्ग-लोभय चक्र



सर्वतो भद्र चक्र



उक्त मण्डलों की रूपरेखा चित्रों में प्रदर्शित हैं। इनमें रंग-योजना का संकेत भी चतुर्लिङ्ग-लोभय चक्र तथा सर्वतो भद्र चक्र के प्रदर्शित रूपों में दे दिया गया है। रंग-योजना के सम्बन्ध में अगला पृष्ठ भी देखें।

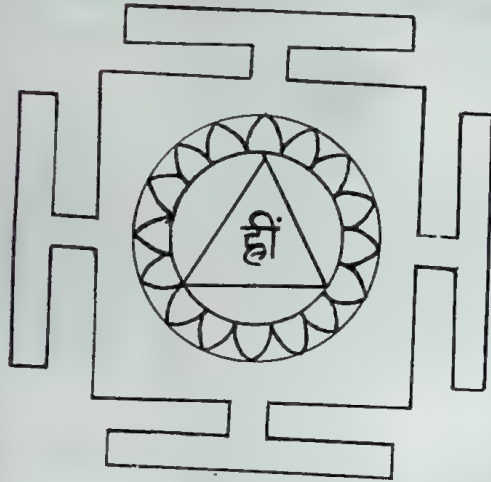


सभी द्वारों को शुक्लवर्ण, शीमा को रक्तवर्ण, उपशीमा को पीतवर्ण तथा चारों कोणों को लुण्ठवर्ण चिह्नित करके मण्डल के बाहर श्वेत वर्ण तथा रक्तवर्ण की तीन रेखाएँ चिह्नित करनी चाहिए।

मण्डलों में रंग-घोषणा के कतिपय नियमों का उल्लेख ऊपर किया गया है, तथापि इनसे भिन्न नियमों के आधार पर भी रंग-घोषणा की जा सकती है। इसी प्रकार मण्डलों के स्वरूप को भी भिन्न रूप में आकर्षक बनाया जा सकता है। परन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि रंग-घोषणा अथवा आकार-भिन्नता ऐसी न हो, जो मण्डल के मूल-स्वरूप को ही बदल कर रखदे।

विशेष - अर्द्धचन्द्र की आकृति वाला तथा दोनों ओर दो कमल-चिह्न वाला जल का मण्डल' कहा गया है, यह शान्ति-कर्म में पुशस्त होता है। स्वरितक गर्भित त्रिकोण को 'वह्नि-मण्डल' कहते हैं, यह वशीकरण में पुशस्त माना गया है। वज्र सहित चतुरस्र भूमि का मण्डल कहा

गया है, यह सत्समन-कर्म में पुशस्त होता है। आकाश मण्डल वृत्ताकार होता है, जो विद्वेषण में पुशस्त माना गया है तथा द्रविण्डुओं से अंकित वृत्त वायु मण्डल होता है, जो उच्चारण में पुशस्त कहा गया है। वह्नि मण्डल मारण में भी प्रयोज्य है।



तो उससे अग्नि का बोध होता है।
 में किसी भाग की गणना कुं चित

यन्त्र और मन्त्र

यन्त्र तथा मन्त्र अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ यन्त्रों के साथ मन्त्रों का भी जप किया जाता है और कुछ यन्त्र बिना मन्त्र जप के ही फलदायी होते हैं। मन्त्रों के विषय में सहज-जानकारी प्राप्त करने हेतु सर्वप्रथम यन्त्रराज, सर्वतोभद्र, स्मरहरयन्त्र तथा कालीयन्त्र की आकृतियों को च्यान में रखना आवश्यक है (यन्त्रराज का चित्र इसी पृष्ठ पर बाँई ओर उद्दिष्ट है तथा अन्य यन्त्रों के चित्र आगे के पृष्ठों पर दिए जा रहे हैं)।

यन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्रों के संकेत होते हैं। अनेक यन्त्र प्रकृति के चरित्र का रहस्य बताते हैं तो कुछ यन्त्र मनुष्य तथा जानवरों के चरित्र का निरूपण करते हैं।

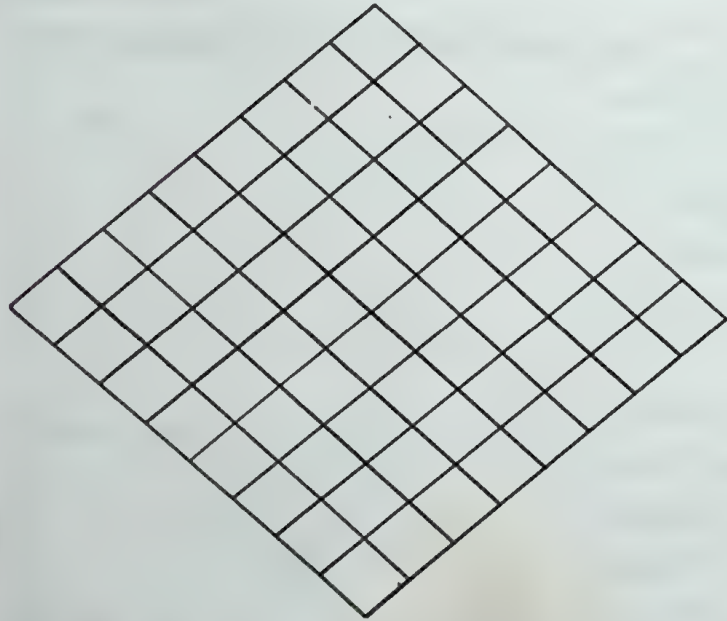
ऊर्ध्व अथवा ऊर्ध्वगति का ऊपर की ओर नौक वाले वाण के द्वारा बोध कराया जाता है, (देखें-स्मरहरयन्त्र) इस भाव की अभिव्यक्ति अग्नि-विरवाओं के चित्र द्वारा भी की जाती है। वाण का नौकदार फल-त्रिभुजाकार होता है। जब किसी त्रिभुज का शीर्षकोण ऊपर की ओर हो नीचे हो, तब उस त्रिभुज से जल का बोध होता है। अध्वत्त अथवा वृत्त त्रिभुज के भीतर होसकती है, क्योंकि दो दोरे के बीच का अधिक-से-अधिक

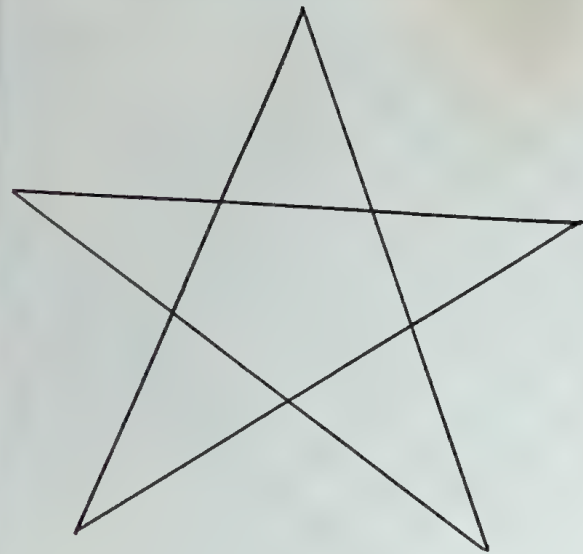
अन्तःकुम्भाः न्यून होकर शून्य पर पहुँच जाता है। इसीलिए वृत्त का कोई भी अंश जल का द्योतक माना जाता है।

हमारे मन में वृत्त की कल्पना का उदय चक्राकार गति से होता है। जब एक बिन्दु दूसरे बिन्दु के चारों ओर घूमता है तो उसकी गति चक्राकार होती है। चक्राकार गति से वृत्त बन जाता है। इस चक्राकार गति को प्राकृतिक-जगत में हम वायु की घूर्णन क्रिया के अन्दर देखते हैं। जब चक्रवात का अग्नि के साथ संयोग होता है, तब अग्नि भी घूमने लगती है। वही जब जल के साथ सम्पर्क में आता है, तब जल भी घूमने लगता है। यह घूमने की क्रिया ही चक्राकार गति है और इसका बोधा वृत्त के द्वारा होता है, अतः वृत्त वायु का चिह्न है।

यहाँ उद्विग्न चार यन्त्रों में से पहले 'यन्त्र-राज' का अर्थ यह है कि विश्व का उत्पादन-कारण अग्नि तत्त्व के आकार का है।

जो वायु तत्त्व से आवृत्त होकर घूमता है और इस प्रकार अपने चारों ओर सृष्टि की रचना करता है। इसका 'सर्वतोमदु यन्त्र' (अर्थात् उद्विग्न) महायन्त्र है। सर्वतोमदु का अर्थ है - 'सब ओर से सम चौरस'।





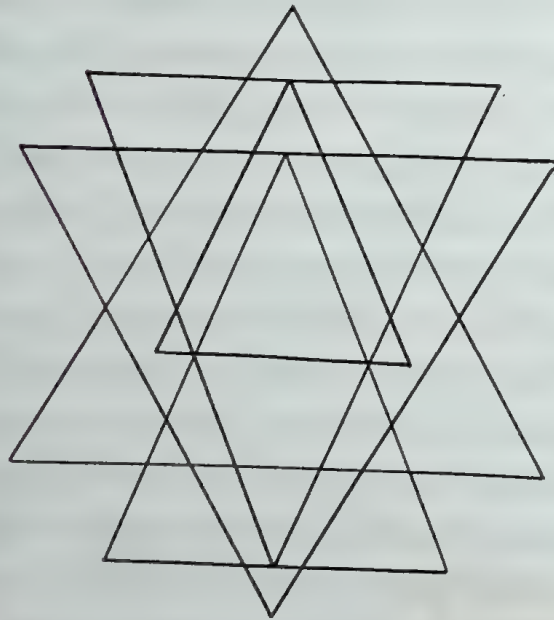
देखता है कि शत्रु उसे छवाने के लिए सामने आ रहा है तो वह उसे अपना दिव्य त्रिकोण रूपी बरखा

वीथी यन्त्र एक दूसरे प्रकार का 'स्मरहर यन्त्र' है। इसमें भिन्न प्रकार के पाँच त्रिकोण होते हैं। एक

देने वाला है। भगवान् विष्णु के रूप का नाम भी सर्वतोभूत है। इससे हमें यह विचार करने का अवसर मिला है कि अर्जुन एवं अश्वत्थाम, कृष्ण-शीलता एवं विद्याम तथा संग्रह एवं त्याग - इन सब बातों के सम्बन्ध में जीवन भलीभाँति तुला हुआ होना चाहिए। सब ओर से परीक्षा किये जाने पर भी जिसका आन्तरिक एवं वाह्य-जीवन एक-सा होता है, वही संसार में फलता-फूलता है।

तीसरा 'स्मरहर यन्त्र' है। इसके अर्थ के प्रभाव से मनुष्य काम पर विजय प्राप्त कर सकता है। यह यन्त्र पाँच त्रिकोणों से बनता है। जो साधक इस यन्त्र द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है, वह हृदय पूर्वक सब ओर से सतर्क रहता है कि कहीं कोई शत्रु उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक एवं भय आदि के शस्त्रों द्वारा विचलित न कर दे। इस यन्त्र का साधक हृदय पूर्वक सब ओर चर्चे जिधर जा सकता है। जब वह यह

स्मर-हर मन्त्र (२)



त्रिकोण के भीतर दूसरा त्रिकोण तथा उसके भी भीतर क्रमशः तीसरा तथा चौथा तथा पाँचवाँ त्रिकोण सन्निहित हैं। इनमें दो त्रिकोण जल के तथा तीन अग्नि के द्योतक हैं। जल के गर्भ में अग्नि रहती है। एक समुदाय जल का है और दूसरा अग्नि से व्याप्त है। ये दोनों समुदाय भी अग्नि के मध्य में सन्निविष्ट हैं। यह सम्पूर्ण समुदाय भी घूमता है तथा सब ओर चिंगारियाँ फेंकता है। यह समुदाय भी चल है। अग्नि की नैसर्गिक-शक्ति के द्वारा जल में से सृष्टि उत्पन्न होती है। क्रमशः ज्यों-ज्यों युग बीतते हैं, अग्नि भूमण्डल से विलीन होती जाती है तथा सृष्टि का क्रम बन्द हो जाता है। इस मन्त्र से यह सूचित होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि भ्रमण के सिद्धान्त पर अवलम्बित है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो घूमती न हो। चूँकि सत्ता भ्रमण पर अवलम्बित है तथा काम आदि विकार एक प्रकार के बन्धन हैं, जो भ्रमण में रुकावट डालते हैं, अतः हमें अपने विकारों का दमन करना चाहिए तथा अपने गुरु की प्रवर्तिता करना चाहिए, क्योंकि जिस प्रकार सूर्य अपने चारों ओर घूमने वाले ग्रहों को आलोक प्रदान करता है, उसी प्रकार गुरु भी हमें प्रकाश देते हैं। इस मन्त्र का यथावधि भाव नहीं है। इसी प्रकार अन्य मन्त्रों के विषय में भी समझना चाहिए। प्रत्येक मन्त्र एक इतिहास को समेटे है।

और घूमने वाले ग्रहों को आलोक प्रदान करता है, उसी प्रकार गुरु भी हमें प्रकाश देते हैं। इस मन्त्र का यथावधि भाव नहीं है। इसी प्रकार अन्य मन्त्रों के विषय में भी समझना चाहिए। प्रत्येक मन्त्र एक इतिहास को समेटे है।

परिभाषाएँ - यन्त्र-मन्त्र साधकों को तन्त्रशास्त्र सम्बन्धी कुछ आवश्यक परिभाषाओं तथा तकनीकी-शब्दों का ज्ञान होना भी आवश्यक है, अस्तु जिन विषयों का उल्लेख अब तक नहीं हो सका है, उनके संबंध में यहाँ लिखा जा रहा है -

(१) मन्त्र - मन्त्र किसी शब्द अथवा शब्द-समूह की वह ध्वनि है, जो अपने उच्चारणकारी में ऐसी शक्ति उत्पन्न करती है, जिसके प्रभाव से वह इच्छित कामना को पूर्ण करने में समर्थ हो जाता है। मन्त्रों का प्रयोग प्राण-शक्ति पर विजय प्राप्त करता है, जिसके प्रभाव से मन्त्र-साधक शक्ति-कुंज बन जाता है, मन्त्र का प्रभाव उच्चारण की जानेवाली विशिष्ट-ध्वनि से होता है। मन्त्रों द्वारा वांछित-फल प्राप्त करने के लिए पूजा, हवन आदि कुछ क्रियाएँ करने की आवश्यकता भी पड़ती है। समुचित क्रियाओं के संयोग से जब मन्त्र सिद्ध हो जाता है, तब साधक उसके प्रयोग द्वारा मनोबुद्धि-फल प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। मन्त्र अनेक प्रकार के होते हैं। उनकी संख्या करोड़ों में है। कुछ मन्त्र परलोक-साधक होते हैं तो कुछ भौतिक-सिद्धियाँ प्रदान करते हैं। कुछ देवी-देवताओं की पूजा देते हैं तो कुछ भूत, प्रेत, यक्षिणी आदि को वशवर्ती बनाते हैं। कुछ मन्त्र वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मारण, शान्ति-कर्म आदि में भी प्रयुक्त होते हैं। मन्त्र-विद्या का जनक भूत-भावत भगवान् शंकर को माना जाता है। उनकी पूजा द्वारा प्राचीन काल में जिन ऋषियों को मन्त्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ, उन्हें मन्त्र-दृष्टा के रूप में मान्यता मिली। मन्त्रों के विनियोग-वाक्य में प्रत्येक मन्त्र के उपदेष्टा अथवा दृष्टा ऋषि के नाम का उल्लेख भी किया जाता है। वैदिक कालीन संस्कृत भाषा के मन्त्रों के उदभव के बाद कालान्तर में जब अन्य

सम्प्रदायों तथा भाषाओं का उद्भव हुआ, तब उन सम्प्रदायों के मन्त्र-मन्त्रियों ने भी विभिन्न शक्तियों की सामर्थ्य का अपने-अपने ढंग से अन्वेषण कर, स्व-सम्प्रदायानुकूल अपनी ही भाषा में अनेक प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने वाले विभिन्न मन्त्रों की रचना की। बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों के प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, तिब्बती आदि भाषाओं में रचित मन्त्र उसी के परिणाम हैं। आर्यावर्त में भिन्न अल्प ईरान, अरब आदि देशों में जब अरबी, फारसी आदि भाषाओं का विकास हुआ तो वहाँ के विद्वानों ने भी अपनी-अपनी भाषाओं में मन्त्र-रचना की। इतना ही नहीं, भारतीय लोक भाषाओं में भी अनेक प्रकार के मन्त्रों का सृजन किया। गोरख-सम्प्रदाय ने ऐसे लोकभाषायी मन्त्रों को, जिन्हें सामान्यतः 'शावर मन्त्र' कहा जाता है, पुचारित-पुसारित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लोकभाषायी शावर-मन्त्रों के सम्बन्ध में एक अनुश्रुति यह भी है कि कलिपुग के दुष्प्रभाव से बचने के लिए शिवजी ने सभी प्राचीन मन्त्रों को 'कील' दिया अर्थात् अशुभावी बना दिया, तदुपरान्त जब उन्होंने यह अनुभव किया कि लोक-कल्पाण हेतु मन्त्र-विद्या का प्रचलन आवश्यक है, तब उन्होंने स्वयं ही शावर (भील) के रूप में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले लोकभाषायी मन्त्रों को पुचारित किया, जिन्हें शावर-मन्त्रों के नाम से जाना जाता है। ऐसे लोकभाषायी शावर-मन्त्रों का कोई लिखित प्राचीन ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। वे मातो गाँवों के ओम्हा, सघोले तथा भाड-झूँक का काम करने वाले साधु-पुजारियों आदि को कण्ठस्थ होते हैं अथवा गाँव के बड़े-बूढ़ों से सुनने को मिल जाते हैं। प्रकाश में ये वंश-परम्परा अथवा गुरु-शिष्य परम्परा से एक दूसरे को प्राप्त होते रहते हैं।

(२) शुद्धि - मन्त्र-साधना में चार प्रकार की शुद्धियों की आवश्यकता होती है - (१) कामशुद्धि - यह शुद्धि स्नान द्वारा होती है। इसे 'शरीर शुद्धि' भी कहा जाता है; (२) चित्त शुद्धि - यह शुद्धि मन से सभी दुर्वासनाओं को निकास देने तथा दया, शान्ति, क्षमा, उदारता आदि सद्गुणों को गहरा करने से होती है; (३) दिक्-शुद्धि - यह जप करने की विधि से अर्थात् दिक् के समय पूर्वामुख एवं रात्रि के समय उत्तरामुख होकर विधिबद्ध जप एवं पूजनादि कृत्य करने से होती है। परन्तु काम्य-प्रयोगों में जिस समय जिस दिशा की ओर मुँह करके बैठने का निर्देश किया गया हो, तदनुसार बैठने से ही 'दिक्-शुद्धि' होती है; (४) स्थान-शुद्धि - साधना-स्थल को भलीभाँति काढ़-बुहार कर तथा धो-पौधें कर शुद्ध कर देने को 'स्थान-शुद्धि' कहते हैं।

(३) आसन - काम्य-कर्मों के लिए आसन-प्रयोग के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है। मन्त्र-जप अथवा पूजनादि के लिए कम्बल, रेशम तथा कुश के आसनों का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः इन संबंधी-प्रयोगों में काले मृग-चर्म (कृष्णमृगकाला), मोक्ष हेतु बाजम्बर (बाज की खाल का आसन), दीर्घाशु के लिए कुशासन तथा व्याधि-नाश हेतु रेशमी आसन का प्रयोग उचित माना गया है। लालकम्बल का आसन काम्य-प्रयोगों में प्रशस्त माना जाता है।

(४) पञ्चाङ्ग - (१) विष्णु, (२) शिव, (३) गणेश, (४) कुम्भी और (५) सूर्य - ये पाँच मुख्य देवता हैं तथा इनके अलग-अलग गीता, सहस्रनाम, स्तोत्र, कवच तथा हृदय होते हैं। साधक के सम्बन्ध में जिस स्तोत्र, कवच आदि के पाठ का प्रचलन हो, उसी का ग्रह-निर्देशानुसार पाठ करना चाहिए। इन पाँचों के पाठ को ही 'पञ्चपद' सेवन कहते हैं। विभिन्न रणामय-वेदों में इनका उल्लेख पाया जाता है।

(५) मुद्राएं - हाथ की विभिन्न अंगुलियों को विभिन्न आकार देकर सुरभिमुद्रा, योगिमुद्रा, लिङ्गमुद्रा, मत्स्यमुद्रा, शंखमुद्रा आदि मुद्राओं को बनाया जाता है। इन मुद्राओं का उद्देश्य विभिन्न साधनों में विभिन्न प्रकारों से किया जाता है। किस स्थान पर किस मुद्रा का उद्देश्य करना चाहिए, यह संबंधित प्रयोग के साथ निर्दिष्ट रहता है। मुद्राओं के स्वरूप का ज्ञान तन्त्र ग्रंथों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

(६) बलि - देवता के लिए द्रव्य का समर्पण 'बलि' कहलाता है। बलि देने से विघ्न भ्रान्त होते हैं तथा साधक निरापद होकर सिद्धि प्राप्त करता है। बलि-द्रव्य पुष्पक-पुष्पक होते हैं। बलि-द्रव्य का निर्णय देवता के स्वभाव तथा कामना-भेद के अनुसार किया जाता है। प्रयोगों में 'बलि-द्रव्य' का उत्प्रेरक रहता है। तदनुसार ही देवता को बलि देनी चाहिए। 'वामाचार' में 'पशु-बलि' की पुष्पा है, परन्तु 'दक्षिणाचार' में उसे निषिद्ध माना गया है।

(७) ध्यान - निराकार अथवा साकार उपासनाओं में ध्यान का विशेष महत्व है। प्रत्येक देवता के ध्यान का स्वरूप भी प्रयोग के साथ ही निर्दिष्ट रहता है। मन के द्वारा इष्टदेव के स्वरूप को जानना ही ध्यान है, अतः वांछित फल की प्राप्ति के लिए मन को एकाग्र कर, अर्थात् एवं भक्ति पूर्वक ध्यान करना चाहिए।

(८) समाधि - मन को मन्त्र में तथा मन्त्र को देवता में लय करके जो स्थिति प्राप्त होती है, उसे 'समाधि' कहते हैं।

(९) मन्त्र-दीक्षा - गुरु की वृत्ता तथा शिष्य की अर्था- इन दो भावनाओं के संगम को 'दीक्षा' कहते हैं। दीक्षा द्वारा गुरु शिष्य में ज्ञान का संचार अथवा प्राप्तिप्राप्त करता है, तभी 'सिद्धि' मिल पाती है।

(१०) पुरश्चरण - गुरु द्वारा निर्देशित मार्ग से शिष्य जिस साधना विधि से 'मन्त्र-सिद्धि' प्राप्त करता है, उसे 'पुरश्चरण' कहते हैं। पुरश्चरण के स्थानों में - नदी-तट, पर्वत-शिखर, सिद्धपीठ, पुण्य-क्षेत्र, सरोवर-तट, देवालय, गोशाला, पुष्पसीवन, पीपल का वृक्ष, साँवले का वृक्ष, एकान्त-उद्यान, पर्वत की तलहटी, गुफा, तीर्थ, नदी-तंगम तथा अपना घर - ये स्थान उपयुक्त कहे गए हैं। काली, गारा, दिनमस्ता आदि मन्त्रों के पुरश्चरण हेतु श्मशान, निर्जन-गृह, रणभूमि, विजन-कानन, शिवालय तथा आकण्ठ जलवाला स्थान उशस्त माना गया है। 'ब्रह्मयामल' के अनुसार घर की तुलना में गोशाला में पुरश्चरण करने से दस गुना, वन में करने से सौ गुना, सरोवर में करने से सहस्रगुना, नदी-तट पर करने से लाखगुना, पर्वत पर करने से करोड़गुना, शिवालय में करने से अरबगुना तथा गुरु-सान्निध्य में करने से अनन्तगुना फल प्राप्त होता है।

(११) कर्तव्याकर्तव्य - पुरश्चरण काल में क्षौर, उबटन, स्त्री-संसर्ग, हिंसा, इष्टि-द्वेष, दम्भ, कुटिलता, क्रोध, दुर्वचन, बिना संकल्प किसे कर्म तथा बिना भोग लगभगे भोजन - ये सब वर्जित हैं। ऋतुकाल के अनुरिक्त अपनी विवाहिता-पत्नी से भी संसर्ग नहीं करना चाहिए। स्त्री-साधकों के लिए भी यही नियम है। परन्तु जिस स्त्री-साधिका ने अपने सिद्ध-पति से दीक्षा प्राप्त की हो, उसे अपने पति के साथ यौन-सम्पर्क के अनुरिक्त अन्य किसी प्रकार का सम्पर्क वर्जित नहीं है। मौन, त्रिकाल-स्नान, भूमि-शायन, निध-पूजा, देव-स्तुति, नित्यदान, नैमित्तिक-पूजा, इष्टदेव एवं गुरु में विश्वास तथा जप-निष्ठा - इन नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के दिन उपवास रख कर तथा समुद्रगामिनी नदी के जल की नानि-पान करना गलत है। खड़े रहकर स्यागन्धित से स्पर्शकाल से मोक्षकाल तक मन्त्र-जप करने से तत्काल सिद्धि होती है।

(१२) पञ्चोपचार - (१) गन्ध, (२) पुष्प, (३) धूप, (४) दीप तथा (५) नैवेद्य द्वारा प्रार्थना करने को 'पञ्चोपचार' कहते हैं।

(१३) दशोपचार - (१) पाद्य, (२) अर्घ्य, (३) आचमनीय, (४) मधुपर्क, (५) गन्ध, (६) पुष्प, (७) धूप, (८) दीप, (९) नैवेद्य तथा (१०) अक्षत - इनके द्वारा प्रार्थना करने को 'दशोपचार' कहते हैं।

(१४) छोड़ोपचार - (१) आह्वान, (२) आसन, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) स्नान, (७) वस्त्र, (८) आलंकार, (९) सुगंध,

(१०) पुष्प, (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) ताम्बूल, (१५) अक्षत और (१६) दक्षिणा - इन्हें 'छोड़ोपचार' कहते हैं।

(१५) पञ्चाध्वज - दूध, दही, घृत, मधु तथा शक्कर इनके मिश्रण को 'पञ्चाध्वज' कहा जाता है।

(१६) पञ्चगव्य - गाध का दूध, मूत्र, मेसर, घृत तथा दही - इन्हें सम्मिलित रूप में 'पञ्चगव्य' कहते हैं।

(१७) पञ्चधातु - सोना, चाँदी, लोहा, तँबा और जस्ता - इन्हें 'पञ्चधातु' कहा जाता है।

(१८) नव रत्न - माणिक्य, मूँगा, मोती, हीरा, नीलम, पुखराज, पन्ना, गोमेद और वैडूर्य (लहसुनियाँ)।

(१९) नव ग्रह - सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक, शनि, वाहु और केतु - ये नौ ग्रह हैं।

(२०) अष्ट गन्ध - अगर, तगर, गोरोचन, केसर, कस्तूरी, सफेद चंदन, लाल चंदन, सिद्ध (देव-प्रार्थना के लिए)।

अगर, लाल चंदन, हल्दी, कुंकुम, गोरोचन, जटामांसी, शिलाजीत और कपूर (देवी-प्रार्थना के लिए)।

(२१) पञ्चाङ्ग - किसी वनस्पति के (१) पत्र, (२) पुष्प, (३) फल, (४) दाल और (५) जड़।

(२२) तर्पण - नदी, सरोवर आदि के जल में थुल्लो तक पानी में रखे होकर, हाथ की अंगुलि द्वारा जल गिराने की क्रिया को 'तर्पण' कहते हैं। जहाँ नदी, सरोवर आदि न हों, वहाँ किसी वाहन में पानी भर कर भी तर्पण की क्रिया सम्पन्न करली जाती है।

- (23) आचमन - हाथ में जल लेकर उसे अपने मुँह में डालने को 'आचमन' करना कहते हैं।
- (24) करन्यास - अंगुठा, अंगुली, करतल तथा करपृष्ठ पर मन्त्र जपने को 'करन्यास' कहा जाता है।
- 25) हृदयादिन्यास - हृदय आदि अंगों का स्पर्श करते हुए मन्त्रोच्चारण करने को 'हृदयादिन्यास' कहा जाता है।
- (26) षडङ्गन्यास - 1 हृदय, 2 शिर, 3 शिखा, 4 कवच, 5 नेत्र एवं 6 करतल - इन 6 अङ्गों का स्पर्श करते हुए मन्त्रोच्चारण को 'षडङ्गन्यास' कहा जाता है।
- (27) अर्घ्य - शंख, अंजलि आदि द्वारा जल छोड़ने की क्रिया को 'अर्घ्य देना' कहते हैं। यज्ञ अथवा कलश में पानी भर कर रखने को 'अर्घ्य-स्थापन' कहते हैं। अर्घ्यपात्र में दूर्वा, तिल, कुश के दण्ड, सरसों, धव, पुष्प, चावल तथा कुंकुम - इन सब को डाला जाता है।
- (28) अभिषेक - मन्त्रोच्चारण करते हुए शंख से सुगन्धित जल छोड़ने को 'अभिषेक' कहते हैं।
- (29) समिधा - जिन लकड़ियों से अग्नि पुज्ज्वलित करके होम किया जाता है, उन्हें 'समिधा' कहते हैं। समिधा के लिए आक, पलाश, खैर, अपामार्ग, पीपल, उदुम्बर, शमी, कुश तथा आम की लकड़ियाँ ग्राह्य मानी गई हैं।
- (30) मन्त्र-श्रुति - जिस व्यक्ति ने मन्त्र को सर्वप्रथम विधिवत् सिद्ध किया, वह उसका श्रुति कहा जाता है।
- (31) दण्ड - मन्त्र को सर्वतोभावेन आच्छादित करने की विधि को 'दण्ड' कहा जाता है। यह अक्षरों अथवा पदों से बनता है। दण्ड का उच्चारण चूँकि मुरब से होता है, अतः इसका मुरब में न्यास किया जाता है।
- (32) देवता - जीवों के क्रिया-कलापों को प्रेरित, संचालित एवं नियन्त्रित करने वाली प्राणशक्ति को 'देवता' कहते हैं। यह शक्ति चूँकि हृदय में स्थित रहती है, अतः इसका न्यास भी हृदय में किया जाता है।

- (३३) बीज - मन्त्रशक्ति को उद्भाषित करने वाले तन्त्र को 'बीज' कहते हैं। इसका न्यास 'गुह्याङ्क' में किया जाता है।
 (३४) शाक्ति - जिसकी सहायता से बीज मन्त्र बन जाता है, उस तन्त्र को 'शाक्ति' कहते हैं। इसका न्यास 'पादस्थान' में करते हैं।
 (३५) विनियोग - मन्त्र को फल की दिशा का निर्देश देना 'विनियोग' कहलाता है।

[टिप्पणी - ऋषि तथा दत्तादि का हस्त न होने पर मन्त्र का फल प्राप्त नहीं होता]

- (३६) जप-भेद - जिसका तथा होठ को हिलाते हुए केवल स्वयं सुनई देने वाले मन्त्रोच्चारण को 'उपानुजप' तथा मन्त्र, मन्त्रार्थ एवं देवता में मतलगा का, मत-ही-मन मन्त्रोच्चारण करने को 'मानस जप' कहते हैं।
 (३७) वर्जितपुष्पादि - पीले रंग की कटसरैया, नागचम्पा तथा दोनो प्रकार की बृहती के फूल पूजा में नहीं चढ़ाये जाते। सूरवे, बासी, मलिन, दूषित तथा अगन्ध वाले पुष्प भी पूजा में वर्जित हैं। चम्पा तथा कमल की कलियों के अतिरिक्त अन्य फूलों की कलियाँ नहीं चढ़ाई जाती। विष्णु पर अक्षत, आक तथा चतुरा नहीं चढ़ाये जाते। शिव पर केतकी, दुपहरिया (कम्पूक), कुन्द, मौलञ्जी, जयपर्णी, कौरैया, मालती तथा जुही के फूल नहीं चढ़ाये जाते। गणेश तथा सूर्य पर तुलसी नहीं चढ़ाई जाती एवं दुर्गा पर डूबी, आक, बेल हरपिंगार तथा तगर नहीं चढ़ाये जाते।

- (३८) ग्राह्यपुष्पादि - विष्णु पर श्वेत तथा पीले रंग के पुष्प एवं तुलसी, सूर्य तथा गणेश पर लाल रंग के पुष्प, लक्ष्मी पर कमल एवं शिव के ऊपर आक, चतुरा, बिल्वपत्र तथा कंठर-पुष्प विशेष रूप से चढ़ाये जाते हैं। अमलास के पुष्प तथा तुलसी को निर्मल्य नहीं माना जाता। पुष्प, पत्र एवं फल - इन तीनों को अधोमुख करके देवता पर नहीं चढ़ाना चाहिए। पुष्पांजलि में यह दोष नहीं माना जाता। उसमें बासी पुष्प भी ग्राह्य हैं।

(३६) गाह्य पत्र तथा फल - तुलसी, मौलसी, अमोक्त, विष्णु डान्ता, अद्यामार्ग, चम्पा, कमलिनी, बिल्व पत्र, श्वेत कमल, दूजी, कुशा, मैत्रफल, नागवल्ली, आँवला तथा अगस्त्य - इनके पत्ते देव-पूजन में गाह्य हैं। इसी प्रकार जामुन, अनार, केला, बिलौरा, नीरू, आँवला, इमली, बैर, कटहल तथा आम - ये फल भी गाह्य कहे गए हैं।

(३७) धूप और दीपक - धूप में अगर तथा गुग्गुलु विशेष रूप से गाह्य हैं। चन्दन-चूरा, बालकृष्ण आदि का प्रयोग भी धूप के रूप में किया जाता है। दीपक में यदि अनेक बत्तियाँ हों तो उनकी संख्या विषम रखनी चाहिए। दौड़ ओर के दीपक में सफेद रंग की बत्ती तथा बाँई ओर के दीपक में लाल रंग की बत्ती डालनी चाहिए।

विशेष सावधानी - काम्य-कर्मों को करने से पूर्व समस्त 'मास' तथा आत्मरक्षा के अन्य उपायों को कर लेना आवश्यक है। जो व्यक्ति शुभ अथवा अशुभ किसी भी प्रकार का काम्य-कर्म करता है, मन्त्र उँग से किया जाय तो उनसे उतना ही फल प्राप्त होता है, जितने के लिए वे किये जाते हैं, परन्तु विधि-विधान में तत्काल ही भी असावधानी साधक को अनिष्टकर फल देती है, जबकि निष्काम-कर्मों में सम-वशा हुई असावधानी से भी कोई हानि नहीं पहुँचती। काम्य-कर्म मनुष्यों को सांसारिक-व्यर्थों से जकड़े रखते हैं तथा कभी भी जीन्मुक्ता नहीं होने देते, जबकि निष्काम-भाव से की गई देवोपासना इहलोक के साथ-साथ परलोक को भी सुधारती एवं सुखी प्रदान करती है।

॥ इति श्री यन्त्रमहार्णवे आवश्यक - धातव्य विषयाः नाम्नि प्रथम खण्डः ॥

अथ यन्त्रमहार्णव (द्वितीय खण्ड)

महा०

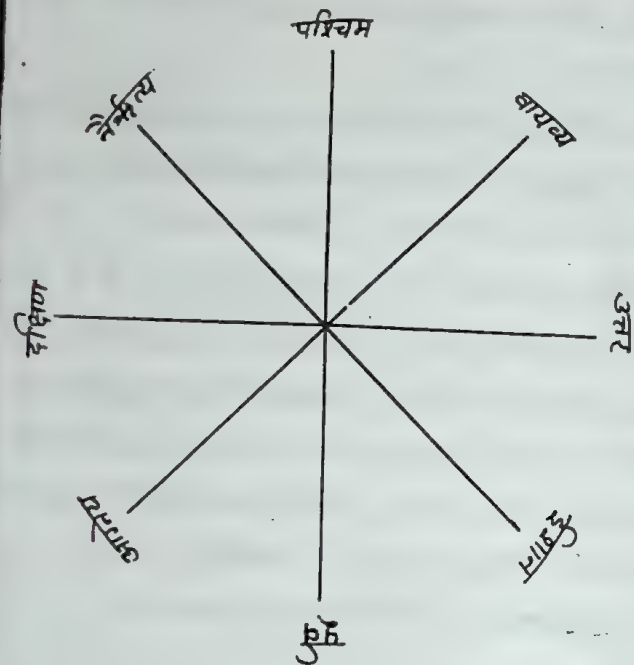
जैसा कि पिछले खण्ड में बताया जा चुका है, मन्त्र-यन्त्र साधना दो प्रकार की होती है—(१) निष्काम तथा (२) सकाम। निष्काम-कर्मों में विभिन्न देवी-देवताओं यथा राम, विष्णु, शिव, गोपाल, गणेश, सूर्य, दुर्गा, काली, भुवनेश्वरी आदि देवी-देवताओं की उपासना मानी जाती है। इन उपासनाओं में 'न्यास' आदि की क्रियाओं के साथ ही ध्यान, यन्त्र-पूजा तथा मन्त्र-जप आदि कृत्य किये जाते हैं। यद्यपि इन देवी-देवताओं की उपासना से साधक की मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है, तथापि इन्हें 'निष्काम' की कोटि में इसलिए रखा जाता है कि यदि साधक इन उपासनाओं को करता रहे तो उसके पाप नष्ट होते हैं, पुण्य की वृद्धि होती है तथा इस लोक के साथ-साथ परलोक का भी सुधार होता है।

'यन्त्र मारकर' के इस द्वितीय खण्ड में विभिन्न देवी-देवताओं से सम्बन्धित शास्त्रीय उपयोगों का ही उत्स्वैरूप किया जाएगा। स्मरणीय है कि इन उपयोगों में यन्त्र का उपयोग 'पूजा के प्रतीक' अथवा 'देवता के मूर्तिस्वरूप' के नाते किया जाता है तथा इनमें मन्त्र-जप की ही उपासना रहती है।

श्रीयन्त्र-विवरण

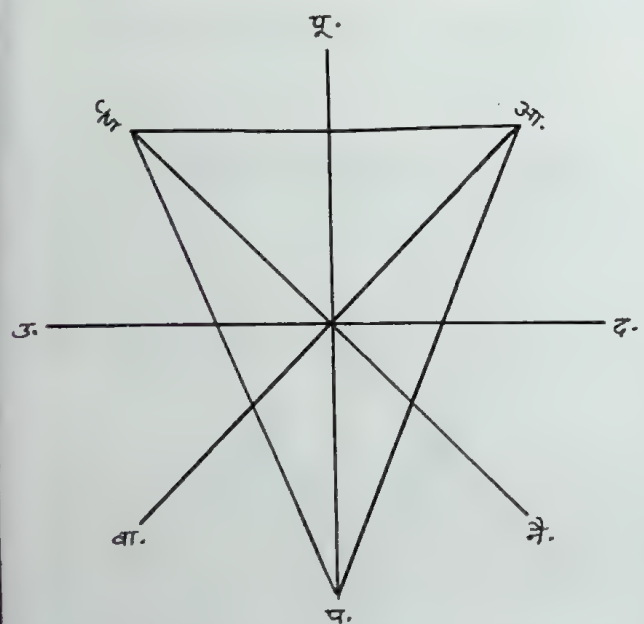
यन्त्र-साधना में 'श्रीयन्त्र' की साधना को अन्धतम स्थान प्राप्त है। दशमहाविष्णु में 'श्रीवेत्री' नामक तृतीया महाविष्णु ही 'श्रीविष्णु' का स्वरूप है। सुन्दरी, ललिता, त्रिपुर सुन्दरी आदि वही के अन्य नाम हैं। भारत में प्राचीनकाल से ही श्रीविष्णु की उपासना प्रचलित है। इस उपासना के तन्त्र को समझने के लिए

सर्वप्रथम देवी के स्वरूप अथवा यन्त्र को भली-भाँति समझ लेना आवश्यक है। इस चक्र के तत्त्व तथा लेखन-प्रकार को सामान्यतः लोग जानते-ही नहीं हैं, जबकि इसे अच्छी तरह समझे बिना शाक्ति-साधना की दिशा में आगे बढ़ पाना नितांत ही असंभव है। अस्तु, हम सर्वप्रथम 'शीघ्रयन्त्र' को निर्माण की शास्त्रीय-पुणाली का उल्लेख कर रहे हैं।



कुलाचार, समयाचार, सम्प्रदाय अथवा आचार्य-भेद से आगम शास्त्रों तथा साधकों में शीघ्रयन्त्र लेखन के अनेक प्रकार पाये जाते हैं। यह यन्त्र बिन्दु, त्रिकोण, अष्टार, अन्तर्दशार, बाह्यदशार, चतुर्दशार, अष्टदलपद्म, छोड़दशदलपद्म तथा चतुरस्र-इन नव-चक्रों से बनता है। कोई-कोई आचार्य छोड़दशदलपद्म के अनन्तर वृत्तत्रय को भी अतिरिक्त चक्र मानते हैं। उनके मत से बिन्दु सर्व-व्यापक चक्र है, अतः वे उसकी गणना नव-चक्रों में नहीं करते। बहुत से आचार्य तथा आधुनिक साधक चतुर्दशार के अनन्तर एक मर्यादावृत्त तथा अष्टदल के बाद भी छोड़दशदलकणिका, तदनन्तर मर्यादावृत्त-इस प्रकार वृत्तत्रय बनाते हैं। कुछ उपासक वृत्त देते ही नहीं हैं। इसी प्रकार के मतभेद चतुरस्र के विषय में भी पाये जाते हैं। कोई एक रेखात्मक चारदार छका चतुरस्र मानते हैं तो कोई तत्त्व-दिशाओं में विभिन्न संख्याओं से दोबार

युक्त चतुरस्र लिखते हैं। कोई-कोई चार रेखाओं का चतुर्कार तथा ढादशकार भी लिखते हैं। अधिकांशतः

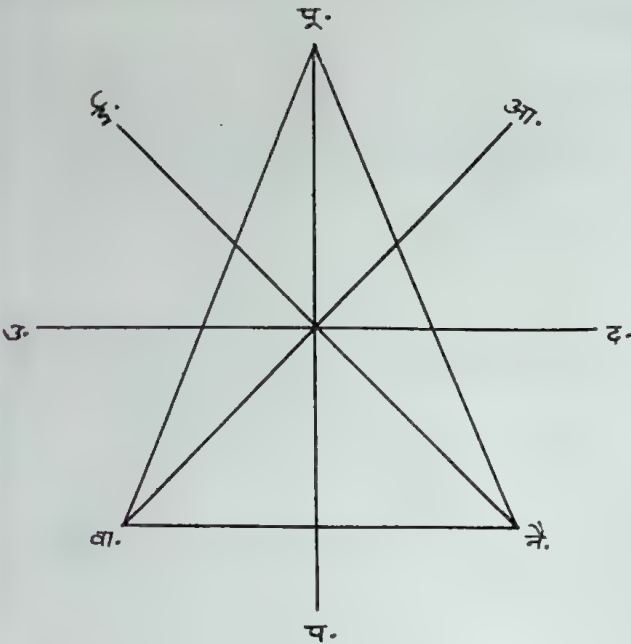


त्रिरेखात्मक चतुर्कार युक्त चतुरस्र ही पाया जाता है। अस्तु, बिन्दु से चतुर्दशार तक ही प्रधान मन्त्र माना जाता है, क्योंकि प्रथम श्री मन्त्र शिव-शक्ति का सम्युद्धारूप है। चतुर्दशार तक ही नवचक्रों का अन्तर्भाव है। इनमें त्रिकोण, अष्टकोण, अन्तर्दशार, बहिर्दशार और चतुरस्र - ये पाँच शक्ति-चक्र हैं और बिन्दु, अष्टदल, षोडशदल तथा चतुरस्र - ये चार शिव-चक्र उन पाँचों के अन्तर्भूत हैं अर्थात् त्रिकोण में बिन्दु, अष्टार में अष्टदल, दोनों दशार में षोडशार तथा चतुर्दशार में चतुरस्र अन्तर्भूत हैं। इस प्रकार इसमें शिव-शक्ति का पारस्परिक-अभिन्नभाव रूप का सम्मिश्रण है। इस अभिन्न-भाव को जानने वाला ही 'चक्रज्ञ' कहलाता है।

'भैरव यात्रा' के अनुसार - 'न शिवेन विना शक्ति शिवोऽपि न तथा विना' - अर्थात् शिव के बिना शक्ति नहीं है और शक्ति के बिना शिव भी नहीं है - इससे स्पष्ट है कि शिव-शक्ति का एक दूसरे से पृथक् रहना संभव नहीं है, अतः शिव-चक्रों

को चतुर्दशार के बाहर लिखना केवल शिष्य-बुद्धि-विलास के लिए है, अतः चतुर्दशार तक ही प्रधान मन्त्र

की सीमा है - यही सर्व सम्मत सिद्धान्त है। 'वामकेश्वर तन्त्र' के आधार पर, जो प्रायः सर्वत्र प्रचलित है, यन्त्र-लेखन प्रकार का दिग्दर्शन करने के लिए सर्वप्रथम तदुपयोगिनी परिभाषाओं का उल्लेख किया जाता है।



दिशा - 'चदाशामि मुरको मन्त्री' के अनुसार जिस दिशा की ओर मुँह करके साधक यन्त्र को लिखे, उसी को पूर्व सम्झना चाहिए तथा अन्य दिशाओं की कल्पना उसी के आधार पर कर लेनी चाहिए। (देखिए - पृष्ठ ८२ का चित्र)।

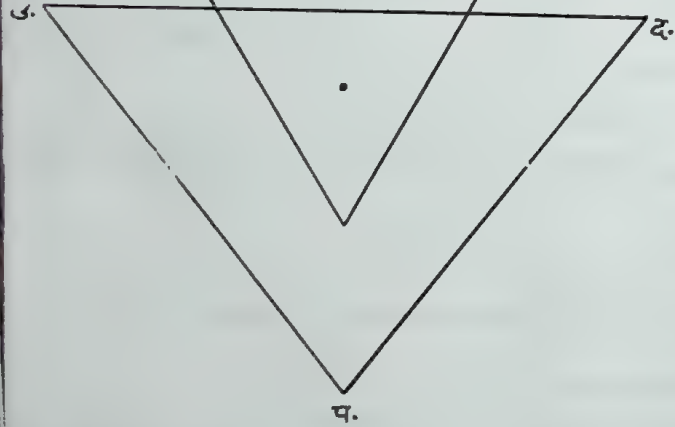
शक्ति - ईशान से अग्नि कोण तक एक सीधी रेखा खींच कर, दोनों कोणों से दो आड़ी रेखाएँ खींच कर पश्चिम में जोड़ दें, इससे जो अधोमुख त्रिकोण बनेगा, वह 'शक्ति त्रिकोण' कहलाता है। इसी को शक्ति, पार्वती तथा योनि आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है (देखें - पृष्ठ ८३ का चित्र)।

शिव - वायव्य से नैऋत्य कोण तक एक सीधी रेखा खींच कर इन दोनों कोणों से दो रेखाएँ ऊपर की ओर ले जाकर पूर्व दिशा में मिला देने से जो ऊर्ध्वमुख त्रिकोण बनता है, उसे शिव, वह्नि, अथवा इसके

प्रमाण-महेश्वर, अग्नि आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है (देखें इसी पृष्ठ पर बाँई ओर का चित्र)।

पार्श्व-रेखा— वाम तथा दक्षिण आड़ी रेखाओं को 'पार्श्व-रेखा' कहा जाता है। (कही-कही) 'इहे' ऊर्ध्व तथा अधो

३. आ.



प.

पू.

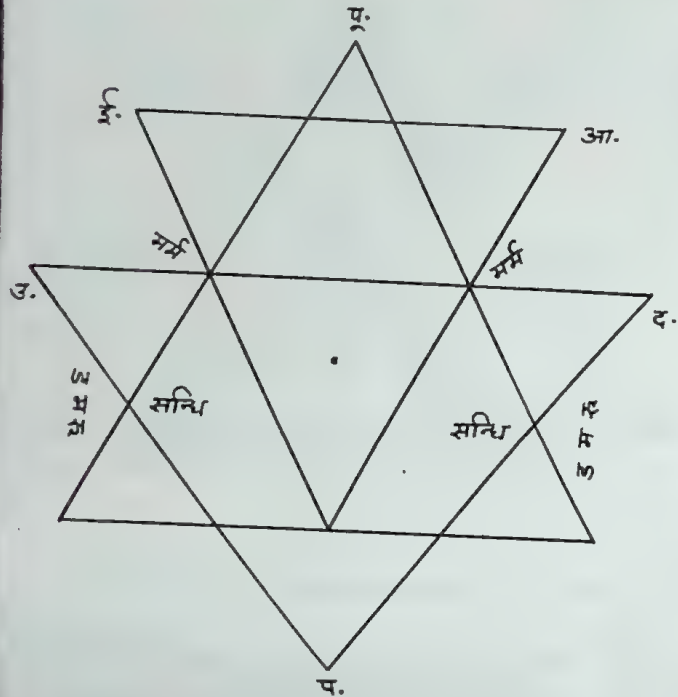
रेखा भी कहते हैं। तिर्यक् रेखा— ईशान से आग्नेय तक एवं वायव्य से नैऋत्य तक खींची हुई रेखाएँ 'तिर्यक्' रेखाएँ कहलाती हैं। इहे पूर्व-रेखा तथा पश्चिम-रेखा भी कहते हैं। भेदन— एक रेखा के ऊपर दूसरी रेखा का आ जाना 'भेदन' कहलाता है। सन्धि— भेदन करने वाली दोनों रेखाओं के संयोग को 'सन्धि' कहते हैं। मर्म— भेदन करने वाली तीन रेखाओं के संयोग को 'मर्म' कहते हैं। गुंथि— मर्म तथा सन्धि को 'गुंथि' कहते हैं। उमरु— शक्ति के पश्चिम-कोण तथा वल्लि के पूर्व-कोण के मिलने से यह बनता है। वृत्त— चन्द्राकार रेखा को 'वृत्त' कहते हैं। परिवेष्ट— चतुरस्र रेखा को 'परिवेष्ट' कहते हैं। भूपुर— त्रिरेखात्मक-वृत्त को 'भूपुर' कहते हैं।

पन्न-लेखन प्रकार— अब पन्न-लेखन का प्रकार बताते हैं—

सर्वप्रथम शक्ति-त्रिकोण बनाकर, उसको मध्यभाग में उत्तर से दक्षिण की ओर एक तिर्यक्-रेखा से भेदन करे। इस तिर्यक्-रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएँ खींची कर, उपर्युक्त शक्ति के पश्चिम

कोण के पश्चिम की ओर मिलादे। यह दूसरी शक्ति बन गई। यद्यपि इस क्रम में 'विन्दु-लेखन' नहीं आया,

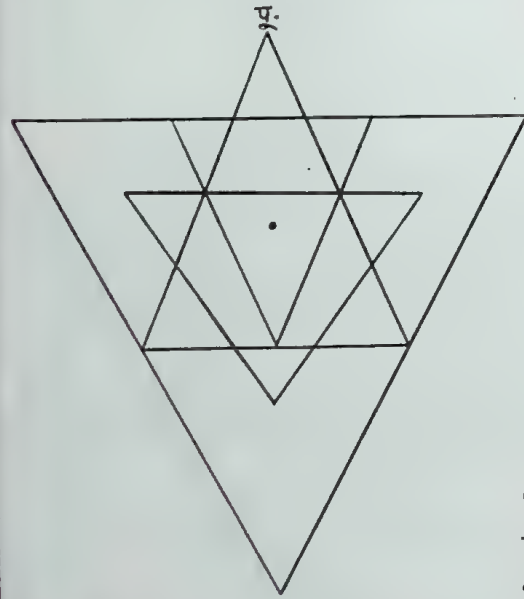
तथापि पूजा-क्रम के अनुसार प्रथम शक्ति के भेदन से बने हुए त्रिकोण के मध्य में विन्दु रख देना चाहिए।
(देखें - पृष्ठ ८५ का चित्र)।



इसके बाद प्रथम शक्ति की तिर्धक-रेखा के मध्यभाग से कुछ ऊपर पूर्व की ओर से दोनों भागों में 'सन्धि' तथा 'मर्म' बनाती हुई दो पार्श्व-रेखाएँ खींचें। इसी प्रकार प्रथम शक्ति के पश्चिम कोण को पश्चिम की ओर से स्पर्श करती हुई, वायव्य से नैऋत्य की ओर एक तिर्धक रेखा खींचें और उन पार्श्व रेखाओं को इसके दोनों सिरे से जोड़ दें। यह प्रथम वह्नि बन गया। इस प्रकार आठ दिशाओं में आठ त्रिकोण में से अष्टार और मध्य में एक त्रिकोण तथा उसके मध्य में विन्दु होने से विन्दु कोण तथा अष्टार - ये तीन यन्त्र बन गये। इन तीन यन्त्रों से बना हुआ यह चक्र 'नमोति चक्र' नाम से भी प्रसिद्ध है (देखें - इसी पृष्ठ पर बाँई ओर का चित्र)। इसमें नौ त्रिकोण, छः सन्धि, दो मर्म तथा दो उमरू हैं। प्रथम शक्ति की वाम तथा दक्षिण रेखाओं से वह्नि की पार्श्व-रेखाओं का दोनों दिशाओं में संयोग होने से और

द्वितीय शक्ति की तिर्धक रेखा के द्वारा भेदन होने से उत्तर-दक्षिण मर्म बन गए। इसी प्रकार सन्धि

और डमरु की प्राप्ति भी सम्भवनी चाहिए। अब अनादशास्त्र की विधि का वर्णन किया जाता है—

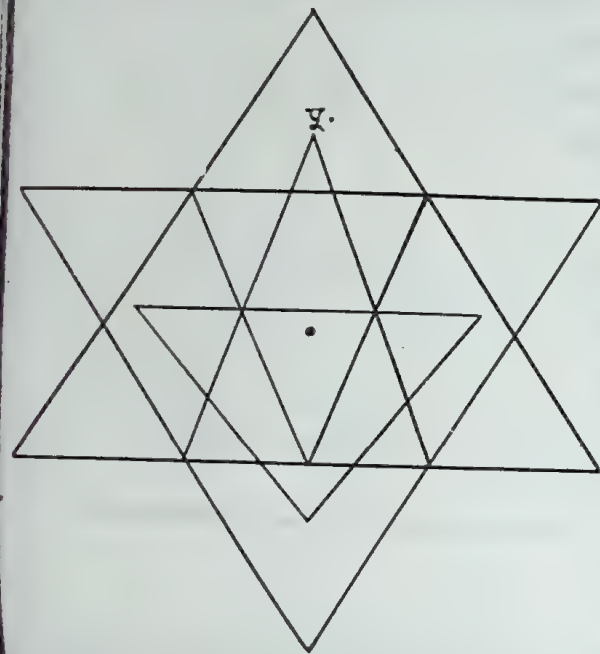


पिछले पृष्ठ पर अंकित 'नवयोन्यात्मक-चक्र' में पहली शक्ति की तिर्यक्-रेखा को दोनों सिरों की ओर कुछ बढ़ाये तथा उस बड़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखा दूसरी शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम में जोड़ दे। यह तीसरी शक्ति बन गई। इस तीसरी शक्ति के भीतर पूर्व-त्रिकोण को दोड़ कर सारा मन्त्र आ जाता है (देखें— इसी पृष्ठ पर उदशित बौई ओर का चित्र)।

अब प्रथम वह्नि की तिर्यक्-रेखा को उसी प्रकार दोनों ओर बढ़ाये तथा उस बड़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएं खींच कर प्रथम वह्नि के पूर्व कोण के कुछ पूर्व की ओर लेजाकर मिलादे। इस प्रकार दूसरा वह्नि त्रिकोण बन गया (देखें— इसी पृष्ठ ८८ का चित्र)।

इस चक्र में छः कोण और बढ़ गए। तीसरी शक्ति और दूसरे वह्नि के संयोग से दोनों पार्श्वों में दो डमरु बन गए। इसी प्रकार सध्वि और मर्म को भेद भी सम्भव लेने चाहिए। पुनः प्रथम शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः ईशान और आग्नेय कोण में ऊपर प्रथम वह्नि के पूर्व कोण की दोनों पार्श्व-रेखाओं को वायव्य तथा नैऋत्य कोण में द्वितीय शक्ति के पश्चिम कोण तक बढ़ाकर इसी

कोण को स्पर्श करती हुई त्रिर्धनु-रेखा से बड़ी हुई पार्श्व-रेखाओं के सिरे को जोड़ दे। इस प्रकार चार कोण और बढ़ जाने से अन्तर्दशर बन जाता है (देखें - अगले पृष्ठ संख्या ८८ का चित्र)।



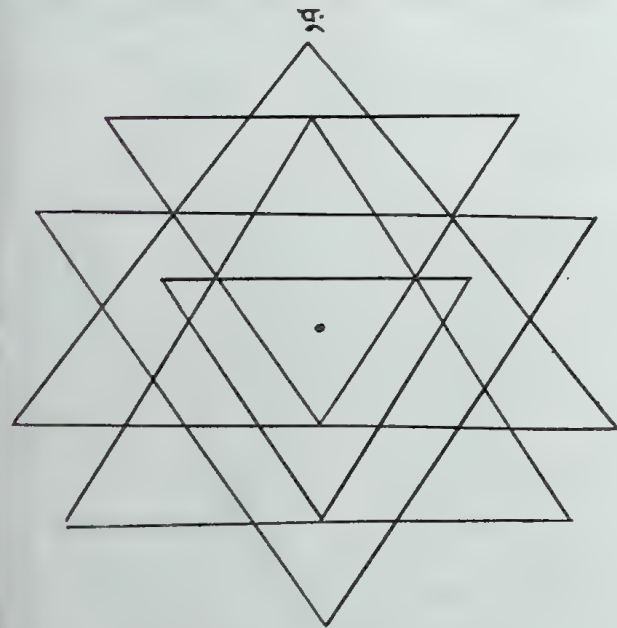
अब बहिर्दशर की विधि लिखते हैं -

पुष्पम वह्नि तथा द्वितीय वह्नि की मध्यवर्तिनी आद्य-शक्ति की पूर्व-दिशा में स्थित त्रिर्धनु-रेखा के दोनों कोणों को (अन्तर्दशर के द्वितीय और दशम कोण को) क्रमशः ईशान और आग्नेय की ओर बढ़ाकर, ईशान-आग्नेय कोण बनाती हुई दो पार्श्व-रेखाएँ नीचे की ओर खींच कर, तृतीय शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम की ओर ले जाकर मिलादे। यह बहिर्दशर बनने वाली चतुर्थ शक्ति बन गई। तत्पश्चात् पुष्पम वह्नि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को अर्थात् अन्तर्दशर के पाँचवें और सातवें कोणों को, उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ाकर, उत्तर-दक्षिण कोण बनाती हुई, उसके दोनों सिरे से दो पार्श्व-रेखाएँ चतुर्थ शक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई, द्वितीय वह्नि के पूर्व कोण से पूर्व की ओर ले जाकर मिलादे। यह बहिर्दशर का षट्क तृतीय वह्नि बन जाता है। इस प्रकार अन्तर्दशर के ऊपर

ए. आगे पृष्ठ संख्या ८० में उद्धृति

चित्र के अनुसार) षट्कोण बन जाएगा।

अब आद्य-शक्ति की वाम और दक्षिण रेखाओं को ईशान तथा अग्नि कोण की ओर द्वितीय वल्लि के

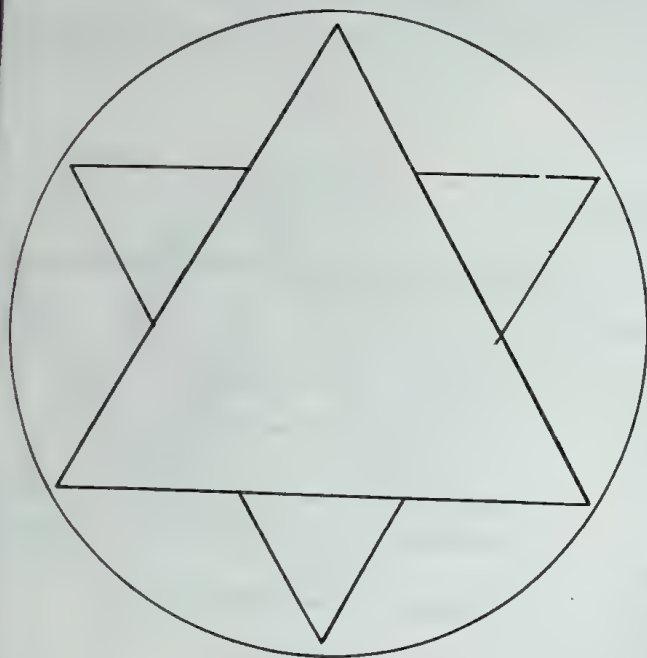


पूर्व कोण तक, बराबर तक, बढ़ाकर, उनके सिरो को द्वितीय वल्लि के पूर्व कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से जोड़ दे तथा आद्य-वल्लि की दोनों पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः नीचे बायल्य-नैऋत्य कोण की ओर तृतीय शक्ति के पश्चिम-कोण के बराबर तक बढ़ाकर, उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक तिर्यक्-रेखा खींचकर, उसके द्वारा उक्त पार्श्व-रेखाओं के सिरो को जोड़ दे। इस प्रकार बहिर्दशर बन जाएगा (आगे पृष्ठ संख्या ६१ का चित्र देखें)।

अब चतुर्दशर लिखने की विधि का वर्णन किया जाता है—

चतुर्थ शक्ति की पूर्व दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा को अर्ध-त-बहिर्दशर के तीसरे और नवें कोण को, क्रमशः उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ाकर, उस बड़ी हुई रेखा के दोनों सिरो से दो पार्श्व-रेखाएं नीचे की ओर खींचकर, चतुर्थ शक्ति के पश्चिम कोण से पश्चिम में लेजाकर मिला दें। यह चतुर्दशर बनाने वाली पञ्चम शक्ति बन गई। इसी प्रकार तृतीय वल्लि की पश्चिम दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा

के दोनों अंग-कोणों से प्रती की ओर दो पार्श्व रेखाएं पञ्चम शक्ति की पार्श्व रेखाओं को भेदन करती हुई



खींच कर, तृतीय वलि के पूर्वकोण के पूर्व में ले जाकर मिलादे। यह चतुर्थ वलि बन गया। इस पञ्चम शक्ति और चतुर्थ वलि के योग से चतुर्दशार का सम्पादन छह कोण बन गया। तदनन्तर चतुर्थ शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ाये और इसी प्रकार आद्य-शक्ति की पूर्व रेखा के दोनों सिरों को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ाकर, चतुर्थ शक्ति की पार्श्व-रेखाओं के सिरों से जोड़ दे। पुनः आद्यशक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को यहाँ तक बढ़ाये कि वे चतुर्थ वलि की पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई, तृतीय वलि के पूर्व कोण के बराबर पहुँच जाँय। फिर उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक पूर्व रेखा खींच कर, उससे इन पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दे। यह प्रकार चक्र के पूर्व भाग में चार कोण और बढ़ जाते हैं। तत्पश्चात् तृतीय वलि की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैऋत्य की ओर बढ़ाये और आद्य वलि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को क्रमशः वायव्य-नैऋत्य की ओर बढ़ाकर, उक्त पार्श्व रेखाओं को इस रेखा से मिलादे। इसी प्रकार आद्य वलि की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैऋत्य की ओर चतुर्थ शक्ति के पश्चिम कोण के बराबर तक बढ़ाये और इस कोण को स्पर्श करती हुई एक

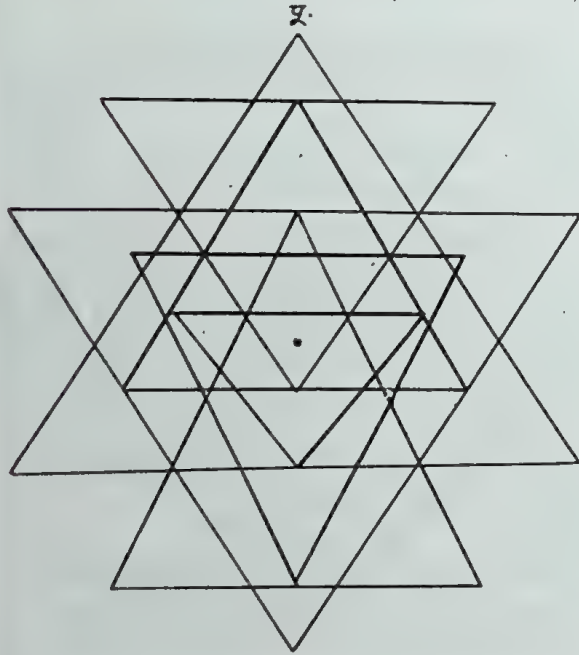
पश्चिम-रेखा खींच कर, उससे उक्त रेखाओं के सिरो को मिलादे। इस प्रकार चतुर्दशार बन जाता है।

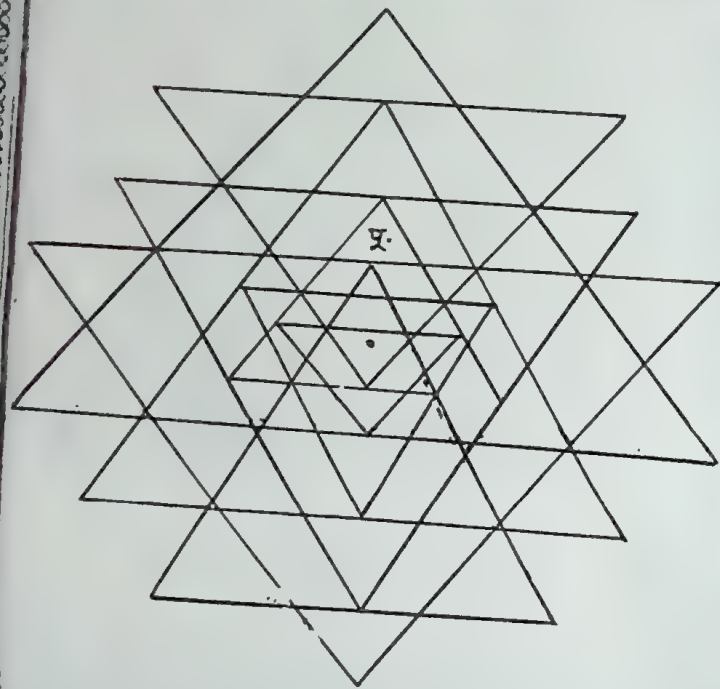
(देखें- आगे दृष्ट संख्या ८३ पर उदशित बौद्ध और काजहला चित्र)

अब इसके बाह्य-भाग में शिव-चक्र लेखन की विधि का वर्णन किया जाता है—

पूर्व लिखे अनुसार मर्यादा वृत्त और कर्णिका का वृत्त बना कर अथवा न बना कर, इस सम्पूर्ण चक्र को सोलह भागों में विभाजित की और फिर एक-एक के अन्तर से अष्टदल कमल बनाये (देखें- आगे दृष्ट संख्या ८२ पर उदशित बौद्ध और का दूसरा चित्र), तत्पश्चात् (मतान्तर से) कर्णिका वृत्त बना कर इसके बत्तीस भाग करके एक-एक भाग के अन्तर से कोडशदल कमल बनाये इसके बाद (मतान्तर से) मर्यादा-वृत्त अथवा वृत्तत्रय देकर भूपुर के लिए चार द्वार सहित अथवा (मतान्तर से) बिना द्वार के एक रेखा, तीन रेखा अथवा चार रेखाएं खींचे। इस प्रकार सम्पूर्ण 'श्रीयन्त्र' बन जाता है।

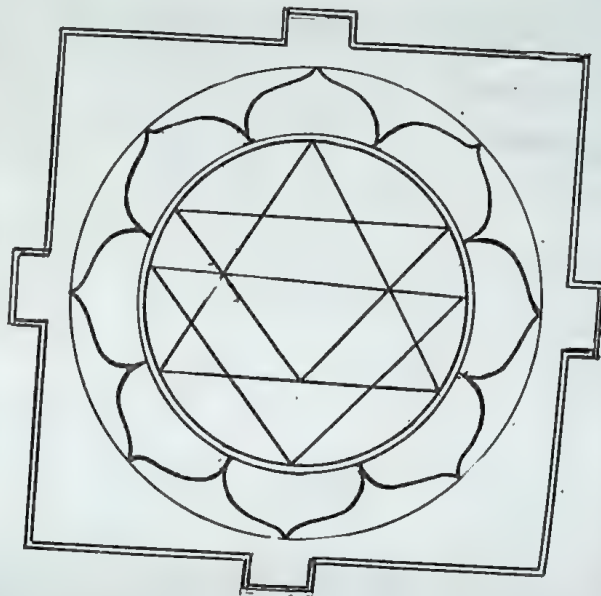
सृष्टि-क्रम तथा संहार-क्रम के भेद से 'श्रीयन्त्र' दो प्रकार के होते हैं। आगे दृष्ट संख्या ८३ पर उदशित श्रीयन्त्र का स्वरूप 'सृष्टि-क्रम' का है।





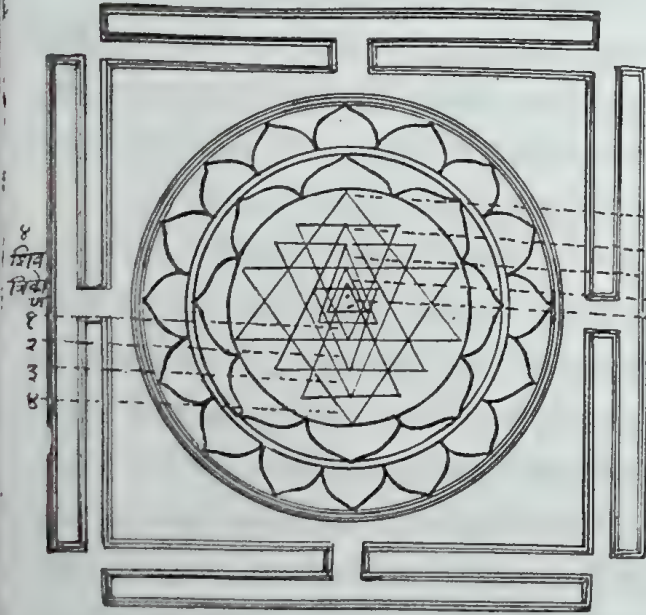
सूर्य-कुम्ब' वाले श्री यन्त्र के सबसे भीतरी वृत्त में, वृत्त के केन्द्रस्थ बिन्दु के चारों ओर नौ त्रिकोण हैं। इनमें से पाँच त्रिकोण तो ऊर्ध्वमुखी हैं और चार अधोमुखी हैं।

ऊर्ध्वमुखी पाँच त्रिकोण शक्ति के द्योतक हैं और वे 'शिवयुवती' कहे जाते हैं। अधोमुखी चार त्रिकोण शिव के द्योतक हैं। इन्हें 'श्रीकण्ठ' कहा जाता है। पाँचों शक्ति त्रिकोण ब्रह्माण्ड के विषय में पञ्च महाभूत, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा पञ्च प्राण के द्योतक हैं। मनुष्य शरीर में भी पाँच त्रिकोण (बक, जण्डक, मौल, मेव



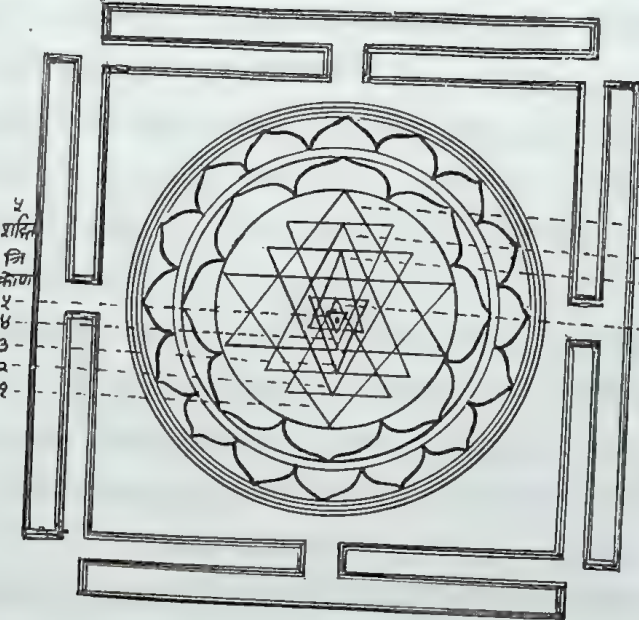
तथा अस्थि रूप में स्थित हैं तथा चारों शिव, पुरुष वाची त्रिकोण ब्रह्माण्ड में चित्, बुद्धि, अहंकार तथा

तथा मन रूप में स्थित हैं और पिण्डाण्ड में ये मज्जा, शुक्र, प्राणतत्त्वा जीवरूप से विद्यमान हैं (देखें- बाँई ओर का चित्र)। समग्र-मन के अनुपायी इसी सृष्टि-क्रम वाले यन्त्र की पूजा करते हैं। जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य इसी समग्र-मन को मानने वाले थे, आतः उनके प्रत्येक मठ में यह यन्त्र इसी प्रकार से अङ्कित मिलता है।



५
शक्ति
त्रिकोण
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३

समग्र-मन के अनुपायी इसी सृष्टि-क्रम वाले यन्त्र की पूजा करते हैं। जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य इसी समग्र-मन को मानने वाले थे, आतः उनके प्रत्येक मठ में यह यन्त्र इसी प्रकार से अङ्कित मिलता है। 'संहार-क्रम' के श्री यन्त्र की पूजा (देखें- दाँई ओर चित्र)



४
शिव
त्रिकोण
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३

श्री यन्त्र (संहार-क्रम)

श्री यन्त्र (सृष्टि-क्रम) करते हैं। ये लोग काश्मीरी-सम्प्रदाय के होते हैं।

श्री यन्त्र की रचना - श्री यन्त्र को स्फटिक शिला, मरकतमणि आदि पर, अथवा वर्ण, रौप्य, ताम्र - इन धातु के पत्रों पर महीन काट, खोद कर, समतल अथवा उभरा हुआ - दोनों प्रकार का बनाया जा सकता है। इसे इन वस्तुओं अथवा मोटापत्र के ऊपर चन्दन, कुंकुम, गोरोचन आदि से लिख कर भी तय्यार किया जा सकता है। गहरा अथवा उभरा हुआ, जैसा भी यन्त्र हो, पूजा के अवसर पर, उसके ऊपर चन्दनादि द्वारा अपने सन्निदाय एवं क्रम के अनुसार रेखाएँ भरनी चाहिए।

यन्त्र लिखते समय उपासक को उचित है कि वह अपने सन्निदाय-क्रम अथवा कामना के अनुसार जिस स्थल से पूजा आरम्भ करना चाहे, ठीक उसी स्थल से रेखा का उपक्रम करे तथा जहाँ पर पूजा का पर्यवसान करना हो, वही पर उसका उपसंहार भी करे। यदि चक्र की रेखाएँ खोद कर बनाई गई हों और वे गहरी हों तो ऊपर कहे अनुसार उनमें चन्दनादि भर कर ही पूजा करनी चाहिए। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि पट, फलक, भित्ति आदि में शीघ्र लिये गए पूजा करना वर्जित है।

पूजा के लिए सोना, चाँदी और लौहे का श्री यन्त्र क्रमशः उत्तम, मध्यम तथा सामान्य माना गया है। पूजा करने का फल लौहे में सौ गुना, चाँदी में करोड़ गुना तथा स्वर्ण और स्फटिक के यन्त्र में अज्ञेय गुना माना गया है। धातु का यन्त्र एक तौले से लेकर सात-आठ तौले तक का बनाया जा सकता है, परन्तु स्फटिक एवं मरकत आदि मणियों के बने हुए यन्त्र के लिए भार का कोई नियम नहीं है।

'रुद्रयामल' के अनुसार - सूर्य, पञ्चराग, नीलम, वैदूर्य, स्फटिक अथवा मरकतमणि के यन्त्र में पूजा का फल अक्षयनीय गुण होता है।

यन्त्र का आवाहन और प्राण-प्रतिष्ठा अचर-चर तथा चारण योग्य भेद से तीन प्रकार की होती है—
 'अचर' प्राण-प्रतिष्ठा में यन्त्र स्थापित रहता है, उठाया नहीं जाता। 'चर' प्राण-प्रतिष्ठामें यन्त्रता के साथ यन्त्र को अपने स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। 'चारण योग्य' प्राण-प्रतिष्ठा में यन्त्र-पूजा-काल के अतिरिक्त सर्वदा चारण किया जाता है। केवल पूजा के समय ही उसे उतारा जाता है। जब पुनः देवता को अपने में लीन कर देते हैं, तब यन्त्र को चारण कर लेते हैं।

श्री विद्या की उपासना का क्रम— श्री विद्या की उपासना के मुख्य तीन क्रम हैं— (१) काली क्रम, (२) सुन्दरी क्रम और (३) तारा क्रम। इनमें काली क्रम को 'कुण्डलिनी-क्रम' और 'कादि-विद्या' भी कहते हैं, यह सत्त्वगुण प्रधान है। सुन्दरी क्रम को 'हंस-क्रम' और 'हादि-विद्या' भी कहते हैं, यह रजोगुण प्रधान है। तारा क्रम को 'समवरोधिनी क्रम' और 'सादि-विद्या' भी कहते हैं, यह तमोगुण प्रधान है। यही तीन 'क्रम दीप्ता' के नाम से प्रसिद्ध हैं तथा इनके पूर्ण होने पर साधक शिव-स्वरूप हो जाता है।
 "सुन्दरी तारिणी काली क्रमदीक्षाभिगामिनी। क्रम पूर्णो महेशानि क्रमाच्छुभविद्यति"— यह क्रम सभी आम्नायों में है और इनमें प्रत्येक की पञ्च-क्रम से उपासना होती है। यह उपासना प्रातःकाल से लेकर आधी रात तक क्रमशः पञ्च-सन्ध्या के रूप में होती है। इनमें प्रत्येक क्रम से विद्या भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न रूपों में उपास्य होती है।

कादि-विद्या रूपा जो काली है, उनके क्रम से प्रातः 'कामकला' काली, मध्याह्न में 'भुवनेश्वरी', सायंकाल में 'चामुण्डा', रात्रि में 'समयकुण्डिका' तथा मध्यरात्रि में 'कादि पञ्चदशी' की उपासना होती है।

हादि-विद्या रूपा जो 'महानिपुरसुन्दरी' हैं, उनके क्रम में प्रातः 'आद्याकाली', मध्याह्न में 'तारा', सायंकाल में 'दिलमस्ता', रात्रि में 'बाला' तथा अर्द्धरात्रि में 'हादि षण्चदशी' की उपासना होती है।

सादि-विद्या रूपा जो 'तारा' हैं, उनके क्रम में प्रातः 'अनिरुद्ध-सरस्वती' के रूप में, मध्याह्न में 'तारा', सायंकाल में 'बाला', रात्रि में 'हामसरस्वती' तथा अर्द्धरात्रि में 'सादि षण्चदशी' की उपासना होती है। इनके अतिरिक्त भी श्रीविद्या के बहुत से क्रम-भेद हैं, जिनमें लघु-क्रम से लेकर 'महाक्रम' एवं 'पूर्णक्रम' पर्यन्त उपासना होती है।

जो लोग तारा-क्रम से प्रथक पूजा नहीं करते, वे कहादि (कादि + हादि) विद्या से ही काम लेते हैं।

आम्नाय-भेद - श्रीविद्या के प्रधान आम्नाय ६ हैं, जो पूर्व आदि-चार दिशा और ऊर्ध्व तथा के नाम से प्रसिद्ध और भी आम्नाय हैं, जिन्हें 'चार उपाम्नाय' कहते हैं तथा ये चारों-चार दिशाओं के अपने मुख्य आम्नायों के साथ यथायोग्य मिले रहते हैं। अतः आम्नाय मुख्यतः ६ ही गिने जाते हैं - (१) पूर्वाम्नाय, (२) दक्षिणाम्नाय, (३) पश्चिमाम्नाय, (४) उत्तराम्नाय, (५) ऊर्ध्वाम्नाय तथा (६) अधराम्नाय। यद्यपि गणना-क्रम में 'अधराम्नाय' सबके अन्त में आता है, तथापि उपासना-क्रम में इसे सबसे पहले रखा जाता है। इन ६ आम्नायों में प्रत्येक के (१) सृष्टि, (२) स्थिति, (३) सरव्या, (४) अनारव्या तथा (५) भासा - ये पाँच क्रम होते हैं, जिनका 'मूलाधार' से लेकर 'आद्या-चक्र' तक में (समान्तर से - ब्रह्मरूप तक) समन्वय हो जाता है। इनमें से प्रत्येक की 'आम्नायिका' होती है, यथा - अधराम्नाय की

'तारा', पूर्वाम्नाय की 'भुवनेश्वरी'; दक्षिणाम्नाय की 'दक्षिणकाली'; पश्चिमाम्नाय की 'कुण्डिका'; उत्तराम्नाय की 'सुहाकाली' तथा ऊर्ध्वाम्नाय की 'बाला त्रिपुरमहासुन्दरी' - ये आम्नायिका प्रत्येक उपाम्नाय की भी होती हैं। इनमें 'सप्तशाली' में वर्णित महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और चामुण्डा - ये क्रमशः ईशान, आग्नेय, वायव्य और नैऋत्य की नायिकाएँ हैं।

इन छः आम्नायों में से पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय तथा पश्चिमाम्नाय के पञ्चकर्म के अन्तर्गत जो सृष्टि, स्थिति और संहारक्रम हैं; उनमें प्रत्येक के भिन्न-भिन्न चक्र, मुद्रा-दर्शन, योगिनी, सिद्धि तथा चक्र नायिका होते हैं, जिन्हें आगे संक्षिप्तरूप में दिग्दर्शित किया गया है। इनमें अनारव्या तथा भासा की अपने-अपने आम्नाय-क्रम के समष्टि-चक्र में पूजा होने के कारण इनके पृथक् चक्र, मुद्रा आदि नहीं होते। इसी प्रकार अधराम्नाय, उत्तराम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय के भी समष्टि में (बिन्दु से त्रिपुर पर्यन्त) पूजा होने के कारण उनके अपने पृथक् मुद्रा, दर्शन आदि नहीं होते, परन्तु निवर्ण विद्या, शाम्भव, पाशुपत आदि द्वाहों आम्नायों के पृथक्-पृथक् होते हैं। सबके अन्त में बिन्दु से ब्रह्मरन्ध्र तक पञ्चदशी, षोडशी, महाषोडशी, सप्तदशी, अष्टादशी आदि तथा निवर्ण सुन्दरी, सर्वाधिकार शाम्भवी, महापादुका, अनुत्तरवादिनी, सर्वाम्नाय सर्वाधिकारा एवं यमया विद्या, षोडश-चक्रेश्वरी, समयान्तिष्ठा, दशमहाविद्या, पञ्चसिंहासन, पञ्चपञ्चिका, षडाम्नाय समया, नवरत्न कुण्डिका, नवरत्न सुन्दरी तथा अलेखनी आदि सब आजाती हैं।

इसी प्रकार सभी आम्नायों में प्रत्येक देवता का मूल (मन्त्र), न्यास, ध्यान तथा पञ्चाङ्ग (स्तोत्र)

आदि होते हैं। इनमें जो 'अलेखनी विद्या' है, वह सुन्दरी और काली-दोनों की शक्त ही है। आचार्यों ने केवल समझाने के उद्देश्य से ही शक्त को 'अनुलोम' तथा दूसरे को 'विलोम' मान कर पृथक् दर्शाया है। अर्थात् श्रीक्रम की अलेखनी को विलोम कर कालीक्रम में जपा जाता है। इसी प्रकार पञ्चदशी आदि विद्या में जब पञ्चदशी (लघु षोडशी) मूल देवता होगी, तब 'बाला त्रिपुर सुन्दरी' चक्र-नायिका होगी। जब षोडशी (महा त्रिपुर सुन्दरी) मूल विद्या होगी, तब 'पञ्चदशी' चक्र-नायिका होगी और जब अष्टादशी मूलविद्या होगी, तब 'सप्तदशी' चक्र-नायिका होगी।

आम्नाय क्रम को समष्टि में समन्वय कर, अपनी-अपनी दीक्षा के अनुसार पूर्णान्वेष से लेकर दिव्य साम्राज्य-मेधा तक क्रमशः पुष्पांजलि देकर पञ्चदशी, षोडशी आदि सभी विद्याओं की पूजा बिन्दु में ही की जाती है। 'समधा विद्या', 'समधानित्पा' आदि जो विद्याएँ हैं, वे सब निर्वाणोपासना में जाकर निर्वाणविद्या के रूप में परिणत हो जाती हैं और यथाक्रम शक्त-दूसरे में लीन हो कर, अन्ततः एक निर्वाण-विद्या बन जाती है। यह सब क्रमोपासना से ही होता है।

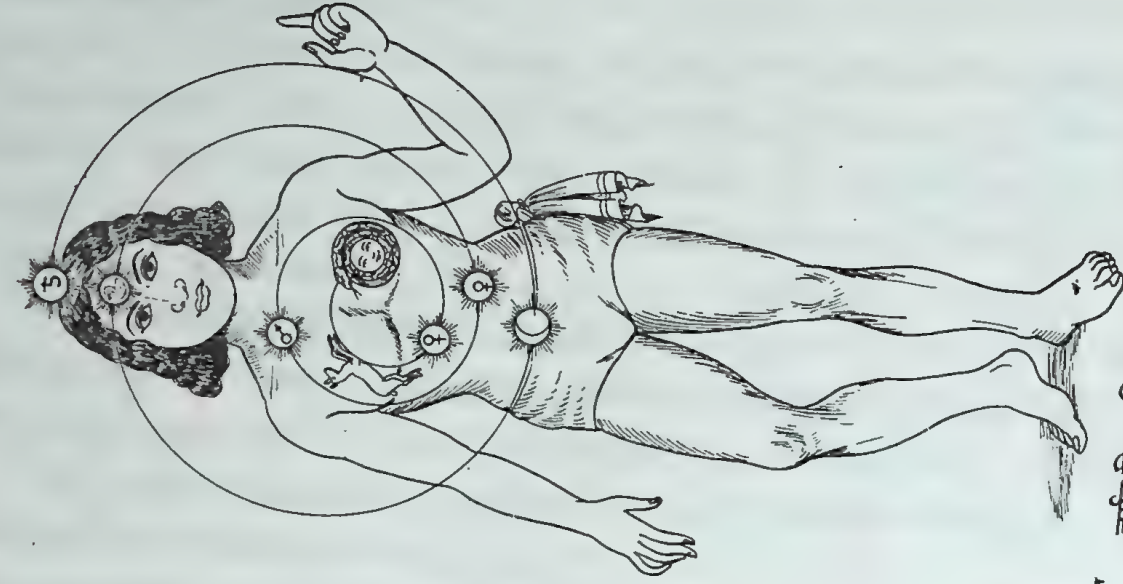
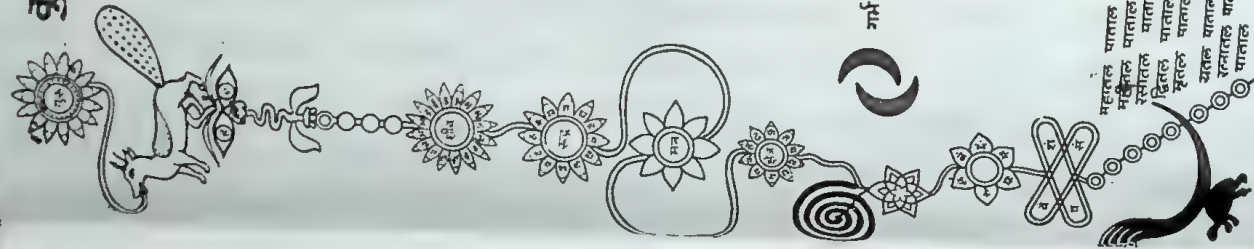
उपासना-क्रम में ब्रह्म मुहूर्त से लेकर मध्यरात्रि तक अनेक क्रिया-कलाप होते हैं। इनमें सबसे पहले की जाने वाली क्रिया प्रातःकृत्य है। यह प्रातःकृत्य आम्नाय-भेद से भिन्न-भिन्न प्रकारका होता है, परन्तु सर्वान्नायात्मक प्रातःकृत्य एक और भी होता है, जिसकी तालिका देखने से ठीक-ठीक पता चलेगा। प्रातःकृत्य में सबसे पहला चिन्तन है। चिन्तन में श्री गुरु-पादुका का चिन्तन सबसे पहले होता है। उसके बाद यथाक्रम चक्र देवता आदि का चिन्तन किया जाता है। सर्वोत्तम क्रम में प्रातःकृत्य में चक्रों

के चिन्तन के साथ आन्नायिकाओं का भी चिन्तन होता है और इसमें आत्म-भेद से भी भेद होता है। इस क्रम में मूल विद्या चिन्तन के समय मूलाधार में 'वाग्भवकूट' एवं 'वाग्धीश्वरी' का, हृदय में 'कामराजकूट' एवं 'कामेश्वरी' का तथा आला-चक्र में 'शक्तिकूट' एवं 'आदिशक्ति' का चिन्तन होता है। तत्पश्चात् ब्रह्म-रन्ध्र में मूल विद्या 'श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी' का ध्यान किया जाता है। साथ ही शरीर के चरचकों में वहाँ आन्नायिकाओं का भी चिन्तन किया जाता है। अभेद-चिन्तन में मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त ही ब्रह्मविद्या की भावना की जाती है।

इसी प्रकार उपासना में मातृका, मालिनी, लघुषोढा, महाषोढा आदि कई प्रकार के न्यास बताये गए हैं; जिनके प्रयोग से साधक देवतास्वरूप तथा उसका शरीर मन्त्रमय बन जाता है। परन्तु इनमें से मूलन्यास और षोढान्यास पृथक्-पृथक् आन्नायक्रम की उपासना में पृथक्-पृथक् ही होते हैं।

उपासना के दो रूप - उपासना के भी मुख्य दो रूप हैं - (१) बाह्य तथा (२) आभ्यन्तर, जिन्हें क्रमशः 'बहिर्योग' और 'अन्तर्याग' भी कहते हैं। आध्यात्मिक तत्त्वों को ही उपकरण मानकर मानस-पूजा के रूप में ध्यान, धारणा आदि के द्वारा जो आराधना की जाती है, उसे 'अन्तर्याग' कहते हैं। यह भावनात्मक है और इसके साधारण एवं निराधार दो भेद होते हैं। बाहर के भौतिक उपकरण आदि से जो पूजा-आराधना की जाती है, उसके 'बहिर्योग' कहते हैं। यह क्रियात्मक होता है और इसके भी 'वैदिक' एवं 'तान्त्रिक' - दो मुख्य भेद होते हैं। इसका सविस्तर वर्णन 'सूतसंहिता' आदि ग्रंथों में भी पाया जाता है।

कुण्डलिनी और चक्र

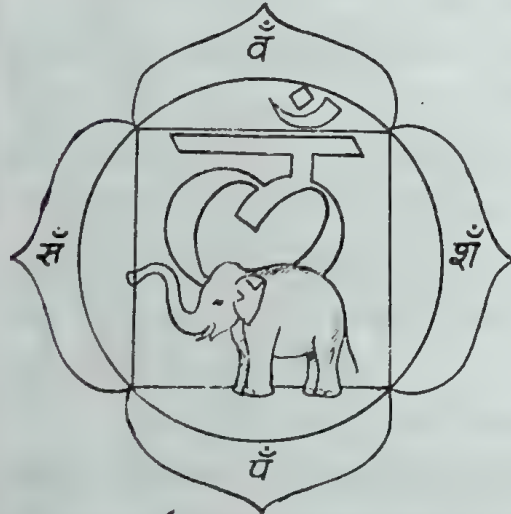


जर्मन विद्वान् गिखतेल रचित चक्रों का चित्र

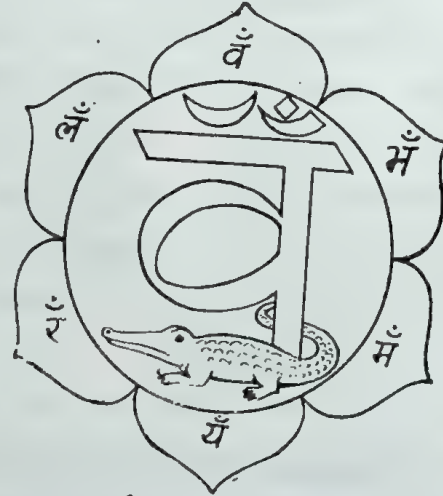
इस प्रकार 'शीचक्र' में
 नित्य, नैमित्तिक, काम्य एवं
 बहिर्योग, अन्तर्योग आदि के
 रूप में नाना प्रकार से
 शीचक्र की उपासना होती
 है, परन्तु इनमें से जब ध्यान
 योगात्मक आभ्यन्तर-उपासना
 करनी होती है, तब वह शरीर
 में ही शीचक्र की भावना कर,
 शीचक्र के सम्पूर्ण क्रम को
 प्रारंभगत चक्रों में समन्वय
 कर, शैव्यात्मभाव से की
 जाती है। इसमें मूलाधार से
 लेकर ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त
 अक्षरादि आम्नायों की तरफ
 प्रवहे प्रवही आदि के

एक को दूसरे में उत्तरोत्तर लीन करके बाला रूप में जाकर, बाला को भी सर्वान्नायेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी में लीन करके एक रूप हो जाता है। यही पर आकर दीक्षा का चौंसठवाँ क्रम पूरा हो जाता है।

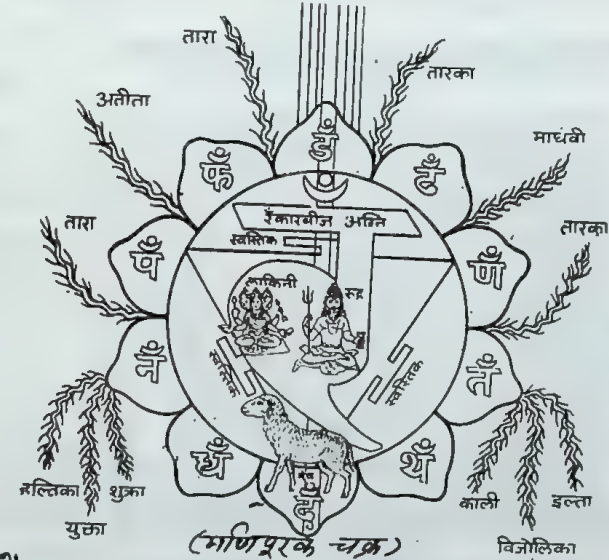
महा०



(मूलाधार चक्र)



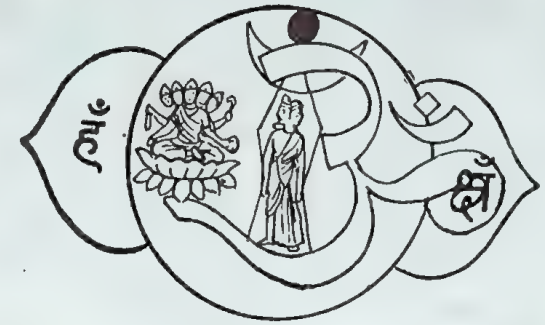
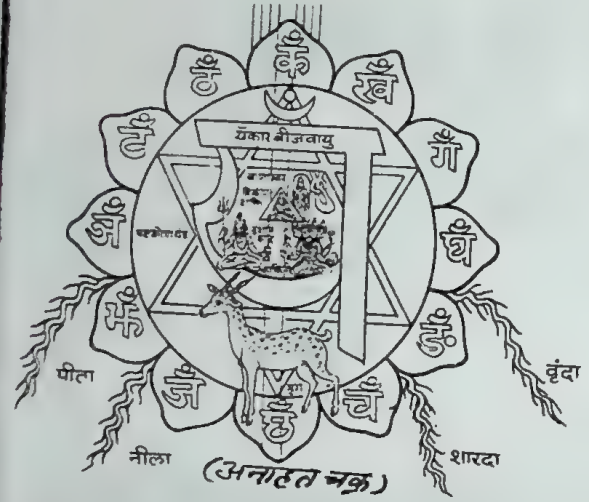
(स्वाधिष्ठान चक्र)



(मणिपूरक चक्र)

[हमारे शरीर के विभिन्न स्थानों में सात चक्रों की कल्पना की गई है — (१) मूलाधार चक्र, (२) स्वाधिष्ठान चक्र, (३) मणिपूरक चक्र, (४) अनाहत चक्र, (५) विशुद्धारव्य चक्र, (६) आता चक्र तथा (७) सहस्रार अथवा ब्रह्मरन्ध्र)। आचार चक्र अथवा मूलाधार चक्र की स्थिति गुदा से ऊपर मानी गई है। यह पृथ्वी तन्त्र प्रधान चक्र है। मूलाधार से

लगभग चार अंगुल ऊपर मूलाशय अथवा गर्भाशय के मध्य में "स्वाधिष्ठान चक्र" की अवस्थिति है। स्वाधिष्ठान से ऊपर मेरुदण्ड के सम्मुख नाभि-छेद में 'मणिप्रकचक्र' की अवस्थिति है। मणिप्रकचक्र से ऊपर दोनो कंधों के मधीय 'अनाहतचक्र' की अवस्थिति मानी गई है। अनाहतचक्र के ऊपर कण्ठ प्रदेश में 'विशुद्धारब्धचक्र' अवस्थित है। विशुद्धारब्धचक्र के ऊपर जाल्म के मध्य भाग में 'आसाचक्र' की अवस्थिति मानी गई है। श्रुति से लगभग तीन इंच ऊपर कपाल के मध्य में 'सहस्रारचक्र' की अवस्थिति है। इसी को 'ब्रह्मरन्ध्र' भी कहा जाता है।



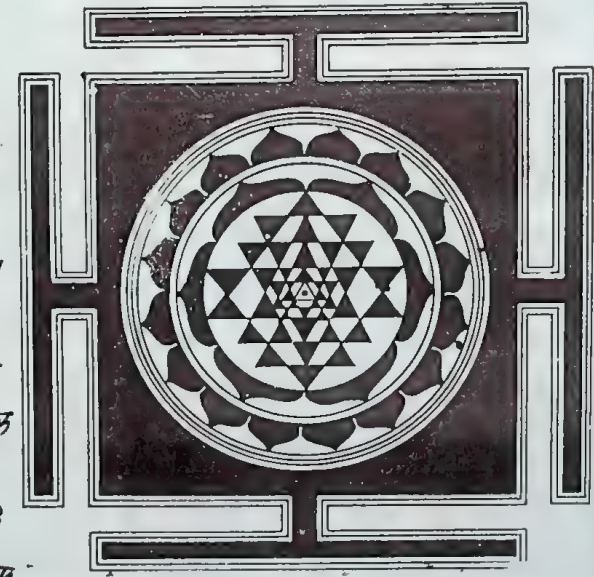
तो वह कुमशा विभिन्न चक्रों का भेदन करती हुई 'सहस्रार' तक जा पहुँचती है। सहस्रार को ही ब्रह्मरन्ध्र, [शरीरस्थ सुषुम्ना नाड़ी सर्पिणी की भाँती कुण्डली मोरे मूलाधार में शायन करती है। योगाभ्यास के द्वारा जब उसे जगाया जाता है, (आसा चक्र)]

सहस्रदल कमल अथवा शून्यचक्र भी कहते हैं। कुण्डलिनी को जगाने का अभ्यास किसी योग्य गुरु के निर्देशन से ही करना चाहिए। तभी उसमें सफलता प्राप्त होती है, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि पहुँचने की सम्भावना अधिक होगी।

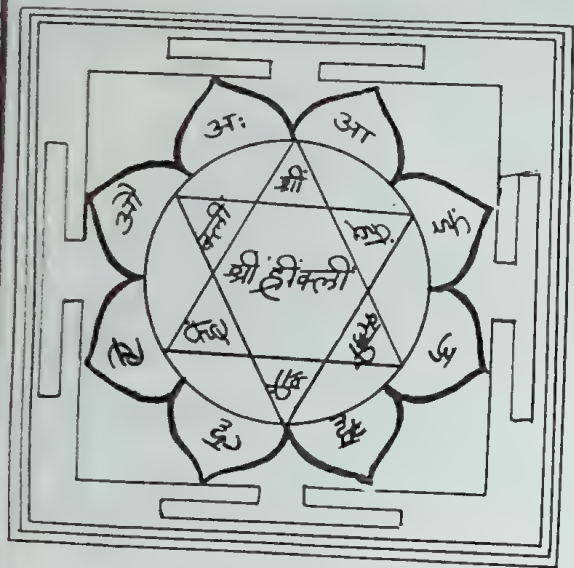
इस प्रकार श्री बिष्णा के उपासना-कुसुम में अष्टाराम्नाथ से लेकर उद्धर्मानाथ तक की क्रमोपासना से उत्तरोत्तर शब्द योग, मन्त्र योग, भक्ति योग, कर्म योग एवं ज्ञान योग प्राप्त होकर, अन्त में केवल मौक्षरूप परमपुरुषार्थ प्राप्त होता है। इनमें मन्त्र-योग आदि सिद्ध होने पर अनाराध-निवृत्ति, ऐहिक-सुख-प्राप्ति आदि भी अनायास ही होने लगते हैं। साधना निर्वाधगति से आगे बढ़ते लगती है तथा आगे बढ़ कर परमपुरुषार्थ को प्राप्त करा देती है। यही इस उपासना का मुख्य फल है।

छिमात्मक ज्ञान - 'श्री यन्त्र' की उपासना का छिमात्मक-ज्ञान किसी अनुभवी साधक से प्राप्त करना आवश्यक है। बिना छिमात्मक ज्ञान प्राप्त किए इस साधन को करने से लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। सामान्यतः यन्त्र-लेखनोपरान्त उतिष्ठित शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, यन्त्र को अपने सम्मुख किसी जीवी भाँति पर स्थापित कर, धूप-दीप-गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, 'सी-सूक्त' का पाठ करने से यन्त्र-प्राप्त्य सुख आदि ऐश्वर्यों का लाभ होता है।

श्री यन्त्र सं० ३



(त्रिपुरा यन्त्र)



अथ त्रिपुरा मन्त्र प्रयोग - भगवती त्रिपुरा का अक्षर मन्त्र है - "श्रीं ह्रीं क्लीं ।"

यह त्रिपुरा मन्त्र वरादि, कामादि तथा श्री बीजादि क्रम से तीन प्रकार का होता है । यथा - (१) ह्रीं श्रीं ह्रीं, (२) क्लीं श्रीं ह्रीं एवं (३) श्रीं ह्रीं क्लीं ।

विधि - सर्वप्रथम बाँई ओर पड़बैति चित्र के अनुसार भगवती त्रिपुरा का यन्त्र तर्पण करें । फिर सामान्य पूजा-पहुति से यन्त्र के मध्य भगवती का आवाहन करते हुए अक्ष्यादि न्यास, कराङ्ग न्यास एवं षडङ्ग न्यास करने के बाद देवी का निम्नानुसार दधान करें -

"पारिजातवने रम्ये मण्डपे मणि कुट्टमे । रत्न सिंहासने रम्ये पद्मे षट्कोण शोभिते ।
अधस्तात् कल्प वृक्षस्य निषण्णां देवतां स्मरेत् । चापं पाशान्मुञ्च सरसि जानयं कुशं पुष्प
वाणान् ॥ सविभ्राणां करसरसिजै रत्नमौलिं त्रिनेत्राम् । हेमाब्जाभां कुचभरतां
रत्नकज्जीर काञ्चीम् ॥ ग्रीवे पादौ विलसिततनुं भावेयेच्छक्तिमाद्याम् । चामरा-
दर्शं ताम्बूल करणक सगुदकान् ॥ बहन्तीभिः कुचातीभिर्दूतीभिः परिवारिताम् ।
करुणा मृत वधिष्या पश्यतीं साधकं दृष्ट्वा ॥"

उक्त उच्चार से दधान कर, मानसोपचार पूजा कर शीघ्र-स्थापन करें तथा

सामान्य पूजा-पहुति क्रम से सब क्रियाओं को सम्पन्न करें । पुरश्चरण - इस मन्त्र के पुरश्चरण में १२ लाख जप करके त्रिमधुमुक्त बिल्व, अरगवध अथवा जपापुष्प से दशांश होम करें । यह प्रयोग समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाला है ।

(त्वरिता यन्त्र)

अथ त्वरिता मन्त्र प्रयोग-

भगवती त्वरिता का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है- "ॐ ह्रीं हुं स्वे धे क्ष स्त्री हूं क्ष स ह्रीं फट् ।" यह सर्वसिद्धिप्रद है

विनियोग - "अस्य मन्त्रस्य अर्पुन भृषि विराट् दन्तः त्वरिता देवता पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्धयर्थे विनियोगः ।"

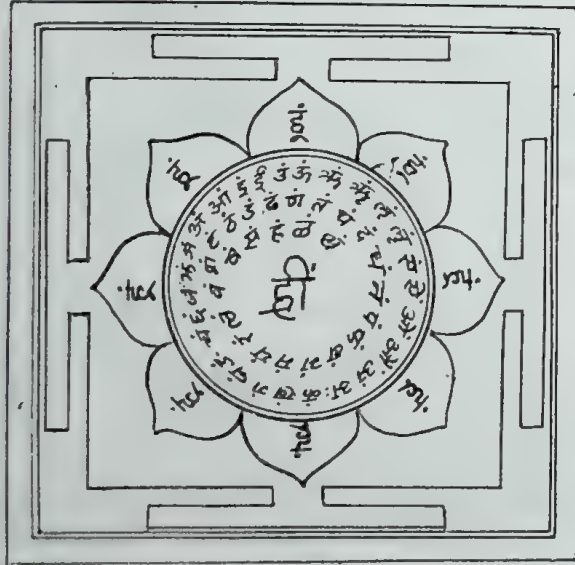
उक्त विनियोग के आधार पर 'अक्षपादि-न्यासं तथा मन्त्रवर्णों के आधार पर 'मन्त्र-न्यास करके निम्नानुसार देवी का 'चपान' करें-

"श्यामां बहिकलाय शीरवरपुतामाबृषणीं बुकां
गुञ्जाहारलसत्पयोधरनतामष्टादिपान् विभ्रतीम् ।
ताटकांगदमेखलगुणारठाणञ्जीरतां पायितान्
कैरातीं वरदामयोऽतकरां देवीं त्रिनेत्रां भजे ॥"

उक्त विधि से चपान कर, बाँई ओर के चित्र में 'उद्विगति-यन्त्र' का निर्माण कर सामान्य पूजा पट्टि से पीठ-पूजा, तटुपरान्त आवाण-पूजा सम्पन्न करें। 'निबन्ध' में लिखा है कि द्वार के दो तोपों में हाथ में धरतया स्वर्णद्विषण एवं चटुवस्त्र धारिणी जया-विजया

को पूजा करें। अरुणवर्ण के सुगन्धित पुष्प, चूच-दीप आदि से पूजन कर, नृत्तगीतादि का उत्सव करना चाहिए।
पुरश्चरण - ३५ मन्त्र के पुरश्चरण में १ लाख जप करके त्रिमधु युक्त बिल्व-सन्निधौ का १० हण्ट होम करना चाहिए।

मह.



(नित्या यन्त्र)

अथ नित्या मन्त्र प्रयोगः-

भगवती नित्या देवी का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है -
 "से बली नित्य क्लिप्ते मद द्रवे स्वाहा।"

विनियोगः -

"अस्य श्री नित्या द्वादशाक्षर मन्त्रस्य सम्मोहन त्रयसि
 निवृत्त्यर्थः नित्या देवता पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्धये विनियोगः।"

उक्त विनियोग के आधार पर 'जुषादि न्यास' तथा 'का' न्यास
 रुद्रादि न्यास करके निम्नानुसार ध्यान करें -

"अर्धेन्दु मौलिमरुणा ममरा भिवन्द्या मम्भोजपाश शृणि पूर्ण कपाल हस्ताम्।
 वक्ताङ्ग बाण वसनाभरणं त्रिनेत्रो द्यापेक्षिवस्त्वनितां मद विह्वलाङ्गीम् ॥"

उक्त प्रकार से ध्यान करके मानस-पूजा पूर्वक शोक-स्थापन करें।
 बाँई ओर उदरिति चित्र के अनुसार 'त्वरिता यन्त्र' को बनाकर, पीठ शृंग के
 बाद आवृण-पूजा करे तथा अष्टदलों के बाहर इत्यादि लोकपालों
 तथा वज्रादि अस्त्रों की पूजा कर. धूपादि विसर्जनान्त कर्म करके, पूजा
 सम्पूर्ण करें।

पुरश्चरण -

इस मन्त्र के पुरश्चरण में ४ बार की संख्या में जप करना
 करना चाहिए तथा शर्करा, मधु एवं घृत युक्ता मधूक पुष्पों द्वारा जप के दशांश होम करके गुरुदेव को रत्न
 करे। त्वरिता देवी साधक की समस्या मनोभिलाषाओं की पूर्ति करती है।

(वागीश्वरी मन्त्र)

अथ वागीश्वरी मन्त्र प्रयोग - भगवती वागीश्वरी का दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है - "वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ।"

इस मन्त्र को भुवनेश्वरी अर्थात् 'ह्री' बीज से पुष्टि कर देने से अर्थात् आदि और अन्त में 'ह्री' लगा देने से यह 'महा सारस्वत मन्त्र' बन जाता है। यह मन्त्र विद्या, बुद्धि तथा वाक्शक्ति उदायक है।

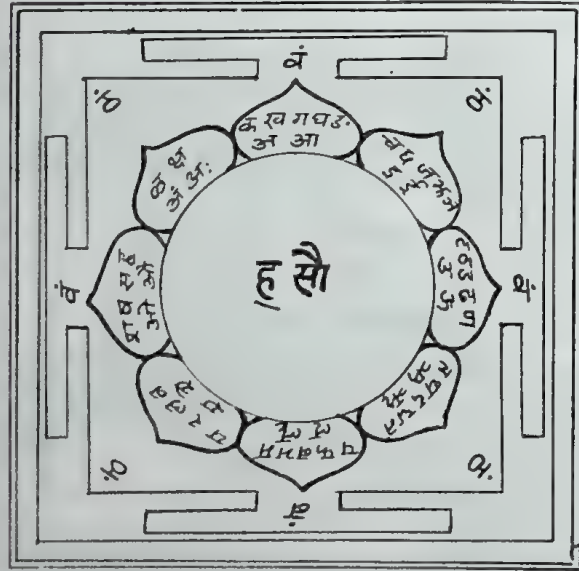
विनियोग - अस्म्य श्रीवागीश्वरी दशाक्षर मन्त्रस्य कण्ठ ऋषिः विराट् छन्दः वागीश्वरी देवता पुरुषार्थ-चतुष्टये जपे विनियोगः ।"

उक्त विनियोग के आधार पर ऋषिपादि न्यास तथा मन्त्र के आधार पर मन्त्र न्यास, कराङ्ग न्यास एवं षडङ्ग न्यास करके निम्नानुसार च्यान करे -

तरुणाक्षकलमिदोविभ्रती शुभ्रकान्तिः, कुचभरनमिताङ्गी सन्निवर्णसिताब्जे ।
निजकर कमलोद्भास्वलेखनी पुस्तक-शी, सकलविभक्त सिद्धये पातु वाग्देवता नः ॥

उक्त विधि से च्यान करे तथा बाँट 'ओर' उद्देशित चित्र के अनुसार 'वागीश्वरी मन्त्र' का निर्माण कर सामान्य विधि से पीठ-ध्वजा तथा आवरण-पूजा

करे। **पुरश्चरण -** इस मन्त्र के पुरश्चरण में १० लाख की संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए तथा जप के अन्त में दुग्ध-मिश्रित श्वेत पद्म अथवा त्रिमधु युक्त तिलो द्वारा जप का दशोश होम करना चाहिए।



महाः

महा०

अथ ज्वालामालिनी मन्त्र प्रयोग- भगवती ज्वालामालिनी

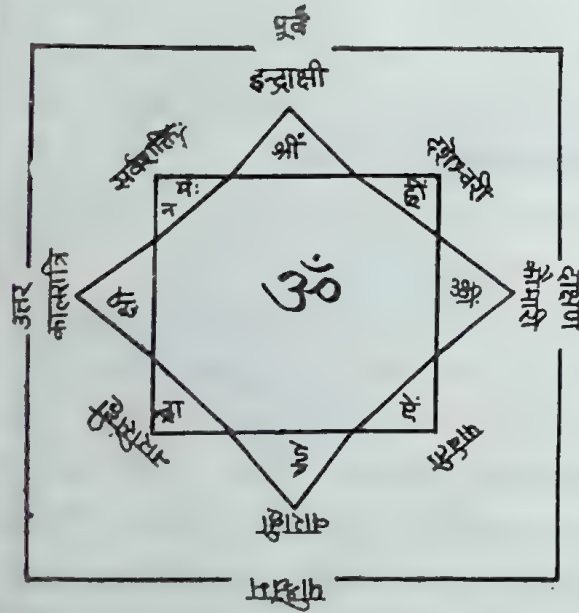
भी शिव-पत्नी की ही एक प्रतिष्ठा है। / इगका मन्त्र इस प्रकार है - "ॐ नमो भगवति ज्वाला मालिनी देवि सर्वज्ञा संसारकारिणी ज्ञातवेदसि ज्वलंति पुज्वलंति ज्वल ज्वल पुज्वल हुं रं रं हुं फट् ।"

ज्वालामालिनी के प्रजनन-घन्त्र का स्वरूप इसी
 पृष्ठ पर बाईं ओर उदगिति है। इसे ताम्रपत्र पर अंकित
 करा लेना चाहिए, अथवा मोक्षपत्र के ऊपर कालचंदन
 या अष्टगंध से लिखकर त्रधार कर लेना चाहिए।
 देवी के

देवी के पूजन का मन्त्र इस प्रकार है -

"ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहा-
रकारि के जातवेदसि ज्वलंति ज्वलंति ज्वल ज्वल
प्रज्वल हुं रं हुं फट् ज्वालामालिनी नित्या शीपायुक्ता
पूजयामि तर्पयामि नमः॥"

(इन्द्राक्षी यन्त्र)



इन्द्राक्षी यन्त्र प्रयोग - भगवती इन्द्राक्षी का यन्त्र बाँई ओर उदक्षिण है। (ये देवी भी महामाया दुर्गा की उग्ररूपा है)। इस यन्त्र को अष्टगंध अथवा लालचंदन से भोजपत्र के कृण्व लियकर पूजा करनी चाहिए। यन्त्र को स्पर्श करी हृष्ट देने के लिए ताम्रपत्र का भी सुवदाया जा सकता है। इस यन्त्र का सामान्य पूजा विधि से पूजा करके तिलागुहार च्छात करना चाहिए। च्छात का मन्त्र इस प्रकार है -

"इन्द्राक्षी त्रिभुजां देवी पीतवस्त्र समन्विताम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम् ॥ १ ॥ इन्द्राक्षी नाम सण्ज्योतिर्नानारत्न विभूषिताम्। उत्पन्नवदनाम्भोजामक्षरोगण सेविताम् ॥ २ ॥"

इस प्रकार से च्छात करने के पश्चात् 'इन्द्राक्षी स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। स्तोत्र इस प्रकार है -

"इत्त उवाच ॥ इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवसेः समुदाहता। गौरी प्राक्कम्परी देवी दुर्गानाम्नाऽतिविद्युता ॥ ३ ॥ कात्पायनी महादेवी चन्द्रचण्डा महातपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ ४ ॥ नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला। अग्निज्वाला रौद्रमुली कालरात्रिस्तपस्विनी ॥ ५ ॥ मेघप्रधामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी। महोदरी मुष्णकेशी वोररूपा

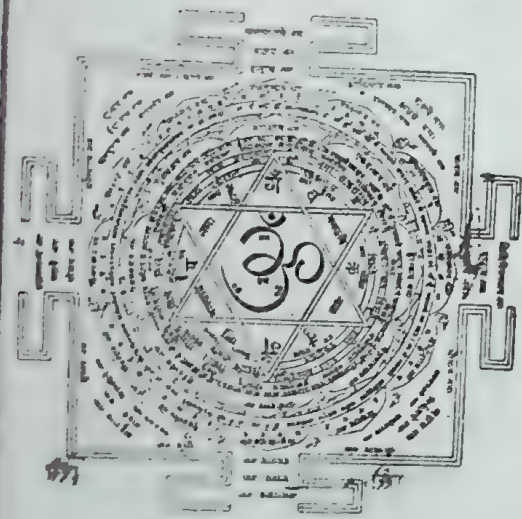
महा०

महाबला ॥ ६॥ अच्युता भद्रा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया । शिवदूती कराली च उत्पला परमेश्वरी ॥ ७॥ महिषा-
सुरहन्त्री च चामुण्डा सप्तमातरः । इन्द्राणी इन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः पराधना ॥ ८॥ शिवा च शिवहृत्पा च
शिवशक्ति पराधना । सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ ९॥ आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ॥
आदाही नाराहिणी च भीमा भैरवनादिनी ॥ १०॥ स्तुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती । अनन्ता
विजया पूर्णा मानरत्नोत्पराजिता ॥ ११॥ भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्पम्बिका शिवा । शिवा भवानी रुद्रा-
णी शङ्करादृशरीरिणी ॥ १२॥ कृत्युजया महामाया सर्वरोग प्रणाशिनी । ऐरावतगणगुरु मूर्ध्नि कङ्कणज्वा-
ला ॥ १३॥ स्तोत्रमिषदौर्ध्वैः स्तुता शङ्केन धीमता । शातमावर्तते प्रस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥ १४॥
आवर्तयेत्सहस्रं यो लभते वाञ्छितं फलं । इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥ १५॥

उक्त स्तोत्र का नित्य १०० बार पाठ करने से मनुष्य सब प्रकार की व्याधि तथा बन्धनों से मुक्त
हो जाता है और जो रक्तलहसु बार पाठ करता है, वह मनोवाञ्छित फल प्राप्त करता है ।

अथ श्रीगणेश यन्त्र प्रयोग-

श्रीगणेश सब देवताओं में 'आदि-पुरुष' है । इनके अनेक
मन्त्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं - (१) वक्रतुण्डाय हुम् । (२) राघस्पोषस्य ददितानि धिदौ
रत्नधातुमाभू शोण बलमहमो वक्रतुण्डाय हुम् । (३) मेघोल्लास स्वाहा - इन सब मन्त्रों की जप-संख्या ६ लाख
है । (४) ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं, (५) ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा, (६) वक्रतुण्डे क-
दम्बदाय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वरवरद सर्वजनं मे वश मानय स्वाहा - इन मन्त्रों की जप संख्या ४ लाख है ।
(७) ॐ हस्ति विशाचि लिखे स्वाहा, (८) गं हस्ति विशाचि लिखे स्वाहा, (९) ॐ नमो भगवते रक्तवन्द्याय हस्ति



-मुराया लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मे आं ह्रीं गं जे जे स्वाहा - इन सब मन्त्रों की जप संख्या १-१ लावते हैं। ये सभी मन्त्र मन्त्रालयाओं की प्रतिक्रिया होते हैं।

बाईं ओर छदशति गणेश यन्त्र को। अष्टगंध अथवा लालचंदन द्वारा भोजन पर लिखे अथवा ताम्रपत्र पर खुदवाले। छदशति यन्त्र में जो वीठ-देवी-देवता आदि के नाम लिखे हैं, उन्हें बिना लिखे भी यन्त्र का स्वरूप तय कर लिया जा सकता है। यन्त्र लेखनेवाला गन्ध-पुष्पादि से श्रीगणेशजी का तथा यन्त्र का पूजन करना-चाहिए। पूजन सामान्य-विधि से भी किया जा सकता है। विस्तृत रूप विशिष्ट विधियों की जानकारी के लिए अथ गणेश विषयक तन्त्र ग्रंथों का अध्ययन करना-चाहिए। यज्ञ का यन्त्र इस प्रकार है—

‘एक दन्तां शूर्पकण्ठिः, जंघ्वलं चतुर्भुजम्। चाप्रांक्षुशारदेवभ्योदकान्तिः। अतस्करैः॥ रक्तपुष्पमयीमालाकण्ठे हस्ते परांशुभाम्। भक्तानां वरदे सिद्धिः।

बुद्धिं मेवितं सदा। सिद्धिं बुद्धिं उदन्तुण्णधर्माऽर्थ काम मोक्षदम्। जल रुद्रहरीन्द्राद्यैस्संस्तुतम्वरमर्षिभिः।
पुरस्कार - पूर्वोक्त संख्या में मन्त्र-जप करके, जप का दशांश होम करना चाहिए। होम तिलों से करना उचित है। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्रह्म-भोजन का निधम है। बालुणों को मोदक-खीर आदि का भोजन कराना चाहिए। इससे सब प्रकार के विघ्न दूर होते हैं।

(हरिद्रागणेश मन्त्र)

अथ हरिद्रागणेश मन्त्र प्रयोग- हरिद्रागणेश का शकाक्षरी मन्त्र है-

"ॐ लं ।" यह सर्वार्थ सिद्धिदायक तथा विघ्न-विनाशक है।

विनिर्घोग- "ॐ अस्य श्रीहरिद्रागणपति मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः
गायत्री छन्दः हरिद्रागणपतिर्देवता गं कीजं लं वाक्वितः समाभीष्ट
सिद्धये जपे विनिर्घोगः ।"

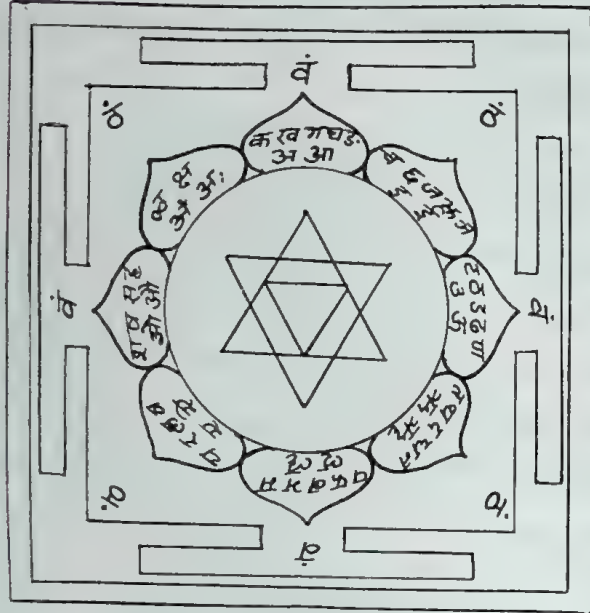
षडङ्गुत्पाद- "ॐ गं हृदपाय नमः । ॐ गी शिरसे स्वाहा । ॐ गं शिरवाये
ववह । ॐ गै कवचाय हुम् । ॐ गौ नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ गं अङ्गाय
फट् ।" इस प्रकार षडङ्गुत्पाद का के निम्नानुसार ध्यान करें-

"हरिद्रामं चतुर्बाहुं हरिद्रवसनं चित्रम् ।

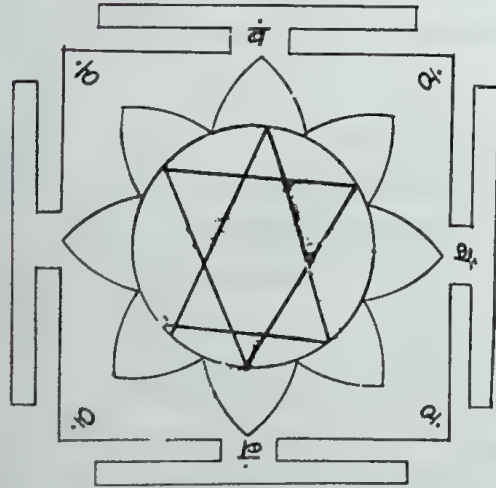
पाद्माङ्कुशधरं देवं मोदके दन्तमेव च ॥"

उक्त प्रकार से ध्यान कर, मानसोपचारों से पूजन
कर, विधिवत् शंख-स्थापन, पीठ-पूजा, अंस-पूजा, आचरण-पूजा
आदि इत्यादि सामान्य-विधिसे करे । बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के
अनुसार मन्त्र निर्माण करना चाहिए ।

पुरश्चरण- इस मन्त्र का पुरश्चरण ५ लाव जप है । जप का
दशांश घृत, मधु, शर्करा, हरिद्रा मिश्रित तण्डुले से होम करके तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण-भोजन करे ।



(शिव मन्त्र)



अथ शिव मन्त्र-पत्र प्रयोग-

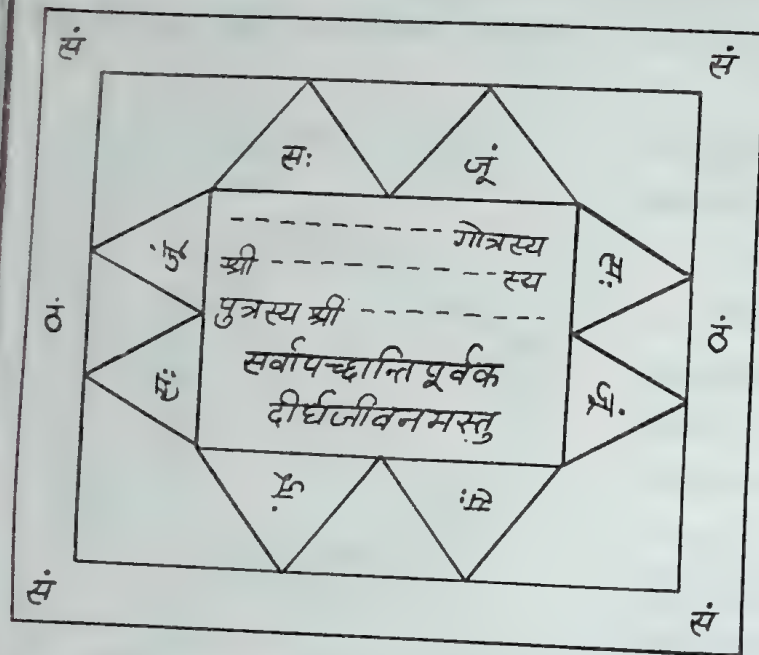
भगवान् स्वदाशिव का महामन्त्र है - "ॐ नमः शिवाय ।"

चूँकि शिवजी के अनेक रूप हैं, अतः मन्त्र भी अनेक पाये जाते हैं । परन्तु साधकों के लिए यही मन्त्र सर्वोपरि है । दूसरा मन्त्र - 'नमो भगवते रुद्राय' भी अभीष्ट-साधक है । महासृष्टि-जप आदि अथ मन्त्रों की जानकारी के लिए विभिन्न तन्त्र-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए । कोई भी मोर उदगति शिव के पूजन-पत्र को पागे नाम पत्र पर रूढ़ि देना ले । अथवा अष्टगंध, गोरोचना या केसर से भोजपत्र पर लिखकर सज्जा कर ले । मन्त्र लेखनोपरांत समाप्त-पूजा-विधि से पूजन करे तथा तिलगुप्ता शिवजी का स्नान करे - 'बभ्रूक सन्निभं देव त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् । त्रिशूलधारिणं वन्दे चाकृदहम् सुनिर्मलम् ॥ १॥ कपालधारिणं देवं वरदामयहस्तकम् । उमपा सहितं शम्भुं च पापे त्सो मे श्वरं सदा ॥ २॥'

पुष्टि - इस मन्त्र का पुष्टि २४ लाख मन्त्र जप है । जप पूरा हो जाने पर २४ हजार स्वीर की आहुतियों से होम करे । इससे मन्त्र सिद्ध होकर साधक को अभीष्ट-सिद्धि देने वाला हो जाता है किन्तु दो हजार मन्त्र-जप करने से शरीर से दुष्टता मिलती है । तीस हजार जपने से दीर्घायु का लाभ होता है । २५ हजार जपने से लौकिक-कामनाओं की पूर्ति होती है - इसमें सन्देह नहीं है ।

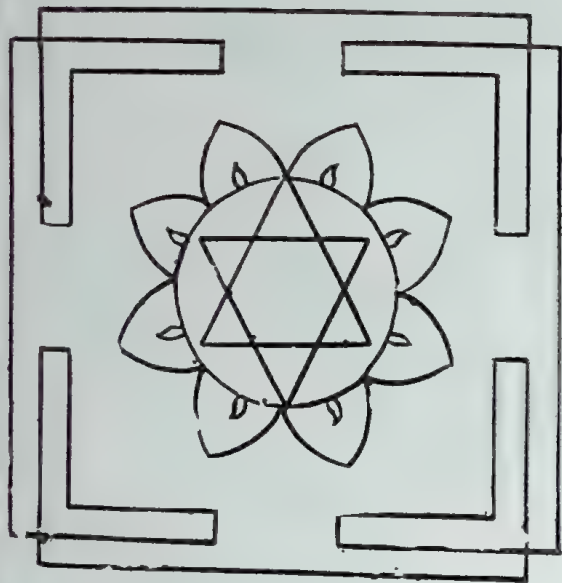
(लघु मृत्पुञ्जय यन्त्र)

अथ लघु मृत्पुञ्जय प्रयोग-



महासृष्ट्युज्जय मन्त्र इस प्रकार है - "ॐ ह्रीं
 ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ज्येष्ठकं यणामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
 उर्वारकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीमामृतात् भूर्भुवः स्वः ऐं जूं सः ह्रीं
 ॐ ।" - इस मन्त्र की विस्तृत प्रयोग विधि की जानकारी के लिए
 मन्त्रमहोदधि का अध्ययन करें। यहाँ 'लघुमृत्पुञ्जय मन्त्र'
 प्रयोग के विषय में लिखा जा रहा है। मन्त्र इस प्रकार है - " ॐ
 जूं सः पालय पालय सः जूं ॐ"। इस मन्त्र का जप जिस व्यक्ति
 के लिए किया जाय उसके नाम का उच्चारण " ॐ जूं सः " के बाद
 करना चाहिए। जैसे - 'राम प्रसाद' के लिए मन्त्र-जप कहना हो तो
 मन्त्रोच्चारण इस प्रकार करेंगे - " ॐ जूं सः राम प्रसादः पालय
 पालय सः जूं ॐ"। इस मन्त्र के जप के समय कोई और प्रदर्शित
 चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। यन्त्र के रवाली
 स्थानों में कण्ठ बालीयंक्ति में साधक का गोत्र, दूसरी यंक्ति में पिता
 का नाम तथा तीसरी यंक्ति में साधक का नाम लिखना चाहिए।
 मन्त्र ११ लाइन की संख्या में जप तथा दशोष हो सकरे से सिंह होता है। इसके जप तथा मन्त्र-पाठ से सब रोगों का नाश होता है।

(कार्तवीर्य अर्जुन मन्त्र)



अथ कार्तवीर्य अर्जुन मन्त्र-यन्त्र-प्रयोग- कार्तवीर्य अर्जुन को सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है। इनके मन्त्र निम्नलिखित हैं—

(१) क्रीं श्रीं क्लीं श्रीं आं ह्रीं क्रीं श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

(२) ॐ क्रीं श्रीं क्लीं श्रीं आं ह्रीं क्रीं श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

इस मन्त्र के दत्तात्रेय ऋषि हैं, अतुष्टुप छन्द है, कार्तवीर्य-
-र्जुन देवता है, ध्रुव बीज है तथा हृदय शक्ति है।

कार्तवीर्य अर्जुन के मन्त्र का स्थूल रूप बाँहें और उदर शक्ति है। इस
मन्त्र को घाते ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगण्यकारा
भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

मन्त्राक्षरों के आधार पर ऋष्यादि त्पास, कर-न्पास, हृदया-
-दि त्पास आदि करके जीठ-पूजा तथा आकर्षण-पूजा सम्पन्न करे।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

“उद्यत्सूर्यसहस्रकान्तिरखिलक्षोणीधैर्वैवन्दिता । हस्तानां शतपञ्चकेन च
दधच्छापानिषु स्तावता ॥ कण्ठे हाटकमालयापरिवृतश्चक्रावतरो हरेः । पाया
त्स्यंदनगेरुणा भवस्रजः श्रीकार्तवीर्यो नृपः ॥” पुरश्चरण - इस मन्त्र का एकलारव की संख्या में जप करना चा-

हिए तथा चावल रुबे रबीर मिलाकर तिलों से दशांश होम करना चाहिए। कार्तवीर्यार्जुन को दीप अर्पित किया है।

(घण्टाकर्ण मूर्ति-यन्त्र)

मन्त्र
७३३



है। घण्टाकर्ण 'बीजमन्त्र' के स्वरूप को

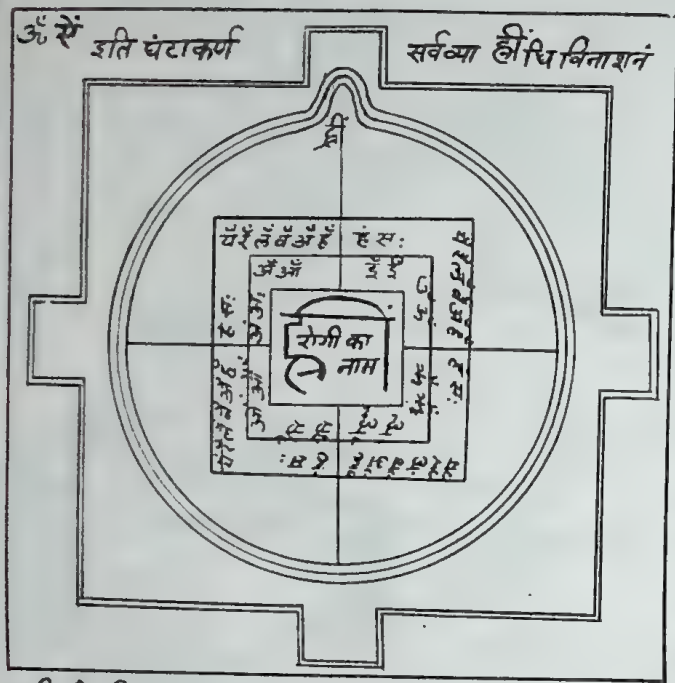
अथ घण्टाकर्ण यन्त्र प्रयोग -

'हरिवंशपुराण' में 'घण्टाकर्ण पिशाच की कथा का वर्णन दिया जाता है। यह शिव का परम भक्त था तथा किसी अन्य देवता का नाम कानों में न पड़े, इसलिए उसने अपने दोनों कानों में दो घंटे लटका लिए थे। यदि उसके समक्ष कोई किसी अन्य देवता का नाम लेता तो वह अपने कानों के छपेटों को जोर से बजाने लगता था।

घण्टाकर्ण का 'बीजमन्त्र' तथा 'मूर्ति यन्त्र' में 'माला-मन्त्र' लिखने का विधान है। 'मूर्ति यन्त्र' में घण्टाकर्ण पिशाच की मूर्तिको रेखांकित करके, उसी में घण्टाकर्ण स्तोत्र-मन्त्र के उसके उत्प्रेक्ष अवयव में चारण करने की व्यवस्था की गई है। घण्टाकर्ण के 'मूर्ति यन्त्र' स्वरूप को इसी पृष्ठ पर ऊँच/ओर उदक्षिति किया गया है। इसी के अनुरूप मन्त्र का निर्माण कर ले। विमर्शिकाशिकी तन्त्र के अनुसार— स्तोत्र-मन्त्र का १००० बार जप करके, १००० मन्त्रों से ही हवन करना चाहिए। जप तथा हवन का स्तोत्र मन्त्र अगले पृष्ठ पर लिखे अनुसार है।

महा०

(घण्टाकर्णः बीजं घण्टा)



जप तथा हवन का मन्त्र-स्तोत्र निम्नानुसार है-

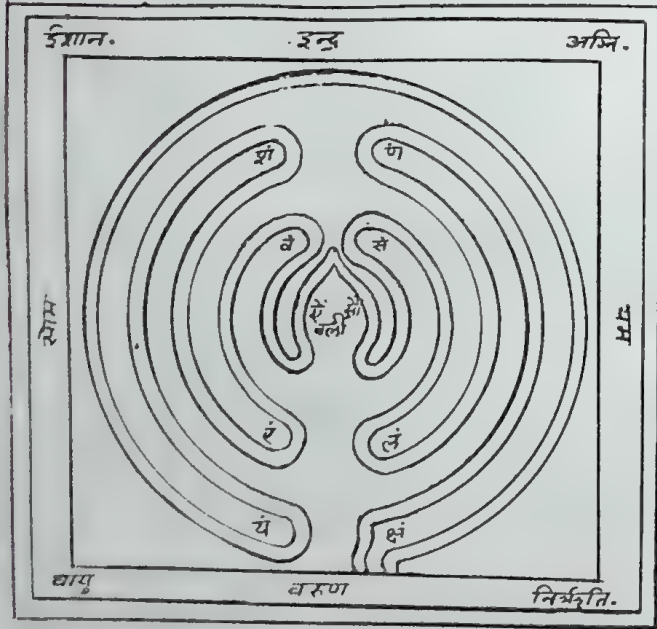
ॐ नमो घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशनः
विशुचिका भये प्राप्ति वरुण वरुण महाबलः ॥ १ ॥
गृहेत्वं लिख मे देव लिखिताक्षर ये किंशु ।
रोगास्तत्र पुणश्च येतो वातपित्त कफोदग्वा ॥ २ ॥
तत्र रोगभयं नास्ति घातिका र्णो जवाहृषा ।
शाकिनी भूत वैताल राक्षसाः प्रभवन्ति नो ॥ ३ ॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंश्यते ।
अग्निचौर भयं नास्ति ॐ ह्रीं घण्टाकर्ण नमोस्तुते ॥ ४ ॥

ॐ ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा ॥ "

होम-द्रव्य हवन के लिए निम्न लिखित द्रव्यों को लेना चाहिए-

मिर्ची (काली) १००० दाने, चन्दन के टुकड़े १०००, धुत २ सेर, मधु अर्घार शहद २ सेर, गुग्गुल १ सेर, इलायची १०००, नारियल की गिरी के टुकड़े १०००, सुपारी १०००, कपूर १ सेर, तिल का तेल १ सेर तथा कौए के वंश १०००—इन सब द्रव्यों को एक साथ मिलाकर हवन करने से सभी देशों की महामारी - हैजा-विशुचिका आदि—उपद्रव

(श्री वृसिंह यन्त्र)



नष्ट होते हैं। चण्डाकर्ष के बीच यन्त्र को कागज पर लिख कर रोगी की भुजा पर बाँधने से महामारी का उद्भव दूर होता है। यह यन्त्र किसी भी महामारी के फैलने पर उपोपनीष होता है। इसके समाप्त होने पर यन्त्र को बोलकर किसी नदी अथवा सरोवर के स्वच्छ जल में उवाहित कर देना चाहिए।

अथ श्री वृसिंह यन्त्र प्रयोग- बाँईं ओर उदक्षित किए 'श्री वृसिंह यन्त्र' को अष्ट गंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिख कर तथा धूप-दीप देकर, लॉके के तामील में भरकर, रोगी के गले में अथवा पुरुष की दाँईं भुजा एवं स्त्री की बाँईं भुजा में बाँधा देना चाहिए।

यन्त्र को तामील में भरने के बाद गंध-पुष्पादि द्वारा उसका सामाग-भूषण करें तथा गुग्गुलु की धूप दें।

यह यन्त्र विशेषतः 'प्लेग' महामारी के फैलने पर धारण करना चाहिए, क्योंकि यह उसी के लिए उपोपनीष है। इसे धारण करने से महामारी के प्रकोप से सुरक्षा होती है। जब प्लेग का प्रकोप समाप्त होता है, तो इस यन्त्र को उगार कर किसी नदी-सरोवर के स्वच्छ जल में उवाहित करें।

महा०

(सूर्य-यन्त्र)

ॐ

६	१	८
७	५	३
२	४	९

अथ सूर्य यन्त्रोपासना-

'सूर्य' उपासना की अनेक विधियाँ तथा अनेक मन्त्र-यन्त्र हैं। यहाँ एक सरलतम विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

बाँई ओर प्रदक्षिणि 'सूर्य-यन्त्र' को रविवार के दिन, भोजयन्त्र के ऊपर, लालचन्दन से लिख कर, लोहे के ताबीज में भर दे। किन्तु सामान्य पूजा-विधि से भगवान् सूर्य का पूजन कर, यन्त्र (ताबीज) को धूप देकर पुरुष अपनी दाँई भुजा में तथा स्त्री अपनी बाँई भुजा में धारण काले। स्त्री-पुरुष दोनों ही कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं।

इस यन्त्र को धारण करने के साधनी तिल लिखित 'शांखी-मंत्र' का जप निरन्तर करते रहना चाहिए-

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"
इस यन्त्रको धारण करने से मनोकामना पूर्ण होती है।

सूर्य के अन्य मन्त्र - सूर्य के अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं-

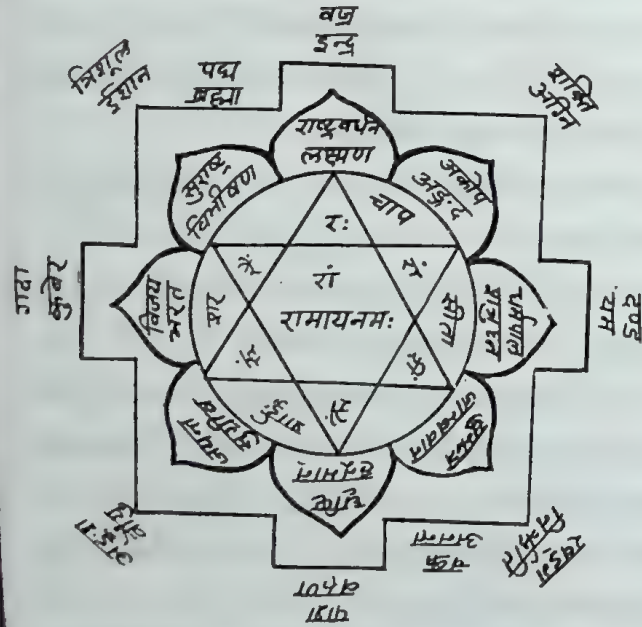
(१) "ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्यः सूर्य आदित्यः श्री।"

(२) "ॐ ह्रीं सूर्यः सूर्य आदित्यः।"

इन दोनों में से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। जप संख्या १० लाव है। जप संख्या का दशोत्तर होम कमल अथवा शिला से करना चाहिए। होम का दशोत्तर हवन आदि करना चाहिए। यह उद्योगभी कामना पूर्ण है।

(छडहर श्रीराममन्त्र यन्त्रम्)

पन्ना
२२३



अथ राम मन्त्र प्रयोग-

श्रीरामचन्द्रजी का चतुस्तर मन्त्र
इस प्रकार है— " रं रामाय नमः । " इस मन्त्र की प्रयोग (अनुष्ठान)
विधि निम्नानुसार है—

विनियोग - " अस्य श्री छडहर श्रीराममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गाधत्री
द्यौः श्रीरामो देवता रं बीजम् नमः शक्तिः चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये
जपे विनियोगः । " इस वाक्य को पढ़ कर पृथकी पढ़ जल दोड़े।

ऋष्यादि न्यास - इसके बाद निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास' करे -

ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः - शिरसि १। गाधत्री द्यौसे नमः - मुखे २।
श्रीरामदेवतायै नमः - हृदि ३। रं बीजाय नमः - गुह्ये ४। नमः वाक्से
नमः - पादयोः ५। विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे ६॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥

कर न्यास - इसके बाद निम्नानुसार 'कर न्यास' करे -

ॐ रं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ री तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रं मध्यमा
भ्यां नमः । ॐ रै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ रौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ रः करतलकर्पूष्ठाभ्यां नमः ॥ इति कर न्यासः ।

हृदयादि छत्र न्यास - इसके बाद निम्नानुसार छत्र न्यास करे -

ॐ रं हृदयाय नमः । ॐ री शिरसे स्वाहा । ॐ रं शिखायै वज्र । ॐ रै कपचाय हुम् । ॐ रौ नेत्रत्रयाय वौक् ।

महा०

ॐ रः अस्त्राय फर ॥ इति दशदि षडङ्ग न्यासः ॥

मन्त्रवर्णन्यासः - इसके बाद निम्नानुसार 'मन्त्रवर्णन्यास' करे -

ॐ रां नमः ब्रह्मरन्ध्रे । ॐ राम नमः भुवोर्मध्ये । ॐ मां नमः हृदि । ॐ यं नमः नाभौ,
ॐ नं नमः लिङ्गे । ॐ मं नमः पादयोः ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ॥

ध्यानम् - इसके बाद ध्यान करें। मन्त्रा - "कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिष्टं वीरासनाध्यासिनं, सुद्रो-
तानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि । सीतां पार्श्वगतं सरोरुहकरं विद्युन्निभां राघवं, पञ्चमती-
मुपुराङ्गदादि विविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ।"

उक्त विधि से ध्यान करके 'सर्वतोभद्रमण्डल' में "ॐ मं मण्डकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो
नमः" इस मन्त्र से पीठ-देवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इष्ट प्रकार पूजा करे -

पूर्वदि कुम्भेण - "ॐ विमलायै नमः । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ हानायै नमः । ॐ क्रियायै नमः ।
ॐ योगायै नमः । ॐ प्रहृष्यै नमः । ॐ सत्पायै नमः । ॐ इष्टिनायै नमः । मन्त्रे - ॐ अगुग्रायै नमः ।

उक्त विधि से पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित श्रीरामचन्द्र (देखें - पृष्ठ १०४ पृ)
को अग्न्युत्तारण पूर्वक "ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतार्त्तमे वासुदेवाय सर्वोत्तमसंयोगपद्मपीठार्त्तमे नमः ।"
इस मन्त्र से पुष्पाध्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके तप्ता प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान
करके आवाहनादि से लेकर पुष्पात्त उपचारां से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आचरण-पूजा करे ।

सर्वप्रथम हृत्पद्म में पुष्पांजलि लेकर यह मन्त्र पढ़े - "ॐ संविन्मयः परो देव पराहृत्पद्मसन्निधिः

अनुष्टोत्र देहि मे राम परिवारार्चनाय मे ।- यह जपकर पुष्पाञ्जलि दें । इस प्रकार आलातेकर आवरण-पूजा आरम्भ करें ।

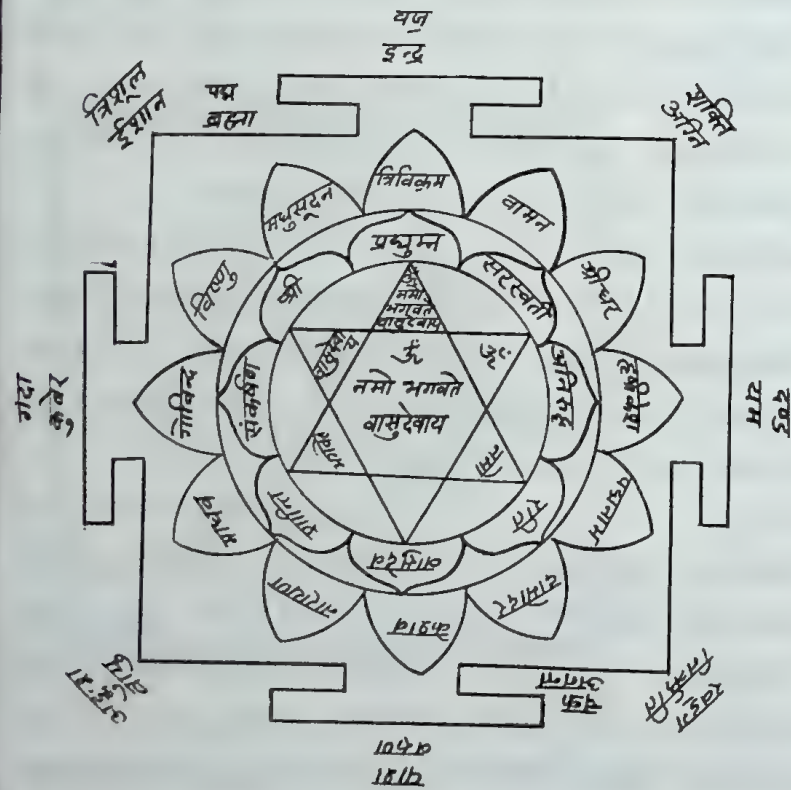
आवरण-पूजा - देव वाम पार्श्वे - "श्री सीतायै नमः । सीता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्रः । अग्नि कोणे - ॐ प्राङ्मुख्य नमः । शार्ङ्ग सीपाद ० । दक्षिण पार्श्वे - ॐ शराय नमः । वाम पार्श्वे - ॐ चापाय नमः ।" - इससे पूजा करे । फिर पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके - "ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पुष्पमावरणार्चनम् ॥" - यह जपकर, पुष्पाञ्जलि दे - "पूजितारत्नपिलाः सन्तु" यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १॥ इसके बाद घटकोण के सरो में, अग्नि कोणे - "ॐ रां हृदयाय नमः । निर्ऋते - ॐ द्वीं शिरसे स्वाहा । वायव्ये - ॐ रूं शिरसायै वषट् । ऐशान्ये - ॐ रैं कवचाय हुं । वज्र-पूजकपोर्मध्ये - ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । देव पश्चिमे - ॐ वः अरुत्राय फट् ।" इससे षड्भुजों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें । इति द्वितीयावरण ॥ २॥ उसके बाहर अष्टदलों में वज्र और पूजक के मध्य पाणी दिशा की कल्पना करके, पाणी क्रम से - "ॐ हनुमते नमः । हनुमत् श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ सुग्रीवाय नमः । सुग्रीव श्रीपादुकां ० । ॐ भरताय नमः । भरत श्रीपादुकां ० । ॐ विभीषणाय नमः । विभीषण श्रीपादुकां ० । ॐ लक्ष्मणाय नमः । लक्ष्मण श्रीपादुकां ० । ॐ अंगदाय नमः । अंगद श्रीपादुकां ० । ॐ शत्रुघ्नाय नमः । शत्रुघ्न श्रीपादुकां ० । ॐ जाम्बवते नमः । जाम्बवन्द्गीपरदुकां ० । इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें ॥ इति तृतीयावरण ॥ फिर अष्टदलागो में - "ॐ सृष्टाय नमः । सृष्ट श्रीपा ० । ॐ जयन्ताय नमः । जयन्त श्रीपा ० । ॐ विजयाय नमः । विजय श्रीपा ० । ॐ सुराष्टाय नमः । सुराष्ट श्रीपा ० । ॐ राष्ट्र-

वर्धनाय नमः । राष्ट्रवर्धन शीपा० । ॐ अकोपाय नमः । अकोप शीपा० । ॐ चर्मपालाय नमः । चर्मपाल शीपा० ।
 ॐ सुमन्ताय नमः । सुमन्त शीपा० । "इसे आगे की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति-चतुर्थविवरण ॥४॥

इसके बाद भूपुर में इन्दादि दश दिक्पालों की और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण ६ लाख जप है । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए ।

'शाखा तिलक' के अनुसार - मन्त्र में जितने वर्ण हैं, उतने लाख की पात्रा में मन्त्र का जप करना चाहिए । फिर अर्चित अग्नि में उसका दशांश कमलों से होम करना चाहिए । तदुपरान्त ब्राह्मण-भोजनादि कराना चाहिए । इस प्रकार पूजा आदि करने से सिद्ध हुए मन्त्र से प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए ।

कान्ध-प्रयोग - राजा को वश में करने के लिए चन्दन के जल से सिक्ता चमेली के फूलों से होम करना चाहिए । धन-धान्यादि की प्राप्ति के लिए कमलों से होम करना चाहिए । नील कमलों से होम करने से साधक सम्पूर्ण संसार को वश में कर लेता है । लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए बेल के फूलों से होम करना चाहिए । दूध से होम करने पर साधक रोग-रहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है । लाल कमलों के होम से वांछित-धन का लाभ होता है । मेधा-प्राप्ति के लिए पल्लव के नवीन पुष्पों से होम करना चाहिए । मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित जल पीने से सुवृष्ण रक्त वर्ण में कवि हो जाता है तथा मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित भोजन करने से महान् आरोग्य प्राप्त करता है ।



अथ विष्णु मन्त्र प्रयोग- भगवान् विष्णु का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है - "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।" इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है -

विनियोग - "अस्य श्री द्वादशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव परमात्मा देवता सर्वव्यापि-
-ये उपे विनियोगः ।

इसके बाद विनियोग-वाक्य के आधार पर 'नमो भगवते वासुदेवाय' तथा मन्त्र-वर्णों के आधार पर 'करन्यास' एवं 'हृदयादि न्यास' करेंगे। फिर 'मन्त्रवर्ण न्यास' करके निम्नानुसार ध्यान करें -

"विष्णुं शब्द चन्दु कोटि सहस्रं शब्दं रक्षां गदा -

- मन्मोषं दधतं सिताब्ज निलयं कान्छा जगन्मोहनम्
आबद्धाङ्गदहारकुण्डल महामौलिं स्फुरत्कङ्कणं

श्रीवत्साङ्गमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रेः स्तुतम् ॥"

इसके बाद सर्वतोभद्र मण्डल में पीठ देवता-
ओं की पूजा करके, नवपीठ शक्तिधों की पूजा करें, फिर

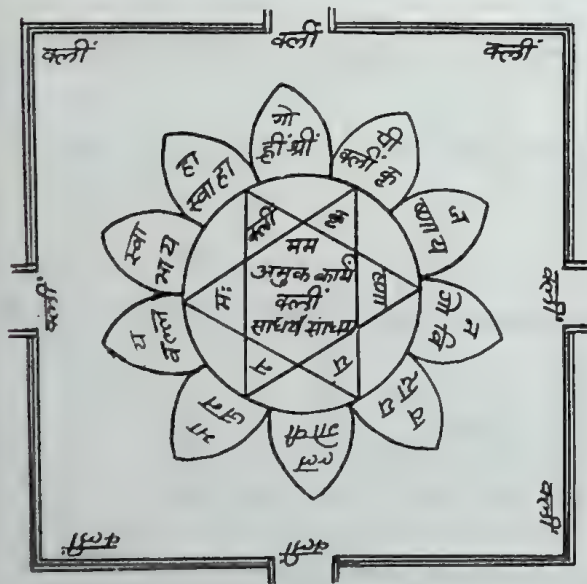
स्वर्णादि से निर्मित पन्ना (देखें - पृष्ठ १०८ पर उदगीत पन्ना का स्वरूप) को अग्न्युत्तारण पूर्वक पुष्पाद्यासन देकर पीठ के नीचे स्थापित करके पुनः स्नान करके, मूलमन्त्र से स्मृति की कल्पना कर, पाद्यादि से पुष्पदान 'पर्जन्य' उपचारों से पूजा करके, देवता की आत्मा लेकर 'आवरण-पूजा' आरंभ करे। प्रारंभ में 'पुष्पांजलि' दे, फिर जज्ञादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पांजलि दे। इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूप्यादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा काके जप करे।

पुश्चरा - इसका पुश्चरा १२ लाख जप है। जप का दशांश अर्थात् १२ हजार होम कर के, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश शूलण-भोजन करावे। इस प्रकार से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक को उपोस सिद्ध करने चाहिए। बी से परिप्लुत सप्तिधाओं से १२ हजार आहुतिमाँ देने पर पाजों से छुटकारा मिलता है।

राजा को व्रता में करने के लिए चन्दन से सिक्त चमेली के फूलों से होम करना चाहिए। धान-धान्य की प्राप्ति के लिए कमलों से होम करना चाहिए। नील कमलों से होम करने वाला सम्पूर्ण स्रष्टार को अपने वश में कर लेता है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए बेल के फूलों से होम करना चाहिए। धूर्वा से होम करने पर साधक रोग-रहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। लाल कमलों के होम से वांछित धन कालान्तर होता है। मेघा-प्राप्ति के लिए पलाश के नवीन फूलों से होम करना चाहिए।

(सिद्ध गोपाल मन्त्र)

पृ. २४



अथ सिद्ध गोपाल मन्त्र प्रयोगः- सिद्ध गोपाल मन्त्र इह प्रकार है-

"गोपीजन वल्लभाय स्वाहा" — इस दशाक्षर कृष्णमन्त्र की प्रयोग विधि निम्नानुसार है--

विनियोगः- "अस्य श्री दशाक्षर सिद्ध गोपाल मन्त्रस्य तारद ऋषिः चिराट् दत्तः श्रीकृष्ण देवता क्लीं बीजं स्वाहा शक्ति सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।"

इसके बाद विनियोग-वाक्य के आधारे पर ग्रहणादि न्यास तथा मन्त्र वर्णों के आधारे पर करन्यास एवं हृदयादि न्यास करें। तदुपरान्त सोने के पत्र पर सोने की कलम द्वारा गोरोचन से बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित मन्त्र को लिखें। चन्त्र के बीज में जहाँ 'अमुक कार्य' लिखा है, वहाँ इच्छित-कार्य का उल्लेख करना चाहिए। लेखने परान्त, शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल के समय-धूप-दीप, गंध, पुष्पादि से मन्त्र का प्रणम कर, इसे ताबीज आदि में भर कर अपनी दाँईं भुजा अथवा कंधे में बाँध कर लेना चाहिए। यह मन्त्र सभी मनोरथों को देने वाला है। पुण, स्त्री, पशु, मान, धन, ऐश्वर्य, रक्षा, सौभाग्य आदि की वृद्धि के लिए इसे निरंतर पाठ्य किए रहना चाहिए।

महो.

(श्रीविष्णु बीसा यन्त्र)

अथ श्रीविष्णु बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग-

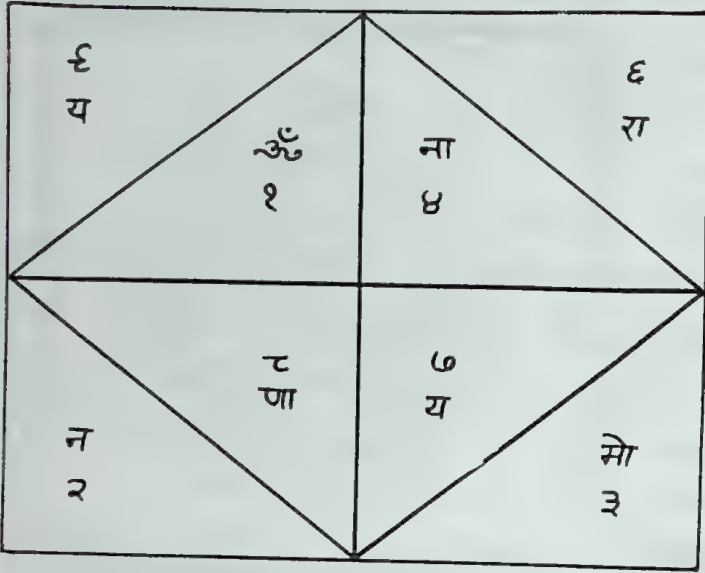
भगवान् श्रीविष्णु की पुस्तकता हेतु

विष्णु बीसा यन्त्र का प्रयोग प्रशस्त माना गया है। इस यन्त्र का स्वर्ण इसी पृष्ठ पर बॉर्डर के चित्र में प्रदर्शित है। इसे या तो गौरी के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए, ताकि वह स्थायी स्वर्ण ग्रहण कर ले, अन्यथा सफेद चन्दन द्वारा, गुप्पसी की डण्डी से चन्दन की चौकी पर लिखना चाहिए। इसे श्वेतचन्दन अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर भी लिखा जा सकता है।

इस बीसा यन्त्र में—“ॐ नमो नागायनाय”— यह मन्त्र संख्याक्रम से लिखा है, अतः यही जप का मन्त्र भी है।

सर्वप्रथम शौच, स्नानादि से निवृत्त हो, शीतवस्त्र धारण कर; किसी सफाई, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठ कर पाप, अधर्म, स्नान, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि द्वारा सामान्य पूजा-पद्धति से यन्त्र-स्वर्ण श्रीविष्णु नारायण की पूजा करे, तदुपरान्त प्रत्येक श्लोक के आदि-

अन्त में इसी मन्त्र का सम्पूर्ण लगाकर “विष्णुसहस्रनाम” का पाठ करना चाहिए। इस मन्त्र-यन्त्र के साधन से भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर साधक की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।



(श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र)

अथ श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग-

भगवान् श्रीकृष्ण की उमन्नता

हेतु 'श्रीकृष्ण बीसा' यन्त्र का प्रयोग शुभ माना गया है। इस यन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर के चित्र में 'प्रदर्शित है'। इसे माते लौंके के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए, ताकि वह स्थायी स्वरूप ग्रहण करले, अन्यथा सफेद चन्दन द्वारा, तुलसी की डण्डी से चन्दन की चौकी पर लिखना चाहिए। इसे श्वेत चन्दन के द्वारा अथवा अष्टगन्ध से मोलपत्र के ऊपर भी लिखा जा सकता है। इसे यदि लौंके पर खुदवाया जाय तो चमुनाजल अथवा गंगाजल से धोकर तथा धूप देकर प्रजा में रखना चाहिए।

इस यन्त्र में - "श्रीकृष्ण शरणं मम" - यह मन्त्र संख्याकुल से लिखा है, अतः यही मन्त्र जप का भी है।

सर्वप्रथम शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर; किसी शकान्त, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठकर सामान्य पापयोगधरों से यन्त्र का प्रणत कर्त्तव्य धर दे। फिर

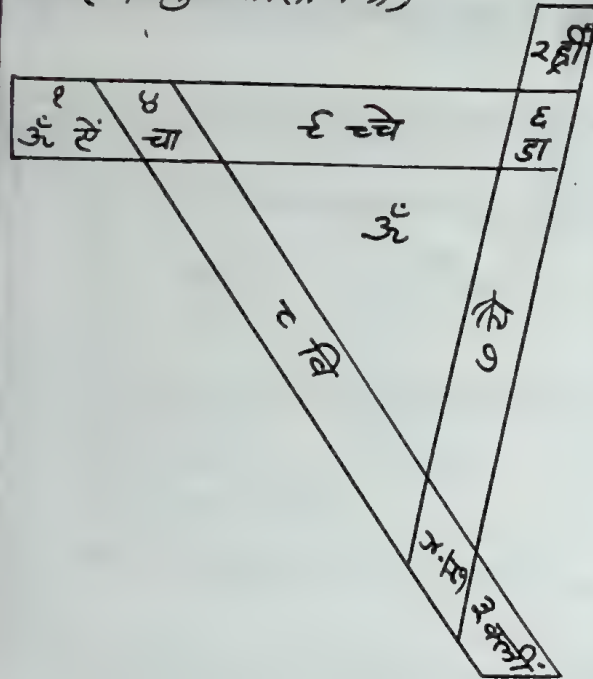
'श्रीकृष्ण शरणं मम' इस मन्त्र को तुलसी की माला पर, निम्न ५ माला जपना चाहिए। इस मन्त्र तथा यन्त्र के साधन से उत्पन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण साधक की सभी मनोमिलायाओं को पूर्ण करते हैं।

६ म		६ र
	१ श्री	४ श
	२ कृ	३ ष्णः
८ म		७ णं

महो०

महो०

(श्री चामुण्डा बीसा यन्त्र)



अथ श्री चामुण्डा बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग-

भगवती श्री चामुण्डा की प्रसन्नता हेतु 'श्री चामुण्डा बीसा यन्त्र' का प्रयोग कल्याणकारी माना गया है। इस यन्त्र को लॉके के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए। ताकि वह स्थायी स्वरूप ग्रहण करे, अन्यथा लालचन्दन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर अथवा लकड़ी की चौकी पर लिखना चाहिए। यन्त्र का स्वरूप नीचे थोड़ा उदशित है।

इस बीसा यन्त्र में - " ॐ हं डी क्ली चामुण्डायै विच्चे " - देवी का यह नकार-मन्त्र संख्या-क्रम से लिखा है, अतः यही जप का मन्त्र भी है।

सर्व उपवास शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, चोत्त वस्त्र धारण कर; किसी शकना, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठ कर पाद, अर्घ्य, स्नान, गंध, धूप-दीप आदि से सामान्य पूजा-पट्टि क्रम से पन्नाहूपा भगवती चामुण्डा देवी की पूजा करे, तदुपरान्त प्रतिदिन कम-से-कम एक माला अर्थात् १०८ की संख्या में पूर्वेका मन्त्र का जप करे। जप की माला रुद्राक्ष के १०८ दानों वाली होनी चाहिए। मन्त्र-जप के बाद 'श्री दुर्गा सप्तशती' के चतुर्थ अध्याय एवं सिंह कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इस मन्त्र का यदि १ लाख की संख्या में जप किया जाय तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में प्रतिदिन पूर्वेका क्रियाएं करते से समस्त कामको पूर्ण होती है।

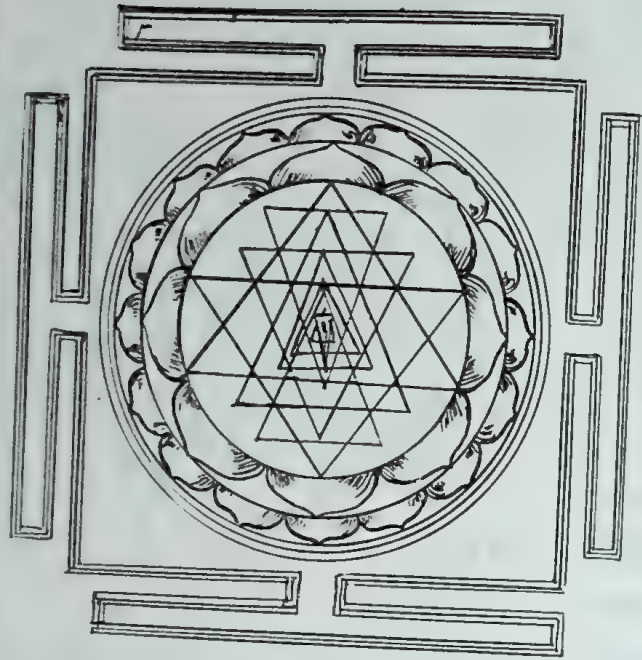
(देवी यन्त्र)

6	12	1	18
2	3	13	11
14	10	7	5
4	8	15	9

अथ देवी यन्त्र प्रयोग- भगवती देवी (दुर्गा अथवा चामुण्डा) की प्रसन्नता सर्व रोग - विनाश हेतु बाँई ओर प्रवर्तित चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। इस यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन - यन्त्र के ऊपर लिखकर लौहे के तारपीठ में भरना चाहिए, तदुपरांत उस यन्त्र का सामान्य - पूजा विधि से पूजन कर, गुग्गुलु की धूप देकर पुरुष को अपने दाँये हाथ में तथा स्त्री को अपने बाँये हाथ में धारण करना चाहिए।

इस यन्त्र में 36 तथा 18 के दो अष्ट यन्त्र भी समाहित हैं। 18 के यन्त्र में भगवती का नवार्ण - मन्त्र - " ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चामुण्डाये विच्चे " उल्लिखित है। अस्तु, इस मन्त्रमुक्ता को 902 बार लिखने का विधान है। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अन्तिम यन्त्र को लिखकर तारपीठ में भरना चाहिए तथा उसे धूप देकर रोगी की भुजा में बाँध देना चाहिए।

देवी को प्रसन्न करने वाला यह यन्त्र हर प्रकार के रोगों से शीघ्र छुटकारा दिलाता है तथा समस्त मनोमिलाषाओं की पूर्ति करता है। यदि नवार्ण - मन्त्र को निम्न एक माला तथा भी जाच ले ली जाय।



(लक्ष्मी मन्त्र)

च वपुषां सौदामिनी सन्निभा । सुकाशर विराजमान पृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी, प्रायादः कमला कटाक्ष विमर्षे
रानन्दयतीं हरिम् ॥" इस मन्त्र की उपासना तथा मन्त्र-जप से धन-धान्य की वृद्धि होती रहती है।

लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग-

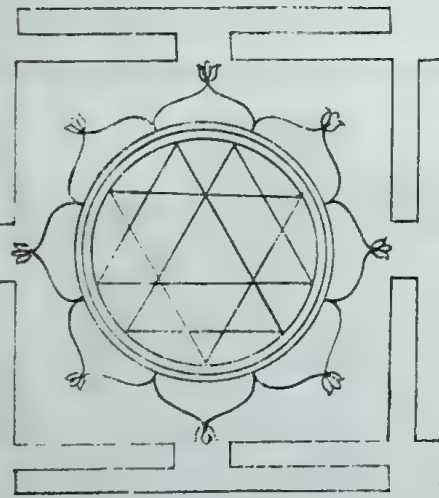
भगवती लक्ष्मी के मन्त्र को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इसे माते ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र, वज्रपत्र पर खुदवा लें अथवा अष्टगंधकारा भोजपत्र पर लिख कर ताम्रपत्र लें। भगवती के शुभ-मन्त्र निम्न लिखित हैं—

- (१) श्री । (२) ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं । (३) ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा ।
- (४) ॐ श्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः । (५) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं सौं जगत्पुत्र्यै नमः ।
- (६) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः ।

उक्त मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। प्रत्येक मन्त्र की जप-संख्या ३ लगू है। जप का दशांश होम करना चाहिए। होम में यदि लाल कमलों की आहुतियाँ दी जा सकें तो सर्वोत्तम अथवा सामान्य हवन-सामग्री ऐसी आम की लकड़ी की अथवा ढाक की लकड़ी की समिधामों में हवन करना चाहिए।

देवी के ध्यान का मन्त्र निम्नानुसार है—

"आसीना सरसीरुहे स्मिता मुखी हस्ताभुजैर्विभ्रती, दानं प्रकथुगाभये
रानन्दयतीं हरिम् ॥" इस मन्त्र की उपासना तथा मन्त्र-जप से धन-धान्य की वृद्धि होती रहती है।



श्री दुर्गामन्त्र-यन्त्र प्रयोग-

भगवती दुर्गा के अनेक स्वरूप हैं, अतः उनके मन्त्र भी अनेक हैं। एवं साधन-विधिमें भी कुछ-कुछ हैं। यहाँ श्री दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र एवं उसकी सरल प्रयोग विधि का उल्लेख किया जा रहा है। दुर्गा का अष्टाक्षर मन्त्र यह है— "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।"

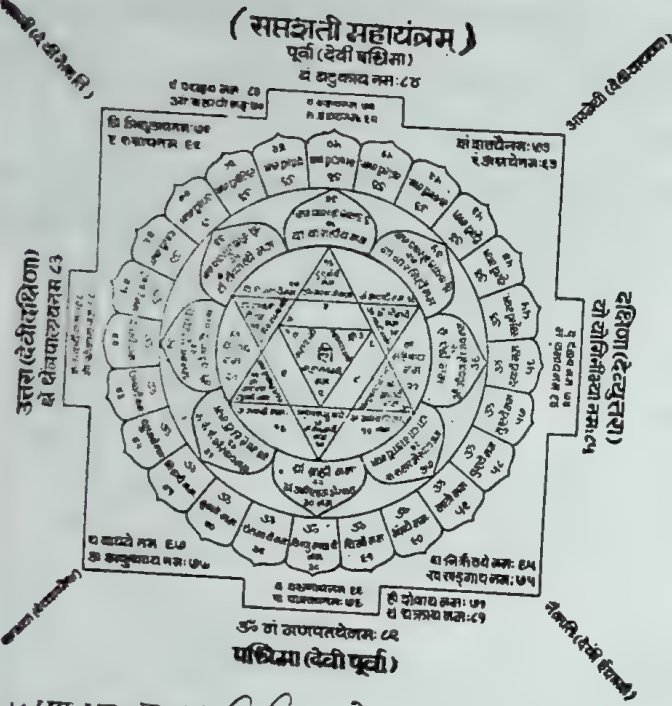
श्री दुर्गा-यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर उदशित है। इसे या तो स्वर्ण अथवा ताम्रपत्र पर खुदवा ले अथवा मोमपत्र के ऊपर अष्टगंध से या लालचन्दन से लिख कर तर्पण काले।

सामान्य-पूजा विधिसे यन्त्र स्वरूपा देवी का पूजन करने के उपरान्त निम्नानुसार चपान करें—

"दूर्पानिभं त्रिनयनं विलसत्किरीटां शङ्खचक्रखड्ग शरवेष्टकं मूलं चापान् । सप्तार्जनीं च दधतीं सहस्रासनस्थां दुर्गां नवार्कुलप्रीठगतां भजेहम्॥

सिंहस्कन्धं समारूढान्नानालङ्कारं धृष्टिहाम् । चतुर्भुजां महोदेवीन्नागपद्मलोपकीर्तिनीम् ॥ रत्नवस्त्रपरीधानाम्कालावर्कं सहस्रीतनुम् । नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेविताम्भव मे द्विनीम् ॥

पुरश्चरण - मन्त्र में जितने वर्ण हैं, उतने लारव या उससे आधा पुरश्चरण करें। कम-से-कम एकलाल की संख्या में जप अवश्य करना चाहिए। यह मन्त्र रुद्राक्ष की माला पर जपना विशेष शुभ होता है। जपकादशों का होना बेहतर मन्त्रजप तथा होम रात्रि में करना विशेष फलप्रद रहता है। यह मन्त्र समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है।



सप्तशती महायन्त्र प्रयोग- श्री दुर्गाशक्ती का पाठ मुक्ति-दायक है। यह साधक का कामस्त मनोगिलाषाओं की शान्ति करना है तथा समस्त कष्टों को दूर करना है।

सामान्यः दुर्गासप्तशती का पाठ चैत्र तथा आश्विन मास की नवरात्रियों में किया जाता है, परन्तु इसका निश्चय पाठ करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है तथा साधक को सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं एवं दुःख पाए तक नहीं पहुँचते।

श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करने वाले साधकों को चाहिए कि वे इस ४०० पर गोंई ओर उद्विग्न चिह्न के अनुसार यन्त्र का निर्माण कराएँ। 'सप्तशती महायन्त्र' नामक इस यन्त्र को स्वर्णपत्र वज्रपत्र अथवा ताम्रपत्र पर भी उत्कीर्ण कराया जा सकता है। अथवा अच्छी या अथवा लाल चदन द्वारा भोजपत्र पर लिख कर भी लक्ष्मी का पाठ जा सकता है। यन्त्र लेखनोपरान्त इसका सामान्य पूजा लिपि से गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि द्वारा पूजन करना चाहिए, तदुपान्त एक लकड़ी के पट्टे अथवा लौकी पर यन्त्र को प्रतिष्ठित कर, उसे अपने सामने रखते हुए 'दुर्गासप्तशती' का पाठ आत्मिकता चाहिए। यन्त्र-पूजन सहित सप्तशती का पाठ करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है।

श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करने से भुक्ति-भुक्ति का लाभ होता है। जो लोग प्रतिदिन सम्पूर्ण गीता का पाठ न कर सकें, उन्हें केवल अठारहवें अध्याय अर्थात् अष्टाध्याय का ही पाठ करना चाहिए।

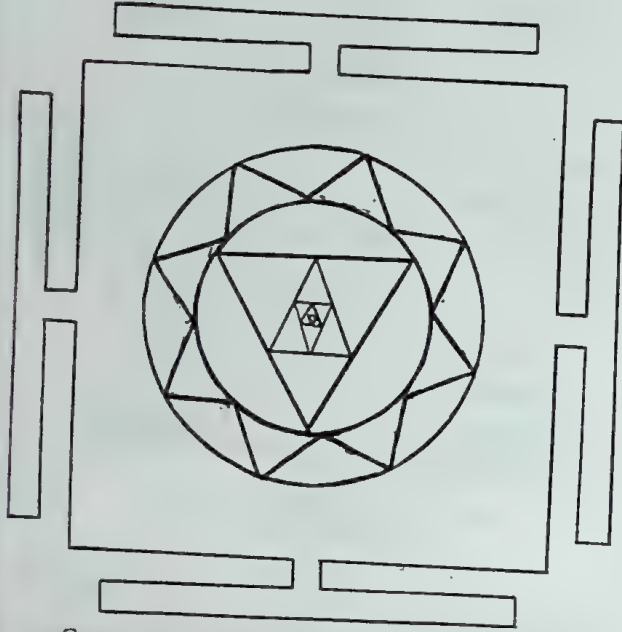
गीता का पाठ करने वालों को 'श्री गीता यन्त्र' का निर्माण कर, पाठ आरंभ करने से पूर्व यन्त्र-पूजन करते से विशेष लाभ होता है। 'गीता-यन्त्र' के स्वरूप को इसी पृष्ठ पर बाईं ओर के चित्र में उद्दिष्ट किया गया है। इस यन्त्र को पाठो पाठों के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए। यह स्थायी होगा। अध्याय प्रतिदिन चन्दन द्वारा लकड़ी की चौकी पर लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने अध्याय नामपत्र पर खुदवा लेने के बाद प्राद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, चन्दन, तुलसी, दुग्ध, धूप, दीप, नैवेद्य, शुद्धोदक, फल, मिष्ठान, ताम्बूल आदि समर्पित कर, सामान्य-पूजा विधि से पूजन करना चाहिए तथा "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" इस मन्त्र का निम्न प्रतिफल से- कम एक माला जपनिल



करना चाहिए। यन्त्र पूजन तथा मन्त्र-जप के बाद गीता-पाठ करने से समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

(काली मन्त्र)

अथ काली मन्त्र प्रयोग-

भगवती काली के अनेक स्वरूप, अनेक मन्त्र, अनेक मन्त्र तथा अनेक उपासना-विधिओं का उल्लेख पाया जाता है। प्रथमा, दक्षिणा काली, गुह्य काली, भद्रकाली, महाकाली आदि इनके अनेक रूप हैं। यहाँ भगवती काली के सरल मन्त्र एवं मन्त्र प्रयोग का उल्लेख किया जा रहा है। भगवती कालिका के कतिपय प्रमुख मन्त्र ये हैं—

- (१) की, (२) की, (३) अं ह्रीं ह्रीं हूं हूं की की की दक्षिण कालिके की की की हूं हूं ह्रीं ह्रीं, (४) की की हूं हूं की की की दक्षिण कालिके की की की हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा, (५) की की की स्वाहा, (६) की की की ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा, (७) की हूं ह्रीं दक्षिण कालिके कट, (८) नमः से की की कालिकायै स्वाहा, (९) की की हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा, (१०) की हूं ह्रीं स्वाहा, (११) नमः आं ह्रीं अं की कट स्वाहा कालिकालिके हूं।

उक्त मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र को पाप के लिए भुजा जा सकता है। दक्षिणा काली के अन्ध मन्त्र भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं। विधि - दैनिक कुल स्नान प्राणाचार्य आदि से निवृत्त होकर

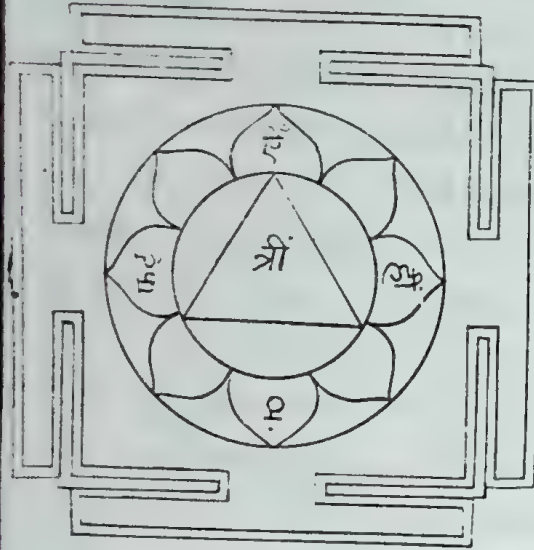
सर्वप्रथम स्वामन्त्र पूजा-विधि से मन्त्र का पूजन करें। मन्त्र का निर्माण ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र आदि पर खुदवाकर किया जा सकता है अथवा इसे अष्टगंध अथवा केवल लाल-मदन द्वारा भी मन्त्र के ऊपर की

लिखा जा सकता है। यन्त्र का पूजन करने के बाद अर्घ्यादि न्यास-करण्याह-अर्घ्यास आदि का के तिलकादि सा चपान को-
 "शिवारुढा महाभीमां चोरदंष्ट्रा वरप्रदाम् । हास्ययुक्तां त्रिनेत्रां नृकपालं कर्तृकाकराम् । मुखाकेशीं ललज्जिह्वां
 पिबन्ती रुधिरं मुहुः । चतुर्बाहुयुतां देवीं वरामपकरां स्मरेत् ।"

ध्यानोपरान्त सामान्य-विधि से पीठ-पूजा, आवाण-पूजा, भौत्र-पूजा तथा अरुण-पूजा करनी चाहिए। इस सब के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु काली-उपासना-विधयक तन्त्रग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए, पालु जो साधक इतना सब न कर सके, उसे सामान्य उपचारों द्वारा ही यन्त्र का पूजन करके मन्त्र-जप करना चाहिए।

पुरश्चारा - इस मन्त्र का पुरश्चारा दो तारव जप है। कुछ भाचार्योंने जप-संख्या केवल एक तारव ही प्रशंसित कही है, तथापि जितना जप अधिक किया जा सके, उतना ही उत्तम है। जप का दशांश होम पृत द्वारा करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश अभिषेक, तथा अभिषेक का दशांश ब्राह्मण-भोजन कहा गया है। अगवती दक्षिण कालिका के मन्त्र रात्रि के समय जप करने से शीघ्र सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के अन्त में विभिन्न स्तोत्र, कवच, हृदय आदि का पाठ करना चाहिए। पुरश्चारा (जप-होमादि) पूरा हो जाने के पश्चात् काम्य-प्रयोग करने चाहिए। काम्य-प्रयोगों की विधि इस प्रकार है- (१) रात्रि के समय शयनाश्रम में निर्वस्त्र तथा के शीखोल का जो कपड़ा इस मन्त्र का १०८ बार की (होम में) जप का ता है, उसकी सहायता काम्यों पूर्ण होती है। (२) सुदरी स्त्री के पुद्गादुः को देखते हुए १०८ बार मन्त्र-जप करने वाला साधक बृहस्पति के समान वाच्य हो जाता है। सामान्य जप भी काम्यों पूर्ण का ता है।

(तारा यन्त्र)



अथ तारा यन्त्र प्रयोग- तारा देवी के मन्त्र निम्न लिखित हैं:-

- (१) ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट । (२) ह्रीं स्त्रीं हुं फट । (३) ॐ हुं ह्रीं क्लीं स्त्रीं हुं फट ।
- (४) ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट । (५) ह्रीं त्रीं हुं फट । (६) स्त्रीं ह्रीं स्त्रीं हुं फट । (७) ह्रीं त्रीं हुं फट ।
- (८) स्त्रीं ओं ह्रीं क्लीं हुं फट । (९) ॐ स्त्रीं ह्रीं क्लीं हुं फट । इनमें से किसी भी मन्त्र द्वारा जप किया जा सकता है ।

तारा देवी का यन्त्र कोई ओर उद्वर्गित है । इसे ताम्रपत्र पर अंकित करवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या लाल चंदन द्वारा ओं यन्त्र पर लिखा कर तप्पार कर लेना चाहिए ।

तारा देवी का ध्यान-मन्त्र इस प्रकार है-

"उत्पाली पदां घोरां मुण्डमाला विधूषिताम् । खर्व्या लम्बोदरी त्रीमां व्याधु चर्मदृतांकं हि ॥ नवधौवन सम्यन्तां पञ्च मुद्रा विधूषिताम् । चतुर्धुजां लोलजिह्वं महापीरां वरउदाम् ॥ रक्कु कर्चु समायुक्ता सन्नेतर भुजक्याम् । कपोलमेत्पाल संयुक्ता सखपाणि युगान्विताम् । पिङ्गुग्रेकजटां दधोषे मौला वक्षोन्मथूषिताम् । बालार्क मण्डलाकार लोचन त्रय धूषिताम् ।"

पुष्पचरण - इस मन्त्र का पुष्पचरण २ बार जप है । जप का दशगुण होमादि करना चाहिए । जप के बाद देवी के स्तन, कलच आदि का स्पर्श करना चाहिए । भगवती तारा की उपासना से शत्रु तथा बदले का नाश होता है ।

(षोडशी यन्त्र)

अथ षोडशी यन्त्र उपयोग-

नया त्रिपुर सुन्दरी भी कहा जाता है। 'मीचक्र' का परिचय इस वेणु के प्रथम में दिया जा चुका है। वही इसी महासाया का प्रतीक (स्वरूप) है। यहाँ इसके मन्त्र प्रजा यन्त्र तथा पुरश्चरण विधि आदि का दिग्दर्शन मात्र कराया जा रहा है। षोडशी के साधन मन्त्र निम्न लिखित हैं:-

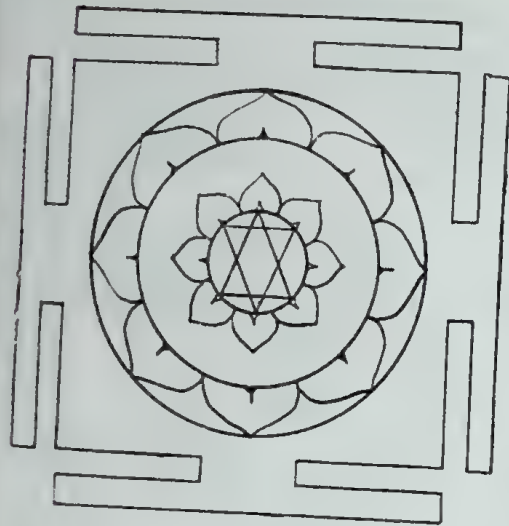
(१) ह्रीं क स ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। (२) मीं ह्रीं हुं से वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (३) ह्रीं मीं हुं से वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (४) ह स क ल ह ह्रीं स ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। (५) मीं ह्रीं क्लीं से सोः लृं ह्रीं मीं क स ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सोः से क्लीं ह्रीं मीं।" - इनके अतिरिक्त और भी अनेक मन्त्र हैं। इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

षोडशी प्रजा यन्त्र जहाँ ओर उदरविर्ति है, वहाँ नाम यन्त्र पर खुदवाले अथवा अष्टराज्य डा।। भोजनपत्र पर लिख कर लक्ष्मी काले। ध्यातव्य मन्त्र इस प्रकार है--

"युमुजो महादेवी नाग यलोपकी तिनीम्। महाभीमां करालाहवां सिंहविद्या-
यामे युताम् ॥ मुण्ड सा लावली कीर्णा मुक्ताकेशी विभ्राननाम्। एवं ध्यायेन्महोदेवी सर्वकामार्थ सिद्धये।"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का उच्चारण भी संख्या में जप करना चाहिए तथा उसके दमोदा होमोदि करना चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति कृत होती तथा पत-धान्य ऐश्वर्यादि भी वृद्धि कृत होती।

(भुवनेश्वरी मन्त्र)



अथ भुवनेश्वरी यन्त्र प्रयोगः भुवनेश्वरी देवी के साधन-मन्त्र
निम्न लिखित हैं:-

(१) ह्रीं, (२) ऐं ह्रीं, (३) ऐं ह्रीं ह्रीं। इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। यह मन्त्र साधक की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं।

भुवनेश्वरी देवी का मन्त्र बाँई ओर उदक्षिति है। इसे घाते ताम्रपत्र पर अंकित करवा लेना चाहिए अथवा कपड़ों पर या लाल-चन्दन द्वारा गोक्षपत्र पर लिख कर तपन करना चाहिए।

भुवनेश्वरी देवी का ध्यान-मन्त्र इस प्रकार है-

"उद्धृद्यहं धृतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रयमुक्ताम्।

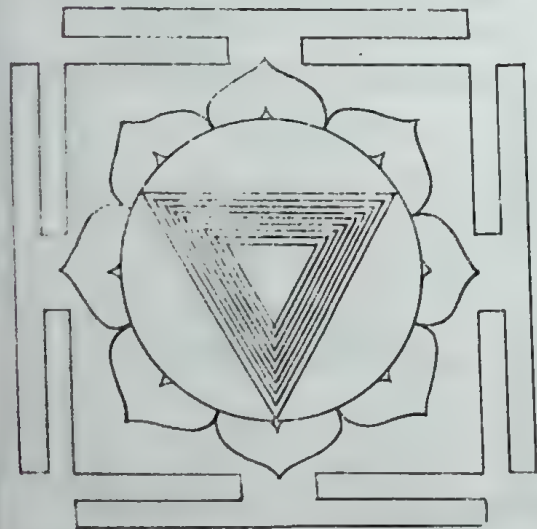
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रमलेद् भुवनेश्वरीम् ॥"

पुरश्चरण - भुवनेश्वरी मन्त्र का ३२ लाल की छिन्ता में जप तथा जप का दशांश होम करना चाहिए। घृत, मधु तथा शर्करा के साथ अष्ट-द्रव्यों से

होम करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर काम्य-उपयोग करने चाहिए। पीपल, बूलर, पलाश, बरगद की समिधाएँ, पीली सरसों खीर तथा घृत-इन्हें 'अष्ट-द्रव्य' कहा जाता है। इनसे होम करने वाला समस्त देवी-देवताओं से पूजित होता है। कमलों से होम करने पर राजा वशीभूत होता है। इस सिद्धि में ५। रा २४ वा अभिषंक्रित जल को घात-काल पीने वाला मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त कर कमियों से अशुणी होता है।

अथ त्रिपुर भैरवी यन्त्र प्रयोग-

(त्रिपुर भैरवी यन्त्र)



संक्षेप में 'भैरवी' भी कहा जाता है। इनके साधन-मन्त्र निम्नलिखित हैं—

(१) हसरे हस करीं हसरीं । (२) हसै हस करीं हसै । इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है । ये दोनों ही मन्त्र अभीष्ट दायक हैं ।

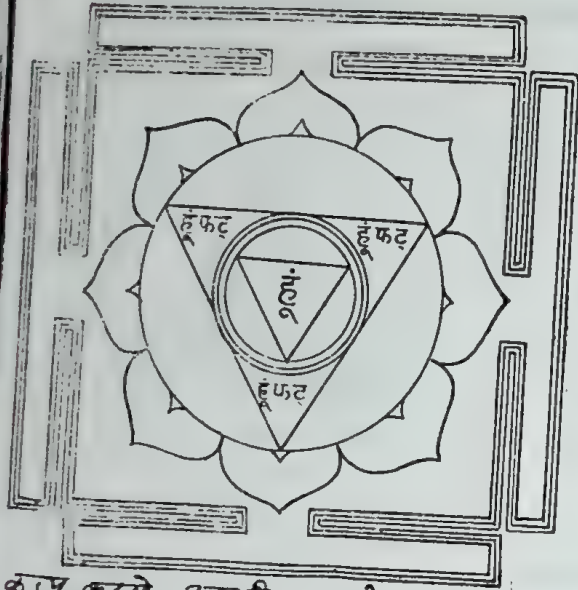
देवी के यन्त्र का स्वरूप कोई ओर उद्दिष्टि है । इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए, अथवा अष्टगंध या लाल चंदन द्वारा भी यन्त्र पर लिख लेना चाहिए । देवी का ध्यान मन्त्र निम्नानुसार है—

"उद्यद्भानु सहस्रकान्तिमहण धौमां शिरोमालिका । वक्तालिपा पयोधरां
जपवती विद्यामभीतिं वरम् ॥ हस्ताब्जैर्दधती त्रिनेत्र विलसद्भुक्ता रविन्द
स्त्रियं । देवीं बृह हिमांशुरक्तमुकुरां वन्दे समन्दस्थिताम् ।"

पुरश्चर्या — इस मन्त्र की जप संख्या २४ लाख है । कावट पार फूलों से होम करना चाहिए । उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए । मगान्तर से— १० लाख की संख्या में मन्त्र जप ही पशुपति रहता है तथा कावट हजार बेटों के फूलों से होम करना चाहिए । मन्त्र-सिद्ध साधक निश्चल-लक्ष्मी प्राप्त करता है । बेल के फूलों से होम करने पर धन-लाभ होता है तथा मालती के फूलों से हवन करने पर नाक सिद्ध होती है ।

(दिनमस्ता - मन्त्र)



होप करके आधीरात के समय मांस तथा मछली की बलि देकर मन्त्र-जप करना चाहिए। जप का दशांश होम पलाश के अथवा बेल के फूलों अथवा फलों से करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण, १५ का दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इसके मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके प्रभाव से धन-लाभ, वशीकरण प्राप्त होते हैं।

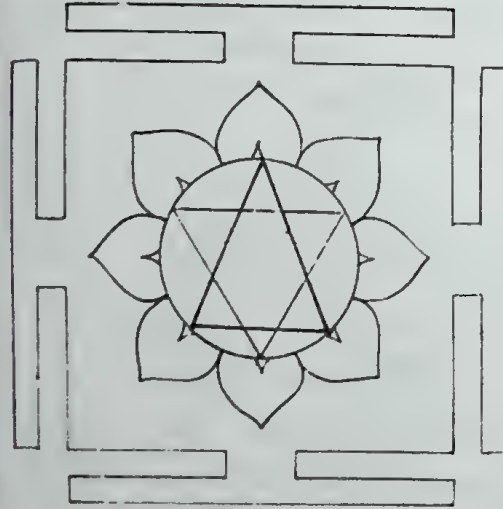
अथ दिनमस्ता यन्त्र प्रयोग- भगवती दिनमस्ता के मन्त्र इस प्रकार हैं-
 (१) ह्रीं क्लीं हुं रे वज्र वैरोचनीये हुं फट् स्वाहा। (२) ह्रीं क्लीं श्रीं रे हुं फट्। (३) हुं।
 (४) ॐ ह्रीं ह्रीं वज्र वैरोचनीये हुं फट् स्वाहा। (५) हुं स्वाहा। (६) ॐ हुं स्वाहा।
 (७) ॐ वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (८) श्रीं ह्रीं क्लीं रे वज्र वैरोचनीये
 हुं हुं फट् स्वाहा। (९) ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वज्र वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।
 इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

'दिनमस्ता' का पूजा-धन्त बौद्ध और छद्ममूर्ति है। इसे घातों तथा मुक्ता पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध द्वारा ओषध पर लिख लेना चाहिए।
 दिनमस्ता देवी का ध्यान निम्नानुसार है-

"पद्मालीढपदां सदैव दधती दिन्नं शिरः कर्तृकां। दिग्बस्त्रां स्वकबन्ध शोणित
 सुधाधारां पिबन्ती मुदा॥ नागावृद्ध शिरोमणिं चिनयन्तां हृद्युत्पलालंकृता रत्नोसक
 मनोमयोपरि दृढां चक्रायेज्जपा सन्निभाम्॥"

पुस्तक-चरण- इस मन्त्र का पुस्तक-चरण चार लावजप है। भगवत-पूजा आदि

(धूमावती यन्त्र)



अथ धूमावती यन्त्र प्रयोग- भगवती धूमावती के साधन-मन्त्र निम्न लिखित हैं:-

महा

(१) धूं धूं धूमावति वः वः । (२) धूं धूं धूमावति स्वाहा ।

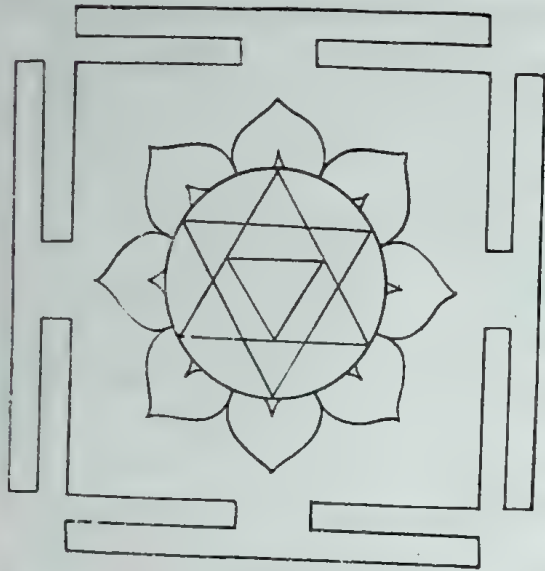
आद्याशक्ति भगवती धूमावती का पूजा-यन्त्र बाँट और की सदृशित है । इसे पा ले तानपत्र पर खुदवा लेना चाहिए, अथवा अष्टगण अथवा लाल-चंदन आराभोजन पर लिखकर तथ्या करता-चाहिए । धूमावती का ध्यान-मन्त्र निम्नलिखित है--

"विवर्णा-चञ्चला दुष्टा दीर्घाच महिनाम्बरा । विमुक्ता कुन्तला रूक्षा विधवा विरलक्षिणा ।
काकध्वजरथारूढा विलम्बिता यथोभरा । शूर्पहस्ता निरक्ताक्षी धृतहस्ता वरान्विता ॥
प्रचट्ट घोषा तुष्टा कुटिला कुटिलेक्षणा । क्षुत्पिपासादिता तिलं भयदा कलहास्पदा ॥ "

पुरश्चाण - आवाण-पूजा आदि कृत्य सम्पन्न करके, धूपदान एवं तमस्कार करे, फिर ब्रह्मशान में जाकर सर्वथा तन हो कर जप करना चाहिए । इसका पुरश्चाण एक लाख जप है । जप का दशांश तिलमिथिल घृत से होय, होय का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जित और उसका दशांश ज्ञान-भोजन करना

चाहिए । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध होजाने पर प्रयोग सिद्ध करने चाहिए । कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन उपवास करके, सिर के बाल खुले राखकर, निर्वस्त्र हो, झून्प-गृह, शमशान, वन अथवा पर्वत पर, शायक बैठ कर देवी का ध्यान करते हुए एक लाख जप करते एवं शक्ति में तमक मिथिल राई का होम करने से शत्रु नष्ट हो जाते हैं ।

(बंगलामुरवी यन्त्र)



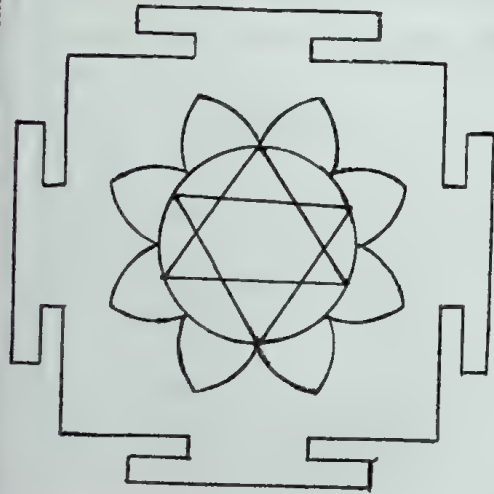
अथ बंगलामुरवी यन्त्र प्रयोग-

भगवती बंगलामुरवी का साधनमन्त्र यह है-
"ॐ ह्रीं बंगलामुरवि सर्व्व दुष्टानाञ्चाचममुरवं वदं स्तम्भय जिह्वाङ्गीलष कुट्टि
विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"

बंगलामुरवी का पूजा-यन्त्र बौर्ही और को उद्विष्टि है। इसे घाले ताम्रपत्र
पर खुदवा लेना चाहिए, अन्यथा अष्टगंध अथवा लालचन्दन द्वारा मोमपत्र पर
लिखकर तद्वार कर लेना चाहिए। बंगलामुरवी का ध्यान-मन्त्र निम्नानुसार है-
"मध्वे सुधाबिधिमविमण्डयरत्नवेदी सिंहासनेपरिगतं परिपीत वणिमि ।
पीताम्बराभरणमालय विभूषिताङ्गी देवी स्मरामि धृतमुद्गरं वैरिजिह्वासम् ॥
जिह्वागुमादाय करेण देवीं वामेन शङ्खं परिपीडयन्तीम् ।
गदामिच्छातेन च दक्षिणेन पीताम्बरा द्यां द्विभुजां नमामि ॥"

पुरश्चारा - इष्ट मन्त्र का पुरश्चारा १ लाख जप है। जप का दशांश
होम करना चाहिए। होम में चम्पा के फूल की आहुतियाँ देने का विधान है।
जप के पश्चात् देवी के स्तोत्र, कवच आदि का पाठ करना चाहिए। मन्त्र के
सिद्ध हो जाते पर काम्य-प्रयोगों को करना चाहिए। सोमवार अथवा शनिवार की रात्रि में श्मशान से कोयला लेकर
पादोदक से उसका घोल तद्वार करे, फिर उसके द्वारा लोहे की शलाका से भूमि पर शङ्ख का स्वरूप अंकित कर,
तद्वरु उसका नाम लिखे। तत्पश्चात् उसके तद्वरु पर त्रिषि-नारका ध्यान करके नौ रात तक मंत्रजप करे तो शङ्ख की वृद्धि हो।

(मातङ्गी यन्त्र)



अथ मातङ्गी यन्त्र प्रयोग - भगवती मातङ्गी देवी के स्थापन मन्त्र यह है -

(१) ओं ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै कुरु स्वाहा ।

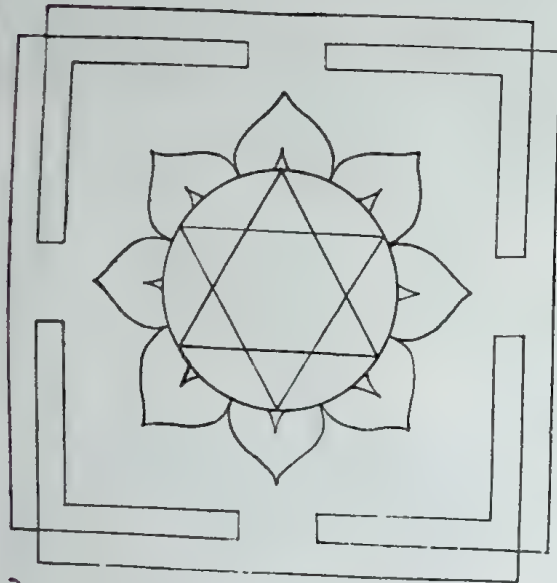
(२) ओं ह्रीं से श्रीं नमो भगवति उच्चिष्ट चाण्डालि श्री मातङ्गे श्वरी सर्व-
जन वशं करि स्वाहा ।" - इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है ।

'मातङ्गी' का पूजा-यन्त्र काँई ओर उदयित है । इस यन्त्र को मातंगी ताम्र
पत्र पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या लाल-चन्दन का या भोजयन्त्र पर
लिख कर तटघार कर लेना चाहिए । मातङ्गी का स्थापन-मन्त्र निम्नानुसार है -
" ओं धनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे शुक्लस्योदितं सृण्वतीं रक्ताक्ष्याम् ।
सुरापान मत्तां सरोजस्थितां श्रीं गजे वल्लकीं वादयन्तीं मातङ्गीम् ॥

पुश्चाण - भगवती मातङ्गी के पुश्चाण के लिए दशहजा की गिण्ठा से
मन्त्र-जप करना चाहिए तथा सधु-पुष्पा मधुप से दशांश होम करना चाहिए ।
होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन

करना चाहिये । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कम्प-प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए । मालती
के फूलों से होम करने से योग, बेल के फूलों से राजप, पलाश के फूलों अथवा कल्लों से वशीकरण, गिलोय के
दुफड़ों से रोग-नाश तथा नीम के दुफड़ों एवं चावलों से होम करने से लक्ष्मी का लाभ होता है । नीम के तैल से
सिका तमक से होम करने से शत्रु-नाश होता है । गंधाष्टक से होम करने पर संसार वशीभूत हो जाता है ।

(कमलात्मिका-यन्त्र)



अथ कमलात्मिका यन्त्र प्रयोग-

भगवती 'कमलात्मिका' को 'कमला' भी कहा जाता है। ये लक्ष्मी, की प्रतिरूपा है। इनके साधन मन्त्र तिलालिखित हैं-
(१) श्री, (२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं सोः जगत्प्रसूत्यै नमः। इनमें से किसी भी मन्त्र का वाचन किया जा सकता है।

भगवती कमलात्मिका के यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर उदघोषित है। इसे घाते ताम्रपत्र पर अंकित करा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या केसर-धुं कम से भोजयन्त्र के ऊपर लिखकर रज्जुगु करना चाहिए। देवीका ध्यान मन्त्र इस प्रकार है-
"कान्तया कान्तचनसन्निभां हिमगिरि पुरव्यैश्चतुर्भिर्गर्जितैर्हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यपाकृतघटै-
-रासिच्यमानां शिष्यम्। विभाणां वरमब्जपुग्मममयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्ध नितम्ब बिम्बलसितां वन्देऽरविन्दहिताम्॥"

पुष्पाञ्जलि- इस मन्त्र का पुष्पाञ्जलि १२ लाख जल है। बावह हजार कमलपुष्पों से होम्, उसका दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जित तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए। इस प्रकार जब मन्त्रसिद्ध हो जाय, तब काम्य-प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए। जल के बाद मधु, घृत एवं शक्कर युक्त कमलपुष्पों से आहुति देनी चाहिए। वस्त्र प्रमाण जल में खड़े होकर इस मन्त्र का तीन लाख जल करने से वांछित-यन्त्र प्राप्त होता है। अशोक की लसिकाओं से उदीप्त अग्नि में चावल से दस लाख होम करने से राज्य की प्राप्ति होती है।

सं	जी
	आं
फल	डिं
	क्रों
हं	नी

(परकाय-प्रवेश यन्त्र)

परकाय-प्रवेश यन्त्र-मन्त्र-

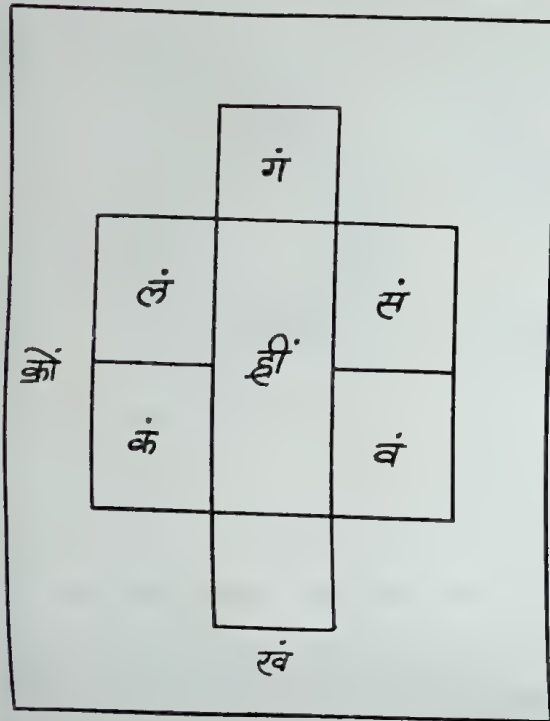
श्रीमद् आचार्यशङ्कराचार्य का कथन है कि श्रीपातञ्जलि महाभुक्ति के 'यथाभिमतध्यानाह्वा' सूत्र के अनुसार ध्यान करने से परकाय-प्रवेश सिद्ध होता है। पाश्चात्य क्रियायोग में भी 'सूक्ष्मध्याने' में 'इस शरीर के बाहर जा रहा हूँ' यह ध्यान करने के लिए कहा गया है।

श्रीशङ्कराचार्यजी ने इस विष्णु के साधन हेतु एक यन्त्र का उल्लेख किया है, जिसके साथ ही 'सौन्दर्य लहरी' के एक श्लोक का वि पाठ भी करना पड़ता है। यह यन्त्र इसी पृष्ठ के बाईं ओर उद्धृष्ट है। 'सौन्दर्य लहरी' का श्लोक संख्या २७ निम्नानुसार है-

"हिमानी हन्ताब्धं हिमगिरि निवासैक चतुरौ
निष्ठायां निद्राणं निशिचरमभागे च विशादौ ।
वरं लक्ष्मी पानं म्रियन्ति सृजन्तौ समयिनौ
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयती प्रियत्रामिह किम् ॥"

बाईं ओर उद्धृष्ट यन्त्र को स्वर्णपत्र पर लिप्यकर २१ दिनों तक उसे मधु, चित्रान्त तथा घामस का भोग लगाना चाहिए। इसके बाद अगले पृष्ठ पर उद्धृष्ट यन्त्र को लिखें।

ॐ



पिछले पृष्ठ पर उदशिति यन्त्र के सहस्रवार हल्दी बिंदु हुए किसी पीढ़े पर लिखें तथा 'सौन्दर्यलहरी' के पूर्वोक्त श्लोक का उल्लिखित स्मृत्युक्त बार जप करें। इससे परकाय-प्रवेश विष्णु सिद्ध होती है।

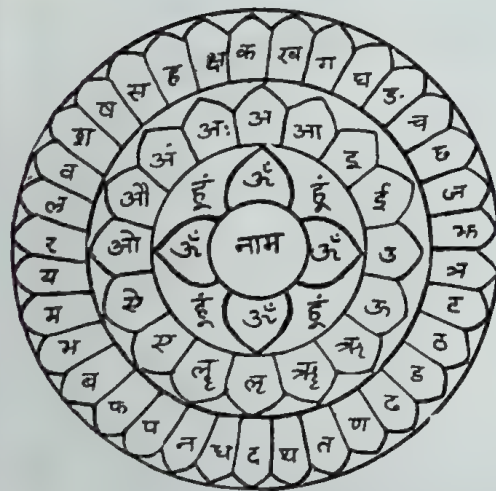
हठयोग के ग्रंथों में 'हठयोग' की रवेचरी मुद्रा से भी परकाय-प्रवेश का सिद्ध होना लिखा है। 'योगकुण्डलपुननिषद्' में शावीरिक उपायों द्वारा रवेचरी सिद्ध करने से पूर्व रवेचरी-सिद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का जपन किया गया है—

"ॐ ह्रीं गं सं मं कं लं अं ख खं गं स्म लो।"

इस मन्त्र के साथ ही रवेचरी-सिद्धि के लिए एक यन्त्र भी बनाया गया है, जिसका स्वरूप इसी पृष्ठ पर बौंद और उदशित है।

शाच्य-साधन क्रम में तत्त्वसाधन आवश्यक होता है। सर्वप्रथम प्रातःकाल आकाश तत्त्व के उदय होने पर अभ्यास के द्वारा आकाशतत्त्व की बारह घंटे तक साधे रहना पड़ता है। इसका जब स्थायी भाव होता है, तब रवेचरी मुद्रा सिद्ध करके बैठ सकते हैं। इस मुद्रा का साधन करते समय पूर्वोक्त मन्त्र खं यन्त्र का साधन करना पड़ता है। रवेचरी-साधन का क्रियात्मक ज्ञान किसी अनुभवी योगी-महात्मा से प्राप्त करना चाहिए।

(रक्षा - यन्त्र)



रक्षा-यन्त्र-

भोजपत्र के ऊपर गेरुचूरा और कुंकुम अथवा मलयागिरि-चन्दन और कपूर द्वारा एक चतुर्दली कमल बनाकर, उसकी कर्णिका में अपना नाम लिखकर चारों दलों में ॐ कार लिखे तथा आग्नेय आदि कोणों में 'हूँ' कार लिखे। उसके ऊपर षोडश दलों का कमल बनाये और उन दलों में अकारादि षोडश स्वरों को लिखे। फिर उसके ऊपर चौत्तीस दलों का कमल बनाये। उसके दलों में 'क' से लेकर 'क्ष' अक्षरों तक को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप निमित्त होगा, उसे इसी पृष्ठ पर बौरे और उदशित किया गया है।

यन्त्र के लिल जाने पर उसे श्वेत रंग के सूत (सफेद धागे) से वेष्टित करके रेखासी वस्त्र से आच्छादित कर, कलश पर स्थापित करके पूजन करे। पूजन सामान्य पूजा-विधि से गन्ध, सुगन्ध आदि के द्वारा कला चाहिए तथा अन्त में धूप दीप उदशित करे। गुग्गुलु की धूप देना अधिक उत्तम रहता है।

यह यन्त्र अत्यधिक प्रभावशाली है। इसे धारण करने से सब प्रकार के रोग शान्त होते हैं तथा शत्रुओं का विनाश होता है। इस यन्त्र का लेखन तथा धारण किसी शुभ मुहूर्त में करना चाहिए। इस यन्त्र को 'रक्षा-यन्त्र' नाम रह लिख दिया गया है कि यह शरीर की रक्षा करता है।



महा०

श्री आद्य शंकराचार्य को मध्य में रखकर, उनके
ब्रह्म के अक्षर स्वरूप 'ॐ' कार से आवृत्त करते
हुए, उसके चारों ओर 'अं' कार की महिमा बोलकर
करते वाले विविध मूलोक्तों को उद्धृत किया गया है,
उसके ऊपर चारों ओर 'ॐ' को आवृत्त करते हुए
सबसे ऊपरी वृत्त में परमात्मा के १०८ नामों का उल्ले-
ख किया गया है।

इस घन्टे को नाम घण्टा बुद्ध का कहें अथवा
अष्टगंधादि से भोजन घण्टा लिखकर निम्न पूजन करने
अथवा घण्टा में स्थापित करने मात्र से ही आशु कल्याण होता है ॥

अथ यन्त्र महार्णव (तृतीय खण्ड)

मह०

काम्य-उद्योगों के लिए जो अनुष्ठान किये जाते हैं उनका गणना षट् कर्षों के अन्तर्गत की जाती है। षट् कर्ष यह हैं— (१) शान्तिकरण, (२) वशीकरण, (३) सम्मान, (४) विद्वेषण, (५) उच्चारण तथा (६) मारण - इनके सम्बन्ध में हातव्य विषयों की जानकारी उपर्युक्त खण्ड में दी जा चुकी है। इस खण्ड में ऐतद् विषयक उद्योगों का वर्णन किया जा रहा है। स्मरणीय है कि यन्त्र-साधक के लिए जिन नियमों का उल्लेख किया जा चुका है, उनका पालन करना आवश्यक है। यन्त्र के सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि आदि का निर्णय करने के उपरान्त ही यन्त्र-साधन में संलग्न होना चाहिए।

यन्त्र-साधन से पूर्व 'भूतलिपि' की उपासना करना आवश्यक है। इस उपासना से ही यन्त्र सिद्ध होते हैं; अन्यथा के अपना चमत्कारी-काम उद्दिष्ट नहीं कर पाते। भूतलिपि के सम्बन्ध में निम्नानुसार सम्मिलित है—

भूतलिपि- "अं इं उं ऋं लृं एं ऐं ओं औं हं यं रं वं लं डं कं खं घं गं अं चं दं भं जं णं टं ठं डं नं तं थं धं फं दं मं पं फं भं बं शं छं स।"

विनियोग- "अस्याः भूतलिपेः दक्षिणाद्युक्तिः शिवायः गायत्रीद्वयः वर्णेश्वरी देवतासमाभीष्ट सिद्धये जाये विनियोगः।" - इसके बाद निम्नानुसार षड्गुण्यस करना चाहिए—

षड्गुण्यस- "हं यं रं वं लं - हृदयाय नमः। उं कं खं घं गं - शिरसे स्वाहा। अं चं दं भं जं - शिखायै वषट्। णं टं ठं डं - कण्ठाय हुम्। मं पं फं भं बं - अरुणाय फट्।" इसके बाद निम्नानुसार वर्णन्यास करें—

वर्णन्यास- " ॐ अं नमः - गुदे । ॐ इं नमः - लिङ्गे । ॐ उं नमः - नाभौ । ॐ ऋं नमः - हृदि । ॐ ॠं नमः - कण्ठे ।
 ॐ एं नमः - मूत्रमूत्रे । ॐ ऐं नमः - ललाटे । ॐ ओं नमः - शिरसि । ॐ औं नमः - ब्रह्मरूपे । ॐ हं नमः - ऊर्ध्व
 मुखे । ॐ यं नमः - पूर्वमुखे । ॐ रं नमः - दक्षिण मुखे । ॐ वं नमः - उत्तरमुखे । ॐ लं नमः - पश्चिम मुखे ।
 ॐ ङं नमः - दक्ष हस्ताग्रे । ॐ कं नमः - दक्ष हस्तमूले । ॐ खं नमः - दक्ष कूर्परि । ॐ घं नमः - दक्ष हस्ता-
 गुलि सन्धौ । ॐ गं नमः - दक्षिण मणिबन्धे । ॐ ङं नमः - वाम हस्ताग्रे । ॐ चं नमः - वाम हस्तमूले ।
 ॐ कं नमः - वाम कूर्परि । ॐ ऋं नमः - वाम हस्तांगुलि सन्धौ । ॐ जं नमः - वाम मणिबन्धे । ॐ णं नमः -
 दक्ष पादाग्रे । ॐ टं नमः - दक्ष पादमूले । ॐ ठं नमः - दक्षिण जानौ । ॐ डं नमः - दक्ष पादांगुलि सन्धौ ।
 ॐ ङं नमः - दक्षिण गुल्फे । ॐ तं नमः - वाम पादाग्रे । ॐ तं नमः - वाम पादमूले । ॐ थं नमः - वाम जानौ ।
 ॐ दं नमः - वाम पादांगुलि सन्धौ । ॐ दं नमः - वाम गुल्फे । ॐ मं नमः - उदरे । ॐ पं नमः - दक्षिण पाद-
 हृदि । ॐ सं नमः - मूत्रमूत्रे । ॐ बं नमः - पृष्ठे । ॐ शं नमः - गुह्ये । ॐ षं नमः -

ध्यान- " अक्षसृजं हरिणपोतमुदग्रं टंकं विष्णुं कर्त्रैरपिरतं दधती त्रिनेत्राम् ।
 अर्हं नु मौलिमरुणाधरविदरामां वर्णेश्वरीं पुणामतस्तनभारनमाम् ॥ "

उक्त 'श्रुत-लिपि' का १ लाख की संख्या में लपकाने के बाद सिलों से १० हजार आहुतियाँ
 देकर होम करें। इससे श्रुत-लिपि सिद्ध हो जाती है। इसके सिद्ध हो जाने पर साधक द्वारा निर्मित यन्त्र अपना
 चमत्कारी प्रभाव प्रदर्शित करते हैं, अथवा यन्त्र अपना शक्ति कल नहीं देते, अतः सर्वप्रथम इस श्रुत-लिपि को

सिद्ध करना आवश्यक है। इसे सिद्ध कर लेने के बाद ही यन्त्र-साधना करनी चाहिए।

अनिवार्य प्रक्रिया एवं शास्त्र-संज्ञानोपरांत शुद्ध धारण करके ललाट पर चन्दन लगा, गोरोंचनादि निर्देशित पुष्पोद्धार भोजपत्रादि निर्देशित-वस्तु पर सकान्त-स्थान में यन्त्र को लिखना चाहिए।

यन्त्र में विसर्गयुक्त नाम को मध्यबीज पर लिखना चाहिए। यह नाम साधक का हो। किंतु उसके नीचे द्वितीयाक्ष साधक-अथवा कार्य का नाम तथा उसके दोनों ओर दो बार 'कुरु' शब्द लिखना चाहिए। फिर "ह्रस्वः" इस बीज को (जिसे यन्त्र का 'जीव' माना जाता है) मध्य-भाग से नीचे की ओर लिखना चाहिए। तत्पश्चात् हंसः सोऽदहं (जिसे मन्त्र का 'प्राण' माना जाता है) को ईशान आदि चारों कोणों में लिखना चाहिए तथा दिशाओं में दिग्बालों के बीजों— लं रं सं हं बं यं सं हं आं ह्रीं— को लिखकर 'यन्त्र गायत्री' के तीन-तीन वर्णों को उत्प्रेक्ष दिशा में लिखना चाहिए।

यन्त्र गायत्री- "यन्त्रराजाय विद्महे वर उदाय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्"—यह 'यन्त्र-गायत्री' है, जो स्मृणमान से ही अभीष्ट-फल देती है। यन्त्र के बाहर प्रण उल्लिखित-मन्त्र से उसे वेदितकृते। उक्ता उच्चार से, साधकानी श्रवक, निर्दिष्ट विधि से यन्त्र को लिखना चाहिए।

जिन यन्त्रों के साध लेखनी, लेखनाकार तथा लेखन-वस्तु का उल्लेख हो, उन्हें 'तदनु रूप ही लिखना चाहिए। जिन यन्त्रों के साध लेखन-वस्तु का उल्लेख न हो, उन्हें 'भोजपत्र, रेशमीवस्त्र अथवा ताड़पत्र पर लिखना चाहिए। जिन यन्त्रों के साध लेखन-द्रव्य का विधान न हो, वहाँ उसे केसर, कटहूरी, कपूर, गणपद, गोरोंचन, चन्दन अथवा अमर— इनमें से किसी वस्तु के द्वारा लिखना चाहिए। जहाँ लेखनी सम्बन्धी

का उल्लेख न हो, वहाँ स्वर्ण के (अनाम में लौहे के) ताबीज में भर कर उसे चारण करना चाहिए। जहाँ यन्त्र को किसी अङ्ग विशेष में चारण करने का निर्देश न हो, वहाँ उसे दाँई भुजा (संजी दाँई भुजा) में चारण करना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरने से पूर्व उसे चारों ओर धागे से लपेट कर बाँध देना उचित है। जिस देवता का यन्त्र हो, उसके बीज से अपना मातृका से पूजन कर, उस देवता का मन्त्र जप कर तथा उसी से होम करके, होम करने से शेष बचे हुए घृत में यन्त्र को डुबो कर, उसे स्वर्ण, चाँदी

अथवा लौहे के ताबीज में भर कर गिर, भुजा अपना कण्ठ में चारण करना चाहिए। यन्त्र को चारण करने से पहले, सर्वतोभद्रमण्डल के आठ दलों में कलशों की स्थापना कर के,

उनके मध्य में यन्त्र को रखना चाहिए तथा मण्डल के चारों कोनों में चार कलश स्थापित कर के, प्रक्षेप कलश पर हाथ रखते हुए — " आं ह्रीं क्रौं " — इन तीन अक्षरों वाली विद्या में कूर्च-बीजों को लगा कर, एक हजार बार जपना चाहिए। तत्पश्चात् उस यन्त्र को चारों कलशों के जल द्वारा, अभिषेक के मन्त्रों से अभिषेक कर, गन्ध-पुष्पादि से पूजन करके, पाण्डुरादि के मन्त्रों से यन्त्र-देवता की पाण्डुरादि करके पूर्वैक्षित यन्त्र-गायत्री द्वारा यन्त्र का वीरशेषचार पूजन करके ब्राह्मण, सुवासिनी तथा कुमारियों को भोजन कराने के बाद, दक्षिणा देकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए। फिर जिस अङ्ग में यन्त्र-चारण का निर्देश दिया गया हो, उसमें उसे चारण कर लेना चाहिए।

अगले पृष्ठों में विभिन्न मन्त्रकामनाओं की पूर्ति करनेवाले यन्त्रों का वर्णन किया जा रहा है।

वशीकरण - यन्त्रम्

अथ वशीकरण यन्त्रों का उल्लेख किया जाता है। इन यन्त्रों का उपयोग विभिन्न सेनी के व्यक्तियों के लिए किया जाता है।

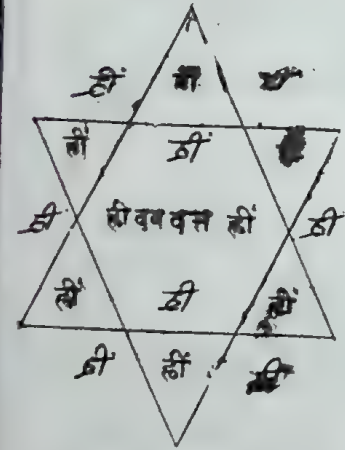
सर्ववशीकरण दिव्यस्तम्भन यन्त्र- गेरोचन तथा कुंडुम - इन दोनों के द्वारा भोजनयन्त्र के ऊपर सेक षट्कोण यन्त्र लिखे। फिर उसके पूर्व तथा पश्चिम - इन दो कोणों में दो 'ही'कार लिख कर, इनके अन्तराल में दो 'ही'कार और लिखें। इस प्रकार कुल आठ 'ही'कार हुए।

फिर षट्कोण यन्त्र के भीतरी भाग में 'ही'काराक्षर संपुटित साधन - यन्त्र के नाम को लिखे तथा तथा अथ चारकोणी को भी चार 'ही'काराक्षर से वेष्टित कर, यन्त्रराज को पूर्ण करे।

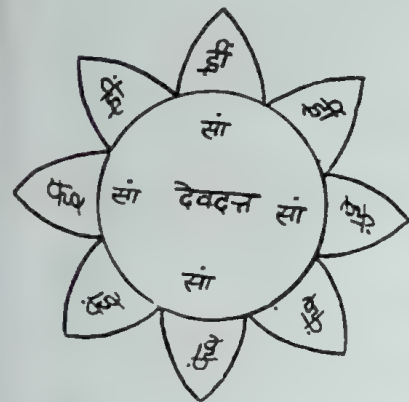
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वहृष तद्वत् होगा, उसे बाँई ओर उदशित चित्र में स्पष्ट दिखा गया है। इसमें जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वही साधन यन्त्र के नाम को लिखना चाहिए।

(दिव्यस्तम्भन यन्त्र)

इस यन्त्र को 'शराव-सम्पुट' (मिट्टी के दो शकोरों को आपस में छुँट मिलाकर बंध कर देने को शराव-सम्पुट कहते हैं) में राखकर भक्ति भाव से प्रजन करे अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों के बीच खाली भाग में यन्त्र को रख दे। फिर उसका पूजन करे। दूसरे दिन उसे शराव-सम्पुट में से निकाल कर मुख मुख में अपनी किरा में बाँधे, तदुपरान्त मीन बहकर फल का भित्तन करे। यह यन्त्र जोष्ठ वशीकरण तथा लोक में साधन-भाव को प्राप्त कराने वाला है। यह लोक में साधनभाव को प्राप्त कराने वाला है।



स्त्री सौभाग्यकर सौभाग्य वर्द्धक मन्त्र - सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा एक गोला को लिखकर मध्यभाग में अनुस्वार युक्त साध्व-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें। तदुपरान्त आठों दलों में 'ह्रीं' बीज को लिखें। इस प्रकार निर्मित होने वाले मन्त्र के स्वरूप को बाँई ओर उदक्षिति किया गया है। मन्त्र के मध्यभाग में 'जहाँ' 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्व-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



(सौभाग्य वर्द्धक मन्त्र)

मन्त्र-लेखन के बाद तीन रात्रि तक, मन्त्र का गुल्फ-पुष्पादि से पूजन करना चाहिए तथा चौथे दिन विधान पूर्वक तीन सौ भाग्यवती स्त्रियों का पूजन कर, उन्हें भोजन करा, दक्षिणा दे, आशीर्वाद प्रार्थना करे। सौभाग्यवती स्त्रियों के पूजन के समय निम्न लिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए -
"अनङ्ग-वल्लभे देवि त्वंच मे प्रीयतामिति। एनं विप्रे महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे॥
उक्त विधि से मन्त्र का पूजन करने के बाद इसे किसी धातु के ताबीज में भरकर कण्ठ में धारण करना चाहिए।

जो स्त्री इस मन्त्र को धारण करती है, उसका पति उसके वशीकृत रह कर, दास-तुल्य हो जाता है। यदि उक्त क्रियाओं को करने पर भी यदि पति सौभाग्य-मद से दूरित स्त्री को कुछन समय के लो हन्नी को चाहिए कि वह शुक्लपक्ष की प्रत्येक चतुर्दशी में देवीशक्ति की उपासना के लिए एक सौभाग्यवती स्त्री को भोजन कराके पुनः मन्त्ररूप का पूजन करना चाहिए।

(दुष्टमोहनकर कण्टक यन्त्र)



(दुष्टमोहन काल कण्टक)

दुष्टमोहनकर कण्टक यन्त्र-

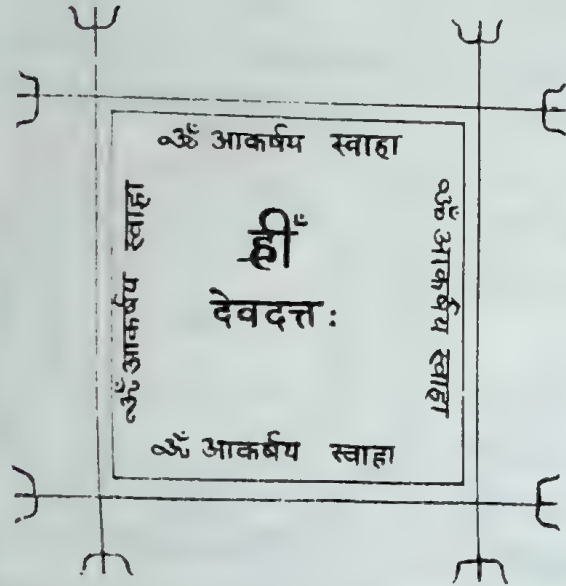
शमशान की भस्म लाकर, आक के दो चत्तों पर अलग-अलग एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके भीतर साधक - जाकि का नाम लिखें। फिर 'ई-पः' विसर्गमिश्रित इन दो बीजों को पूर्व आदि चारों दिशाओं में लिखकर उसके ऊपर एक गोलाकार चक्र और खींचें, ताकि इस अक्षर चक्र के मध्यवर्ती हो जायें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे इसी चक्र पर बाँट और उद्भिदि किया गया है। चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक - जाकि का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखे जाने के बाद दोनों चत्तों को संघट से लेकर, काँच से देव कर, कृष्ण पक्ष की रात्रि में ध्वजन करके, शमशान भूमि में गड्ढा खोद कर गाढ़ दे' तथा सूनादि बलि - पुदान करें।

उक्त क्रियाओं को सम्पन्न करने के बाद "हे कालरात्रि! तु सन्त होयो" इस वाक्य का उच्चारण करते हुए, ब्रालणों को दक्षिण दें। इस यन्त्र - क्रिया से अत्यधिक बलवान् शत्रु भी, जो धात करने की इच्छा रखता है, साधक के अनुकूल बन जाता है।

यह 'दुष्ट मोहनकर कण्टक यन्त्र' अथवा 'दुष्ट मोहन काल कण्टक' नामक यन्त्र शत्रु के स्वभाव में परिवर्तन लाकर, उसे साधक के वशीभूत बना देता है।

(उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र)



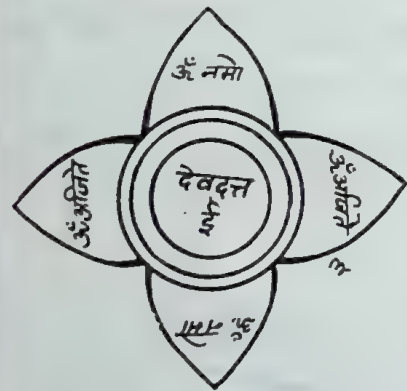
आवागमन बना रहता हो । वह साधन से अत्यधिक क्रूर-उग्रही जाता मनुष्य भी वशीभूत हो जाता है । यदि-
व्यवसायी व्यक्ति के मार्ग में कोई व्यक्ति बाधाक बनकर दुष्टता कर रहा हो तो उसके लिए इस यन्त्र का उपयोग करना चाहिए

दुष्टवश्यकर 'उच्छिष्ट-पिशाच यन्त्रम्' - गोरोचन तथा अपने रक्ता से
गोत्रपत्र के ऊपर दो रेखा वाले एक चौकोर यन्त्र को लिखकर, इसके भीतरी
भाग में 'ही' बीच-रेखा के मध्य में साधक-व्यक्ति के नाम को लिखे,
फिर इसके भीतरी भाग में 'ही' बीच-रेखा के मध्य में साधक-व्यक्ति
के नाम को लिखना चाहिए तथा पूर्वदि-चारों दिशाओं में 'ॐ आकर्ष्य
स्वाहा' इस वाक्य को यन्त्र के भीतरी भाग में लिखना चाहिए, ताकि
साधक-व्यक्ति के नामाक्षर मध्य में हो जाँय । यन्त्र के चारों कोनों
में त्रिशूल भी बनाने चाहिए ।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँहें ओर
दिपे गए चित्र में उदासीन किया गया है । जिसमें जहाँ 'देवदत्त'
लिखा है, उस जगह साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए ।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध आदि से पूजन करके
'ॐ आकर्ष्य स्वाहा' - इस यन्त्र का उच्चारण करते हुए यन्त्र के टुकड़े
कर, उस मार्ग में डाल देने चाहिए, जिसमें होकर साधक-व्यक्ति का

(जन्तवशयकर यन्त्र)



(यावज्जीव वशीकरण यन्त्र)

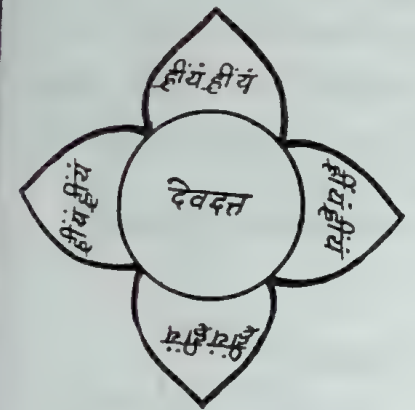
यावज्जीवं जन्तवशयकरं यन्त्रम्-

अब समस्त जीवों को वशीकृत करने का प्रभाव रखने वाले यन्त्र का वर्णन करते हैं।

सर्वप्रथम कपूर, कुंकुम, कस्तूरी और गौरोचन—इन वस्तुओं द्वारा भोजन के उपर, तीन रेखाओं से युक्त एक गोलाकार चक्र का निर्माण करें। फिर उसकी पूर्व आदि चारों दिशाओं में चार कमल-दल वेष्टित करें तथा यन्त्र के मध्य में साधक-व्यक्ति का नाम लिखें, उसके अन्त में 'ई'कार लगायें तथा पूर्व एवं पश्चिम के दलों में 'ॐ अजिते' तथा उत्तर-दक्षिण के दलों में 'ॐ नमो' लिखें। यह प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँटें और प्रदक्षिणा किया गया है। प्रदक्षिणा यन्त्र में फिर जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद तीन दिनों तक गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन करते रहें तथा ब्रह्मचर्य उत्तम धारण का फलदायक अथवा संघमित धारणा करे। चौथे दिन एक ब्राह्मण को भोजन करायें तथा उसे दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करते हुए आशीर्वाद प्राप्त करें। जब ब्राह्मण भोजन करके चला जाय, तब प्रातः काल के समय ही, यन्त्र को त्रिलोह (सोना, चाँदी और लौहा) के ताबीज में भरकर अपनी दाँईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करें। यह यन्त्र सभी जीवों को वश करने वाला है तथा इसे धारण करने वाला स्वर्गलोक में दक्षिण एवं उत्तर दिशा में सम्माननीय होता है।

(विवाद-विजय पन्त्र)

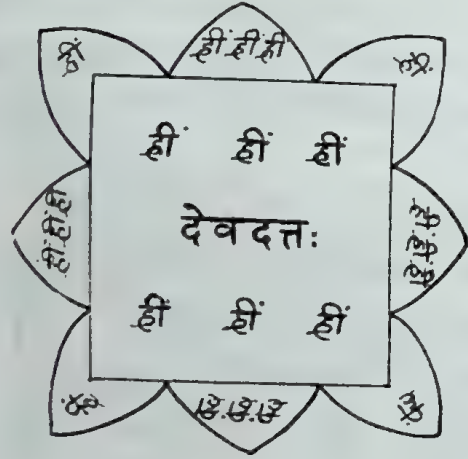


विवाद-विजय पन्त्रम् - विवाद अर्थात् झगडा, कंफट, मुकदमा आदि में विजय-प्राप्ति के लिए 'विवाद-विजय पन्त्र' का प्रयोग किया जाता है। इसकी विधि निम्नानुसार है —

भोजपत्र के ऊपर कुंकुम द्वारा एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसकी चारों दिशाओं में चार कमल-दलों का निर्माण करे। फिर प्रत्येक दल में 'ही' और 'यं' — इन दो बीजों को दो-दो बार लिखे अर्थात् 'हीयं हीयं' लिखे। तदुपान्त पन्त्र के मध्य में साधन-व्यक्ति का नाम लिखे। इस प्रकार जो पन्त्र तैयार होगा, उसके स्वरूप को बाँटें और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित पन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

पन्त्र-निर्माण के बाद उसे धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजे, फिर तिलोह (सोना, चाँदी, लौहा मिश्रितधातु) से निर्मित गळीय में भरकर दूध के भीतर (किसी बर्तन में गड़े हुए दूध में) डालकर रखदे, तत्पश्चात् मुकदमा आदि के लिए न्यायालय में जाय तो विजय प्राप्त होती है। यदि किसी के साथ अथवा शत्रु-बान्धवों में सम्मिलित होने से पूर्व उक्त प्रयोग/किया जाय तो उसमें मनोबुद्धि तथा देवताओं द्वारा प्रदत्त है। यदि इसका समुचित रीति से साधन किया जाय तो सफलता अवश्य मिलती है।

(स्त्रीसौभाग्यकर ललिता यन्त्रम्)



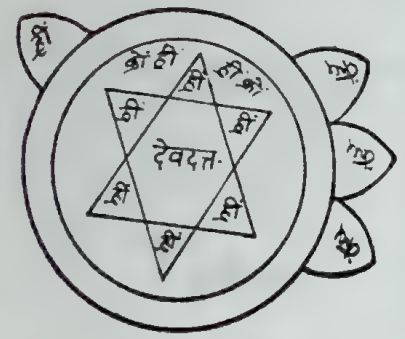
स्त्री-सौभाग्यकर ललिता यन्त्रम् - गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी एवं लालचन्दन - इन चारों वस्तुओं के समिश्रण से, मोटापत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र लिखें तथा उसके ईशान आदि-चारों कोनों एवं द्वर्ज आदि चारों दिशाओं में एक-एक कमल-दल का निर्माण करें। इस प्रकार कुल एकमात्र-दल निर्मित होंगे। तदुपरान्त यन्त्र के मध्य भाग में तीन तिरछी रेखाओं की कल्पना कर, पहली तथा तीसरी रेखा में 'लीन-लीन' ही 'कीज' स्थापित करें एवं मध्य की रेखा में अन्त में 'विसर्गयुक्त 'साधव-पुरुष' का नाम लिखें। फिर बहिर्भाग के चारों कमल दलों में 'लीन-लीन' ही 'कीज' तथा ईशानादि चारों कोणों के दलों में एक-एक 'हीं कीज' लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वल्प बनेगा उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। (प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साधव-पुरुष' के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखने परान्त कृष्णपद्म की त्रयोदशी की रात्रि में उत्तरदिशा की ओर मुँह करके, सात रात्रिपर्यन्त निधम ध्वज के अनेक प्रकार के भोग तथा

गंधादि से यन्त्रराज का पूजन करते रहें तथा अन्त में सात सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन करावें। फिर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यन्त्र को चातुर्निर्मितता कीज में भरकर अपने कण्ठ में धारण करें - "शोकस्वप्निषु देवि लज्जिते प्रीयतामिनि। रुवं देहि प्रदा देहि सौभाग्यं देहि मे प्रियम्। भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यं हनम्।" इस यन्त्र के प्रभाव से स्त्रियाँ प्रियतम को वश में कर लेती हैं।

पन्ना
२५२

(कामाक्षी यन्त्रम्)



राज-स्त्री वश्यकारक कामाक्ष यन्त्रम्-

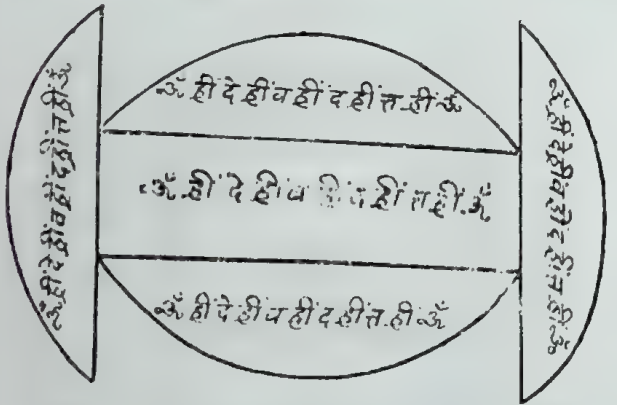
गोरीचग, कुंकुम रत्न कपूर - इन तीनों वस्तुओं के मिश्रण से, चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक छट्कोण - यन्त्र का निर्माण कर, उसके बाह्य भाग में एकमावेगोलाकार - यक्ष स्त्रीचित्र तथा उसके दक्षिण भाग में तीन तथा ईशान भाग में एक कमल-दल बनाकर, एका छट्कोण के भीतर साध्व-स्त्री के नामाक्षर लिखकर, प्रत्येक कोण में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें। फिर पूर्वकोण में एक 'क्लीं' बीज लिखकर दो 'ह्रीं' बीज तथा बाद में एक 'त्र्यं' बीज लिखें। तदुपरान्त प्रत्येक दल में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई और पुदरिति दिखाया जाये। पुदरिति यन्त्र के दक्षिण भाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्व-स्त्री के नाम को लिखना चाहिये।

महा०

यन्त्र लेकर तो यन्त्रात्मक शक्ति के समस्त श्रेष्ठ वस्तु प्राप्त कर, यन्त्र को अपने सामने रखकर गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि पदार्थों द्वारा भक्तिभाव पूर्वक यन्त्र का पूजन कर के, साध्व-स्त्री का चिन्ता करना चाहिए। इस विधि से सात दिनों तक पूजादि की क्रियाओं को करते रहने के बाद ब्राह्मण की हिमियों को विभिन्न प्रकार के भोजन-पदार्थों से तृप्त करा, यथा शक्य दक्षिण दे दें। दक्षिण देते समय 'कामाक्षी उषिताम्' इत्यव्ययको उच्चारण करना चाहिए। फिर यन्त्र को जिलोट (सोना, चाँदी, लौहा) के ताबीज में भर कर, बाँई भुजा में धारण कर, साध्व-स्त्री के सम्मुख पहुँचना चाहिए। इस यन्त्र धारणकर्ता को देखते ही साध्व-स्त्री, फिर चाहे वह राजरानी ही क्यों न हो काम-पार से वीरित हो, साधक के वशीभूत होकर, उससे स्वयं पूजा-पूजन करने लगती है।

पृ. ३

(स्त्री वशीकरण मदनमर्दन यन्त्र)



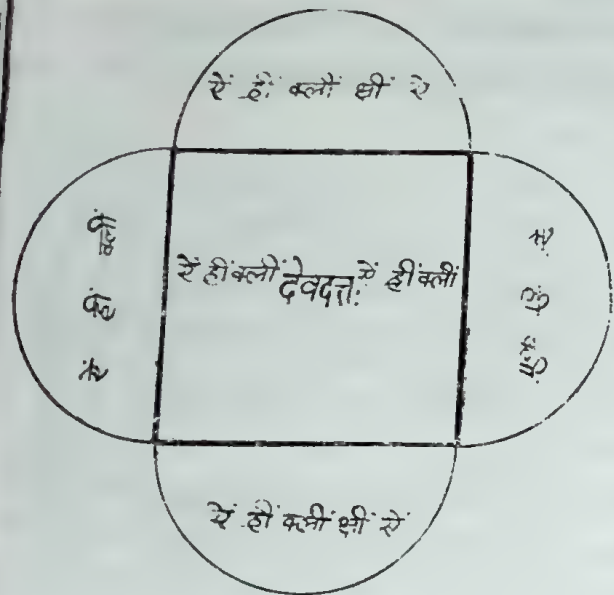
स्त्री-वशीकरण मदनमर्दन यन्त्र

मदन काष्ठ आर्थात् चमेली की लकड़ी से मोजपत्र के ऊपर धोई के रक्त द्वारा दो तिरुली रेखाएं खींच कर, उनके आदि-अन्त में कमल-दल का आकार बना कर, उनके ऊपर नीचे के दोनों भागों में सामान्य गोलाई चुका दो रेखाएं खींच कर " ॐ दे ही व ही द ही त ही ॐ " — इन ग्राह्य बीजों को प्रत्येक कोष्ठ में स्थापित कर, यन्त्र को पूर्ण करें। इस प्रकार जो यन्त्र बनेगा, उसके स्वहृत् को बाँटें और पुदविलि किया गया है।

पुदविलि यन्त्र में 'ॐ ही' इन दो आदि बीजाकारों के बाद प्रत्येक 'ही' बीज के आगे क्रमशः 'दे व द त' इन लक्षरों की लिखा गया है, इनके स्थान पर साधन-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि 'मधुरिमा' नामक स्त्री के निमित्त प्रयोग करना हो तो यन्त्र के भीतर लिखे जाने वाले अक्षर इस प्रकार होंगे — "ॐ ही म ही धु ही रि ही मा ही ॐ" इसी प्रकार अन्य नामाक्षरों के साथ

रक्त - रज ही बीज का प्रयोग करना चाहिए। यन्त्र लेखने परान्त चमेली की लकड़ी द्वारा ही कामदेव की रक्त से स्त्रीप्रतिमा का निर्माण करें, जिसके हृदय में रक्त ऐसा दिव्य हो, जिसके भीतर यन्त्र को आसानी से रखा जा सके। फिर यन्त्र की चमक, हृत्पत्र आदि से पूजा कर, उपरिमा के हृदय में स्थापित कर देतप्ता २१ दिनों तक तिल पूजा करते रहें। इसके साधन स्त्री वशीकृत हो जाती है।

(स्त्रीविश्वकर कामराज पञ्चम)

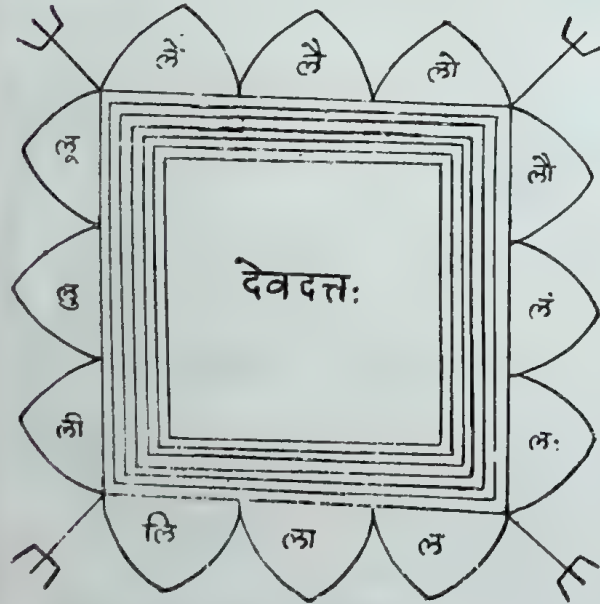


स्त्रीविश्वकर कामराज पञ्चम- चमेली की कलम द्वारा एक बड़े भोज-
पत्र के ऊपर, गिरोचना कुंकुम, लाल-चंदन तथा कस्तूरी -- इन चार वस्तुओं
के मिश्रण से, एक अंगुल के अन्तर से कणिका मुका दो रेखाओं के ऊपर
नीचे दो आकार की कल्पना करके, कणिकाओं में "हं ह्रीं क्लीं" इन बीजों
को वृण कर, उक्त दोनों दलाकारों में "हं ह्रीं क्लीं ह्रीं" से -- इन बीजों को
लिख कर, रेखाओं के भीतर -- "हं ह्रीं क्लीं" इन बीजों को आदि - अन्त में
लगा कर अनुस्वार युक्त साधन-स्त्री का नाम लिखे। इस विधि से पञ्च
का जो स्थापन सध्या होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में उदर्गित किया गया
है। उदर्गित चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-स्त्री के नाम
को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद लकड़ी के एक चट्टे के ऊपर बाँई द्वारा
निर्मित कामदेव की प्रतिमा को स्थापित कर, इसके उदर में यन्त्र को रखे
तथा वांछ, पुष्ट, धूप, दीप, फल, नैवेद्य आदि से कामदेवकाल के समय इस
प्रकार का उच्चारण करते हुए कामदेव की प्रतिमा में स्थित यन्त्र का पूजन करें -- "कामोऽनुदुः पुष्टपदारः कन्दर्पो ममि-
कतनः। श्रीविष्णु तनयो देवः। असतो मय से पुनो।" जब तक सोहूँ प्राप्त न हो, तब तक प्रत्येक रात्रि में मन्त्र-जप
साहेत प्रतिमा के उदर में स्थित यन्त्र का पूजन करते रहना चाहिए। इस उद्देश से साधन-स्त्री बनीयात हो जाती है।

मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव की प्रतिमा में स्थित यन्त्र का पूजन करें -- "कामोऽनुदुः पुष्टपदारः कन्दर्पो ममि-
कतनः। श्रीविष्णु तनयो देवः। असतो मय से पुनो।" जब तक सोहूँ प्राप्त न हो, तब तक प्रत्येक रात्रि में मन्त्र-जप
साहेत प्रतिमा के उदर में स्थित यन्त्र का पूजन करते रहना चाहिए। इस उद्देश से साधन-स्त्री बनीयात हो जाती है।

(महासृष्ट्युज्जय यन्त्र)



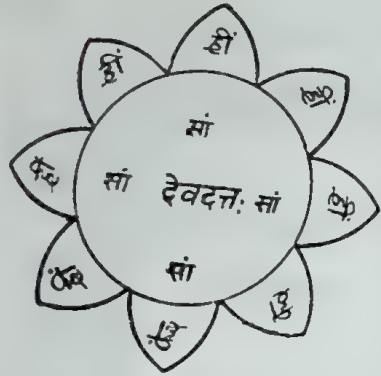
दुष्टवश्यकर महासृष्ट्युज्जय यन्त्रम्- भोजयन्त्र के दो टुकड़ों के ऊपर
अलग-अलग लोटे की कलम से सात रेखाओं वाला एक चौकोर यन्त्र
बनाकर, उसके चारों भाग में तीन-तीन कमल-दलों का निर्माण करें
तथा चारों कोनों में लिखूल लगायें। तत्पश्चात् यन्त्र के मध्यभाग
में साध-व्यक्ति का नाम लिखकर, ईशान दिशातक "ल, ला, लि,
ली, लु लृ, ले, लै, लौ, लो, लं, लः" — इन बारह अक्षरों को कुमशः
प्रत्येक कोणक में लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वतन्त्र बनेगा,
उसे कौंई ओर प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र के मध्य भाग में जहाँ
'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

उक्त विधि से दोनों यन्त्रों को लिखने के बाद, उत्तर की ओर छुट
कके लोटे तथा पृथ्वी पर बाकी हुई एक नारी शिला के नीचे दोनों
यन्त्रों को दबाकर, साध-व्यक्ति के पास पहुँचें तो उसका जो ध
दूर हो जाएगा तथा उसे आप से मिलकर प्रसन्नता होगी।

इस यन्त्र के प्रभाव से एकबार काल का जो ध भी भला हो
जाता है तथा साधक के प्राणों की रक्षा होती है, जब यह अनुभव हो कि प्राणदुष्ट स्वभाव का है तथा हालि पहुँचे
पर जाता है। उस समय इस यन्त्र के प्रयोग से आरम्भजनक लाभ होता है।

महा.

(स्त्री-सौभाग्यकर यन्त्र)

**स्त्री-सौभाग्यकर यन्त्रम्-**

सर्वप्रथम भोजयन्त्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र
 खींचें, फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें। फिर यन्त्र के भीतर
 पूर्व आदि नारों भागों में 'सां' बीज लिख कर, मध्यभाग में अनुस्वार-युक्त
 साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। फिर बाहर के आठ दलों में 'ह्रीं' बीज लिखें। इस
 प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उदक्षिति दिखा गया है। इस चित्र
 में जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्तियों के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद तीन रात्रि तक गण्य आदि से पूजन करें तथा
 चौथे दिन तीन सौभाग्यवती हिज्रों का पूजन कर, निम्न लिखित मन्त्र का
 उच्चारण करते हुए, यन्त्र को चाटु के नाबीज में भर कर कण्ठ में धारण करें—
 "अनङ्गुल्लभे देवित्वं च मे प्रीयतामिति। एतं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं
 स्मृत्वल्लभे।" - इस यन्त्र को धारण करने वाली स्त्री का प्रति उसके

पक्ष की बहुत ईर्ष्या निम्न को देवी रति की प्रीति हेतु एक सौभाग्यवती-स्त्री को भोजन कराने के बाद पुनः
 यन्त्र राज का पूजन कर, कण्ठ में धारण करने से सौभाग्य-दर्शिन-पति भी अपनी स्त्री के वश में हो जाता है।
 इस यन्त्र का उपयोग वन सौभाग्यवती हिज्रों को ही करना चाहिए, जिन के पति अपने धन-सम्पत्ति
 आदि के अहंकार में भर कर अपना किसी अन्य कारण से उपेक्षा भाव उदक्षिति करते हैं।

(विजय चन्द्र)

स्त्री

क
ल
उ
ई

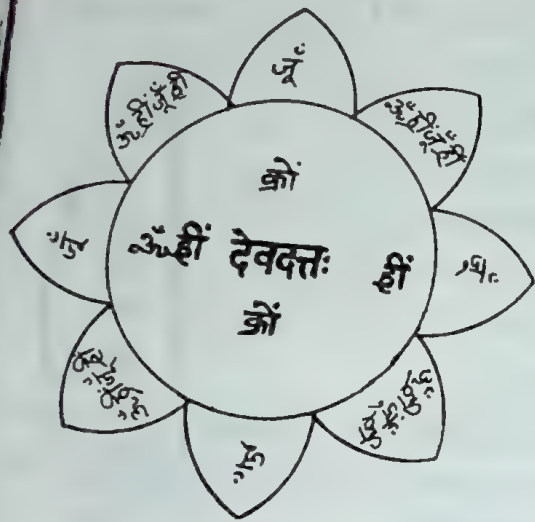
सौभाग्य जनन 'विजय चन्द्रम्' - सर्वप्रथम जल-मिश्रित गोरोचन द्वारा भोजन के ऊपर तीन रेखाओं के युक्त (अर्थात् तीनों टुकड़ों में बाँटा हुआ) एक अष्टाक्षर लिख कर, उसके मध्य में "स ह क ल उ ई" - इन ६ अक्षरों को 'ईकार' के गर्भ में स्थापित करें। इस विधि से चन्द्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँटें और उद्वर्धित किया गया है।

चन्द्र को लिखने के बाद गण्ड-दुष्प आदि से पूजन करें तथा स्वर्ण के तालीज से गरका अथवा स्वर्णपत्र में लपेट कर, पुष्प अथवा दौड़ भुजा तथा स्त्री अथवा बाँई अथवा कण्ठ में धारण करें। यह चन्द्र दुर्भाग्य-नाशक एवं सौभाग्य-जनक है। इसे धारण करने वाला पुष्प-पत्रों को तथा स्त्री-पुरुषों को उत्पन्न प्रिय होते हैं।

सौभाग्य जनन कमलारव्य चन्द्रम् - सर्वप्रथम गोरोचन को पानी में धोकर उससे भोजन के ऊपर एक गोलाकार-चक्र खींच कर, उसके बाहिर्भाग में अष्टदलों की स्थापना करें। तदुपरान्त गोलाकार के भीतर तीनों रेखाओं के लियत करके, ऊपर तथा नीचे की रेखाओं में बाँटें तथा बीच की रेखा में "ॐ ह्रीं" - इन दोनों बीजों को आदि में लिखकर, बीच में साधन-वाक्या का नाम तथा अन्त में केवल 'ह्रीं' बीज लिखें। फिर श्वी आदि चारों दिशाओं में 'ऊँ' बीज लिखकर, ईशानादि चारों दिशाओं के दलों में "ॐ ह्रीं ऊँ ह्रीं" - इन चार बीजों को स्थापित करें। इस विधि से जो मन्त्र तैयार होगा,

मार्ग

(कमलारव्य चन्द्र)

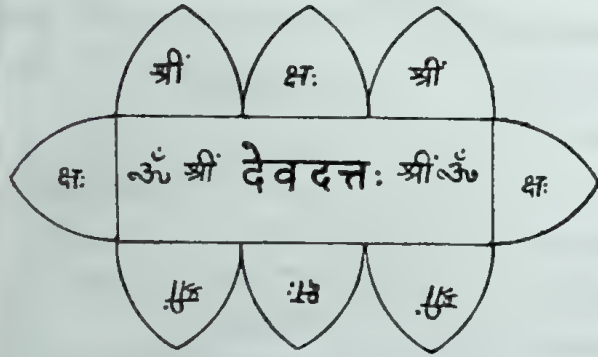


इस चन्द्र को गले में पहने जाते वाले द्वार में मिलाकर धारण करने से भी उक्त सभी फलों का लाभ होता है। स्त्रियों के लिए यह चन्द्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

उसका स्वरूप बौद्ध और उदरगिरि किपा गया है। उदरगिरि चन्द्र में जहाँ 'देवता' लिखा है, वहाँ 'साध्य-पुरुष' के नामाक्षरों को लिखना चाहिए।
उक्त विधि से चन्द्र लिखने के बाद गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, नैवेद्य आदि वदार्थों से तीन दिनों तक चन्द्र का पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् "हे लोकेशः! प्रीयताम्"--- इस वाक्य का उच्चारण करते हुए एक ब्राह्मण पुरुष तथा एक ब्राह्मण-स्त्री को भोजन करना चाहिए। फिर चन्द्र को कच्चे दोरे से लपेट कर तथा त्रिलोच के तालीज में बंध करके बौद्ध भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए।

यह चन्द्र केवल हिलोचों के धारण करने योग्य है। इसे धारण करते वाली स्त्री के सौभाग्य में वृद्धि होती है, यतिवशसे रहता है तथा मनोमिलाषाओं की पूर्ति होती है। यदि वरुणा-स्त्री इसे धारण करे तो वह गर्भवती होकर उत्तम पुत्र को प्राप्त करती है। यदि मृगवासा-स्त्री (जिसकी सन्तोष हो-होकर मर जाती हो) उसे 'मृगवासा' कहते हैं) इसे धारण करे तो उसे श्रेष्ठ तथा दीर्घजीवी पुत्र का लाभ होता है।

(यावज्जीव स्वामिवश्यकर यन्त्र)



यावज्जीव स्वामिवश्यकर यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न (बिना कटे कटे मोलपत्र के टुकड़े पर गोबो-चक्र द्वारा दक्षिण तथा उत्तर की ओर अधिक फैली हुई दो तिरछी रेखाएँ खींचें, फिर उनके दक्षिण तथा उत्तरभाग में दो कणिका एवं बीच के दलों में विसर्ग सहित 'क्षकार' अक्षर लिखकर, शेष स्थानों 'श्री' अक्षर को लिखें। मध्यभाग में दोनों ओर 'ॐ' 'श्री' तथा 'श्री' 'ॐ' अक्षरों के बीच साध-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे जाँड़ और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र लिखने के बाद उसे 'शराव-सम्पुट' अर्थात् मिट्टी की दो सरियों के बीच में बन्द करके अग्नि में पुष्टि करें अर्थात् तपावें, फिर जब वह ठण्डा हो जाए, तब शराव-सम्पुट को खोल कर, उसकी भस्म को पानी में घोल कर पी जाँय।

उक्त यन्त्र का प्रयोग करने से साध-व्यक्ति आजीवन साधक के वशीभूत बनारहता है। इस यन्त्र का प्रयोग अपने स्वामी को वश में करने के लिए करना चाहिए। यहाँ 'स्वामी' शब्द का तात्पर्य 'पति' नहीं कर मालिक है, अतः इस यन्त्र को नौकर द्वारा अपने दुष्ट-स्वभाव के मालिक को वश में करने हेतु प्रयोग में लाना चाहिए।

(महामोहन यन्त्र)



महामोहन यन्त्रम्- सबसे पहले एक कौंसे के बर्तन को बारब तथा गोबर से मॉल कर शुद्ध करें, फिर उसमें एक अविच्छिन्न मोलपत्र का टुकड़ा रख कर, उस टुकड़े पर बहेड़े की लकड़ी की कासम द्वारा गोरोचन तथा चंदन के मिश्रण से मन्त्र लेखन कार्य आरम्भ करें।

सबसे पहले मध्यभाग में साधन-व्यक्ति का नाम लिखें, फिर उसके ऊपर एक गोलाकार रेखा खींच कर, उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाये तथा प्रत्येक दल के भीतर 'ब' अक्षर लिखें। फिर उसके ऊपर एक और गोलाकार रेखा खींच कर उसके ऊपर बीजदल-कमल बनाये तथा उसके प्रत्येक दल को अकारादि वर्णों से पूर्ण करें। फिर उस कमल दल के ऊपर तीन गोले रेखाएं खींच कर यन्त्र को पूरा करें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँट और प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र लेखनोपरांत मालती, चंदेली, श्वेतकमल आदि सुगन्धित पुष्पों द्वारा तथा अथ सुगन्धित-द्रव्यों से यन्त्र का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार प्राप्त दिनों तक यन्त्र का पूजन करने के बाद उसे 'जिलोह' के ताबीज में भर कर अपने कण्ठ प्रत्यवा पुजा में धारण कल लेना चाहिए।

'महामोहन' नामक यह यन्त्र साधन-व्यक्ति को वशील करने की अद्भुत सामर्थ्य रखता है। विश्वासपूर्वक धारण करने से साधन-स्त्री-पुरुष किंकट के समान वशीभूत हो जाते हैं। इसका निष्ठापूर्वक प्रयोग करने

महा०

(जगद्वशकर यन्त्र)

ॐ वं जे ह्रीं इं
ह्रीं इं ह्रीं ॐ इं
वं इं जगत् वं ॐ ह्रीं

जगद्वशकर यन्त्रम्- सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर केशर, कस्तूरी, लाल-चन्दन तथा गोरोचन के मिश्रण द्वारा चमेली की लकड़ी की कलम से दो रेखा-पुका रक चौकोर यन्त्र खींचकर, उसके मध्य में तीन तिरछी रेखाओं की कल्पना करें। उनमें से पहली रेखा में " ॐ, वं, जे, ह्रीं, इं "; दूसरी रेखा में " ह्रीं, इं, ह्रीं, ॐ, इं " तथा तीसरी रेखा में " वं, इं, जगत्, वं, ॐ, ह्रीं " - इन बीजों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर दिष्ट गए चित्र में उपरि लिखा गया है।

लिखने के बाद यन्त्र का तीन दिनों तक गन्ध, पुष्प आदि से पूजन करें, तदुपरान्त उसे त्रिलोच के ताबीज में बन्द करके बाँई भुजा में धारण कर लें।

उक्त यन्त्र जब तक भुजा में बँधा रहेंगा, तब तक सम्पर्क में आने वाले सभी इच्छित - अर्थात् वशीकृत बने रहेंगे, परन्तु प्रतिदिन देवाराधन के समय इस यन्त्र का नियमपूर्वक पूजन करते रहना आवश्यक है।

बीज समुह यन्त्रम्- सर्वप्रथम गोरोचन, केशर, लाल चन्दन तथा अनामिका अँगुली का रक्त - इन सबको मन्त्र कर, इन सबके मिश्रण से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं से पुका रक चतुष्कोण यन्त्र को लिखें। फिर उसके मध्य में तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में

(बीज सम्पुट मन्त्र)

हीं हीं हीं हीं
हीं देवदत्तः हीं
हीं हीं हीं हीं

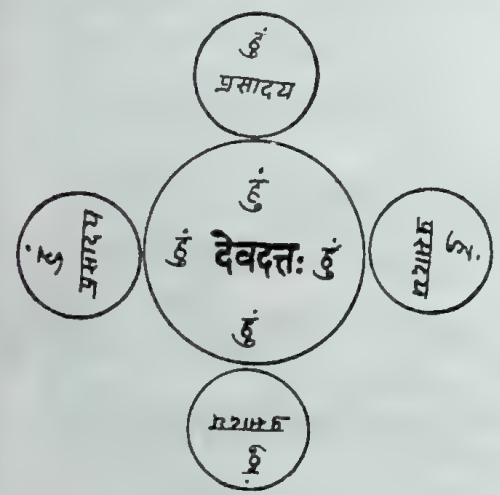
चार 'ही' वर्ण लिखे। द्वितीय रेखा में 'ही'कार से युक्ति साधन-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा तृतीय रेखा में पुनः 'चार 'ही' वर्ण लिखे। इस प्रकार कुल 90 हींकार वर्ण तथा एक साधन-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। इस विधिसे मन्त्र का जो स्वरूप लक्ष्य होगा, उसे बौद्ध और उदयिनि विचारणा है। (उदयिनि मन्त्र में जहाँ "देवदत्त" वह शब्द लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

इस मन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब राजा अथवा राज्याधिकारी अपना कुछ होकर अर्ध-वृद्ध अथवा कष्टाकास का दण्ड देने पर उत्तर दे। ऐसे अवसर पर इस मन्त्र को लिख कर पुनः, नैवेद्य आदि पुष्पों से पूजा कर, कुमारी कन्या, योगिनी, सुवासिनी—स्त्रियों एवं

बालकों को शृङ्खला में भोजन करवा कर नमस्कार करें। फिर इस मन्त्र को अपनी दाँड़ि मुड़ी में बाँध कर, (दबा कर) राजा अथवा राज्याधिकारी के पास जाएँ तो इसके प्रभाव से उसका क्रोध बुलाना भाना हो जाता है तथा वह साधक के अनुकूल हो जाता है।

राजा तथा राज्याधिकारियों को वश में करने के लिए यह 'बीज सम्पुट मन्त्र' अपना प्रभावकारी है, परन्तु इसका प्रयोग छोटे-मोटे कामों के लिए नहीं करना चाहिए। जब कभी कोई बड़ा मामला उसके आँखों के कारण अर्ध-हासि अथवा उल्लिख-हासि का भय उत्पन्न हो, तभी इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

(जामदग्न्य यन्त्र)



क्रोधशमन जामदग्न्य यन्त्र- लोहे के काँटे (कलम) द्वारा, नाइयन के ऊपर सोमवार के दिन, गोरोचन से एक गोलाकार चक्र लिख कर, उसकी प्रकीर्ति दिशाओं में एक-एक कलम-दल स्थापित करें। फिर मध्य के गोलाकार चक्र के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके पहली तथा तीसरी रेखा में एक-एक 'हुं' कीज तथा दूसरी रेखा के आदि-अन्त में हुंकार मिश्रित तथा अन्त में अंगुस्त्राश्रुका 'साध्य-व्यक्ति' का नाम लिख कर, ऊपरी दलों में भी दो-दो रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में 'हुं' कीज तथा नीचे की दूसरी रेखा में 'प्रसादय' इन अक्षरों को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे कोई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'साध्य-व्यक्ति' का नाम (अन्त में विसर्ग युक्त) लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनो परान्त कुंहाट के चाक की मिट्टी में यन्त्र को रख कर इस यन्त्र का उच्चारण करते हुए गंध आदि से सात दिनों तक यन्त्र का पूजन करते रहें- यन्त्र— "अक्रोधतः सत्यवादी जमदग्निर्दिव्यः । रामस्य जन्मकः साक्षात् सत्त्वमूर्ते नमोऽस्तुते ॥" यन्त्र पूजनोपरान्त भोजनादि के द्वारा आत्माओं को हर्षित करना चाहिए। यदि कोई मित्र, शत्रु अथवा अन्य व्यक्ति क्रुद्ध होकर हाथी-पटुंगाने को उचल हो तो इस यन्त्र का उपयोग करने से उसका क्रोध शान्त होजाता है और वह उसल होता है।

महा०

(माया मय यन्त्र)



माया मय यन्त्रम्- सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा कुंकुम के मिश्रण से एक षट्कोण यन्त्र लिखकर, उसके ऊपर एक गोलाकार चक्र तथा उसके ऊपर एक अन्य गोलाकार चक्र खींचें। फिर उस षट्कोण के मध्य में 'साधु-व्यक्ति' के नाम को लिखें तथा कौण्ठ एवं कोष्ठों के धाना भाग में 'क्ली' बीजों को स्थापित कर, उस दोनो गोलाकार रेखाओं के भीतर २४ डींकार बीजों को लिख कर, चक्र के सामने वे स्थित करें। यह प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उदरिणि किपा गण हों। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधु-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनो परान्त उस यन्त्र का सात दिनों तक विधि पूर्वक पूजन करें, महामाया देवी का पूजन करना चाहिए तथा 'मार्कण्डेय पुराण' के अन्त-गति वर्णित 'देवी-साहाय्य' का सात दिनों तक जप करना चाहिए। फिर खीर, शहद तथा घृत—इन प्रभों द्वारा प्रत्येक श्लोक से आहुति देते हुए

वर्णाहुति कर, तीन कथाओं को भोजन करावें। तत्पश्चात् यन्त्र को जिलोह के तामीर में बंध कर, पुच्छ अपनी दाहिनी ओर तथा बाँईं ओर धुला में बाँध लें। यदि जलसाय से यन्त्र-हानि होगई हो तथा भ्रष्ट करने वाला बाल्या/तकाणा कला हो और उसे देने के लिए धन पाह में न ले तो इस यन्त्र के उपयोग से वह व्यक्ति धन भी माँग कर, घोट कर और धन दे देता है।

(गाणपत्य मन्त्र)

गं गं गं गं गं गं गं गं गं

हीं हीं हीं हीं हीं हीं
 क्रों हीं क्लीं गं देवदत्तः गं
 क्लीं हीं क्रों हीं क्लीं क्रों हीं
 हीं हीं हीं हीं

गं गं गं गं गं गं गं गं गं

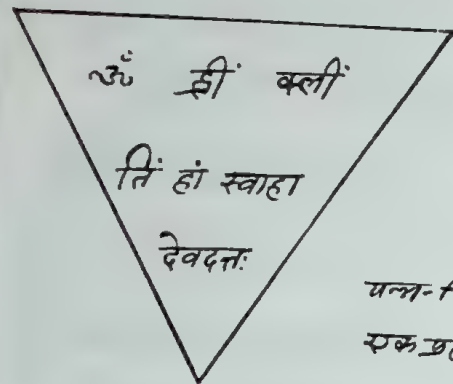
गं गं गं गं गं गं गं गं गं

यावज्जीव वश्यकर गाणपत्य यन्त्रम् - एक छोटे लम्बा छिद्र रहित भोजयत्र के हुकड़े के ऊपर अपनी अनामिका अँगुली के रक्त हाथी के मूत्र, लारव का रस तथा गोरोचन - इन सब वस्तुओं के मिश्रण से जाती वृक्ष की लकड़ी की कलम द्वारा दो रेखावाले एक चतुष्कोण यन्त्र को बनीं कर, उसके भीतर भी भाग में चार लिरछी रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में सात 'हीं' बीज, दूसरी रेखा में 'क्रों, हीं, क्लीं, गं' - इन चार बीजों को आदि में लगाकर साध्य - व्यक्ति का नाम तथा अन्त में एक गं बीज और लिखें। फिर तीसरी पंक्ति में 'क्लीं, हीं, क्रों, हीं, क्लीं, गं' - इन सात बीजों को स्थापित कर, चौथी पंक्ति में 'हीं, हीं, क्रों, हीं' इन चार बीजों को लिखें। फिर पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर दिशा में दश दश 'गं' बीज लिखें। दक्षिण दिशा में कुदत्त लिखें। यह प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में उदक्षिप्त किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य - व्यक्ति' के नाम को लिखना चाहिए।

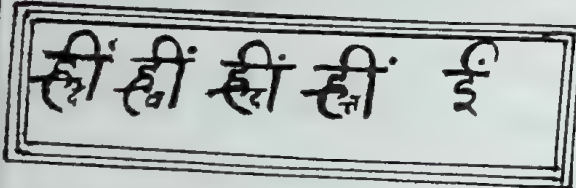
यन्त्र लेखने परान्त किसी पवित्र-स्थान से काली-मिट्टी लाकर, उससे गणेश जी की प्रतिमा का निर्माण कर, फिर यन्त्र को उस छत्ती की प्रतिमा में स्थापित कर, इस यन्त्र का उच्चारण करें - "देवदेव गणाध्वस्य सुरसुरतमस्कृत । 'देवदत्त' महावश्यं यावज्जीवं कुरु भूतो" - इस यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए, इस यन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रतिमा को एक गड्ढे में गाढ़ कटु घृत भर दें। इस प्रयोग से साध्य-व्यक्ति आजीवन वशीभूत रहता है।

महा.

(श्रीकामराजारव्य यन्त्र)



(कालानल यन्त्र)



यन्त्र को स्थापित कर, गंधादि से पूजा करें तथा गंधादि से पूजा कर, छुराघस की चतुर्दशी की रात्रि में चूले के बगल

ललनाकृति श्रीकामराजारव्य यन्त्रम् - अपने बाँये हाथ की अनामिका अँगुली के रक्त से बाँये हाथ की हथेली पर एक त्रिकोण यन्त्र लिखें। उस यन्त्र के भीतर तीन पंक्तिओं की कल्पना कर, पहली पंक्ति में - "ॐ ह्रीं क्लीं" इन बीजों को, दूसरी पंक्ति में - 'तिं हां स्वाहा' - इन चार वर्णों को तथा तीसरी पंक्ति में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के ऊपर बाँधे चित्त में उदगिति किया गया है। चित्र में जहाँ देवदत्त लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें, यन्त्र-निर्माणोपरान्त उसका गंध-पुष्पादि से पूजा कर साध्य-स्त्री का स्मरण करने से वह स्वयं सकुण्ठर के भीतर ही आकर्षित होकर साध्यक के पास चली आती है।

दुष्टवश्यकर कालानल यन्त्रम् - जोरोचन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर तीन रेखाओं से सिद्धि एक चतुर्कोण यन्त्र लिखकर 'ह्रीं' बीज के भीतर साध्य-व्यक्ति के नामस्रोतों को लिखें। साध्यव्यक्ति के नाम के जितने अक्षर हों, उतने ही 'ह्रीं' बीज लिखने चाहिए तथा अन्त में 'ई' बीज को लिखना चाहिए। 'ह्रीं' बीज की कोई निश्चित गणना नहीं है। यन्त्र लेखोपरान्त वस के नीचे से धूलि

(देवमातृक यन्त्र)



में गाए दें। गाते समय 'महाकालाय स्वाहा' इस मन्त्र का उच्चारण करें, फिर बकरे के रक्त मिश्रित मात से दिक्पालों की पुसन्नता के लिए बलि देकर, उक्त यदार्थ में घृत और लाल दुग्ध मिलाकर 'ॐ महाकालायैति' - इस मन्त्र से १०८ आहुति देकर हवन करें। इस प्रयोग से साधक दुष्ट-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

सानिन्याकर्षण देवमातृक यन्त्रम् - लाख कारस, हल्दी और मज्जीठ-

इन तीन वस्तुओं द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर एक त्रिकोण मुक्त गोलाकार-चक्र खींचें तथा उसके कोड़े ही अन्तर्गत ऐसा ही एक अन्य चक्र खींचें। फिर इसके समीप ही एक अन्य गोलाकार चक्र दो रेखाओं से संयुक्त करके खींचें। फिर त्रिकोण के भीतर साधक-व्यक्ति का नाम लिखकर, दोनों गोलाकारों के भीतर अकारादि सोलह स्वरों को लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उदरित किया गया है। यन्त्र में 'जहाँ देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखन के पश्चात् साधक-व्यक्ति के पाँवों के नीचे की धूलि लाकर उससे एक पुतली का निर्माण करे तथा उस पुतली के घोनि-भाग में उक्त यन्त्र की विधिवत् पूजा करने के उपरान्त प्रतिष्ठा करे। उक्त यन्त्र-प्रयोग से साधक-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास अपने आप चला आता है। इस यन्त्र के उल्लेख से साधक दुष्ट को साधक-हस्ती की तथा साधिका-स्त्री को साधक-पुरुष की प्राप्ति होती है। इस यन्त्र को अल्पतः पुस्तक रखने की शक्ति देने जाता दी है।

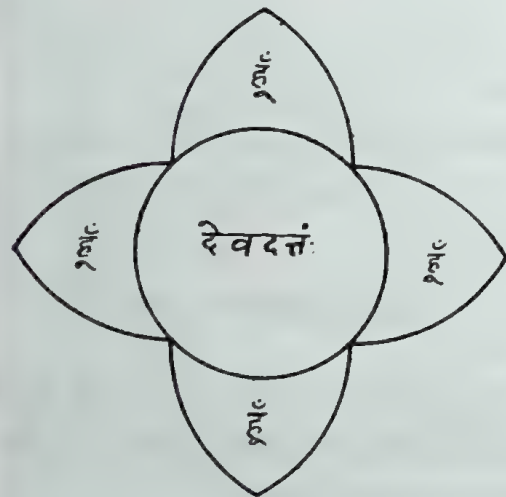
(माणिभद्र पन्त्र)

सः सः सः सः सः ई
सः सः ओं हीं को
देवदत्तः
हीं ओं हीं ओं
हीं ओं हीं द

माणिभद्र पन्त्रम्- गोरौचन, कुंकुम तथा लाल-चन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण पन्त्र को लिख कर, उसके भीतर पाँच रेखाओं की कल्पना करे। फिर पहली कल्पित-रेखा में पाँच विलग 'स' संख्या (सः) बीजों को लिख कर अन्त में 'ई' बीज को लिखे। दूसरी पंक्ति में "सः सः ओं हीं ओं"—इन पाँच बीजों को लिखे। तीसरी पंक्ति में साधन-धर्मिकों के नाम को लिखे। चौथी पंक्ति में "हीं ओं हीं ओं"—इन चार बीजों को लिखे तथा पाँचवीं पंक्ति में "हीं ओं हीं द"—इन पाँच बीजों को लिख कर पन्त्र को पूरा करना चाहिए। इस प्रकार पन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँर ओर उदरित किया गया है। उदरित पन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-धर्मिकों का नाम लिखना चाहिए।

पन्त्र लेखने परान्त उसका गंधादि से विधिपूर्वक पूजन करके, लाल रंग के सूत से बाँधे। फिर अपने शरीर के उबरन से एक मृगुष्पाकार मूर्ति बनाकर, उस मूर्ति के हृदय में पन्त्र को रखें, फिर उसे उबरन से आच्छादित कर, तीनों सन्ध्याकाल में तीनों दिनों तक खैर की अग्नि में तपोत्तु इस मन्त्र का जप करें—
ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्मि माणिभद्र स्वाहा।
'देवदत्त' के स्थान पर साधन-धर्मिकों का नाम ले। यह तापत मन्त्र है। इस प्रयोग से माणिभद्र देशान्तर में स्थित मृगुष्प को आकर्षित करते हैं। श्री माणिभद्र ने स्वर्ण-सी तापत, शोषणादि की क्रियाओं सहित इस मन्त्रेश्वर का पूजन किया है।

(मित्र-दर्शित यन्त्र)

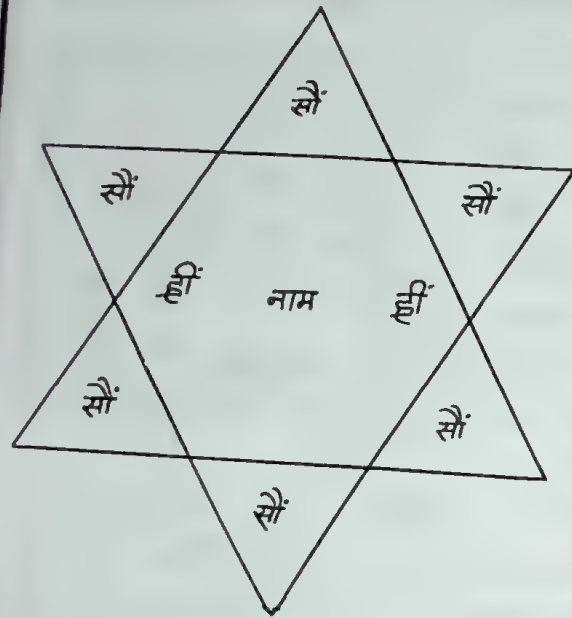


मित्र-दर्शित यन्त्रम् - लालचन्दन तथा अपने शरीर के रक्त को मिला कर, उसके द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र का निर्माण करे। फिर उसके चारों ओर चार कमल-दल बनाये। तत्पश्चात् गोलाकार चक्र के मध्य में साधु-व्यक्ति का नाम लिखे। नाम शत्रुस्वार लिखना चाहिए। फिर चारों कमल-दलों में 'हूं' बीज लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधु-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के बाद उसका गंध-धूप आदि यदार्थों से पूजन करे, फिर उसे धृत में स्थापित करदे।

उका क्रिया से दो-तीन दिन के भीतर ही साधु-व्यक्ति का आकर्षण होता है। 'मित्र-दर्शित' नामक षट्पन्त्र मनेमिलाया की शक्तिकारण वाला तथा वरम मोचनीय है।

आकर्षक त्रैपुरारव्य यन्त्रम् - सर्वप्रथम जल मिश्रित गोरोचन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र का निर्माण करे, फिर उसके उत्प्रेक्ष कोण में 'सो' बीज को लिखे तथा यन्त्र के मध्यभाग में 'ही'। तदुपरान्त साधु-व्यक्ति का नाम और उसके बाद पुनः 'ही' बीज



लिये। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'नाम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण करने के बाद उसका गन्ध-पुष्पादि से विधिपूर्वक पूजन करके उसे घृत के भीतर स्थापित करें तथा निम्न लिखित मन्त्र का जप करते हुए त्रिपुरा देवी से प्रार्थना करें—

"आकर्ष्य महादेवि देवदत्तं मम प्रियम्।

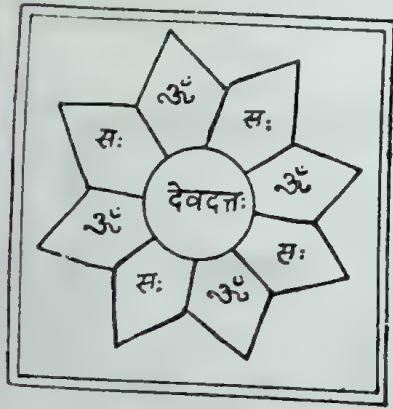
ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम्।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र-प्रयोग करने से सातवें दिन साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है और वह साधक के पास स्वयमेव चला आता है।

[टिप्पणी — मोहन तथा आकर्षण-इन दोनों की गणना भी 'वशीकरण'-'कर्म' के अन्तर्गत की जाती है। आकर्षण प्रयोग द्वारा दूरवर्ती व्यक्ति को आकर्षित करके वशीभूत किया जाता है। मोहन-प्रयोग से उसे मोहित करने वश में करते हैं।]

(दुष्ट मोहन यन्त्र)



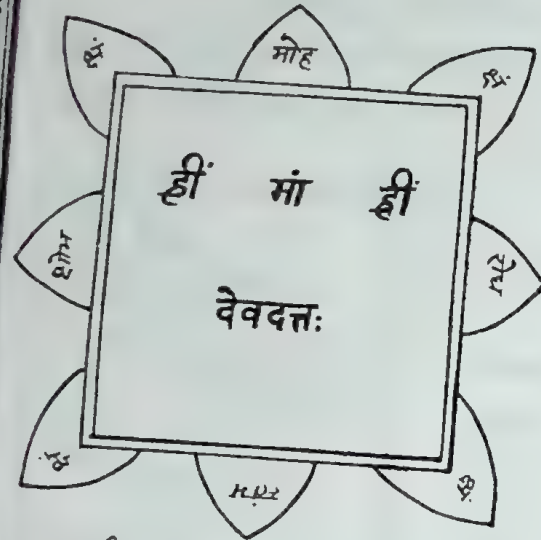
दुष्ट मोहन यन्त्रम्- अपने रक्त द्वारा भोजन के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींच कर उसे अष्टदल से विभूजित करे, तत्पश्चात् उसे चतुष्कोण की दो रेखाओं से युक्त कर, चक्र के भीतर मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। फिर उत्प्रेक कोण में 'विसर्गयुक्त 'सः' बीज तथा पूर्वदि-वाशे दिशाओं के दलों में प्रणव अर्थात् 'ॐ' लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उदरिति किया गया है। उदरिति यन्त्र के मध्य में जहाँ 'देवदाता' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करे, फिर इसे २१ दिनों के लिए दूध में स्थापित करदे।

इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब राजकुल में रहने वाले विधुन अर्थात् चुगलखोर दुष्ट पुरुष प्रतिदिन घात करने की उद्यत रहते हों। इस यन्त्र के प्रभाव से उन विधुनों का मुख सन्निभ हो जाता है, और वे चुगली आदि नहीं कर पाते। इससे साध्य की कार्य-हासि तत्ती हो जाती।

[टिप्पणी- स्मृणीय है कि वर्तमान समय में 'राज्यदाता' अथवा राजकुल में सम्पन्न होगए, आतः इस यन्त्र का प्रयोग उच्च राज्याधिकारियों के निकट सम्पर्क में रह कर दूसरों की चुगली कर, उन्हें हानि पहुँचाने का उपल करने वालों के लिए करना चाहिए।]

(व्यवहार-विवाद-जयदं यन्त्र)

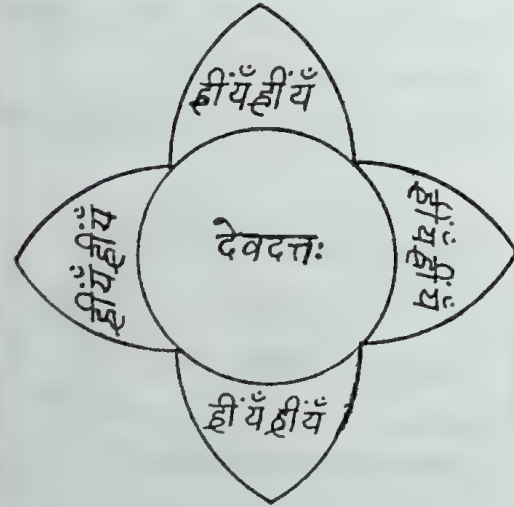


धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर. आठों दिशाओं में बलिदान आदि क्रियाओं को विधिपूर्वक करके, इस पूर्वक यन्त्र का पूजन प्रतिदिन करते रहे। इस यन्त्र के प्रभाव से विवाद में लिखत तथा सभा आदि में वक्ता की छात्रिहोती है।

व्यवहार-विवाद-जयदं यन्त्रम् - कुंकुम द्वारा अथवा लवंग से भोजयन्त्र के ऊपर दो रेखाओं से मिश्रित एक चतुर्कोण यन्त्र खींचकर उसके चारों कोनों तथा पूर्वदि-चारों दिशाओं में 'कमल-दल'ों को स्थापित करे। इस प्रकार आठ कमल-दल बनेंगे। फिर यन्त्र के भीतर दो तिरदी रेखाओं की कल्पना करे। सब ऊपर की रेखा में 'ह्रीं', मां, ह्रीं'। इन बीजों को लिख कर, नीचे की पंक्ति में 'साध-व्यक्ति' के नाम को लिखे। आठों दलों को वक्ष्यमाण बीजों से पूर्ण करे। दक्षिण दल में 'वोच' बीज, नैऋत्यकोण में 'क्षं' बीज, पश्चिमदिशा में 'स्तंभ' बीज, वायव्य कोण में 'क्षं' बीज, उत्तरदिशा में 'क्षोभ' बीज, ईशान कोण में 'क्षं' बीज, पूर्व में 'मोह' बीज तथा आज्ञेय कोण में 'क्षं' बीज को रखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के बाद उसे धाराव-सम्पुट में रख कर: अष्टगंध, मरा०

(विवाद-विजय यन्त्र)

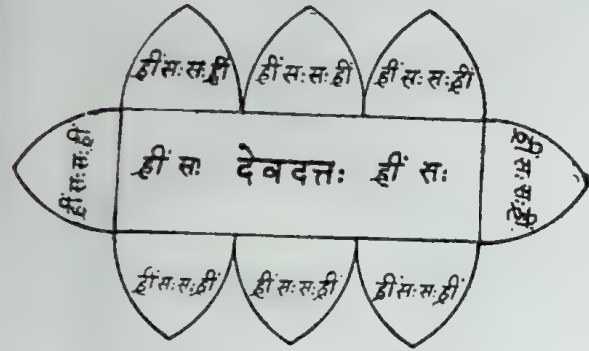


विवाद-विजय यन्त्रम्- कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर, उसे चार कमल-दलों से युक्त करें, फिर उसके मध्यभाग में साधन-व्यक्ति का नाम लिखकर, चारों कमल-दलों में 'ही' तथा 'यं'—इन दो बीजों को प्रत्येक दल में दो-दो बार स्थापित करें। इस प्रकार यन्त्र का जो रूप बनेगा, उसे बाँटें और के चित्र में 'उदशिति' किया गया है। 'उदशिति' यन्त्र के जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद धूप, दीप, मेंवेरा, पुष्प आदि से उसका पूजन करें, तदुपरान्त उसे तिलोह (सोना, चाँदी तथा लौह) के ताबीज में भर कर, दूध-में डालदे अर्थात् किसी पात्र में दूध भर कर, उसमें यन्त्र युक्त ताबीज को डालदे, ताकि वह उसमें डूबा रहे।

'इह विवाद-विजय' नामक यन्त्र के प्रयोग से भगड़े, सुकट्टे अथवा अग्न्यस्कार के विवादों में विजय प्राप्त होती है। जो व्यक्ति इस प्रयोग को करता है, वह सदैव विजयी होता है। यह यन्त्र देवताओं द्वारा पूजित तथा प्रयोग में लाया गया है।

दुष्ट-मुख सामान्य पत्र



राजकोप-नाशक दुष्ट-मुख-सामान्य पत्रम् - मोरोचन तथा

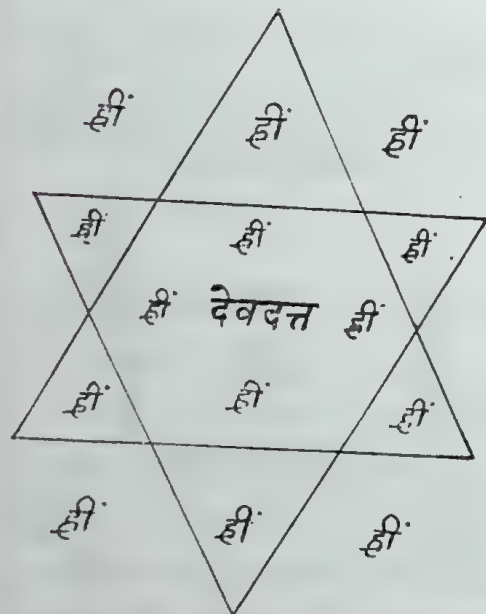
कुंकुम के द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक-चौकोर लम्बी रेखा खींचकर, उसे कणिका से घुसाकर, लुटु पराना ऊपर तथा नीचे के भाग में तीन कमल-दल स्थापित कर, उनमें "हीं सः सः हीं" इन चार बीजों को प्रत्येक प्रत्येक में लिखे तथा चौकोरदल के मध्य भाग में 'हीं सः' - इन दो बीजों से घुटित स्वाध्याय-व्याप्ति के नाम को लिखे। जिस व्यक्ति का मुँह बंद करना हो, वह 'साधन' होगा।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में उदाहरित किया गया है। उदाहरित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, उस स्थान पर 'स्वाध्याय-व्याप्ति' के नाम को लिखना चाहिए। नाम के दोनों ओर 'हीं सः', 'हीं सः' लिखने का निश्चय है।

इस यन्त्र के तैयार हो जाने पर इसे शराव-समुद्रि अर्थात् मिट्टी के दो शकोरो के भीतर बंद करके रखे तथा सात दिनों तक गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करते रहे।

इस यन्त्र के प्रयोग से राजा का कोप दूर होता है तथा उसके अनुपायी दुष्ट राजकर्मचारियों का मुँह बंद होता है अर्थात् यदि राजदरबार में अथवा उच्चाधिकारियों के यहाँ उनके मुँह लगे कुछ दुष्ट-व्यक्ति अहित करने पर उठाएँ हो तो इस यन्त्र के प्रयोग से वे शान्त हो जाते हैं तथा राज-कोप दूर होता है।

(दिव्य स्तम्भन यन्त्र)



कर फल का चिन्तन करें। यह दिव्य स्तम्भन यन्त्र सब लोगों को वश में करने वाला तथा लोक के साध-भाव को प्राप्त करने वाला है। इसका उपयोग करने से साध-व्यक्ति नष्टान्त हो जाता है।

दिव्य स्तम्भन यन्त्र- गोरोचन तथा कुंकुम द्वारा भीष्मपत्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र लिखें। फिर उसके पूर्व-पश्चिम -- इन दो कोणों में ह्रींकार अक्षर लिखें तथा इनके अन्तराल में ६ ह्रींकार और लिखें। इस प्रकार ८ ह्रींकार हुए। तदुपरान्त षट्कोण यन्त्र के भीतरी भाग में ह्रींकार समुद्रित साध-व्यक्ति के नाम को लिखकर, अष्ट-वार कोणों को भी चार ह्रींकार अक्षरों से वेष्टित कर, यन्त्रराज को पूर्ण करें। इस प्रकार कुल १६ ह्रींकार लिखे जाँटेंगे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँट और उदरित तन्त्र से दिखाया गया है। इस चित्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र निर्माणोपरान्त उसे शराव-समृद्ध अर्थात्-भित्री के दो शकोरों के भीतर रखकर, भक्ति-भाव से पूजन करें तथा दू-सेर दिन यन्त्र को शराव-समृद्ध में से निकाल कर, शुभ-मुहूर्त में यन्त्र-पूर्वक अपनी शिक्षा (चोरी) में बाँध लें। फिर मौन-ध्यान

महा.

(उद्दिष्ट पिशाच यन्त्र)



उद्दिष्ट पिशाच यन्त्रम्- अपनी अनामिका अँगुली के रक्त तथा गैरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले एक-चतुष्कोण यन्त्र को लिख कर, उसके भीतरी भाग में 'ही' बीज के साथ साध-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें। फिर पूर्व आदि चारों दिशाओं में "ॐ आकर्षय स्वाहा" इस वाक्य को यन्त्र के भीतर ही इस प्रकार से लिखें कि साध-व्यक्ति का नाम उनके मध्य-गत हो जाय। यन्त्र के चारों कोनों में दो-दो त्रिशूल भी लिखने चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँट कर के चित्र में उदक्षिप्त किया गया है। उदक्षिप्त यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद गम्भादि से पूजन कर, "ॐ आकर्षय स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़ कर, यन्त्र को टुकड़े-टुकड़े करके उस मार्ग में डाल दे, जिसमें होकर दुष्ट उद्भूतिवाला मनुष्य आता-जाता हो। इस यन्त्र के प्रभाव से वह दुष्ट-व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाएगा। आवश्यक व्यक्ती अपने भ्रूणदाता के लिए भी इस यन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं। यह यन्त्र बहुत लाभकारी है।

(शूर-वश्यकर कालानल यन्त्र)

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ईं

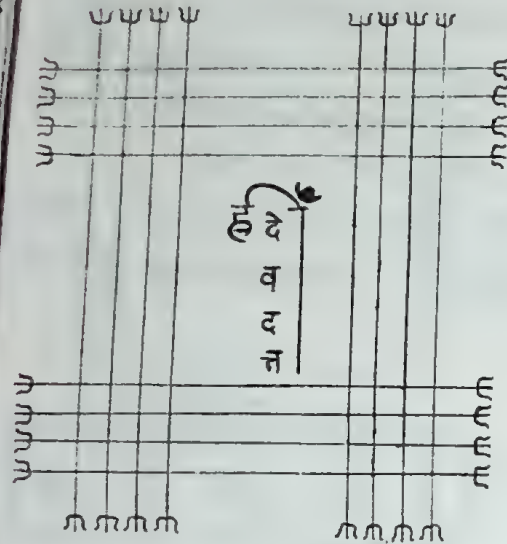
(दुष्ट-वशीकरण उपयोग)

शूरवश्यकरकालानल यन्त्रम्- गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से मिश्रित एक चतुष्कोण यन्त्र को लिख कर 'ह्रीं' बीज की रेखा के भीतर साधन-व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखें। नाम के जितने अक्षर हों, 'ह्रीं' बीज उतने ही लिखने चाहिए। अन्त में 'ईं' बीज लिखना आवश्यक है। इस यन्त्र में 'ह्रीं' बीजों को लिखने की कोई संख्या निर्धारित नहीं है, जितने नाम अक्षर हों, उतने 'ह्रीं' बीज लिखे जा सकते हैं।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे कोई और उदशित किया गया है। उदशित यन्त्र में जिस प्रकार 'ह्रीं' अक्षरों के बीच 'देवदत्त' नाम के अक्षर लिखे जाये हैं, उसी प्रकार 'ह्रीं' अक्षरों के बीच साधन-व्यक्ति के नाम अक्षरों को लिखा जाना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने के बाद वृक्ष के नीचे से धूलि लाकर एक वायिका-प्रतिमा का निर्माण कर, उसके हृदयभाग में यन्त्र को स्थापित कर, गंधादिक से पूजन कर तथा कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे की ऊँट में गढ़ा खोद कर उसमें यन्त्र को दबा दें। दबाते समय 'महाकालाय स्वाहा'-इस मन्त्र का उच्चारण करें, तदुपरान्त बकरे के रक्त मिश्रित भात से दिक्पालों की प्रसन्नता के लिए बलिदान कर, उक्त पदार्थ में जूत तथा लाल पुष्प मिला कर 'ॐ महाकालायैति'-इस मन्त्र से १०८ आहुति दी देकर होम करें। इस 'कालानल यन्त्र' के प्रयोग से साधन-व्यक्ति कितना ही दुष्ट व्यक्तियों न हो, वशीकृत हो जाता है।

(शत्रु-मुख-स्तम्भन यन्त्र, २)

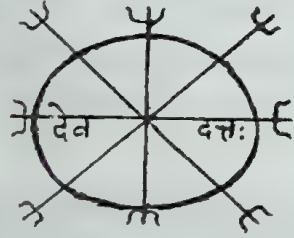


शत्रु-मुख-स्तम्भन यन्त्रम् (१)- श्वडिआ मिट्टी द्वारा शिला-समूह (अर्थात् - पत्थर की दो परिकाओं) के भीतर चार रेखाओं वाले एक चतुर्कोण यन्त्र को लिख कर, प्रत्येक कोण की रेखा को त्रिशूल-चिह्न से युक्त करे। फिर यन्त्र के भीतर एक अर्धचन्द्राकार तथा एक चिन्मू को ऊपरी भाग में लगा कर एक 'ह्रीं' बीज को लिखे तथा उसकी मात्रा को लम्बाई में खींच कर, उसके मध्य में साधन-व्यक्ति के नाम को लिखे।

उक्त चिह्नित यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाईं ओर के चित्र में 'उद्विष्टि' दिखा गया है। चित्र में 'जहाँ' इकार की मात्रा के मध्य में 'देवदत्त' नाम के अक्षर लिखे हैं; वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम अक्षरों को लिखा जाना चाहिए। नाम अक्षरों के अनुपात में ही '५' मात्रा को छोटे-बड़े आकार का रखना चाहिए।

यन्त्र तैयार होने पर उसका गन्ध-पुष्पादि से पूजन कर, एक शराव-समूह (मिट्टी के दो बाकोरों के बीच) में उसे बन्द क़ादे। फिर उनाम से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाता है और वह कोई अनर्गल अथवा हानिकर शब्द नहीं कह पाता।

(शत्रु-मुख-साम्भन-यन्त्र, १)



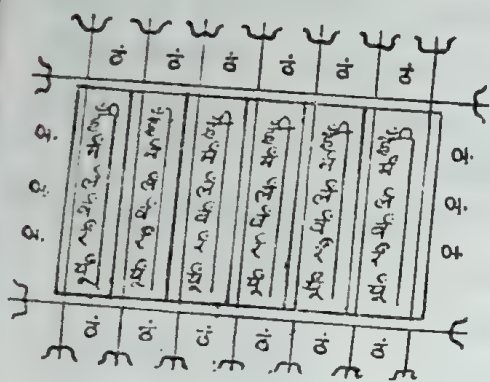
शत्रु-मुख-साम्भन-यन्त्र (२) - अपने घर की दीवार पर खड़ीया मिट्टी द्वारा एक गोलाकार-चक्र खींचकर, उसकी आठों दिशाओं में त्रिशूल लगाकर, मध्य में साधक-व्यक्ति का नाम लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप लघ्पार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। (प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।)

लेखने परान्त यन्त्र का श्वेतरंग के पुष्प-फल, सुगन्ध तथा मनोहर श्वेत वस्त्र आदि से पूजन कर, एक ब्राह्मण को भोजन कराये तथा "श्री शिवः प्रीयताम्" - इस मन्त्र का जप करते रहें।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुख बन्द (सम्मित) हो जाता है तथा मुकट्टमे आदि में विजय एवं प्रताप की प्राप्ति होती है। शत्रु का मुख सम्मित करने वाला यह प्रयोग सरल तथा श्रेष्ठ कहा गया है।

शत्रु-गति-मति-मुख-सम्भन 'जिह्वा-वेधन' यन्त्रम् - गोरोचन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर दो रेखाओं वाले एक चतुर्कोण यन्त्र को लिखें तथा उसके चारों कोनों की रेखाओं को त्रिशूल चुका करें। फिर भीतरी-चतुर्कोण में पाँच स्थानों पर दो-दो खड़ी रेखाएँ खींचें। इससे यन्त्र के भीतर ६ कोष्ठ तैयार हो जाएंगे। इसके बाद ऊपरी भाग में तथा निचले भाग में पाँच-पाँच खड़ी रेखाएँ खींचकर उन्हें त्रिशूल-चित्र से युक्त करें। फिर ऊपरी तथा निचले भाग के त्रिशूलों के अंतराल में एक-एक 'ॐ' बीज लिखें। इस प्रकार ६ 'ॐ' बीज ऊपर तथा ६ 'ॐ' बीज नीचे लिखे जाएंगे। तदुपान्त दौंचे तथा

(मानु मुख्य गति मति जिला बेधन यन्त्र)



बाँके पाश्चिमी में 'हीन-हीन' ठं बीज लिखे। इस प्रकार दोनों पाश्चिमी में ६ ठं बीज लगा-कारे पाश्चिमी में कुल १८ ठं बीज लिखे जाएंगे। इसके बाद पल्लव की...

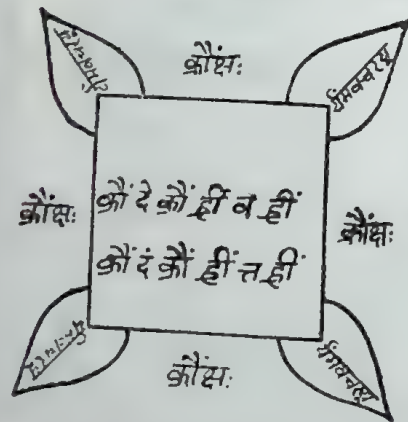
इसके बाद प्रत्येक कोष्ठ के भीतर 'ह, य, ल, व, र, म' -- इन सब
वर्णों को ऊपर नीचे स्थापित कर, प्रोणता पूर्वक अन्त में 'ऊं'कार स्वर को
नीचे रेफ तथा बगल में 'चन्द्र चिन्दु' पुक्क बड़ी ई की मात्रा को इस प्रकार
लिखें कि सभी वर्ण ईकार की मात्रा के अन्तर्गत आजायें।
उक्त विधि से चन्द्र चिन्दु

उक्त विधि से घन्टा का जो स्वरूप लक्ष्य होगा, उसे बाईं ओर के चित्र में 'सुदृष्टि' किया गया है।

मन्त्र को लिखने के बाद उसका विधि-पूर्वक पूजन करे तथा निश्चित-मन से वक्ष्यभाषा मन्त्र का जप करे। मन्त्र इस प्रकार है—
मुखं साम्प्रसाम्प्रः ठः ठः ठः ठः ठः ठः

"ॐ ह्रल्ल्यं लललल अनुकल्प मुखं स्तम्भस्तम्भ ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।" इस मन्त्र में जहाँ अनुकल्प शब्द आया है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। तीन दिन तक, तीनों सप्ताहकाल में इस मन्त्र का १०० अथवा १०८ बार जप करना चाहिए तथा तीनों सप्ताहकाल में स्वर्ण की कान्ति जैसे नीले रंग के छुपों से पूजन करना चाहिए। इस उपाय द्वारा शत्रु के मुख, बुद्धि, गति आदि का स्तम्भन होता है और वर दूक भाव को उड़ा होकर, साधक के लिए हानिकर सिद्ध नहीं हो पाता।

(पिशुन-सुरव-स्तम्भन-यन्त्र)



तथा 'हीं' बीजाक्षरों की संख्या को चढ़ाया- बढ़ाया भी जा सकता है।

यन्त्र को लिखने के बाद लाल जड़ का लाल पुष्प, लाल बहज तथा उमंगेरका से यन्त्र का पूजन कर, ध्यानाशक्ति दक्षिण देकर एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए तथा इस कार्य में यन्त्र की कुशलता तरी करनी चाहिए। फिर, भूमि में एक गड्ढा खोद कर, उसमें यन्त्र को गाढ़ कर मिट्टी से दबा दे। इस यन्त्र के उद्भाव से पिशुन (चुगलबोर) व्यक्ति की बुद्धि, वाणी तथा गति का संभल हो जाता है। यह बड़ा पुनर्जागरण है।

पिशुन-सुरव-स्तम्भन-यन्त्रम्- गोरोचन द्वारा भोजन के ऊपर एक बहुकोण यन्त्र लिख कर, उसके प्रत्येक कोण में एक-एक कमल-दल लगावे। फिर यन्त्र के बहिर्भाग के पूर्व तथा पश्चिम में "कौं क्षः" इन बीजों को लिखें। मध्य भाग में 'कौं' 'हीं'—इन बीजों से सम्पुष्टि साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। फिर प्रत्येक कोण में "य. म. व. च. र. य."—इन छः वर्णों को मिश्रित कर पहले प्रकार के ऊपर अनुस्वार पुष्प वकार लगा कर अन्त के प्रकार में ऊंकार को मिला दें।

उक्त लिपि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे ऊँची ओर के चित्र में उद्घृतित किया गया है। उद्घृतित-यन्त्र के मध्य भाग में 'देवता' के नामाक्षरों को जिस प्रकार लिखा गया है, उसी प्रकार साधन-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए। साधन-व्यक्ति के नामाक्षरों से अनुस्वार 'कौं' तथा 'हीं' बीजाक्षरों की संख्या को चढ़ाया- बढ़ाया भी जा सकता है।

यन्त्र को लिखने के बाद लाल जड़ का लाल पुष्प, लाल बहज तथा उमंगेरका से यन्त्र का पूजन कर, ध्यानाशक्ति दक्षिण देकर एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए तथा इस कार्य में यन्त्र की कुशलता तरी करनी चाहिए। फिर, भूमि में एक गड्ढा खोद कर, उसमें यन्त्र को गाढ़ कर मिट्टी से दबा दे। इस यन्त्र के उद्भाव से पिशुन (चुगलबोर) व्यक्ति की बुद्धि, वाणी तथा गति का संभल हो जाता है। यह बड़ा पुनर्जागरण है।

(उतिवादि-मुख स्तम्भन चक्र)



(बाणी-स्तम्भन चक्र)

उतिवादि-मुख स्तम्भन चक्रम्- सर्वप्रथम पीले रंग के घुंघुं-कुंडुम, केसर आदि से शिला-समूह (पत्थर की दो पट्टियों) के बीच साधन में एक त्रिकोण चक्र लिख कर, उसे ऊपर एक गोलाकार-चक्र से वेष्टित करे। फिर उसे आठ कमल-दलों से सुसज्जित करे। चक्र-सम त्रिकोण के भीतर साधन-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा कमल-दलों में 'हं' बीज लिखे। उक्त विधि से चक्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँट और को पुदगिति किया गया है। पुदगिति-चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

चक्र लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित घुंघुं, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से चक्र का पूजन कर, खीर तथा गुड़मिश्रित-चढ़ावों द्वारा एक ब्राह्मण को भोजन करा कर समुष्ट करे। तत्पश्चात् चक्र-लिखित दोनों शिलाओं के समूह को, पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर गाढ़ दे तथा ऊपर से मिट्टी भर दें।

इस चक्र के उभाव से व्यवहार, विवाद, सुकदमा, शास्त्रार्थ आदि में उतिवादी-व्यक्ति का मुख स्तम्भित हो जाता है तथा साधक को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। यह 'बाणी-स्तम्भन चक्र' संसार में 'उतिवादि-मुख स्तम्भन चक्र' के नाम से भी सुप्रसिद्ध तथा परम सुख एवं उभावशाली है।



यात्रा-सम्पन्न यन्त्र (१)

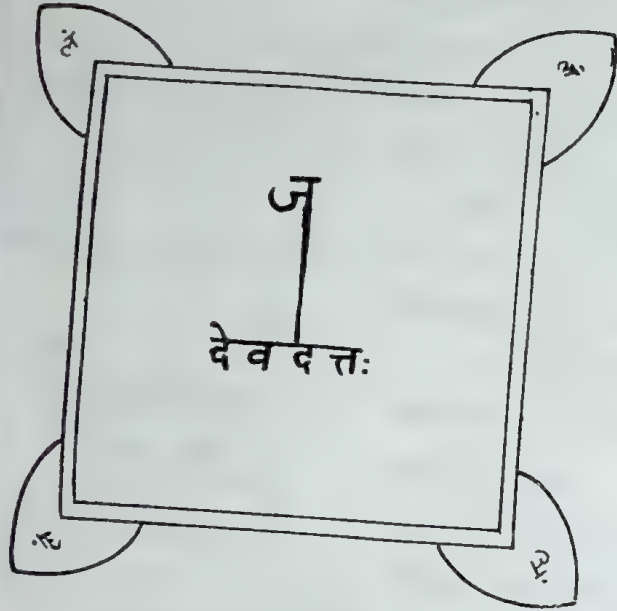
यात्रा-सम्पन्न यन्त्र (१) - एक शिला-सम्पुट अर्थात् पत्थर की दो पट्टियों के भीतर, पीले रंग के दुष्प, यथा - गोरोचन, हरताल, हल्दी, मैन्सिल, कुंकुम आदि, से एक-चतुःकोण यन्त्र लिख कर, उसके चारों कोनों तथा चारों दिशाओं में एक-एक त्रिशूल अंकित करें। तदुपरान्त यन्त्र के मध्यभाग में दो रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में 'कुंभे मोहे' लिखें तथा दूसरी रेखा में साधक-व्यक्ति का नाम अनुस्वारान्त लिख कर, उसके अन्त में 'मोहे' लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाईं ओर के चित्र में उद्विग्न किया गया है। उद्विग्नचित्र में जिस जगह 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए तथा नाम के अन्तिम अक्षर के ऊपर अनुस्वार का चिह्न लगाना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद पीले रंग के पुष्प तथा गंध आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा अनेक प्रकार के मन्त्र, मैन्सिल आदि यन्त्र को समर्पित करें। यदि संभव हो तो एक ब्राह्मण को बुलाकर उसे विभिन्न प्रकार के सुस्वादु व्यंजनों का भोजन करा दें तथा प्रसादाक्षि दक्षिणा एवं मान-सम्मान आदि देकर सन्तुष्ट करें तथा उससे आशीर्वाद प्राप्त करें।

इसके बाद पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को स्थापित कर दें तथा ऊपर से मिट्टी भर दें। इस उद्योग के द्वारा किसी भी व्यक्ति की यात्रा को सम्पन्न किया जा सकता है। जब किसी व्यक्ति की यात्रा को रोकना हो और वह न रुकना चाहे, उस समय इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

(यात्रा-सामान यन्त्र; २)



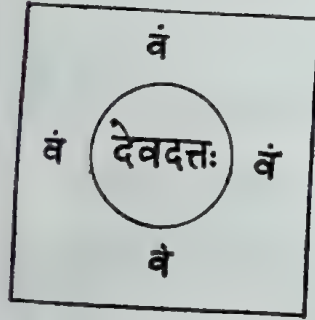
यात्रा-सामान यन्त्रम् (२) - पीले दुब्ब (टल्की, केसर आदि) से लिफ काष्ठ के टुकड़े (लकड़ी के पट्टे आदि) पर खड़िया मिट्टी द्वारा दो रेखाओं वाले एक-चतुष्कोण यन्त्र को खींचें। फिर उसके चारों कोनों में एक-एक कमल-दल स्थापित करें। तत्पश्चात् पहले एक कमल-दल में एक-एक 'ले' बीज लिखकर, चक्र के भीतर 'ज' अक्षर की मात्रा के मध्य में साधन-व्यक्ति का नाम लिखें। इस निधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बीड़ों और छदबिलि चित्र में स्पष्ट किया गया है।

छदबिलि चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। साधन-व्यक्ति के नाम को 'ज' अक्षर के अन्तर्गत निम्नानुसार भी लिखा जा सकता है—

ज
देवदत्तः

यन्त्र को लिखने के बाद विधि पूर्वक पूजा करे, तदुपान्त यन्त्र-लिखित लकड़ी के पट्टे को अधोमुख कर के अर्थात् नीचे की ओर डुँढ़ कर के, अपने कंधे के भीतर ही किसी स्थान पर लट्को दें। इस यन्त्र के पुण्य से जो छिपकन मत्ता कोरे वगैरह भी जा रहा हो, उसकी यात्रा समाप्त होगी।

(अग्नि-साम्मन यन्त्र)



(अग्नि निष्करण यन्त्र)

उस द्रुप में यन्त्र भरे ताबीज को स्थापित कर, ज्वा के मध्यभाग में खोदकर तथा प्रतिदिन यन्त्र को पूजन करता रहे। इस यन्त्रस्थापना की पुसन्तान के लिए पहले दिन सक आरुण को भोजन करना भी आवश्यक है। जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करता है, उसे अग्नि से जलने आदि का भय नहीं है तथा जिस घर में यह यन्त्र स्थापित होता है, वहाँ भी अग्निकाण्ड होने का कोई भय नहीं रहता। इस यन्त्र को 'अग्नि निष्करण' यन्त्र भी कहा जाता है, क्योंकि जिस स्थान पर यह यन्त्र विद्यमान होता होता है, अग्नि वहाँ से दूर हो बनी रहती है। अग्नि-भय से मुक्ति पाने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

अग्नि साम्मन यन्त्र-

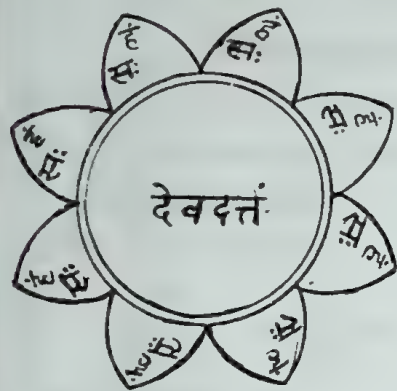
आविर्दिन साक-मुपरे भोजन के दुकड़े पर विधान पूर्वक एक गोलाकार चूड़ खींचें तथा उसके बहिर्भाग की दुर्वादि चारों दिशाओं में 'वं' की जो भी लिखें। मुपरांत गोलाकार के मध्य भाग में साधन-व्यक्ति का नाम लिखें।

उका विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँड़ी ओर के चित्र में उदाहरित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद गंध-पुष्प आदि से पूजन कर, उसे तिलोह (सोना, चाँदी और लौ का) के ताबीज में बद्ध कर, अपनी दाँड़ी पुजा (स्त्री बाँड़ी पुजा) अथवा कूठ में धारण करे अथवा किसी धातु में दूध भर कर तथा

महा

(सर्प-स्तम्भन यन्त्र)



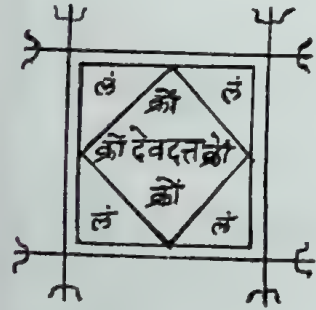
सर्प-स्तम्भन यन्त्रम्- एक बड़े गोधनपत्र के ऊपर चतुरे के रख से दो रेखाओं वाले एक गोलाकार-चक्र का निर्माण करें, फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें। तदुपान्त प्रत्येक कमल-दल में 'हं सः' इन बीजों को लिखें तथा यन्त्र के मध्य में अनुस्वार सहित साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँड़ी और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

इस प्रकार यन्त्र का निर्माण करने के बाद उसका गंधन-दुष्ण आदि से पूजन करें। फिर तिलोद के तानीज में भर कर, बाँड़ी-पुजा (स्त्री अपनी बाँड़ी-पुजा) अथवा कण्ठ में धारण काले।

इस यन्त्र के प्रभाव से सर्प का स्तम्भन होता है। इस यन्त्र को धारण करने वाले व्यक्ति को दो-कोटी सर्पादि भाग जाते हैं और यदि कभी पुमादवश उसके ऊपर पौन भी पड़ जाय तो बँकाटते नहीं हैं। यह यन्त्र सर्पादि से रक्षा करने में सर्वोत्तम है। इसे गरुड़जी फिर रहना चाहिए। इसके सर्पों के काटने का भय दूर होता है। यदि इस यन्त्र को ताम्रपत्र आदि का खुदवा कर या से राखा जाय तो उस पर के भीतर सर्पों का प्रवेश नहीं होता।

(वह्नि-स्तम्भन यन्त्र)



वह्नि-स्तम्भन यन्त्रम्-

भोजयन्त्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े पर पीले रंग के - केसर, कुंकुम आदि पुष्प से एक दो रेखाओं से युक्त चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, उसके भीतर एक तिरछे आकार का चतुष्कोण और लिखे तथा यन्त्र के बहिर्भाग के चारों कोनों पर दो-दो त्रिशूल लगा कर, भीतरी चतुष्कोण के उपर में, पूर्वोदि चारों दिशाओं में 'ॐ' बीज लिखकर मध्य में 'साधुस्वार साधु' काकि के नाम को लिखें। फिर मध्य कोण के बहिर्भाग में 'लं' बीजों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में उद-
-श्रिति किया गया है। उदश्रिति-यन्त्र में जहाँ "देवदत्त" लिखा है, वहाँ साधु-
काकि के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-लोचनो परान्ता उसका गन्ध-पुष्प आदि से पूजन कर, पश्चात्-
-क्ति ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा उन्हें दक्षिण देकर-समुष्ट करे, तत्पश्चात् यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दे और
उसके ऊपर तिल पात्री डालता रहे। जब तक यन्त्र के ऊपर पात्री डाला जाता रहेगा, जब तक उस स्थान
पर अग्नि का प्रकोप नहीं होगा। यह यन्त्र अग्नि को स्तम्भित करने वाला है।

टिप्पणी - यहाँ तक बशीकण, मोहन, आकर्षण तथा स्तम्भन के ब्राह्मीय यन्त्रों
का उल्लेख किया गया। इससे आगे ज्ञानि-मोष्टिक, उच्चाण तथा मारण प्रयोगों का वर्णन किया जाएगा। लोक-
प्रचलित अग्न यन्त्रों का उल्लेख अगले वनडों में किया जाएगा।

(शान्ति-पौष्टिक यन्त्र)

कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं	ॠं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ढं	णं
तं	थं	दं	धं	नं	पं	फं	बं
चं	छं	जं	झं	ञं	टं	ठं	डं
डं	ढं	णं	तं	थं	दं	धं	नं
पं	फं	बं	चं	छं	जं	झं	ञं
कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ

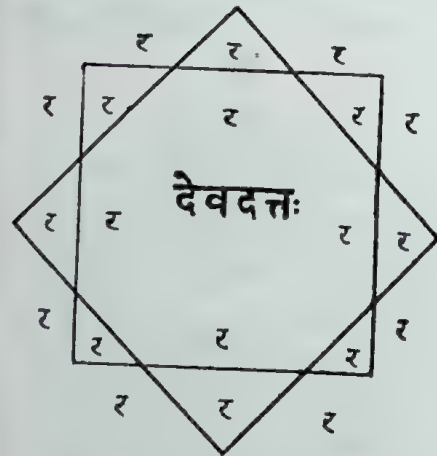
अपन करे। फिर पन्ना में से गंध, रोचन को निकाल, गुटिका बना, जिलेह के तामीन में भरकर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करे, शेष भाग को पानी में मिलाकर पीजाय। इस यन्त्र के उभाव से दुःख कोश दूर होते हैं तथा शत्रु को क्षेम होता है।

शान्ति-पौष्टिक यन्त्र - शुभदिन तथा शुभपुर्णमास में गौरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी - इन सब वस्तुओं को एकत्र कर, चमेली की कालम से, काँसे के पात्र पर, आठ लम्बाई में तथा आठ चौड़ाई में देखारों स्वीचक ४६ कोठों के पन्ना का निर्माण करे। फिर प्रत्येक देखार के पुत्र को मिश्राल से युक्त कर, पूर्व तथा पश्चिम भाग में सात-सात कौ, बीजों को लिखे। फिर शिवांग कोण से लेकर प्रत्येक देखार में सानुस्वा अकारादि से युक्त व्यंजनवर्णों को क्रमशः भरे।

उक्त विधि से पन्ना का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँट कर और उदरगति पन्ना में दिखाया गया है।

लोबनोपरान्त श्वेत कमल, मालाती, जुही, केतकी, चमेली तथा बकुल के फूल (कोई भी फूल जालांग का अथवा गंध-रहित न हो), चहुँ फल, कर्पूर युक्त ताम्बूल, धूप, दीप, नैवेद्य, श्वेत वस्त्र आदि से पन्ना का पूजन कर, दुर्गासिद्धाशस्ती का जप कराके, भगवत्स्वीर तथा व्युत्त द्वारा तीन दिनों तक ब्राह्मणों को भोजन कराके एवं पृथ्वी पर तथा व्युत्त द्वारा तीन दिनों तक ब्राह्मणों को भोजन कराके एवं पृथ्वी पर चारण करे, शेष भाग को पानी में मिलाकर पीजाय। इस यन्त्र के उभाव से दुःख कोश दूर होते हैं तथा शत्रु को क्षेम होता है।

(बाल-ज्वर-नाशन मन्त्र)



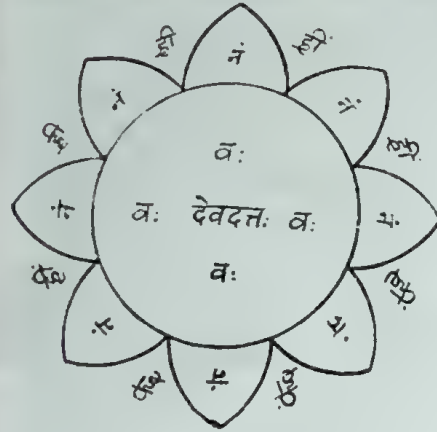
बाल-ज्वर-नाशन मन्त्र- 'चाहरे के रस कास श्मशान-वहन (मुर्दे के कफन) के ऊपर एक चतुष्कोण मन्त्र खींचकर, उसके ऊपर कोण निकालते हुए एक दूसरा चतुष्कोण चक्र खींचने तथा मध्यभाग में 'साधन-व्यक्ति का नाम लिख कर, उसे चारों ओर एक-एक 'र' अक्षर से घेरित करे। फिर प्रत्येक कोण के में एक-एक तथा उनके बाहर एक-एक 'र' वर्ण वेष्टित करे। इस प्रकार कुल 20 'र' अक्षर लिखने जाँएंगे।

उक्त विधि से मन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र को लिखने के बाद उसका मनोहर बलि, पुष्प, गंध आदि से पूजन करे तथा उपवास रखकर, मन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दे। यह कार्य कृष्णायन की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को करना चाहिए।

इस मन्त्र को चारण करने से बालकों का ज्वर दूर हो जाता है। बालकों के अतिरिक्त भय लगे के ज्वर का शमन करने में भी यह दितकर है। जिस दिनों में ज्वर-चारे और फैला हो, उन दिनों इस मन्त्र को चारण करने से ज्वर से सुरक्षा बनी रहती है। यह मन्त्र अनेक प्रकार के ज्वरों में लाभकारी है। सामान्य शीत ज्वरदि के अतिरिक्त भूत-पू आदि से भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(ज्वर-शामन यन्त्र)

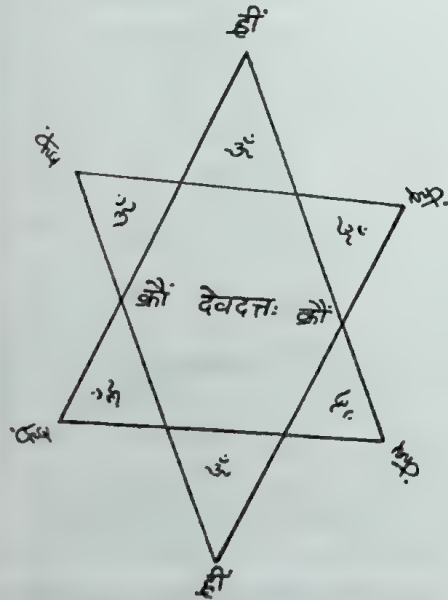


ज्वर-शामन यन्त्र- भोजन के अविच्छिन्न हुक्रे के ऊपर चहरे के रस द्वारा एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करे। फिर यन्त्र के मध्यभाग में 'साधु-व्यक्ति का नाम लिख कर, नाम के बाँचे-बाँचे तथा ऊपर-नीचे विसर्गित 'व'कार लिखे। तत्पश्चात् प्रत्येक दल के भीतर अनुस्वार युक्त 'न'कार (नं) तथा प्रत्येक दो दलों के मध्यभाग में एक 'ह्री'कार लिखे। साधु-व्यक्ति के नामाक्षर के अंत में विसर्ग अवश्य लगावे। उक्त लिपि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर उदरित किया जाएगा। उदरित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधु-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने के बाद गरम-पुष्पादि से पूजन करे, फिर ठण्डे पानी में डाल दे। जब तक ज्वर न उतर जाय, इसे पानी में पड़ा रहने दे।

इस यन्त्र के प्रभाव से कुटुम्ब-ज्वर का रोगी तीन दिन में ज्वर मुक्त हो जाता है। समझ बाँध कर आने वाले ज्वरों के शमन हेतु यह यन्त्र अत्यधिक प्रभावकारी है। यदि इस यन्त्र को हाथ में बाँध दिया जाय तो भूत के कारण उत्पन्न भूत-ज्वर हटा हुआ हो जाता है। ज्वर-शामन के अनेक यन्त्रों का वर्णन रत्न-माला में पाया जाता है। यह यन्त्र उन सभों में से एक तथा सदा प्रभावकारी माना जाता है, अतः इसे अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

(रुक्ता-ज्वर नाशक मन्त्र)



का बुराई फैलाती, उन १६ तों

रुक्ता-ज्वर नाशक मन्त्र-

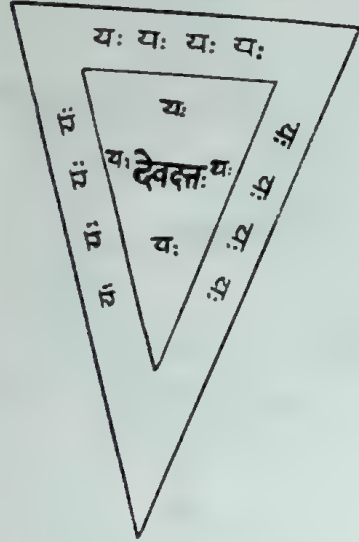
हल्दी के रस से, बबूल के काँटे द्वारा, पात के पत्ते के ऊपर एक बड़ा कोण मन्त्र बना कर, उसके कोण के भीतर 'ॐ' का लिखें तथा ऊपर एवं नीचे के 'ह्रीं' कोनों में 'ह्रीं' बीच लिख कर, बीच में 'क्रीं' बीच से छुटित अर्थात् दोनों ओर एक-एक 'क्रीं' बीच लिख कर, उनके मध्य में साधन-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से मन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बौद्ध और उद्दिष्टि चित्र में स्पष्ट दिखा गया है। इस मन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र लेनेवाला परान्त पात के पत्ते (पन्नाजिवा) का विधि पूर्वक ध्यान कर, उसे साधन-व्यक्ति अर्थात् ज्वर के रोगी को दिखाना चाहिए।

इस मन्त्र के उभाव से एकाना, अर्थात् एक दिग छोड़कर आने वाला ज्वर, जिसे बोल-बाल की भाषा में 'रुक्ता-ज्वर' कहा जाता है, अवश्य भेव दूर हो जाता है। यह 'एकाना ज्वर शमन' अथवा 'रुक्ता-ज्वर नाशक' मन्त्र आपत्त उभावकारी है। जिन दिनों यह पारी या बुराई फैलाती, उन दिनों या के आम लोगों को भी इस मन्त्र को ध्यान करने से लाभ होता है।

(हृतीयक-ज्वर-नाशन यन्त्र)



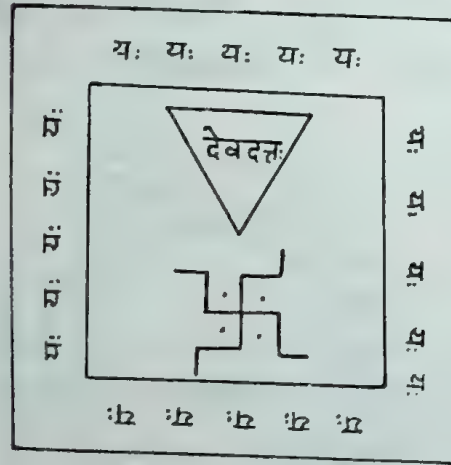
हृतीयक-ज्वर-नाशन यन्त्रम्- भौजयन्त्र के एक अविवक्षित दुकड़े पर चतु-
के रस द्वारा एक त्रिकोण यन्त्र खींच कर, उसके भीतर एक अल्प दोहा
त्रिकोण यन्त्र खींचें। फिर उसके मध्य भाग में 'चारों ओर' 'य' कार से
पुष्टित साधन-व्याक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात् दोनों त्रिकोण-रेखाओं के
मध्यभाग में 'चार-चार' 'य' कार बीच लिखें। इस प्रकार यन्त्र में कुल १६
'य' कार बीच लिखे जाएंगे।

उक्त लिपि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँधें और ज्व-
र-विरति चित्र में स्थापित किया गया है। प्रदक्षिण चित्र में जिस जगह 'देवस्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्याक्ति अर्थात् रोगी का नाम लिखना चाहिए।

लेखने परान्त यन्त्र को दही-भात की बलि देकर रोगी-व्याक्ति
की भुजा में बाँध दें। रोगी यदि पुरुष हो तो उसकी दाँहिनी भुजा में और
स्त्री हो तो उसकी बाँहिनी भुजा में बाँधना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से बालक, पुत्र, वृद्ध स्त्री, पुरुष को आने
वाला हृतीयक ज्वर दूर हो जाता है। हृतीयक-ज्वर को सामान्य कोल-चाल
की भाँति में 'लिजारी बुलार' कहते हैं। यह बुलार दो दिन दोड़ कर आता है। अर्थात् दो दिनों तक
बुलार नहीं आता और चौथे दिन पुनः आ जाता है। अल्प प्रकार के ज्वरों में भी यह लाभ कारक है।

(धूल-हृतीयक ज्वर नाशन यन्त्र)



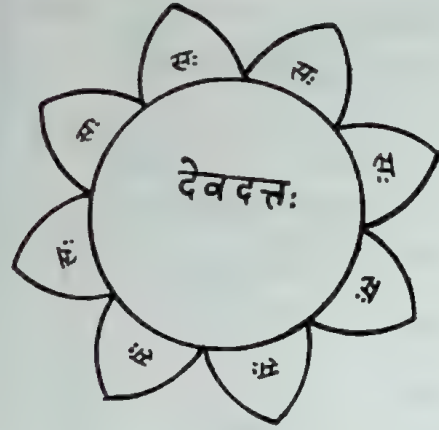
धूल-हृतीयक - ज्वर-नाशन यन्त्रम्-

भोजन के एक बड़े तथा अविच्छिन्न
हुंके के ऊपर, हल्की के रस अथवा चाहूरे के रस डाल एक चतुष्कोण
यन्त्र खींच कर, उसके भीतर ऊपर की ओर एक दोरे त्रिकोण का निर्माण
कर तथा नीचे की ओर एक 'स्वस्तिक' (साधिका) बनाये। फिर
त्रिकोण के भीतर साधन-अर्थात् रोगी का नाम लिखे। इसके
बाद चतुष्कोण यन्त्र के ऊपर एक अथ चतुष्कोण यन्त्र बनाये
तथा दोनों चतुष्कोणों के मध्यवर्ती बिन्दु-स्थान में तीन अथवा
पाँच की विद्यन-शृङ्खला में 'म'कार को प्रविष्टि-चारों दिशाओं में लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो व्यवहय बनेगा, उसे बाँध और के
चित्र में उद्विष्ट किया जाता है। उद्विष्ट चित्र में त्रिकोण के भीतर
जिस जगह 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधन-अर्थात् के नाम को कियाना
चाहिए। इस यन्त्र का साधन-अर्थात् रोगी ही होगा।

यन्त्रको लिखने के बाद उसका निधिपूर्वक पूजन करके त्रिकोण के नाभीय में गेरे तथा सामान्य पूज
देकर उसे पत्र के समान रोगी पुच्छ के दाँये हाथ में तथा रोगी-स्त्री के बाँये हाथ में उसे बाँध दे।
इस यन्त्र के उन्माद से भूतादि के उपडवों के कारण आने वाला 'शिफरी बुझा' अवश्य दूर हो जाता है।
किसी अन्य कारण से ज्वर आता हो तो इसका प्रयोग न करें, क्योंकि अन्य ज्वरों में इससे लाभ नहीं होता।

(बाल-रक्षाकर यन्त्र)



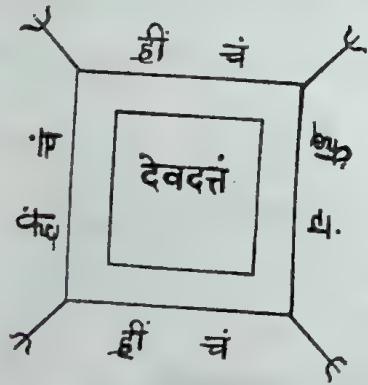
बाल-रक्षाकर यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न तथा चंचल गोणपत्र के दुन्धे पर चतुरे के रस से, एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसमें आठ कमल-दलों को लगाये। फिर प्रत्येक दल में विसर्गना 'सं'कार को लिखे तथा बीच में साधन-व्यक्ति अर्थात् बालक के नाम को लिखे।

उक्त विधिसे यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँधें और उपर्युक्त चित्र में स्मरण किया गया है। उपर्युक्त यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम का उल्लेख करना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद उसका विधि पूर्वक पूजन करें। फिर तिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में भर कर, उसे बालक की भुजा अथवा कण्ठ में बाँध दें। लड़के की दाँड़ भुजा तथा लड़की की बाँड़ भुजा में यन्त्र को बाँधना चाहिए। कण्ठ में तो किसी के भी पहनाया जा सकता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से डाकिली-शाकिली, बालग्रह आदि का प्रकोप नष्ट हो जाता है। वे बालक को छोड़कर भाग-जाते हैं तथा हर प्रकार के अपद्रव से बालक बचता होता है। वे स्मरणीय हैं कि सामान्य-जगत् तथा अन्य प्रकार के अपद्रवों में इस यन्त्र की प्राण काल से कोई लाभ नहीं होता डाकिली आदि की उत्पत्ति में यह अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

(बालानां ज्वरादि नाशन यन्त्र)



बालानां ज्वरादि नाशनं यन्त्रम्-

एक अविच्छिन्न, साकं भोजयन्त्र के टुकड़े पर, दो डेरलाओ वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को चतुरे के रूप से निर्माण करे तथा वह के उल्लेख कोणों में एक-एक दोरी रेखा के ऊपर निम्नलिखित का निर्माण करे। इस प्रकार चारों कोणों में चार निम्नलिखित लिखे जायेंगे फिर चारों दिशाओं में 'ह्रीं चं' - इन बीजों को लिखें तथा यन्त्र के मध्य भाग में सातुस्वार 'साधन-ज्योति' के नाम को लिखें अर्थात् साधन-ज्योति के नाम के अन्तिम अक्षर पर अनुस्वार भी बिन्दी लगानी चाहिए।

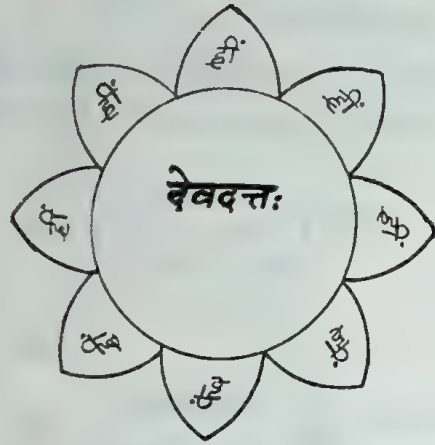
एक विधि से यन्त्र का जो स्वरूप लक्ष्य होगा, उसे बाँटें और प्रदर्शित चित्र में दिखाया गया है। इस यन्त्र में वहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साधन-ज्योति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र - लेखने परान्त मनोहर बलि, पुष्प, धूप, दीप आदि से इसकी पूजा करे तथा त्रिलोह (सोना, चाँदी एवं लौहा) के ताबीज में भरकर उसे ज्वर-ग्रस्त रोगी-बालक के कण्ठ में बाँध दे। कण्ठ के स्थान पर इसे गुलाब में भी बाँध जा सकता है।

इस यन्त्र के उपाय से बालकों के उपसर्गजनित रोग, वायुज्वर-रोग, मानसिक रोग, ईर्ष्या, भोजनजनित रोग, दन्त-रोग, स्तन-रोग तथा ज्वर आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह यन्त्र बालकों के रोगों से मुक्ति लाता है, अतः इसे स्थापना में भी ध्यान दिया जा सकता है। इसे ज्वलनरक्षाकर यन्त्र भी कहते हैं।

महा

(त्रिपुर भैरव मन्त्र)



बाल-दोष-नाशन त्रिपुर भैरव मन्त्र- भोजन के एक अविच्छिन्न टुकड़े के ऊपर, चक्कर के रूप से, एक गोलाकार चक्र खींचें। तदुपरान्त उसके बाहर आठ कमलपत्रों का निर्माण करें। फिर प्रत्येक पत्र में 'ह्रीं' बीज तथा मन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्याप्ति का नाम लिखें। इस प्रकार मन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाईं ओर के चित्र में उद्विग्न किया गया है।
उद्विग्न चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्याप्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखने परान्त मन्त्र का मंगोहर बलि, पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजन करें, फिर उसे निलोह अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर बालक के कण्ठ में बाँध दें।

यह 'त्रिपुर भैरव' नामक मन्त्र बालकों की घृत, जैत, वेणाल, डाकिनी, श्याकिनी आदि व्याधिषों से बचाना है तथा मृगी, अपहमार से बह बचा रहता है। यह लड़का तथा लड़की - दोनों के लिए दितकर है।
बालकों की व्याधि तथा रोगों से रक्षा करने वाले अनेक प्रकार के मन्त्रों का वर्णन मन्त्र-ग्रंथों में पाया जाता है। यह मन्त्र उन सबमें सरल तथा अत्यधिक प्रभावकारी है।

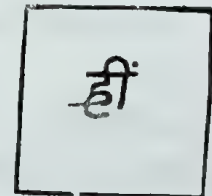
भूत-त्रासन यन्त्रम्- नये स्वप्न के ऊपर बरिजा मिट्टी द्वारा बारह कोष्ठों वाले एक यन्त्र का निर्माण करें, तदुपरान्त उसके प्रत्येक कोष्ठक में एक-एक 'ही' कीजलिये।
उका चिह्नसे यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चिह्न में उद-
-गित किया गया है।

महा

ही	ही	ही	ही
ही	ही	ही	ही
ही	ही	ही	ही

यन्त्र को लिखने के बाद उसकी गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजा करें, तदुपरान्त खैर की अग्नि में जलाये तो इसके प्रभाव से भूत-प्रेतादि बालक को दोड़ कर भाग जाते हैं तथा उस देश में भी कभी नहीं बहर पाते। यह यन्त्र वैसे सभी आयु के स्त्री-पुरुषों के लिए दितकर है। जिस समय कोई बालक, बूढ़ अथवा युवा स्त्री-पुरुष भूत, प्रेत, पिशाच, जाकिनी आदि से ग्रस्त हो, उस समय इसका उपयोग करना चाहिए।

दुष्ट-सत्त्व प्रमोचन-यन्त्रम्- अपने धूक द्वारा बाँचे हाथ की हथेली पर एक चतु-
कोण खींच कर, उसके मध्यभाग में 'ही' कीज को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप
केगा, उसे बाँई ओर के चिह्न में उदगित किया गया है। यन्त्र लिखने के बाद अपनी
अनामिका अँगुली के रक्त को चारों दिशाओं में छिड़के, तो प्रयोग करता वही क्षण हिंसक-
जीवों के भय से मुक्त हो जाता है।



इस यन्त्र का उपयोग उसमय करना चाहिए, जब मनुष्य किसी समय वन, पर्वत आदि स्थानों की
यात्रा कर रहा हो और उस समय सिंह, बाघ आदि किसी हिंसक जीव का भय सामने आ उपस्थित हो

सर्प-व्याघ्र-चौरादि-भय-नाशन यन्त्रम्- गोरेचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी - इन सब वस्तुओं के मिश्रण से चमेली की फलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुर्कोण पंच लिखे। फिर उस पन्ना के भीतर 'ह्रीं' की ध्वनि लिख कर, इस ध्वनि की मात्रा के अन्तर्गत साधव-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा नाम के बाँईं ओर, 'ह्रीं' ध्वनि के बाद में 'म, ल, व, य' तथा 'ॐ' इन अक्षरों को भी मिलादे।

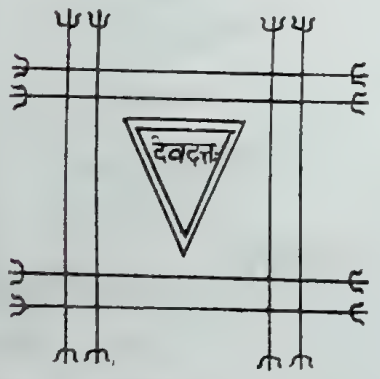
ह्रीं	
म	दे
ल	व
व	द
य	त्त

उक्त विधि से पन्ना का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में 'उद्विष्ट' किपा गया है। उद्विष्ट चित्र में जिस प्रकार 'देवदत्त' इन नामाक्षरों को लिखा गया है, उसी प्रकार साधव-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए। पन्ना लिखने के बाद उसका मधु, दुग्ध, घृण आदि से पूजन करके।

लेखने परान्त पन्ना का विधिपूर्वक पूजन कर के, त्रिलोह (सोना, चाँदी, व्याघ्र आदि के भस्म से युक्ति मिलती है)। स्त्री अथवा पुरुष दोनों ही इस पन्ना को धारण करने के अधिकारी हैं। यह पन्ना बालकों को भी धारण कराया जा सकता है।

इस पन्ना के प्रभाव से अनेक प्रकार के उपद्रव शान्त होते हैं। यात्रा के समय अथवा किसी भयानक या अप्रत्याशित स्थान में निवास करते समय पन्ना धारण करने वाला सुरक्षित बना रहता है। इस पन्ना को बगला का में बरले से विपत्तियों से सुरक्षा होती है।

(वन्ध्यागर्भ-धारण यन्त्र)



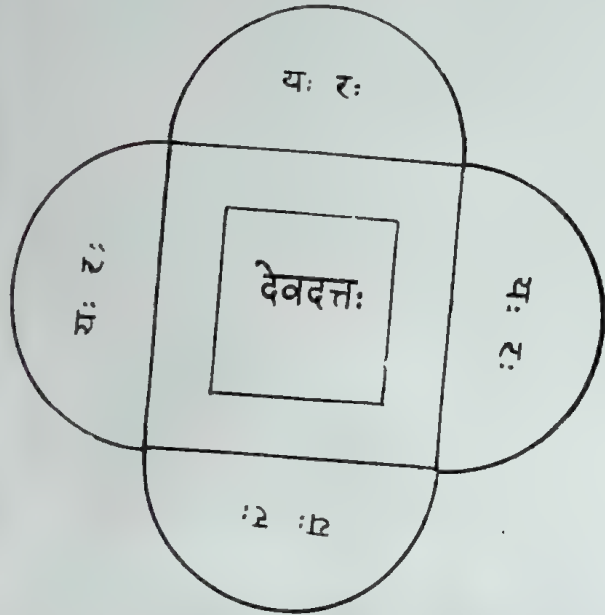
सौभाग्य जतनं वन्ध्या गर्भ-धारण यन्त्रम् -

भोजपत्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े पर, जोतेचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी द्वारा, चमेली की कलम से एक दो रेखाओं वाले त्रिकोणयन्त्र को बनाये, तदुपरान्त उसे बहिर्भाग में चारों ओर दो रेखाओं से घुसा एक चतुर्भुजोण यन्त्र खींचे तथा बाहर की प्रत्येक रेखा के सिरे पर एक-एक त्रिशूल चित्त बनादे। किन्तु त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखकर, श्वेत तथा नील कमल, मालती, छुट्टी, केतकी, बकुल आदि पुरुषों (कोई भी पुरुष लाल बूंग का तथा बिना गंध का न हो, मह च्यान नहीं), महुआ फल, कपूर युक्त ताम्बूल, धूप, दीप, गंध, नैवेद्य, श्वेत वस्त्र आदि से यन्त्र का पूजन करें।

पूर्वोक्ता विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में सुदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

लेखन एवं पूजन के बाद यन्त्र को त्रिलोह अथवा लौ के तावीज में भरकर, भुजा अथवा कण्ठ में धारण करें। इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या-स्त्री गर्भवती होती है तथा अनेक पुत्रों के साथ सम्पन्न हो, देवताओं की भाँति सुखी रहती है। जिस पुरुष की पत्नी वन्ध्या हो, वह भी इस यन्त्र को धारण कर सकता है। यदि पति-पत्नी दोनों ही इस यन्त्र को धारण करें तो वन्ध्यात्व-दोष शीघ्र दूर होता है। यह यन्त्र स्त्री-पुरुषों के दुर्भाग्य को दूर करने वाला तथा सौभाग्य की वृद्धि करने वाला है।

(गर्भ रक्षाकर यन्त्र)



गर्भ-रक्षाकर यन्त्र- भोजपत्र के एक अनिच्छित तथा बड़े टुकड़े पर, हाथी के मूद द्वारा, दो रेखाओं से युक्त एक चतुर्कोण यन्त्र को रची कर, उसकी चारों दिशाओं में कणिकाएँ लगायें। फिर प्रत्येक कणिका में "यः रः"—इत बीजों को लिख कर, यन्त्र के मध्य भाग में साधन-जापि के नाम को लिखें। साधन-जापि से यहाँ तात्पर्य गर्भिणी-स्त्री से है।

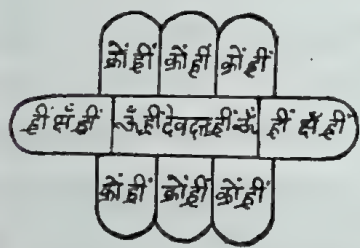
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में सुदर्शित किया गया है। सुदर्शित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'साधन-गर्भिणी' का नाम लिखना चाहिए।

लेवोपायान्त इस यन्त्र का पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से विधिवत पूजन करके, चौंकी के ताबीज में भर कर, गर्भवती स्त्री के कण्ठ में बाँध देना चाहिए। इस यन्त्र के उपाय से सब प्रकार के कष्ट तथा दल-विष दूर हो कर सुख पूर्वक प्रसव होता है।

उसके पूर्व ही गर्भिणी स्त्री के कण्ठ में इस यन्त्र को पहना दिया जाय तो गर्भ की रक्षा होती है अर्थात् गर्भपात, गर्भघात आदि की संभावना नहीं रहती तथा प्रका समय सुख पूर्वक प्रसव होता है एवं पुष्टता स्वस्थवती रहती है।

आदि की संभावना नहीं रहती तथा प्रका समय सुख पूर्वक प्रसव होता है एवं पुष्टता स्वस्थवती रहती है।

(सुख-प्रसूतिकरण यन्त्र)



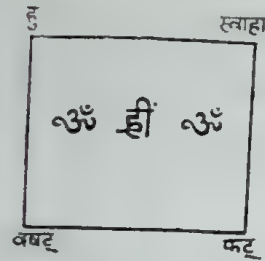
गर्भिणी-रक्षणं सुखप्रसूतिकरणं यन्त्रम्- भोजयन्त्र के ऊपर, हाथी के दाढ़ कारा, एक परवार (कैसे इस कपड़े जैसा) चारुकोण यन्त्र लिखकर, उसे चार ऊर्ध्व रेखाओं से संयुक्त कर, सभी रेखाओं को नीचे ऊपर से संयुक्त करें। तत्पश्चात् दोनों ओर दो कर्णिकाएँ लिखें। कि "ॐ ह्रीं"—इस दो बीजों से संयुक्त स्नायव-कर्म के नाम को बीच में लिखें तथा यन्त्र के ऊपर नीचे वाले प्रत्येक कोण से 'ह्रीं ह्रीं' इस बीजों को लिखें तथा दाईं-बाईं ओर भी कर्णिकाओं में "ह्रीं ह्रीं ह्रीं"—इस बीजों को लिखें।

उक्त विधिसे यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँटें और के चित्र में उद्वर्गित किया गया है। इस चित्र में जिस जगह 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'स्नायव-कर्म' अर्थात् गर्भिणी-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र के स्वरूप को भिल देवक भलीभाँति समझ लेना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका धूप-दीप, गन्ध, दुग्ध, नैवेद्य आदि से विधिपूर्वक पूजन करें। तदुपान्त उसे 'त्रिलोह' (सोना, चाँदी और लौ का मिश्रित धातु को 'त्रिलोह' कहते हैं) के ताबीज में भर कर, गर्भवती-स्त्री के गले में बाँध दें। इस यन्त्र के प्रभाव से गर्भशूल, शिरःशूल, अत-दोष आदि सब प्रकार के रोग प्रवृत्त होकर सुखपूर्वक प्रसव होता है।

यदि दो मास की गर्भवती-स्त्री के ही कण्ठ में यह ताबीज बाँध दिया जाय, तो गर्भ-पिण्ड भलीभाँति बनी रहती है। गर्भाशय आदि भी आसंका नहीं। इसी तथा प्रयासमय सुखपूर्वक प्रसव होता है।

(वन्धा-गर्भ-धारण यन्त्र)



वन्धागर्भ-धारण यन्त्रम् (२)

भोजपत्र अथवा तालपत्र के ऊपर गौरोचन, कुंकुम, कस्तूरी, बॉई ओर 'हुं' तथा दाँई ओर 'ऊँ' तथा नीचे बाँई ओर 'वषट्' तथा दाँई ओर 'फट्' इन शब्दों को लिखे तथा मध्य में दोनों ओर 'ॐ' तथा बीच में 'ह्रीं' लिखे।

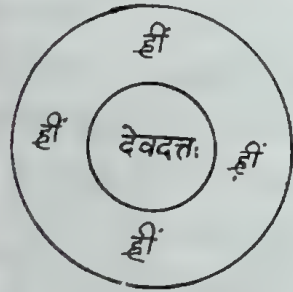
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में 'उदक्षिति' किया जाएगा। यन्त्र को लिखने के बाद विधिपूर्वक कड़ तथा कड़काली का पूजन करे एवं यन्त्र को कंठ, कमर अथवा बाँई भुजा में धारण करे। इस यन्त्र के पुलाव से वन्धा-स्त्री गर्भ धारण कर, पुत्र को प्राप्त करती है।

हृतवत्सा-दोष शान्ति यन्त्र

गौरोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुर्कोण यन्त्र बनाये तथा उसमें पाँच सीधी ओर दो सिरही रेखाएँ खींचें, ताकि १८ कोणक बन जाँय। फि पहली पंक्ति के कोणों में कुम्भा: 'ॐ ह्रीं क्लीं स्त्रीं हुं फट्' तथा दूसरी पंक्ति के कोणों में कुम्भा: रक्ष, गर्भ, साध्व-स्त्री का नाम गर्भ, रक्ष रक्ष तथा तीसरी पंक्ति में स्वा, हा, श्री, क्ली, फट्, हुं - इन बीजों को लिखना चाहिए। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँई ओर उदक्षिति किया जाएगा। उदक्षिति चित्र में जहाँ 'देव दत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्व-स्त्री' का नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र का विधि पूर्वक पूजन करके बाँई भुजा में धारण करने से 'हृतवत्सा दोष' (सन्तानों का होकर मरण) की शान्ति होती है।

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुं	फट्
रक्ष	गर्भ	देवदत्त	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्री	क्ली	फट्	हुं

(बन्धन-मोक्ष यन्त्र)



बन्धन-मोक्ष यन्त्र - जेहूँ को आँटे में कुछ मिलाकर चूपाए किए गए 'पुस' के ऊपर शूल द्वारा एक गोलाकार चक्र लिखकर, उसके बहिर्भाग में एक और गोलाकार चक्र लिखें। फिर प्रथम चक्र के मध्यभाग में साधन-व्यक्ति का नाम तथा दूसरे चक्र के भीतर पूर्वोक्त चारों भागों में 'हीं' बीज लिखें।

उक्त चित्रों से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उदगिति किया गया है। उदगिति चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साधन-व्यक्ति' (बन्दी) का नाम लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने के बाद जप-पुष्पादि से पूजन करके, यन्त्र-लिखित हुआ साधन-व्यक्ति को खिला देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से साधन-व्यक्ति बन्धन अर्थात् कैद से लीत अथवा मार दिनों के भीतर छूट जाता है।

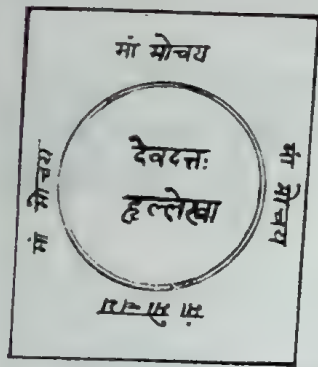
बन्दी को यन्त्र हुआ हुआ खिलाने के बाद सत्ताईस दिनों तक १०८ बार निम्न छुटकारा अवश्य हो जाता है। यन्त्र इस प्रकार है—

‘हे हीं श्रीं बन्दी देवो अमुकस्य बन्धनमोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा।’

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ बन्दी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र-प्राप्त तथा मन्त्र-जप की संयुक्त प्रक्रिया के प्रयोग से बन्दी व्यक्ति का मोक्ष अवश्य हो जाता है। यह कल्प चिह्न लिखित यन्त्र अल्पतः लाभदायक है।

महा.

(वाच. मोक्षण मन्त्र)



वच-मोक्षण मन्त्र-

एक बड़े मोक्षपत्र के ऊपर शुद्ध मृत्वा कपूर के मिश्रण से दो देवताओं वाला एक गोलाकार चकड़ लिखे, फिर उसके भीतर विसर्गोक्त साधन-व्यक्ति के नाम लिखकर नीचे 'हल्लेखा' लिखना चाहिए। इसके पश्चात् गोलाकार के बहिर्भाग में, पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'मां मोचय' वाक्य को लिखे। फिर उसके ऊपर एक चतुष्कोण बना दें। चतुष्कोण त बनाना चाहिए तो भी मन्त्र पूर्ण ही होगा।

उक्त विधि से मन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उद्विग्न किया गया है। उद्विग्न चित्र में जहाँ 'देवस्तः' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। नाम के अन्तिम अक्षर के बाद विसर्ग लगाना भी आवश्यक है।

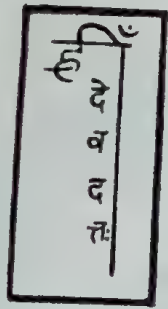
मन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध, पुष्प आदि से पूजन करे, तदुपरान्त तिलोद (सोता, चाँदी और लौहा) के तामीन में भरकर बन्दी-व्यक्ति की बाँई भुजा (परिस्त्री हो तो बाँई भुजा) में अग्रका कठ में धाएँ। इस मन्त्र के प्रभाव से बन्धन में पड़ा हुआ व्यक्ति शीघ्र ही बन्धन-मुक्त हो जाता है। यदि बन्दी व्यक्ति तक इस मन्त्र को न पहुँचाया जा सके तो उसके उद्देश्य से साधक उसे स्वयं ही अपने गले में धाएँ। जो व्यक्ति हर समय इस मन्त्र को धाएँ रहता है, उसका शरीर स्वास्थ रहता है, जब किसी व्यक्ति को किसी ने रोक रखा हो और उसके निकलने का कोई उपाय ही न हो। यह मन्त्र तत्काल मुक्ति देने के लिए शक्ति है। यह स्त्री-पुरुष तथा बालक स्त्री के लिए हिमकर है।

A circular diagram with 'ह्रीं' in the center. The inner ring contains 21 Sanskrit characters, and the outer ring contains 21 numbers (1-21) in a circular arrangement.

उक्त विधि से पन्ना का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई और प्रदर्शित किया गया है।

मन्त्र लिखने के बाद धूप, दीप, तैल आदि से पूजन करें तथा 'ॐ नमस्तुभ्यै नमः स्वाहा' - इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रतिदिन स्वीर, मधु, स्वादा तथा विमोक्त, गुग्गुलु की बलि देकर मन्त्र को ढँक दिया करें करें एवं 'धूप, धूप आदि देकर पूजन करें। इस मन्त्र के आगे भाग को 'का बनाये'। इस गुहिका को चारण करने से आजीवन कारावाह का बन्दी न मिले। किसी का नाम लिखने की आवश्यकता नहीं होती। उद्देश्य माल ही काफी रहता है।

बन्ध-मोक्षकर मन्त्रम् - भोजमन्त्र के ऊपर कुंकुम द्वारा एक-चतुर्कोण मन्त्र लिखकर, उसके (बन्ध-मोक्षकर मन्त्र) भीतर 'ही' बीज के अन्तर्गत 'साधन-व्यक्ति' अर्थात् बन्धन में पड़े हुए बन्दी-पुरुष या स्त्री का नाम लिखे।



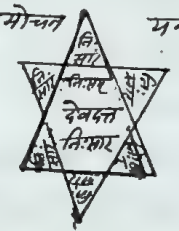
उक्त विधिसे मन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में दिखाया गया है। प्रदर्शित मन्त्र में 'हींकार' के अन्तर्गत जिस प्रकार 'देवदत्त' के नामाक्षर लिखे हैं, उसी प्रकार 'साधन-व्यक्ति' (बन्दी) के नामाक्षरों को लिखा जाना चाहिए।

मन्त्र लेखने परान्त उसका धूप-दीप गंध आदि से विधिपूर्वक पूजन करे, फिर उसे नदी, गहर आदि के बहे हुए पानी में डालदे तथा उसी पानी द्वारा पके हुए भोजन का भोजन साधन-व्यक्ति को कराये।

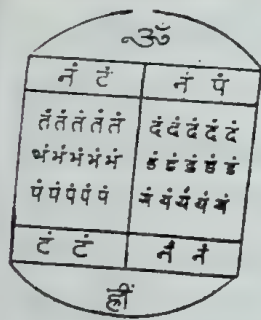
यथा शिवा को करते से किसी गुप्ता, बिना भयका अन्य गुप्त-स्थान में कैद या जाना है। इतना ही नहीं, काल कोठरी आदि में बन्द व्यक्ति भी उससे छुटकारा पा जाता है।

भव मोक्षन मन्त्र - दाँई ओर प्रदर्शित मन्त्र को जोरोचन तथा लाल चन्दन द्वारा भोजमन्त्र के ऊपर लिखकर, मध्य में 'साधन-व्यक्ति' के नाम को लिखे तथा विधिपूर्वक पूजन करने के बाद, तिलोह के ताबीज में भर कर मस्तक के ऊपर धारण करे तो वह मनुष्य सबसे धिक्का हो, सांसारिक-बन्धनों से छूट जाता है।

(भयमोक्षन मन्त्रम्)



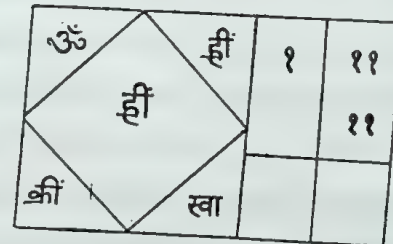
(वशीकरण यन्त्र)



वशीकरण यन्त्र- बौंद और जिस यन्त्र के स्वरूप को उदक्षिति किया गया है, उसे अष्टगंध द्वारा भोजन के ऊपर लिखें, कि विभिन्न प्रजा करके तौबा आदि किसी पशु के ताकीज में भर कर अपनी बौंद भुजा में बाँध लें तो देखने वाले तथा निकट सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति यन्त्र धारणकर्ता के वशीभूत होते हैं। यह वशीकरण का सामान्य यन्त्र है जिसका प्रयोग गुल्म, लोक-प्रतिष्ठा प्राप्त करने एवं सम्बन्ध सुधारने के लिए किया जाता है।

सास-श्वसुर वशीकरण यन्त्र- बौंद और जिस यन्त्र का स्वरूप उदक्षिति किया गया है, उसे गेहूँ की दोटी पर लिख कर काली कुत्ता को दिवला देने से सास वश में होती है तथा काले कुत्ते को दिवला देने से श्वसुर वशीभूत होता है। इस यन्त्र के लिए किसी विधि विभाग की आवश्यकता नहीं होती।

(सास-श्वसुर वशीकरण यन्त्र)



७ में ४४ व ७००
१०० ११०० ४७६० ३० ४
५॥ ०४-२३-१ :: ÷ ७

(साधक की लं का नाम)

सर्व वशीकरण यन्त्र- बौंद और नीचे प्रदर्शित यन्त्र को किसी पत्ता की पहिवा डुकरे पर लिख कर, चूल्हे में गढ़ा खोद कर गाढ़ दें तथा उसे सात दिनों तक जहाँ का रहना चाहें उसे वश में करना हो, उसकी माता का नाम यन्त्र के नीचे लिख देना चाहिए। इस यन्त्र के उपाखण्ड से साधक व्यक्ति वशीभूत हो जाता है। [टिप्पणी - उक्त तीनों यन्त्र लोक-प्रचलित यन्त्रों में से हैं।]

(सर्वतोभद्र यन्त्र)

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
लृ	लृ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

सर्वतोभद्र यन्त्र - एक अविच्छिन्न भोजपत्र के टुकड़े के ऊपर कस्तूरी, लालचंदन तथा टिप - इन सबके मिश्रण से १६ कोष्ठों वाला एक यन्त्र नवीचे । फिर उसके प्रत्येक कोष्ठ में 'अ' आदि सौलह स्वरों को लिखे । इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यारहो उसे बाँई ओर उदबिंबि किया गया है ।

लेखने पाना गंध, धूप, दीप आदि से यन्त्र का पूजन करे तथा । ब्राह्मणों को भोजन करा, उदें दान-दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे । फिर चलद्वर्क निहोह (सोना, चाँदी तथा लौहा मिश्रित) के तालीय में यन्त्र को बद्ध करके, पुष्प अपनी दाँई भुजा एवं कन्री अपनी बाँई भुजा में धारण करें । यदि स्त्री कण्ठ में धारण करें तो अल्पुतन रहेगा । इस यन्त्र के प्रभाव से स्त्री-पुरुषों के सौभाग्य की वृद्धि होती है तथा सब प्रकार के भद्र एवं दुर्भाग्य का नाश होता है । यह समस्त मनोचिन्ताओं को पूर्ण करने वाला तथा सब प्रकार के अरिष्टों को व्रान्त करने वाला है ।

(दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र)

दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र - बाँई ओर उदबिंबि यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लालचंदन आदि से लिख कर, सोते समय अपने सिरहाने रख लेने से दुःस्वप्न अर्थात् भूरे, उरावने आदि स्वप्न आना बंद हो जाते हैं । जिन लोगों को अक्सर बराब स्वप्न आते रहते हों, उन्हें इस यन्त्र का उपयोग अवश्य करना चाहिए ।

हं	सं	खं	फं
घं	वं	घं	भं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	लं	व

[टिप्पणी - उक्त दोनों यन्त्र लोक-उच्चलित सामान्य यन्त्रों में से हैं, तथापि प्रभावकारी हैं ।]

ॐ अजिते स्वाहा

देवदत्त

ॐ अपराजिते त्वाहा

नर-नारी-विद्वेषण मन्त्रम्— एक बड़े आकार वाले भोजपत्र के ऊपर एक चतुर्कोण मन्त्र का निर्माण करें। फिर उसके मध्य भाग में पूर्व तथा पश्चिम की ओर च दबड़ी रेखाएँ खींचें, जिनके द्वारा आठ कोणक बन जाएँ। इसके बाद प्रत्येक रेखा को ऊपर तथा नीचे की ओर से आपस में मिला दें। इनके ऊपरी तथा नीचे के भाग में "ॐ अघ्रा-जिते स्वाहा"— इन पदों को लिखें तथा कोणकों के भीतर, ऊपरी भाग में दो बार साधन-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें तथा नाम के वर्णों के निचले भाग में बारम्बार "दुर्गा भव"— इन वर्णों को लिखें।

अदि साधन-व्यक्ति के नाम के अक्षर कोष्ठों की संख्या से अधिक हो तो उसे बहिर्भाग में लिख देना चाहिए। "दुर्गि भव" वाक्य को स्त्री के अक्षरों में लिखना चाहिए तथा पुरुष के अक्षरों में "दुर्गि भव" - यह लिखना चाहिए।

उष्ण विषिसे पन्न का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँहों और उदरवृत्ति बिचा
गाया है। इस प्रकार पन्न का निर्माण करके, किसी नदी के तट पर जा, आठ-पाँच बी मिट्टी लाकर, मौन भाषण
का, उष्ण मिट्टी से गणेशजी की प्रतिमा का निर्माण करे तथा पन्न को उस प्रतिमा के ऊपर रख कर गन्ध, पुष्प, मोदक
आदि से पूजन कर, 'गणेशः प्रीयताम्'— इस वाक्य का उच्चारण करके उत्तम गन्ध, पदार्थों का कागजों को भोजन
कराये तथा उनकी पूजा करे। इस प्रकार गणेश-प्रतिमा सहित पन्न का पूजन करने के बाद, पन्न सहित प्रतिमा
को शराव-समुद्र (दो मिट्टी के शकोरो के बीच) में बहा करके, धूमि में गड़ा खोद कर, 'अधोरेति'— इस मन्त्र का उच्चारण

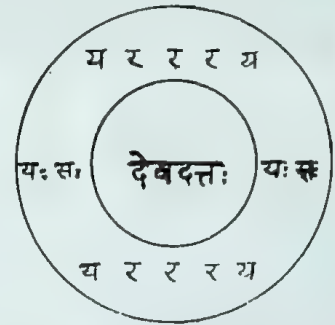
रण करते हुए शक्ति को उसमें स्थापित करके पूजन करें। इस उद्योग से स्त्री दुर्भाग्य को प्राप्त कर, रात-दिन दुखी रहती है। वह किसी भी सुदरी क्यों न हो, कि भी शुद्ध उसे सहन (प्रेम) नहीं कर पाता। यदि इस यन्त्र का प्रयोग शुद्ध के लिए किया जाय तो उसे कोई स्त्री सहन (प्रेम) नहीं कर पाती, कि वह भले ही फेरना सुदरतया सज्जन क्यों न हो।

यह यन्त्र स्त्री-पुरुषों में परस्पर विद्वेष करा देता है। इसका उद्योग किसी अन्य कार्य के लिए नहीं करना चाहिए और न किसी अन्य व्यक्ति को देना ही चाहिए, क्योंकि यह यन्त्र यदि किसी को दिया जाय तो देने वाले के लिए हानिकर सिद्ध होता है।

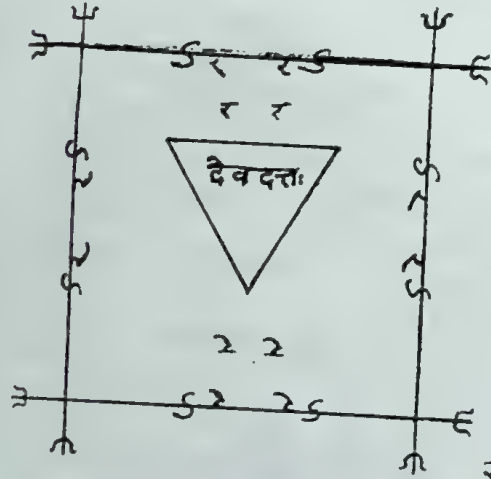
स्वामि-मृत्प विद्वेषण यन्त्र- रक्त मिश्रित बिज्र द्वारा कौए के पाँव की कलम से शमशान वस्त्र (कफन) के ऊपर एक गोलाकार यन्त्र खींचकर, उसके एक अंगुल अन्तर से एक दूसरा गोलाकार यन्त्र खींचे। कि वहले-यन्त्र के भीतर सांख्यिक साधन-व्यक्ति का नाम लिखे तथा दूसरे यन्त्र के मध्य में पूर्व तथा पश्चिम के भाग में 'म'कार पुरित तीन 'र'कार वर्णों को तथा उत्तर-दक्षिण भागों में 'विसर्गित' 'म'कार 'स'कारों को लिखे।

उक्त विधिसे यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँई ओर उद्विग्न किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, उस जगह साधन-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। लोगोपहान्त गन्ध-पुष्पादि से यन्त्र का पूजन कर, स्वामी-सेवक के आने-जाने के मार्ग में भूमि खोद कर दबा दें। इस भूमि

(स्वामि-मृत्प विद्वेषण यन्त्र)



(बन्धु-विद्वेषण यन्त्र)



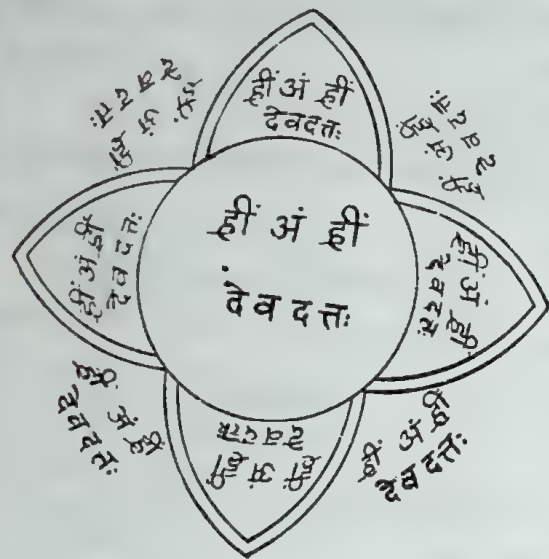
बन्धु-विद्वेषण यन्त्रम् - इस यन्त्र-वस्तु (कफन) के ऊपर, कौए के तख की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र खींचा जाय, उसके भीतर एक त्रिकोण यन्त्र का निर्माण करे। फिर चतुष्कोण की रेखाओं में एक-एक त्रिभुज बनाये तथा पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'हुहरे' र'कार के रेखा स्थापित करे। इसके बाद दक्ष-राशि में, इस यन्त्र के अंगार को मैदा के बक्का में धिस्त कर, उसके द्वारा त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा त्रिकोण के ऊपर नीचे दो-दो 'र'कार वर्ण लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँध और पदवर्ति किया जाता है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्ता' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद नकरी के रक्का से मिश्रित मात-तेल के सहकारा इसको बलि दे तथा गंध-पुष्प आदि से पूजन कर, सात अंगुल धूमि को रौंदकर उसमें यन्त्र को दबादे। जिस स्थान पर यन्त्र गाढ़ा जायगा,

वहाँ पाँच घड़ते ही साध्य-व्यक्ति का हृदय व्यक्ति से विच्छेद हो जायगा। जो दो व्यक्ति परस्पर लोभित हों, परन्तु आपसे शत्रुता बखोते हों तो उन दोनों में परस्पर द्वेष कलाने के लिए इस यन्त्र का उपयोग करना चाहिए तथा इसे उस मार्ग में ही गड़ा खोदकर गाढ़ना चाहिए, जहाँ से शत्रुओं के आने जाने का रास्ता हो।

(सन्तु-विशेषण यन्त्र)



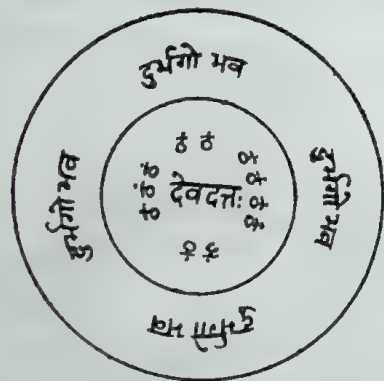
शन्तु-विशेषण यन्त्रम्- श्मशान-वस्त्र (कफन) पर, अपने एक
द्वारा, कौए के पंख की कलम से सर्वप्रथम एक गोलाकार चक्र खींचे,
फिर उसके ऊपर दुहरी रेखाओं वाले चार कमल-दलों को पूर्वदि चारों
दिशाओं में स्थापित करें। तदुपरान्त उस गोलाकार चक्र के भीतर एवं
पूर्वदि दिशाओं के चारों दलों तथा उत्प्रेक दल के सन्धि भाग के
समीप "हीं अं हीं" इन तीन-तीन बीजों को ऊपरी भाग में लिखे
तथा इनके नीचे उत्प्रेक स्थान पर साधन-व्यक्ति के नाम को
लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उद-
र्धित किया गया है। यन्त्र में जहाँ-जहाँ 'देव दत्त' लिखा है, वहाँ-वहाँ
साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद बकरी के रक्ता से मिश्रित भात एवं
दूध की बलि दे तथा गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे। यन्त्र एवं गुरु
का पूजन शक्ति के समन करना चाहिए। पूजने परान्त एक पोगिनी
को भोजन कराना चाहिए। इस यन्त्र को उद्वास शिव-मन्दिर अथवा श्मशान में स्थापित करना चाहिए तथा वही
इसका पूजनादि भी करना चाहिए। इसे धूलका भी जल में लिखें, न पूजनादि ही करे। इसका उपयोग भी निम्नानुषंगाना में करे।

को भोजन कराना चाहिए। इस यन्त्र को उद्वास शिव-मन्दिर अथवा श्मशान में स्थापित करना चाहिए तथा वही
इसका पूजनादि भी करना चाहिए। इसे धूलका भी जल में लिखें, न पूजनादि ही करे। इसका उपयोग भी निम्नानुषंगाना में करे।

(विश्व-विद्वेषण यन्त्र)

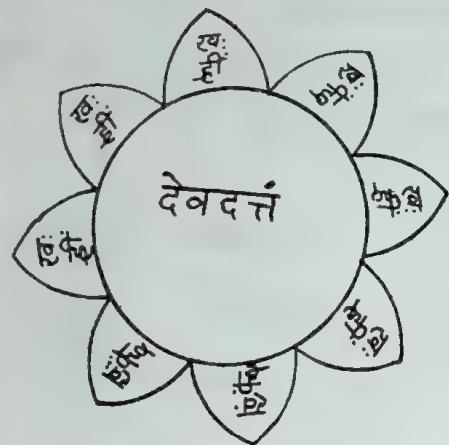


विश्व-विद्वेषण यन्त्रम्- कौआ, उल्लू तथा दुर्भगा स्त्री को रणोद्यम कारक-
इन तीनों वस्तुओं को मिश्रित कर, कौए के जंघ की कलम द्वारा ही भोजन
के ऊपर एक गोलाकार चक्र लिखे, फिर उसके अंगुलमात्र की दूरी पर एक
दूसरा चक्र लिखे। तत्पश्चात् चक्र के मध्यभाग में साधन-व्यक्ति का नाम
लिखकर उसके पूर्व तथा पश्चिम भाग में क्रमशः चार और तीन 'ॐ'
बीज तथा दक्षिण और उत्तर में दो-दो 'ॐ' बीज लिखे। फिर बहिर्भाग
के पूर्वदि चारों भागों में पुष्ट के लिए "दुर्भोगो भव" एवं स्त्री के लिए
"दुर्भगा भव" इस वाक्य को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँट कर चार के
चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदाता' लिखा
है, उसे जगह 'साधन-व्यक्ति' के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करें। फिर उसे घास-फूस आदि में देवा
कर चार के भीतर ही रख दें।
यह यन्त्र जब तक चार के भीतर रहेगा, तब तक उस चार में पारस्परिक विद्वेष शक्त न होगी
अर्थात् उस चार में रहने वाले सब लोग एक-दूसरे से शत्रुता मानते हुए आपस में लड़ते-झगड़ते बने
रहेंगे। 'विश्व-विद्वेषण' नामक यह यन्त्र दो मांस की बृद्धि करने वाला है।

(स्त्रियाः उच्चारण मन्त्र)



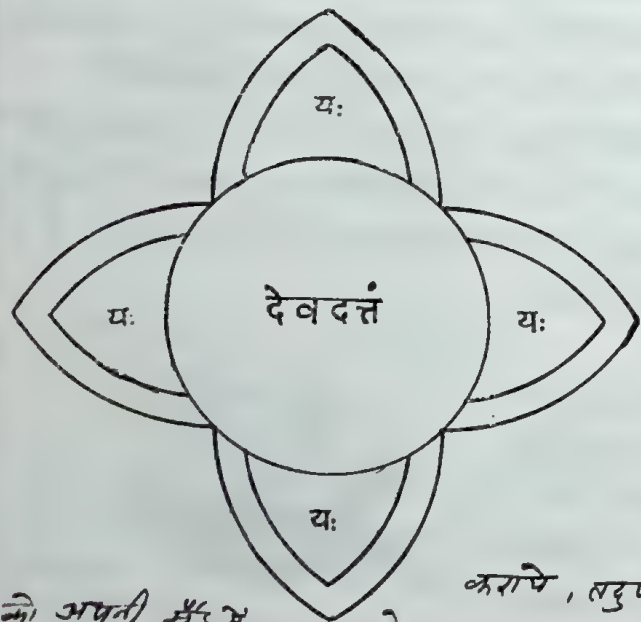
स्त्रियाः उच्चारण मन्त्र- गंधों के रक्त से, लकड़ी के टुकड़े (पट्टे) पर, कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र बनाकर, उसे आठ कमलपत्रों से सुशोभित करें। फिर विसर्गाना 'रब'कार रखें 'ह्रीं' कीज को प्रत्येक पत्र में स्थापित कर, चक्र के मध्य में साधुस्वार् साधक-व्यक्ति के नाम को लिखें। यथा- मनोरमा, कामिनी, लला देवी आदि।

उक्त चक्र से मन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँट और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है, प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र को लिखने के बाद साधक को चाहिए कि वह कृष्णपद्म की शक्ति में लालांग के बहन धारण कर, लालांग के फूलों की माला तथा रक्त-अनुलेपन से युक्त हो, लालांग के पुष्प, लालांग की गन्ध तथा स्वच्छ फलों द्वारा मन्त्र का पूजन कर, किसी कुम्हाड़ी को मोड़कर कहाये।

पुनरान्त धूमि में गड़ा खोद कर, उसमें मन्त्र को अधोमुख अर्थात् नीचे की ओर मन्त्र का धाव करके, दबावे। इस क्रिया से तीसरे ही दिन शत्रु का उच्चारण होता है तथा वह बाधु द्वारा उड़ने गंधे मने की भाँति इधर-से-उधर भागने लगता है। यह मन्त्र शत्रुओं की अनेक हिंसे का उच्चारण करने से अधिक उत्तमशाली है। इसके प्रयोग से स्त्री का शरीर उच्चारण होता है।

(सर्वजनोच्चारण मन्त्र)



जो अपनी मूर्ति में

मह उद्योग को।

कराये, तदुपरान्त-अंजन पर्वत के समान नीलगण्डी वाले गजगुरुब गणेशजी शायु लपेट कर आकाशमण्डल में उड़ाए रहे हैं। इस विधि से गणेशजी का ध्यान करे। 29 दिनों तक अतिमहिन मन्त्र के टुकड़े-टुकड़े कर, पूरे मास में मिलाकर जो जो कोखिलोह।

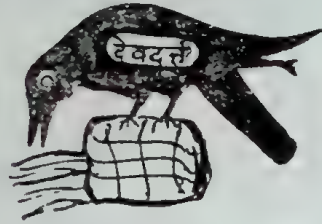
सर्वजनोच्चारण मन्त्रम्- कौआ तथा उल्लू के बदन से भोजन के ऊपर एक गोलाकार मन्त्र खींच कर, उसके ऊपर दो रेखाओं से चार कमल-दलों को चारों दिशाओं में खींचें, फिर प्रत्येक-दल में विसर्ग युक्ता 'य' का वर्ण को स्थापित कर, मन्त्र के मध्य भाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे।

उक्त विधि से मन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँट और के चित्र में उदरित किया गया है। उदरित-चित्र में जिस स्थान पर 'देवदन्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र-निर्माणोपरान्त कृत्वा पट्ट की वात्रि के समस्त लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला एवं वस्त्र के अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, गंध तथा स्वच्छ फलों से मन्त्र का पूजन कर, चपाशक्तिदक्षिण देकर किसी बुझार की भोजन

महा.

(उच्चाटनकर यन्त्र)



सद्य उच्चाटनकर यन्त्रम्- विष, तालक, गोदन्तीहरताल और चीता- इन सब वस्तुओं को इकट्ठा कर, कौए के पंख की कलम से 'इमशान-वहन्' अर्थात् मुर्दे पर डाले गए कंकन के कपड़े पर कौए का एक चित्र बनाये। उसके उदर में साधन-व्यक्ति के नाम को अनुस्वार सहित लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँटें और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-लिखने के बाद छहणपक्ष की रात्रि में लाल वहन धारण कर, लाल रंग की माहा खुरी वस्त्र के अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, गंध तथा लवण-स्वच्छ कलौ से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा दे कर किसी कुमार को भोजन कराये तदुपान्त गणेशजी का ध्यान इस प्रकार करे- "अंजन वर्त के समान नील वर्ण भाले, गजमुखधारी श्रीगणेशजी शत्रु को अपनी घुँट में पकड़ कर, आकाशमण्डल में उड़ाल रहे हैं।"

साधन-उक्त विधि से 29 दिनों तक प्रयोग करना चाहिए। परन्तु इस यन्त्र की विशेषता यह है कि यह खींच ही प्रभाव दिखाना है। पूजने परान्त यन्त्र को भिलोले के वृक्ष के दाँपे तग में, रात्रि के समथ हँग दे यन्त्र को अधोमुख रोंगना चाहिए। इस छिपा से तीसरे ही दिन साधन-व्यक्ति का उस स्थान से उच्चाटन हो जाता है। जब तक चित्र टँग रहा है, तब तक वह उड़िन बना रहता है और उसे कहीं भी सुरव नहीं मिलता।

महा०

(परमोच्चाटन यन्त्र)



परमोच्चाटन यन्त्रम्- हल्दी के चूर्ण के रस से भोजक के ऊपर एक दोरा गोलाकार चक्र खींच कर, उसके बहिर्भाग में अष्टदलकमल लगाकर एक ओर ऊपर गोलाकार चक्र खींचे, ताकि सभी दल उसके भीतर समाविष्ट होजायें। फिर प्रत्येक दल में 'कृ' बीज को लिख कर, छोटे गोलाकार चक्र के भीतर साधन-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चक्र में उद्वर्तित किया गया है। उद्वर्तित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद, कृष्णवस्त्र की शक्ति के समान लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला तथा शयन वस्तु के अनुलेपन से सुकाये लाल रंग के पुष्प, गंध तथा स्वच्छ फलों से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा दे कर, किसी छुगार को भोजन कराये, तदुपरांत गणेशजी का पूजन आकाश मण्डल में बारम्बार उद्घातन रहे है।

उक्त विधि से लेवण, पूजन, पूजा आदि के उपरान्त यन्त्र का छुड़क कर किसी रसमयी वस्तु के माध्यम से साधन-व्यक्ति के घेरे में पहुँचा दे तो उसका परमोच्चाटन होता है।

(त्रैलोक्योच्चारण मन्त्र)



त्रैलोक्योच्चारण मन्त्रम्- काले भुक्ति के वक्त से मोक्षपन्न के ऊपर एक बड़ा त्रिकोण पन्न खींचकर, उसके भीतर एक छोटा त्रिकोण पन्न और खींचें, तथा प्रत्येक दोनों के ऊपर एक गोलाचक्र खींचकर त्रिकोणों को उसके अन्तर्गत कर दें फिर छोटे त्रिकोण के भीतर मध्यभाग में 'साधन-व्यक्ति' का नाम लिखें तथा दीर्घ त्रिकोण की प्रत्येक भुजा के नीचे चार-चार 'ह्रीं' बर्णों को लिखें।

एक वर्ष से पन्न का जो स्वरूप होगा, उसे बाँट कर ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधन-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

पन्न लेखनोपरान्त गणेशाय का इस प्रकार स्तोत्र करें- नील अंजन उद्याल रहे है। परन्तु इस स्तोत्र से पहले लालवस्त्र धारण कर, लाल रंग के फूलों की माला पहिन तथा शरीर पर लालचंदन आदि का अनुलेपन करके पुष्पागंध तथा कलुषों से पन्न का पूजन करना चाहिए। यह सारी क्रियाएँ रात्रि में ही करनी चाहिए।

पूजन करने के बाद पन्न को एक कुत्ते के गले में बाँध देना चाहिए। वह कुत्ता जहाँ-जहाँ भी जाएगा, साधन-व्यक्ति भी उच्चारण को प्राप्त होकर वही-वही भोगेगा। यह पन्न त्रिलोकी का उच्चारण करने वाला है।

महा०

(शात्रोरुच्चाटन यन्त्र)



शात्रोरुच्चाटन यन्त्र - नीम के पत्तों के रस से भोजयन्त्र के ऊपर
कौर के पंख की कलम से एक गोलका चक्र खींच कर। उस पर दो रेखा
ओं से युक्त चारों दिशाओं में चार कमलदलों का निर्माण करे तथा उत्पत्ति
दल में " र, वै, ह " - इन वर्णों को लिखकर, यन्त्र के मध्यभाग में
सानुस्वार साधन-व्यक्ति के नाम को लिखे। इस लिपि से यन्त्र का
जो स्वरूप तैयार होगा, उसे काँई और उदर्शित चित्र में दिखाया
गया है। यद्विचित्र चित्र में जहाँ " देवदत्त " लिखा है, वहाँ अनुस्वार
युक्त साधन-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने परान्त रात्रि के समय लाल रंग के वस्त्र पहिन
कर तथा लाल रंग के फुटपों की माला गले में धारण कर, शरीर
पर लाल चंदन का अनुलेपन करके लाल रंग के दुष्ट, लाल रंग
की गंध (रक्तचंदन आदि) तथा लाल रंग के फलों से यन्त्र का पूजन
कर, किसी कुमर को भोजन कराये तथा उसे दक्षिणा देकर समुष्ट करे।
उसके उपरान्त अंजत पर्वत के समान नीलवर्ण गजमुख गणेश की कारा अपनी हँस में बाहु को लपेटकर ऊपर को
उड़ा लोटे हुए ध्यान करे। फिर भूमि में गड़ा खोद कर उसमें यन्त्र को अधोमुख दबादे। इस यन्त्र के पुनः वसे
बाहु का, फिर चाहे वह देश में हो अथवा विदेश में, सातवें दिन ही उच्चाटन हो जाता है।

(शत्रुच्छादन यन्त्र)

ॐ गं गणपति प्रहितं

हुं गं देवदत्तः

हुं गं धं स्वां ग हा

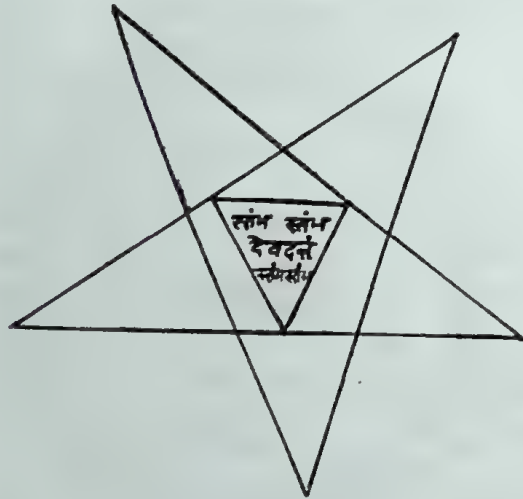
शत्रुच्छादन यन्त्र- अपनी अनामिका औंठुली के रक्त द्वारा भोजन के ऊपर दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र का निर्माण करे। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में—"ॐ गणपति प्रहितं", दूसरी रेखा में—"हुं, गं" को आदि में लगाकर साध्य-व्यक्ति का नाम तथा तीसरी रेखा में—"हुं गं धं स्वां ग हा"— इन बीजों को लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के बाद साधक को चाहिए कि वह रात्रि के समय लाल रंग के वस्त्र पहिन, लाल फूलों की मालाधारण कर, शरीर पर लाल-चंदन आदि का अनुलेपन कर, लाल रंग के फूल, रक्तगंध तथा रक्तवर्ण के फलों द्वारा यन्त्र का पूजन करे तथा पश्चाद्वक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन कराये। तदुपान्त गणेशजी का चपान इस प्रकार करे— "अंजन वर्तन के समान नीलवर्ण वाले गणमुख गणेशजी शत्रु को अपनी सूँड़ में लपेट कर, आकाशमण्डल में उड़ाल रहे हैं।"

उक्त विधि से 29 दिन के भीतर ही शत्रु का उच्छादन हो जाता है। पूजादि की छिपा समाधा हो जाने के बाद यन्त्र के टुकड़े करके, धूँठे भात में मिलाकर, उसे अन्तिम दिन कोशों की दिशा देना चाहिए। यह यन्त्र शत्रु का निर्विघ्न रूप से उच्छादन करने वाला है।

(नर-नारी मारण यन्त्र)



गोड़े के भीतर दबाकर बन्द करदे। इस यन्त्र के प्रयोग से शत्रु को मूल-रोष उत्पन्न होता है तथा सात दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है। यह स्त्री तथा पुरुष-दोनों के लिए मारक है। यदि एक जीव की बलि दी जाए तो इस यन्त्र के प्रभाव से दुराकार मिट सकता है, अथवा साधन-व्यक्ति मर जाये।

नर-नारी-मारण यन्त्रम्- स्त्री के मासिकधर्म के वक्त में इस यन्त्र की मूसम को मिलाकर मिलाते हैं घंटे पर, कौए के पंख की कलम से एक त्रिकोण यन्त्र बनाकर, उसके बहिर्भाग में एक पंचकोण यन्त्र खींचें, तत्पश्चात् त्रिकोण के भीतर "स्तंभ-स्तंभ" इन बीजों से पुष्टि साधन-व्यक्ति के नाम को मानुस्वार लिख कर, यन्त्र को नर-नारिका अर्थात् मृदुल की हड्डी के भीतर बन्द करदे।

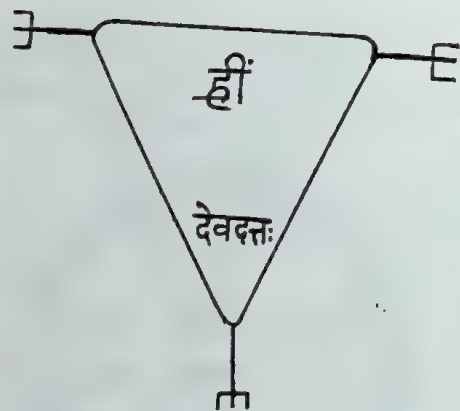
पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँर ओर के चित्र में उदाहरित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहीं साधन-व्यक्ति के नाम को, उसके अन्तिम अक्षर के ऊपर अनुस्वार लगा कर लिखना चाहिए।

यन्त्र को नर-नारिका में बन्द करने के बाद, साधन-व्यक्ति के मूल से सिंचित मिट्टी से घूर्ण करे, फिर रात्रि के समय यन्त्र का पूजन करते के बाद, उसे इस यन्त्र की भूमि को बन्द करे, उस सात दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है। यह स्त्री तथा पुरुष-दोनों के लिए मारक है। यदि एक जीव की बलि दी जाए तो इस यन्त्र के प्रभाव से दुराकार मिट सकता है, अथवा साधन-व्यक्ति मर जाये।

महा

इसी अवधि में प्रातः को प्यार आना आरंभ हो जाएगा तथा 29 के दिन (सबकी मृत्यु भी हो जाएगी) इस मन्त्र की प्रवृत्ति प्रवृत्ति मन्त्र की गौरी ही है। यह परदेश में स्थित प्रातः के माहणार्थ प्रयुक्त करना चाहिए।

(शत्रु-पुणाशक यन्त्र)



शत्रु-पुणाशक यन्त्र- चित्र तन्का हरताल को सफल कर, कौर के पंख की कलम से, भोजपत्र के ऊपर रख त्रिशूल युक्त त्रिकोण यन्त्र वरीच कर, उसके मध्य भाग में 'ही' कीध को तन्का गमकीज के नीचे साध-व्यक्ति के नाम को लिखे।

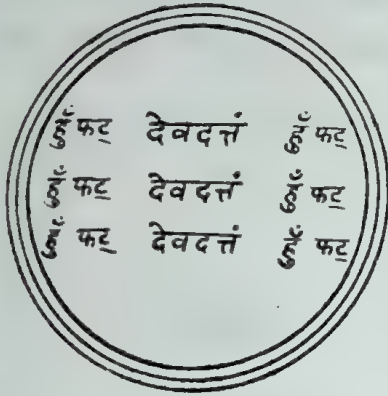
एक विधि से यन्त्र जो स्तम्भ होगा, उसे काँड़ी ओर के चित्र में उदशित किया गया है। उदशित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहीं साध-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनेवाला यन्त्र को शराव-समुद्र अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों के बीच में बन्द करके बलि, मांस, पूजन-सामग्री तथा स्वरक्त से पूज कर, नर-नलिका में बाँध कर, शमशान भूमि में गड़ा खोद कर गाढ़ दे।

पूजन करने के बाद यन्त्र को शराव-समुद्र से निकाल कर, नर-नलिका अर्थात् मनुष्य-शरीर की हड्डी में भर कर, उस नलिका को भूमि के गड्ढे में गाढ़ देना चाहिए।

इस क्रिया को करने से शत्रु की मृत्यु अचानक ही हो जाती है। माता-पुत्रों में इस उपयोग को अत्यधिक प्रभावकारी बताया गया है। यदि इस यन्त्र के प्रभाव को नष्ट कर देने की आवश्यकता हो तो किसी एक जीव की बलि देनी चाहिए। इस से साध-व्यक्ति की जान बच जायगी।

(सर्वजन-सारण पन्ना)



सर्वजन-सारण पन्ना- मनुष्य के रक्ता में अमृता के अंगारे को घिस कर उसमें विष मिलाये, तत्पश्चात् अमृता-पत्र (मुँद को उड़ाया गया कर्कश) के ऊपर, कौए के पंख की कलम से तीन वृत्त (गोलाकार) रेखाएँ एक दूसरी से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर खींचें। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, प्रत्येक रेखा में 'हुं फट' बीज-मन्त्रों से समुचित साधन-पद्धति के नाम को अनुस्वार सहित लिखें।

उक्त विधि से पन्ना का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर उद-रिति किया गया है। उदरिति चित्र में जहाँ-जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ-वहाँ साधन-पद्धति के नाम को लिखना चाहिए।

पन्ना को लिखने के बाद शत्रु के पाँवों के नीचे की धूलि-मिट्टी में वाजिका (राई) मिश्रित कर, एक छहमा का निमर्ण करें, फिर उस छहमा के हृदय में इस पन्ना को स्थापित कर, प्रवेष्टि विधि से बलि, माँस, अन्न-सामग्री तथा स्वरक्त का पन्ना का पूजन करें। फिर उसे पुण्य में गड़ा रक्केद का गाढ़ दें।

इस छिन्न के शत्रु के शरीर में दाह तथा अपि उत्पन्न होती है तथा तबसे दिन भर तक में जोर बीज होती है, तदुपान्त हाथ-पाँवों में दाह उत्पन्न होकर, सातवें दिन मृत्यु हो जाती है। यह 'सर्वजन साधन पन्ना' अत्यन्त प्रभावकारी बताया गया है।

(शत्रु-मारण यन्त्र)



शत्रु-मारण यन्त्रम्— कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में प्रमथान के अंगार (कोयले) द्वारा। चतुरे के रह से, मंगुल के कपाल (मुर्दा मंगुल की खोचड़ी) पर एक दुहरी रेखाओं वाला त्रिकोण यन्त्र खींचें का, उसके ऊपर मात्रा युक्त १०८ रेखाएं खींचें। त्रिकोण के तीनों ओर ३६-३६ रेखाएं खींची जाएंगी, कि यन्त्र के मध्य भाग में तीन रेखाओं की कल्पना कर, पहली तथा तीसरी रेखा में 'म्ल' 'म्ल'—ये दो बीच तथा मध्य में स्वाध-व्यक्ति का नाम लिखें। नाम के अक्षर अक्षर के साथ बिसर्ग लगाना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बौद्ध और जद-श्रिति किया जाएगा। उदश्रिति चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ स्वाध-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। नाम के अगल-वगल में कुंद न लिखें।

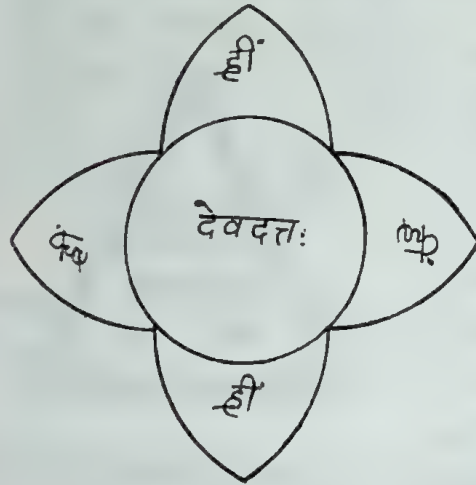
यन्त्र को लिखने के बाद उस यन्त्र-लिखित कपाल को शराव समुद्र अर्थात् मिट्टी के दो झाकोरों के बीच में रात भर बलि, मांस, पूजन-सामग्री तथा रक्त-रक्त से पूजा कर, उसी जगह गड्ढा खोद कर गाढ़े तथा वात्रि के समय उस यन्त्र के ऊपर तिल दीपक जलाता रहे। दीपक रात भर चलना चाहिए।

उक्त प्रक्रिया से शत्रु को तीसरे दिन ज्वर आ जाता है तथा कुपरा रोग खल हो कर वह मृत्यु की ओर हो जाता है। यदि यन्त्र जीव की बलि दी जाय तो वह जीवित बच जाता है, अन्यथा नहीं।

महा.

अथ यन्त्र महार्णव (चतुर्थ खण्ड)

‘यन्त्र महार्णव’ के इस चतुर्थ खण्ड में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु लोक-प्रचलित यन्त्रों को संकलित किया गया है। ये सभी यन्त्र वाचन में सरल तथा सभी के करने योग्य हैं।
(धृत्य-वशीकरण) पिशाचि यन्त्र)



धृत्य-वशीकरण पिशाचि यन्त्रम्- गोरोचन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसे पूर्व आदि चारों दिशाओं में कमलदलों से युक्त करें। तत्पश्चात् चक्र के भीतर साधक (सेवक) के नामाक्षरों को लिख कर, पूर्व आदि-चारों दिशाओं के दलों में ‘ही’ बीज स्थापित करें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे काँई और के पिंज में उदक्षिति किया जाएगा। उदक्षिति यन्त्र के माध्यमता से जाहूँ ‘देवदत्तः’ लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति-आर्त्ता जिस सेवक को वश में करना हो, उसका नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरांत यन्त्र को धृत्य आदि से पूजा कर, दही के भीतर रख देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से दुष्ट-सेवक वशीभूत होकर स्वाामी को हानि पहुँचाने का विचार त्याग देता है। जब कोई सेवक स्वाामी के धन आदि को हानि पहुँचाने पर तुला हो, और स्वाामी उसे रोकवाने में स्वयं को असमर्थ पारहा हो, तब इसका प्रयोग करना चाहिए।

(धूत-विजयकर प्रसन्न यन्त्र)

मे	खै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्रं	मं	य	वीं	दां	छ
नः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खै	मे

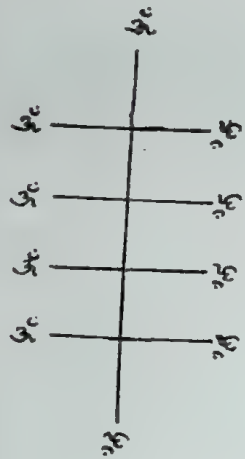
धूत-विजयकर प्रसन्न यन्त्रम्- रात्रि के समय सरण्ड के पते पर, कौरे के पंख की कारण से, काली क्पाही द्वारा, चौंसठ कोष्ठकों वाला एक यन्त्र तैयार करे तथा उसके प्रत्येक कोष्ठक में विलोम से इन ३२ बीजों को स्थापित करे - "मे, खै, र, क्तं, द, ये, रु, पा, क, जि, ज, तं, द, नी, च, नः, छ, दा, वीं, य, मं, त्रं, ते, ष, हे, ष्टि, वा, मो, क्षि, ण, पा, त्रं, त्रं, पा, ण, क्षि, मो, वा, ष्टि, हे, छ, त्रं, मं, य, वीं, दा, छ, नः, च, नी, द, तं, ज, जि, क, पा, रु, ये, द, क्तं, र, खै, मे।"

उपान लिपि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

जुआ खेलने वाला जो व्यक्ति इस यन्त्र को चारण करके जुआ खेलने जाता है, वह जुए में अवश्य विजयी होता है। इस यन्त्र को लिखने के बाद कलावे में लपेट ले, फिर उसको गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, दाँईं भुजा में बाँध ले।

यह 'प्रसन्न यन्त्र' नामक यन्त्र जुआ खेलने वालों को प्रसन्नता प्रदान कर, उन्हें धूत-क्रीड़ा में विजयी बनाता है। इस यन्त्र को अपनी दाँईं भुजा में इस प्रकार से चारण करना चाहिए कि वह किसी अन्य को दिखाई न दे। अर्थात् इसे वहन के भीतर चारण किए रहे।

(डाकिनी-भासन यन्त्र)



डाकिनी-भासन-यन्त्र - बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को काली

स्वाही द्वारा लिख कर लोबान की धूप दें। फिर यन्त्र को औबनली में दहन का कूटें और इस उद्योग से डाकिनी का मस्तक फूट जाता है और वह चिल्लाकर सब कुछ बताने लगती है। अर्थात् यह स्पष्ट करती है कि उसने बालक को क्यों पकड़ा था। इसके बाद वह स्व-गुप्त व्यक्ति को छोड़ कर भाग जाती है। डाकिनी प्रायः दोरे बच्चों को ही पकड़ती है, पल्लु कभी-कभी बड़ी आधुवालों को भी परेशान करती है।

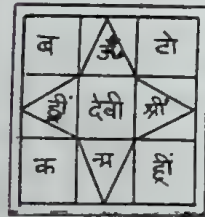
प्रेत-बाधा-नाशन यन्त्र - बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को गंधा आदि से गोप यन्त्र के ऊपर लिखना चाहिए। इसकी विधि यह है कि सर्वप्रथम ५ लम्बी बकरी रेखाएँ तथा ७ आड़ी रेखाएँ खींचें। ये सब परस्पर मिली रहें। इस प्रकार २४ कोष्ठक वाला यन्त्र

तैयार होगा। फिर यन्त्र के कोष्ठकों में क्रमशः — "ॐ, ह्रीं, २, ७, ६, ३, क्रौं, क्लीं, स्थ, य, ८, ९, तं, वै, सं, जं, कं, जि, स, त, ४, ५, टं, टं" — इन अक्षर-वर्गों तथा अक्षरों को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा वह बाँई ओर के चित्र में उदक्षिति है। यन्त्र को लिखने के बाद गुप्त, गंधा, धूप, दीप आदि से उसका पूजन कर, फिर तीर्थ के तटोपर में सरकार, प्रेत-गुप्त व्यक्ति के कण्ठ में बाँध देंगे प्रेस उसे छोड़ कर भाग जाएगा।

(प्रेत-बाधा-नाशन यन्त्र)

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रौं	क्लीं
स्थ	य	८	९
तं	वै	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

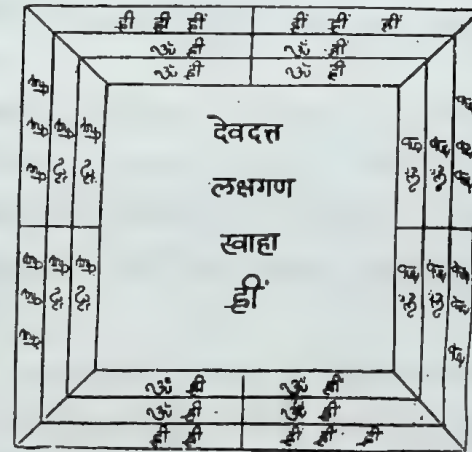
(बालाजी का यन्त्र)



बालाजी का यन्त्र - बाँई ओर उदगति यन्त्र को दीपावली की रात्रि में भोजन के ऊपर अष्टगंध अथवा लालचंदन से लिखें। लेखने पराना यन्त्र को पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि देकर पूजे तथा हनुमान जी की विधिपूर्वक पूजा कर, यन्त्र को अपने सामने रखकर यह मन्त्र पढ़ें -

"बौरी लक्ष्मी देवी लक्ष्मी दे सिद्धि करणी मम
मंडार पुरी किं स्वारा।"

(शत्रु-सेना भगने का यन्त्र)



उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करके यन्त्र को पुष्प (धन) अथवा अन्न के भीतर रखकर ८ दिवस तक रक्ष करना आरंभ करे तो किसी प्रकार की कमी नहीं पड़ेगी।

सेना भगने का यन्त्र - बाँई ओर उदगति यन्त्र को धारवाहली, सूरजमुखी तथा गुलदोने के रस से तगड़े के ऊपर लिख कर, उस पर चोबंदने से अष्टगंध यन्त्र लिखना तगड़े को बणाने से शत्रु की सेना भाग जाती है। उदगति यन्त्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ जिस शत्रु की सेना है, उसका नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से शत्रु की सेना पुष्टि से भाग जाती है।

(पञ्च के यन्त्र के विविध रूप)

६	१	८
७	५	३
२	६	४

४	३	८
६	५	१
२	७	६

८	३	४
१	५	६
६	७	२

२	७	६
६	५	१
४	३	८

६	७	२
१	५	६
८	३	४

२	६	४
७	५	३
६	१	८

सर्वसिद्धिदाता पञ्च का यन्त्र -

पञ्च के यन्त्र को 'यन्त्रराज' माना गया है तथा इसकी महिमा अपार बताई गई है। इस यन्त्र के अनेक रूप होते हैं, जिनमें से ६ रूपों को बौद्ध और उद्दिष्टि किता गचा है। इसके उद्देश्य यथोक्त निम्नानुसार हैं—

- (१) इसे चमेली की कलम से लिखने पर सभी कार्य सिद्ध होते हैं।
- (२) इसे आकर्मण के लिए जामुन की कलम से, स्तम्भन के लिए बरगद की कलम से, वस्तीकृष्ण के लिए कुवा की कलम से तथा शुभ-कार्यों के लिए सोने अथवा चाँदी की कलम से केशव, चन्दन, अमर, कपूर तथा करतूरी द्वारा लिखना चाहिए।

(३) इस यन्त्र को सवालाय की सँख्या में लिखकर आटे की गोलियों में अलग-अलग बन्ध करे तथा उन गोलियों को ऐसे जलावाय में 'डालदे', जिसमें 'काफ़ी ताला' में मद्धलिपों हों और वे उन गोलियों को खाते। मद्धलिपों को गोलियाँ डालते समय इस यन्त्र को पढ़ते जाना चाहिए— 'ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपद्या नवनागकुल सेवनाय स्वाहा'।

(४) आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर ही इस यन्त्र को सँख्या में लिखकर कीक के वृक्ष में बाँध देने से शत्रु को ज्वर तथा देहभूल काशिकार बनना पड़ता है।

महान

यन्त्र
२४०

(शत्रु-उच्चारण मन्त्र)

लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०

शत्रु के शत्रु वृत्त के हस्तगत कला चाहिए, जो उसका पहना हुआ हो, मले ही वह फरा-फुरा जीर्ण-शीर्ण ही क्यों न हो।

शत्रु-उच्चारण मन्त्र- बौद्ध और उद्विग्न मन्त्र को लंबे के पत्र पर लोहे की कलम से लिखकर साधु-व्यक्ति के पा के सामने गढ़ देने अपना किसी बूझल के वृत्त पर अधोमुख टाँग देने से शत्रु का उच्चारण होता है। लिखने के बाद मन्त्र का प्रज्ज भी करे।

देशाटन कारक मन्त्र-

बौद्ध और उद्विग्न मन्त्र को

वसुधाय के कोयले द्वारा शत्रु के किसी पहने के वृत्त पर लिख देने से उसका उच्चारण होता है और वह अपना घर छोड़ कर, देश-विदेश में इधर-उधर भटकता घूमता रहता है। यह मन्त्र के लिए

तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०

महा

(प्रसिद्धिदाता यन्त्र)

दं०	दं०	दं०	दं०
वं०	वं०	वं०	वं०
सं०	सं०	सं०	सं०
अं०	अं०	अं०	अं०

प्रसिद्धिदाता यन्त्र - बाईं ओर उदक्लिष्ट यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन-
यन्त्र के ऊपर सवालारव भी संख्या में लिखें। यन्त्र को लिखने के लिए
जॉय, वे साफ-सुधरे तथा
(दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र)

अविच्छिन्न होने चाहिए। यन्त्र
लिखने का कार्य प्रसिद्धि रक्त
निश्चित संख्या में करना
चाहिए। इस यन्त्र के लिखने
वाले को प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

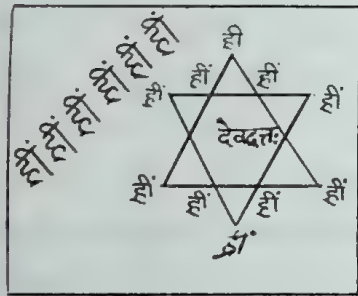
दुःस्वप्ननाशक यन्त्र -

बाईं ओर उदक्लिष्ट यन्त्र को
अष्टगंध द्वारा भोजन कर परिलिख
कर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि
से पूजन करें तथा रात को सोते
समय अपने सिंहाते रहने लें।

हं०	सं०	खं०	फं०
षं०	दं०	धं०	जं०
नं०	पं०	मं०	दं०
चं०	यं०	जं०	दं०

कैर हजलों का दीपना बन्द हो जायगा। यन्त्र प्रसिद्धि

(लक्ष्मी-प्राप्ति मन्त्र)



लक्ष्मी-प्राप्ति मन्त्र- बाँई और प्रदर्शित मन्त्र को अक्षरांशद्वारा ओजपत्र या लिखें। इस हेतु पहले एक परकोण घन्त्र का निर्माण करें, फिर उसके प्रत्येक कोण पर प्रत्येक कोणों के मध्यभाग में एक-एक 'ह्रीं' का लिखें तथा बाँई ओर को अलग निरदि रूप में ६ डींकार लगे। इसके बाद चाहें तो सम्पूर्ण घन्त्र को बाहर एक जुड़को-न से घेर दें अपना न करें।

उक्त विधि से मन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र के मध्य-भाग में जहाँ "देवदत्तः" लिखा है, वहाँ साधक को अपना नाम लिखना चाहिए।

तदुपरान्त - "ॐ श्री ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र का नीम लारव की सेवा में जप करें। जपके बाद दशांश शम आदि करके ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा उन्हें दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद निम्नप्रति घन्त्र को धूप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करना रहे तथा मन्त्र को अपनी जगती में रखे।

यस घन्त्र तथा मन्त्र जपके उत्तम से साधक को धन का लाभ होता रहता है। धन-हस्तार्थ की प्राप्ति हेतु लक्ष्मी-प्राप्ति में अनेक प्रकार के घन्त्र-मन्त्रों के उपयोग पाये जाते हैं, पर उन सबमें सरल तथा प्रभावकारी हैं। स्त्री-पुरुष दोनों ही इस घन्त्र-मन्त्र का साधन कर सकते हैं।

महा.

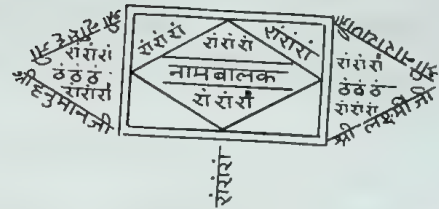
(होलदिली का मन्त्र)

म	ल	म	ल	क
ल	म	ल	क	म
म	ल	क	म	ल
ल	क	म	ल	म
क	म	ल	म	ल

होलदिली का मन्त्र - बाँई ओर ऊपर

उद्विग्न मन्त्र को लालचन्दन द्वारा काँसे की थाली में लिक्क लोवात की धूँध दे। फिर थाली को पानी से धोकर, उस पानी को स्नान कर लें। ऐसा चालीस दिनों तक करते रहते से होलदिली अर्थात् दिल की कमजोरी और चक्कराहट से छुटकारा मिल जाता है।

(बालरक्षा मन्त्र)



म ६७

बालरक्षा मन्त्र -

मंगलवार के दिन हनुमान जी का प्रणाम कर, ऊपर बाँई ओर उद्विग्न मन्त्र को पीपल के फले पर लिक्ककर युगल की धूँध दे, फिर उसमें डोरा लपेट कर तीन गौँठों बाँधो तथा प्रत्येक गौँठ को लगाते समय अंग लिखने मन्त्र का सात बार पाठ करें। उद्विग्न मन्त्र के मध्यस्थान में जहाँ 'नाम बालक' लिखा है, वहाँ बालक का नाम लिक्कना चाहिए। मन्त्र निम्नानुसार है -

"ॐ महावीर हनुमानवीर तेरे तरकस में मौ. मौ. लीर। शिंण। बाएँ शिंण दाहिने शिंण शिंण आगे होय। मचल गुसई सखा काया अंग न होय। शं. रा. रा. दी बाँध के वारे धूँध में भक्षण। इस काया को दलदिड काये तें हनुमान तेरी आन।" - यह मन्त्र हनुमान जी की प्रजा करके, मंगलवार के दिन १०८ बार पाठना चाहिए, सात मंगलवारों तक निरन्तर जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे उधेरा जा सकता है। उधेराते समय मन्त्र को बालक की बाँई थाली में बाँध देने से नजर तथा शन-उनादि दोष दूर होते हैं।

पन्ना २४२

ज्वरनाशक पत्र - नीचे दी गई आठ छंदशित मन्त्र को अष्ट-गंधा द्वारा भोजनपत्र के ऊपर लिखकर, गौंर के तालीश में भरे

१	८	२	७
६	३	५	४
७	२	८	१
४	५	३	६

(ज्वर-नाशक मन्त्र)

दूर हो जाता है। ४ ५ दिन बाद तक यदि ज्वर न आये तो मन्त्र को खोल कर किसी जालसाय में छुवा दिया कर दे।

मनोभिलाषा पूरक पत्र - नीचे दी गई आठ छंदशित मन्त्र को किसी पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर, सीसे की कलम द्वारा धृग्वीके

१	५	१	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

(मनोभिलाषा पूरक मन्त्र)

ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखने से मनोभिलाषा हासों की पूर्ति होती है। जलित १५ १५ से पंच-लक्षण का निगम बगालना चाहिए।

गहरा

द्वैत-विजयकर मन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित मन्त्र को अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर धूप दें। फिर इसे नाँव के

१	२५१	२३१	२३१
३१॥	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८	२४॥	१६॥
२६१	१॥	५॥	४॥

ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजा में बाँध लें। इसके बाद जुआ खेलने बैठें तो उसमें कभी भी हार नहीं होगी, हमेशा विजय ही मिलती है। इस मन्त्र को हर समय बाँधे रहना उचित नहीं है, जिस

दिन जुआ खेलना हो उसीदिन नया पत्र बनाकर बाँधें, कि पानी में बहों

पुत्र-प्रदाता मन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित

०८	०१	३४	२६
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर नाँव के ताबीज में भर कर धूप दें। फिर इसे अपनी दाँई भुजा

में बाँध लें। अथवा कण्ठ में धारण करें। '३' नामो भगवत वासुदेवाय - इस मन्त्र का विष्णु १०८ बार जप करें तो बच्चा - स्त्री को पुत्र का लाभ होता है।

चौतीसा यन्त्र - नीचे बाँई ओर उदशित यन्त्र को सूर्यगृहण, चन्द्रगृहण अथवा दीपावली की रात्रि में सफेद कागज अथवा मोलपत्र के ऊपर अनार की कालम से, अष्टरंग्य द्वारा ३४ बार लिखें। इस विधि से यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

६	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

यदि यन्त्र को शीघ्र सिद्ध करना हो और गृहण-पर्वणिका दीपावली तथा वहरना कठिन प्रतीत हो तो उपर्युक्त प्रकार से शनिवार के दिन १०८ यन्त्र लिखें। यन्त्र-लेखन की छिपा घोड़ीघाट पर बैठ का कानी चाहिए तथा राफ-एक यन्त्र को लिखकर घोड़ीघाट पर भरे हुए कुंड के पानी में डालते जाँचें कि उन यन्त्रों को इकट्ठा करके (सभी १०८ यन्त्र एकट्ठा करके) बहते हुए पानी में प्रवाहित कर दें। फिर मोलपत्रों के ऊपर पुनः उक्त विधि से यन्त्र लिखकर उन्हें धूप दे तथा रोगी के गले में बाँध दें।

इस यन्त्र को ताबीज में भर कर, गले में धारण किए रहना चाहिए तथा पुतिदिन जूगल भी धूप देते रहना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से विषम ज्वर दूर होता है तथा शूल, भूत, जेत, पिशाच, गृह एवं सर्प आदि के मय से मुक्ति मिलती है, विपत्ति नष्ट होती है तथा चोर का भयभीत नहीं रहता।

सूतवत्साः दोष निवारण मन्त्र- जिस स्त्री के सन्तानें होकर मर जाती हैं अथवा गर्भ से ही मरी हुई संतान जन्म लेती हैं, उसे 'सूतवत्सा' कहा जाता है। इस दोष के निवारणार्थ आगे लिखे मन्त्र का जप करने तथा ५४ के मन्त्र को ध्याण करने से इच्छित लाभ होता है।

१५	२०	१६
२२	१८	१४
१७	१६	२१

(सूतवत्सा दोष निवारण मन्त्र)

५४ मन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर उद्विहित है। इसे भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा लिप्यकर, तैयार के ताबीज में भर कर गूगल की धूप देकर तथा गर्भ के पाँचवें महीने गर्भिणी-स्त्री की कमर में धारण करा दें। जन्म बालक का जन्म हो जाय, तब ताबीज को कन्नी की कमर से खोल कर नवजात शिशु के कण्ठ में धारण करा देना चाहिए। स्मृणीय है कि भोजपत्र के ऊपर केवल मन्त्र को ही नहीं लिखना चाहिए, अपितु उसके साथ मन्त्र को भी लिखना चाहिए, जो निम्नानुसार है-

"ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ महादुर्गे नाशाय नाशाय हन हन पंच पंच मघ मघ बल्य बल्य हिंसान् महावष्णी हवेण इमं बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविने कुरु-कुरु ह्यं श्रीं ॐ ॐ कट स्वाहा।"

यदि गर्भिणी स्त्री इस मन्त्र का निज ५ बार जप भी कर लिया करे तो अद्भुतम् रहेगा। यदि जप न कर सके तो भी मन्त्र सहित मन्त्र को ध्याण करना ही पर्याप्त रहता है।

यन्त्र
३९८

डब्बा रोग निवारक यन्त्र-

मार्घ निम्नानुसार है -

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

राम
राम
राम
राम

राम
राम
राम
राम

राम
राम
राम
राम

राम
राम
राम
राम

(चौंतीसा यन्त्र)

बाँई ओर उदगिति 'चौंतीसा यन्त्र' डब्बा-रोग को दूर करता है। इसकी विमर्षण

घीपल के पत्ते अथवा भोजपत्र के ऊपर, लाल-चन्दन द्वारा अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। तत्पश्चात् धूप देकर यन्त्र को पानी से धोकर, वह पानी बच्चे की माता को पिलादे। तदुपरांत दूसरा यन्त्र बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन तथा चौथा तीसरे दिन धोकर माता के दूध के साथ बच्चे को पिलादे। फिर सवा कण्ठे का चूरमा अथवा मीठे चावल बना कर, पहले कोड़े से किसी स्नायु को देकर ढँटवा दे तथा स्वर्ण भी सेवन करे।

यन्त्र का जो स्वरूप उदगिति है, उसी के अनुसार तर्जान करे। यन्त्र के नीचे 'राम-राम' शब्द को चार-चार की संख्या में, ४ पंक्तियों में यन्त्र के साथ ही लिखना चाहिए।

इसी यन्त्र को आग है भोजपत्र के ऊपर लालचन्दन द्वारा अनार की कलम से लिख कर तथा धूप देकर, एक छोटे से कपड़े में बाँध कर, बच्चे के गले में लटका देना चाहिए तथा उसका हाथ लगवा कर पक्षियों को दाना डलवा देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे को होने वाला डब्बा रोग दूर होता है।

(गर्म-स्थिति कारक २० का पन्ना)

१७	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१६	२२

गर्म-स्थिति कारक पन्ना- जिन दिनों के गर्म नहीं रहता, उनके लिए यह पन्ना लिखा है। इसकी प्रयोग-विधि निम्नानुसार है-

अष्ट गंध द्वारा, गंध पत्र के अष्ट, अक्षर की कालम से एक चतुष्कोण पन्ना खींच कर उसके मध्य में नीचे आड़ी लम्बाई तिरछी रेखाएँ खींचो, ताकि कोणकों की कुल संख्या १६ हो जाए। इन कोणकों में क्रमशः १७, २४, २७; ६, ३, २१, २०; २३, १८, ८, १ एवं ४, ५, १६, २२ - इन अंकों को स्थापित करो। इस प्रकार ५० का अंक तैयार हो जाएगा।

पन्ना तैयार हो जाने पर उसे नीचे के नाबीज में भूदे तथा गुग्गुल की धूली देकर सूत्री अपनी बाईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर ले।

इस पन्ना को धारण करते से गर्म ठहराएँ। जब गर्म ठहर जाय तथा सन्तान का जन्म हो जाय, तब इस पन्ना को भुजा अथवा कण्ठ में से खोल कर किसी नदी अथवा तालाब आदि के जल में डुबा दिया कर देना चाहिए। इस पन्ना के धारण करने से जन्मा-सूत्री भी गर्म-धारण कालेती है, अन्तों की तो बात ही क्या है।

भुजा अथवा कण्ठ में से खोल कर किसी नदी अथवा तालाब आदि के जल में डुबा दिया कर देना चाहिए। इस पन्ना के धारण करने से जन्मा-सूत्री भी गर्म-धारण कालेती है, अन्तों की तो बात ही क्या है।

(प्रेत-बाधा नाशक यन्त्र)

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

तथा इस यन्त्र से अभिर्वात। जल रोगी को पिलाये तथा उसके सम्पूर्ण शरीर पर छिड़करी दे। यन्त्र बंधन रहते दे। प्रातः प्रयोग दो बार करे।

प्रेत-बाधा-नाशक यन्त्र- मंगलवार के दिन, भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा, चमेली अथवा अनार की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र खींचे। कि। उसके भीतर तीन आड़ी तथा तीन खड़ी रेखाएँ खींचे। इस प्रकार १६ कोष्ठों वाला यन्त्र तैयार हो जाएगा। यह यन्त्र प्रेत-बाधा को दूर करने वाला है।

उक्त १६ कोष्ठों वाले यन्त्र में अमरा, ऊपरी वर्किस से -- २४, ३१, २, ७ ; ६, ३, २८, २७ ; ३०, २५, ८, १ तथा ४, ५, २६, २९ -- इन अंकों को स्थापित करे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँट और के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

जिस व्यक्ति को प्रेत-बाधा लगी हो, उसके लिए इस यन्त्र को तैयार करे तथा यन्त्र लेवने पर। उसको गंध, पुष्पादि से पूजन करे। मंगल की छूट देकर रोजीके गले में बाँध दे। भोजको कण्ठ में बाँधते समय गांधत्री मन्त्र "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्" -- का उच्चारण करे।

404
252

पुनः प्रदाता यन्त्र-

नीचे प्रदाता ७२ को प्र. ३ को अष्ट
गंध द्वारा, उत्तर के कलम से, गोपान्न के ऊपर लिख कर, ताँबे के

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२६	८	१
४	५	३०	३३

ताबीज में भरे,
फिर उसे गुग्गुलु
की धूप देकर
इन्दी अथवा
बाँई युजा अथवा
कण्ड में चारण
करले।
जिन स्थितियों के
केवल लड़कियाँ
ही होती हैं, उन्हें
यह यन्त्र अनुरोध

बगैर। इस के प्रभाव से लड़के का जन्म होता है। लड़का हो जाने
पर यन्त्र को उतार कर तथा धूप देकर किसी जलशय में प्रवासित करने

भय-विनाशन यन्त्र-

किसी शुभ दिन तथा शुभ
महर्षि में प्रातः ५ से ८ बजे के बीच आरंभ द्वारा

गोपान्न के
ऊपर बाँई
और उदकिरी
यन्त्र को लिख
कर, इसका धूप
दीप, पुष्प आदि
से पूजन कर।
फिर अपने
हाथ के सामने
(एक हाथ गृह)
गड्ढा खोद कर
उसमें यन्त्र को
गाढ़ दे। स्थान

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

अपवित्र न होने कहे। इससे चोर, भूत-प्रेत तथा सर्प भय दूर होता है।

गहरा

(वायु शूल नाशक यन्त्र)

३२	३६	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

है, वहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसके बाद यन्त्र को शत्रु के घर की चौखट के नीचे अपना घर के अँगन में या आने-जाने के मार्ग में गाढ़ देंगे। शत्रु को दुःख प्राप्त होना है।

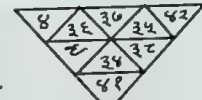
वायु शूल नाशक यन्त्र- बाँई ओर छद'वर्ति यन्त्र को

अष्टगण द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के ताबीज में भर, गुग्गुलु की धूल दे। तापश्चात् पुरुष भोगी इसे अपनी दाँई भुजा में लपटा स्त्री-रोगी बाँई भुजा में धारण करे अथवा स्त्री-पुरुष में के कोई भी इसे अपने कण्ठ में भी धारण कर सकता है।

← इस यन्त्र को धारण करने से वायु शूल रोग नष्ट होता है, जब रोग पूरी तरह दूर हो जाय, तब ताबीज को रमोलकर, यन्त्र को किसी नदी अथवा जलाशय में प्रवाहित कर देना चाहिए।

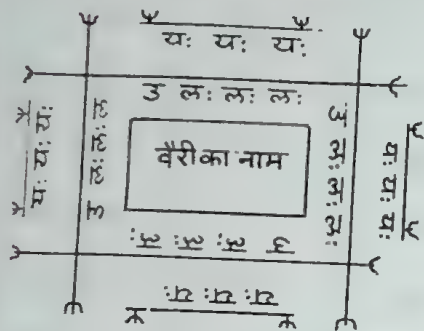
शत्रु को दुखी करने का यन्त्र- नीचे दाँई ओर छद'वर्ति

यन्त्र को वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर लिखे तथा पंच के नीचे शत्रु का नाम लिखकर, गुग्गुलु की धूल दे, कि १०८ बार तिल लिपि यन्त्र पढ़ें -



"ॐ श्री श्री विष्णु भैरव वीरं मम शत्रुं अमुकं नाम
पीडां कुरु कुरु स्वाहा।" इस यन्त्र में जहाँ 'अमुकं नाम' शब्द आया

(शत्रु-नाशक यन्त्र)



शत्रु-नाशक यन्त्र- रविवार के दिन प्रमथान धूमि से सुविप्रवर्क लाये गए कोयले तथा हरताल को घाती में चोल लें। फिर उसके द्वारा बर्फ रोटी के छत्र बाईं ओर उद्वर्गित यन्त्र को लिपक कर, बनावना तथा गुग्गुलु को अग्नि पर रान कर, यन्त्र को धूनी दें तथा निम्न लिखित मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें -

“ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं” प्रमथान वीराध अमुकस्य नाशाय नाशाय विध्वंसय स्वाहा।”
उक्त मन्त्र में 'जहाँ अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साधक शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। उद्वर्गित यन्त्र चित्र में जहाँ 'वैरी का नाम' लिखा है, वहाँ शत्रु के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र- जप करने के बाद यन्त्र को प्रमथान से अथवा मार्ग के चौराहे पर गड़ दें तो शत्रु का बनावना तीन महीने के भीतर ही हो जाता है।

राजा-पूजा वशीकरण यन्त्र- बाईं ओर उद्वर्गित यन्त्र को अष्टर्षभ (राजा-पूजा वशीकरण यन्त्र) द्वारा मोलपत्र के ऊपर लिपक कर आसन के नीचे गड़ देने से राजा-पूजा वशीभूत होते हैं। उद्वर्गित यन्त्र में जहाँ 'देव दत्त' लिखा है, वहाँ साधक व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यहाँ राजा तथा पूजा शब्द का नापार्थक्य यह है कि चाहे राजा या राजकर्मचारी हो अथवा कोई पुजारी हो, इनमें से किसी भी वशीभूत करना है, उसके नाम से यन्त्र को तैयार करके, उसके बैठने के स्थान के नीचे गड़ देना चाहिए। इसके वह वशीभूत हो जाता है।

५५	क्रीं	५५
ह्रीं ह्रीं देवदत्तयो द्विश्च ये		
५५	क्रीं	५५

25X

वशीकरण मन्त्र - नीचे उद्विग्न मन्त्र को (कॉरिओर) केसर लम्बा कस्तूरी द्वारा एक सफेद रंग के सूती रुखवा रेखामी कपड़े पर लिखें। उद्विग्न मन्त्र में नीचे जहाँ 'अमुकी अमुका के वश्य हो' - लिखा है, वहाँ साधक-स्त्री के साधक साधक पुरुष का नाम लिखना चाहिए।

३	६	२२
२१	३१	३
ज	२४	६

स्व स्वा आ स्व

३	६	२१
२१	३१	३

४४४ ४४४४४६३ स्व स्व अण्व २१ ६६ ६ स्थानी स्वा
 ४४४४४४४४६६३ ज जी गी गी थी डा स्व सहागार
 ३ स्व दा अ २० दी स्व द सबागीमि

३	३३	६६
आ	३३	१८

अनुकी अनुका के वश्य हो

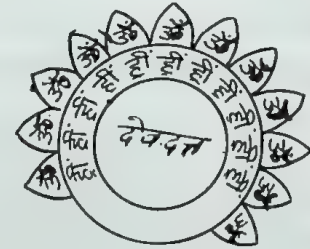
(संश्लेषण मन्त्र)

होता है। यन्त्र के साथ जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ यन्त्र-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

उष्ण पट्टा को लिखने के बाद कक्षों को लपेट कर बत्तीबना-
ले तथा उष्ण बत्ती को जलाये। उसकी वार्ष जिस साधन-हनी को
खिलाई जाती है, वह सभ्यता के समीप हो जाती है।

गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र - दाईं ओर पुदगिणि यन्त्र को छल नक्षत्र वाले रविवार के दिन अष्टगंध का दा भोजयन्त्र पर लिखकर ताबीज में भर का। पुगुल की छू मदे कि उसे स्त्री की दाईं पुजा में बाँध दे।

इस घन्ट के उमाव से बाँकरी
गर्भवती होकर, पुनः कौ जन्म देती है। यदि
पुष्प नल्ल के स्पर्श में इस घन्ट को १०८
बार पान के ऊपर दूध से लिखकर बाँक
री को रिवलाया जाय तो पुनः उत्पन्न



(गर्म-स्थिति कारक यन्त्र)

(स्वप्न निवारक पन्ना)

मं	हं	जं	चं
हं	नं	जं	वं
वं	जं	वं	हं
मं	हं	जं	वं

← **स्वप्न निवारक पन्ना** - बाईं ओर ऊपर उद्विगति पन्ना को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के टुकड़े पर लिखें, तदुपरांत उसे गुग्गुलु की धूती दे' एवं रात को सोते समय अपने सिरहाने बाँध लें तो स्वप्न आना बन्द हो जाता है। किंतु लोगों को स्वप्न अधिक आते हैं और वे डरावने अथवा अशुभ लगते हैं, उद्दे

शपन्ना का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जब तक ऐसे स्वप्नों का आना बंद न हो, तब तक प्रतिदिन नया पन्ना लिखकर प्रयोग में लाना चाहिए।

(वशीकरण पन्ना)

हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी

वशीकरण पन्ना - बाईं ओर नीचे उद्विगति पन्ना को भोजपत्र पर लिखें। लिखने के लिए अष्टगंध का प्रयोग करें। कि०- "ॐ नमो नृसिंहाय सर्व दुष्ट विनाशाय सर्वजन मोहनाय सर्व राजपंचवश्यं कुरु कुर्व स्वाहा" - इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में जाप करें तथा इस कुम को १०० दिनों तक चालू रहें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। कि० मन्त्र है अर्थात् द्विषता विभूति ७ बाणमस्तक पर लगाने से वशीकरण होता है।

(मनवांछित फल दाता पन्ना)

बं	बं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

मनवांछित फल दाता पन्ना - ऊपर उद्विगति पन्ना को लालचन्दन द्वारा बेलपत्र के ऊपर १०८ बार लिखें। प्रत्येक पन्ना को लिखने के लिए बेलपत्र अलग-अलग लेने चाहिए। पन्ना लिखने के बाद उन बेलपत्रों को शिवजी के ऊपर चढ़ा दें। इस क्रिया को सावन के महीने में ३० दिनों तक करना चाहिए तथा प्रत्येक सोमवार को पुनरावृत्त करना चाहिए। प्रतिदिन "ॐ नमः शिवाय" - इस मन्त्र का ४४४४ बार जाप करने से सभी मनोमिलावटें पूरी होती हैं।

गये हुए मनुष्य को लौटाने का यन्त्र- यदि कोई



(लौटाने का यन्त्र)

तबतक प्रतिदिन यन्त्र को चारों ओर से घुंघुंसाकर २१ उल्टे चक्का लगाते रहना चाहिए। यदि प्रतिदिन नया यन्त्र लिखा जाय तो सर्वोत्तम रहता है। इस यन्त्र के प्रभाव से रुठ कर गया हुआ व्यक्ति शीघ्र ही वापिस घर लौट आता है।

घर से रुठ कर चला गया हो तो बाँई ओर उदधिति यन्त्र को भोजन के ऊपर कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा लिखें।

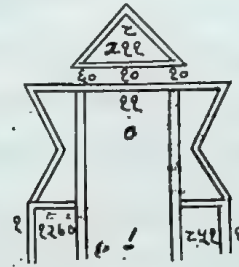
लेखनोपरांत गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यन्त्र का पूजन करें, फिर उसे चारों ओर से बाँझ कर चारों ओर उल्टा चलायें।

जबतक रुठा हुआ व्यक्ति

घर लौटकर न आया, तबतक

प्रेतवशीकरण यन्त्र- नीचे उदधिति यन्त्र

को काली स्थाही द्वारा सफेद कपड़े पर लिखें। फिर उस कपड़े की बत्ती बजाकर जलायें तो प्रेत वशीभूत हो जाता है।



बत्ती बजाते से पहले यन्त्र का गंध, पुष्प आदि से विधिपूर्वक पूजा कालेना चाहिए तथा गुग्गुलु की धूप देनी चाहिए।

यन्त्र लेखन, पूजन तथा जलाते आदि की क्रियाएँ आधी रात के समय करनी चाहिए।

(प्रयोग सिद्धि मन्त्र)

३६	४३	२	७
६	३	४०	३६
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

(प्रयोग का नाम)

प्रयोग सिद्धि मन्त्र-

बाँई ओर प्रदर्शित मन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर सवालाख की संख्या में लिखने से प्रयोग सिद्ध होता है। जिस प्रयोग को सिद्ध करने की कामना से मन्त्र को लिखा जाय, उसके नाम मन्त्र के साथ ही हरकार लिखना चाहिए।

मन्त्र लिखने की विधि यह है कि प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो, किसी पवित्र तथा सकान्त-स्थान में बैठकर सर्वप्रथम शिवदेव का स्मरण एवं प्रजन करने के उपरान्त यह मन्त्र को लिखना आरंभ करना चाहिए और प्रसीद्धि मन्त्र-लेखन की एक संख्या निश्चित कालेनी चाहिए उसी के अनुसार मन्त्र-लेखन कार्य करना चाहिए।

जब तक पूरे सवालाख मन्त्रों का लेखन-कार्य सम्पूर्ण न हो जाय तब तक पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

घँई की पीड़ा का मन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित मन्त्र को रविवार के दिन कागज के ऊपर काली-स्फाटी से अथवा भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर कमर में बाँधने से घँई की पीड़ा दूर होती है।

		१		
	६			
२	८	१०	१	६
	७			
		३		



(नष्ट न लगने का यन्त्र)

७२	८१	३३	४२
८८	८०	८	११
१५	३७	४०	१०
४५	७७	८	१

गर कर कण्ड अपना गुण में धारण करे तो इच्छित अनिलाकारें पूर्ण होती हैं।

बालक को दीठ (नष्ट) न लगने का यन्त्र - बौद्ध और उदरि-
त यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवा कर चपाचिप्पि पूजन करें। कि उस यन्त्र
उत्पत्ति ताम्रपत्र को बालक के गले में बाँध दें। यदि ताम्रपत्र पर
खुदने का साधन न हो तो उस स्थिति में यन्त्र को जल में गंधा
अथवा केसर द्वारा भोजन पर लिख कर नष्ट। उस यन्त्र लिखित
भोजन को गले के तालीज में भर कर, पूजन नष्टा धूपादि देने
की क्रिया सम्पन्न करके बालक के गले में वह तालीज बाँध देना
चाहिए। इससे बालक को दीठ अर्थात् किसी की नष्ट नही
लगती।

षट्कोण यन्त्र - किसी शुभ
मुहूर्त में 'शत' काल ६ से ८ बजे के बीच
भोजन के ऊपर, अष्टगंध का ॥ बौद्ध
ओः उदरिषि षट्कोण यन्त्र लिखकर
उसका विधिमान पूजन करें। कि इसे
गले अपना अष्टपातु के तालीज में

षट्कोण यन्त्र



(सर्वार्थ साधन यन्त्र)

६७	७३	२	८
७	३	७१	६६
७२	६८	६	१
४	६	६८	७२

मार्ग से गाने देने से उसका उच्चारण होता है और वह इधर-उधर भागता जाता है।

सर्वार्थ साधन यन्त्र-

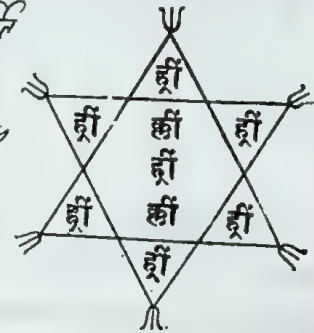
बाँई ओर उदरिती यन्त्र को सोमवार सुबह अथवा रविवार के दिन प्रातः काल १० बजे से पहले लिखना आरंभ करें तथा जब यन्त्र लिखा जायुं के तब उसका गंध, पुष्पादौ दीप आदि से पूजन कर, किसी ताबीज से भू कर, अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें।

यन्त्र को लिखने के लिए सिद्ध, कुं कुम तथा कस्तूरी के मिश्रण का उद्देश्य करना चाहिए तथा लिखने का कार्य ओजस्य के ऊपर करना चाहिए। यन्त्र लिखित ओजस्य को किसी लोहे के पात्र में रखने के बाद विधिवात् पूजन करना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करते से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

शत्रु उच्चाटन यन्त्र-

बाँई ओर उदरिती यन्त्र को धारण के रहते से बड़े-बड़े के पत्ते पर अथवा शमशान के कोमले से शमशानवात् (कफन) के ऊपर लिखकर गंध, पुष्पादि से पूजन कर शत्रु के आवागमन वाले



(सुखदाता यन्त्र)

५६	६६	३	७
६	३	६३	६२
६५	६०	८	१
४	५	६१	६४

इहे तो साधक का कल्याण होता है तथा मनोमिलावाएँ पूरी होती हैं।

सुखदाता यन्त्र-

बाँई ओर उदशित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन अथवा कागज के ऊपर लिख कर घर में रखने से हर प्रकार का सुख प्राप्त होता है।

यन्त्र को लिखने का कार्य किसी शुभ दिन में, स्थानादि से निवृत्त हो, प्रातः काल के समय करना चाहिए। यन्त्र को लिख जाने पर उसका गंध-पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। कि उसे घर से किसी स्थान पर स्थापित कर देना चाहिए तथा उसे प्रतिदिन धूप देते रहना चाहिए।

कल्याणकर यन्त्र-

बाँई ओर उदशित यन्त्र को एक भोजन के टुकड़े पर अष्टगंध से लिखकर गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजन करे तथा उसके बाद "ॐ नमः शिवाय" इह मन्त्र का नित्य १ माला जप काल

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
न	शि	य	मः	वा	ॐ
य	मः	वा	न	शि	ॐ
वा	न	शि	य	मः	ॐ
शि	य	मः	वा	न	ॐ
मः	वा	न	शि	य	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

(रक्त-पित्त नाशक यन्त्र)

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४६	८	१
४	५	५०	५३

यन्त्र को लिखने के बाद गन्ध, पुष्पादि से पूजा कर, धूप-दीप दे, लौके के ताबीज में भरकर अपनी जुला अथवा कण्ठ में धारण करे तो साधन-व्यक्ति आकर्षित होता है।

रक्तपित्त रोग-नाशक यन्त्र. बाँई ओर उदशिति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिखकर, लौके के ताबीज में भरकर गुग्गुलु की धूप दे। फिर इसे सूखी बाँई जुला में तथा पुरुष बाँई जुला में धारण करे अथवा दोनों में से कोई भी कंठ में धारण करे तो रक्तपित्त रोग दूर होता है। जब रोग घरी तरह दूर होगा, तब यन्त्र को किसी नदी अथवा जलाशय में डुबा दित का देना चाहिए।

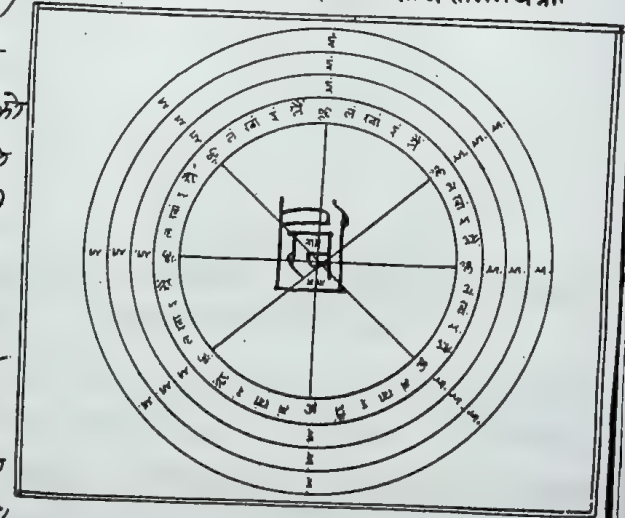
आकर्षण यन्त्र. बाँई ओर उदशिति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिखे। इस यन्त्र के बाहरी वृत्त में जो मन्त्र लिखे हैं, उसमें जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ 'साधन-व्यक्ति' के नाम को लिखना चाहिए।



लिजारी ज्वर नाशक मन्त्र- नीचे बाँई ओर उदवर्ति मन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, पूजन करने के बाद, ताँबे के तामील में भर कर, गुग्गुलु की धूप दे। तदुपरान्त जिसे लिजारी (तीसरे दिन आने वाला बुखार) ज्वर आता हो, वह यदि स्त्री हो तो बाँई भुजा में और पुरुष हो तो दाँई भुजा में बाँध ले। अथवा गले में बाँध दे। इस मन्त्र की चार्ण करने से लिजारी ज्वर दूर हो जाता है। जब दो पारी तक ज्वर का आना बन्द हो जाय, तब इस मन्त्र को दोगी की भुजा अथवा गले से खोलकर कि सीनदी अथवा जलाशय में बहा देना चाहिए।

१४२	१४६	२	७
६	३	१४६	१४५
१४८	१४७	८	१
४	५	१४४	१४७

॥ दिव्य गति सेना जिह्वा और क्रोध संभन यंत्र ॥



स्तंभ यंत्र- दाँई ओर उदवर्ति मन्त्र को अष्टगंध

से भोजपत्र लिखकर, धूप-दीप दे, दाँई भुजा में बाँधने से दिव्य गति, सेना जिह्वा तथा क्रोध संभन होता है। मन्त्र के मध्य में साधु-व्यक्ति का नाम लिखें।

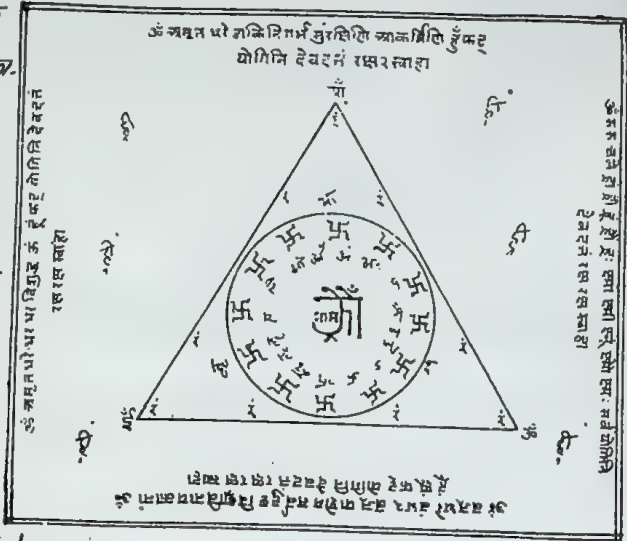
एकान्त-ज्वर-नाशक यन्त्र- दौरे और छदशिति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, नाँव के तामीज में भरकर, गुग्गुल की धूप दे। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति को एकतरा बुखार (एक दिन की नम्रा देकर आनेवाला) ज्वर आता हो, उसकी भुजा अथवा गले में बाँध दे। इस यन्त्र को धारण करने से तिजारी ज्वर दूर हो जाता है। जब दो घड़ी तक ज्वर न आये, तब यन्त्र को

६२	६६	२	७
६	३	६६	६५
६२	६३	२	१
४	५	६४	६७

रोगी की भुजा में से खोल कर, किसी नदी अथवा जल-शाय में उतारित कर देना चाहिए।

॥ शाकिनी भय हरण यंत्रम् ॥

शाकिनी भयहरण यन्त्र- दौरे और छदशिति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखो। छदशिति यन्त्र में जहाँ-जहाँ



देवदत्त लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र को गुग्गुल की धूप देकर गले में बाँध देने से शाकिनी का भय दूर होता है।

विद्या-बुद्धि प्रदाता यन्त्र-

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	८	१४
१०	५	४	५

बाँई ओर प्रदक्षिण यन्त्र को किसी भी षष्ठ की चतुर्थी तिथि से लिखना आरम्भ करें। यन्त्र को अष्ट गण द्वारा भोजयन्त्र पर लिखा जाना चाहिए। प्रति दिन एक निश्चित संख्या में यन्त्र लिखने का नियम बना लेना चाहिए। वह संख्या कुछ भी हो सकती है। एक भोजयन्त्र पर लिखित यन्त्र को तालीज में भर कर बुजा सपका कण्ठ में धारण कर लेना चाहिए।

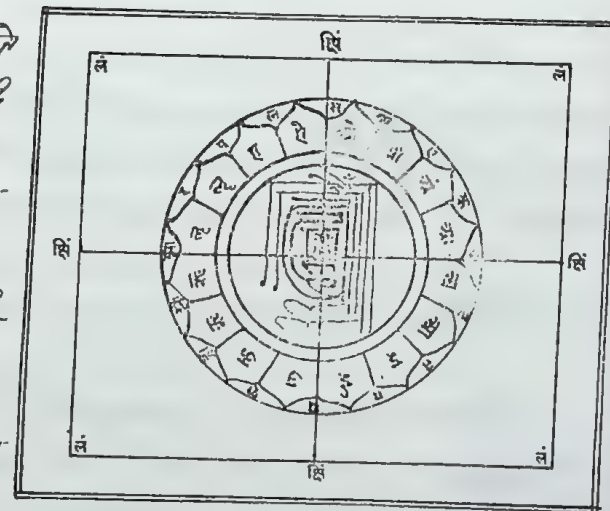
इस यन्त्र को प्रतिदिन लिखते रहने से विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

सर्वरक्षायन्त्र-

बाँई ओर प्रदक्षिण यन्त्र को अष्ट गण द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिखकर गण, पुष्प, धूप दीप आदि से पूजन करें। बुद्ध परान्तर्गते

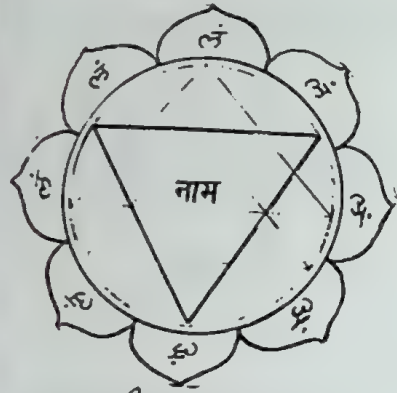
के तालीज में भर कर दाँई बुजा सपका कण्ठ में धारण कराते। इस यन्त्र को धारण करने से ६१ प्रकार के भय, कष्ट तथा संकटों से रक्षा होती है।

॥सर्व रक्षा यन्त्र॥



वाणी-स्तम्भन यन्त्र-

शिला-सम्पुट (पत्थर की दो पट्टियाँ) के बीच केशर आदि पीले पुष्प द्वारा एक त्रिकोण-यन्त्र लिख कर, उसे गोलाकार-चक्र से वेष्टित करें। फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें, उन कमल-दलों के भीतर 'लं' कीजो को स्थापित करें तथा त्रिकोण के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।



(वाणी-स्तम्भन यन्त्र)

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन कर, खीर तथा गुड़ मिश्रित पदार्थों से एक ब्राह्मण को भोजन कराके, उक्त यन्त्र को पृथ्वी के भीतर गड़ा खोद कर गाढ़ दे तथा ऊष्ण से मिट्टी भर दें। जब मिट्टी भर जाय तो उस स्थान को ऊष्ण से घेर लें ताकि किसी को कुछ पता न चले।

इस यन्त्र के प्रभाव से व्यवहार, विवाद, मुकद्दमा, ब्राह्मण-चर्चा आदि में उत्तिवादी का मुख स्तम्भित हो जाता है। अर्थात् वह कुछ भी लगती याता तथा साधक को विजय प्राप्त होती है।

इस यन्त्र का लेखन-कार्य किसी शुभ मुहूर्त में आरंभ करना चाहिए तथा समय रात: ६ से १० बजे के मध्य का रहे। शीश-स्नानादि से तैयार हो, पवित्र आसन पर बैठ कर, शरीर दिशा की ओर मुँह करके यन्त्र लिखना आरम्भ करना चाहिए। यन्त्र-साधन की सभी क्रियाएँ एक ही स्थान में करना आवश्यक है।

दिव्य-स्तम्भन यन्त्र-

नीचे काँई ओर उद्विगति यन्त्र को कुंडल तथा गोरोचन द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिख कर, शराव-सम्पुट (मिट्टी के दो शकोरों के बीच) रखे तथा पुष्प, धूप, दीप आदि से व्यक्ति पूर्वक पूजन करें।

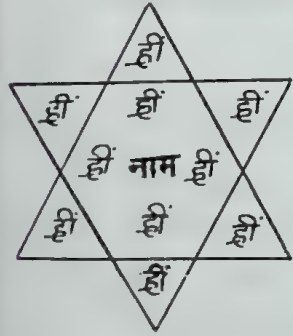
दूसरे दिन यन्त्र को शराव-सम्पुट से बाहर निकाल कर अपनी शिरवा अर्धति-चौरी में बाँध लें तथा मौन रह कर कल का चिन्तन करें।

इस यन्त्र के मध्य में साधक-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यह यन्त्र हर प्रकार के स्तम्भन-कार्य में विशेष फलदायक कहा गया है। इसका निर्माण किसी एकान्त स्थान में तथा शुभमुहूर्त में

आरंभ करना चाहिए।

किसी व्यक्ति की गति, मति, वाणी, बुद्धि आदि को स्तम्भित कर देने की क्रिया को 'स्तम्भन' कहा जाता है। इस यन्त्र के प्रयोग से साधक-व्यक्ति को इच्छित क्रिया-कलापों को स्तम्भित किया जा सकता है।



(दिव्य स्तम्भन यन्त्र)

आकर्षण यन्त्र-

नीचे उद्विगति यन्त्र को अनार की अथवा चमेली की कलम से बहेड़े के पत्ते पर आमने-सामने लिख कर, पुष्प, धूप, दीप, गंध आदि से पूजा करें, तदुपरान्त इसे पृथ्वी में गाढ़ कर, ऊपर से मिट्टी डाल दें।

इस यन्त्र का साधन जिस व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाता है, वह स्वयं ही आकर्षित होकर साधक के पास शीघ्र चला आता है। इस यन्त्र को बड़ा प्रभावकारी बताया गया है।



(आकर्षण यन्त्र)

आधासीसी नाशक यन्त्र-

काली स्थायी से लिखे तथा उसके चारों ओर ५३ दोरी-दोरी डेरवाएँ सींचें। फिर यन्त्र के बीच में चार कोष्ठक बनाये और उनमें क्रमशः ५२, ४२, ३११ तथा ६०-इन अंकों को लिखें। यन्त्र के निम्न भाग में "१४ यन्त्र" बह लिखा जाय। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में उदाहरित किया गया है।

५३	४२
३११	६०

१४ यन्त्र

(आधासीसी नाशक यन्त्र)

समय से होता आरम्भ होता है तथा ज्यों-ज्यों सूर्य चला जाता है, दर्द में वृद्धि होती जाती जाती है। सूर्यास्त के समय बंद हो जाता है।

यन्त्र को लिखने के बाद कागज को मोड़ दे तथा उसे संकेत एवं काले धागे (डोरे) से बाँध कर धूप दें। तदुपरान्त उसे रोगी के सिर के जिस भाग में दर्द हो, उसी ओर के कान में अथवा सिर के बालों में सूर्योदय से पहले ही 'महावीर बजरंगबली' का नाम लेकर बाँध दें।

इस यन्त्र को जिस दिन बाँधा जाएगा, उस दिन तो कुछ दर्द रहेगा परन्तु दूसरे ही दिन से दर्द रुक दम बंद हो जाएगा।

स्मरणीय है कि आधासीसी का दर्द आपने सिर में अर्थात् सिर के दाँये अथवा बाँये भाग में होता है। यह दर्द सूर्योदय के

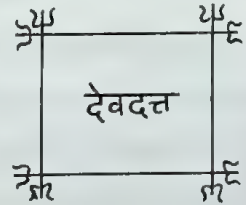
रे	२५	२५	ही
ही	२५	ही	२५
२५२	२५२	२५२	२५२
ही	ही	ही	ही
श्री श्री श्री श्री श्री	नाम		

मसान-भय-नाशक यन्त्र- बाँई ओर उदशित यन्त्र को किसी शुभ जड़ी में अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिख कर विधिपूर्वक पूजन करें। फिर उसे ताँबे आदि के तालीज में भर कर उस बालक के गले में बाँध दे, जिसे मसान लगता हो।

इस यन्त्र के निचले भाग में बाँई ओर जहाँ नाम लिखा हुआ उदशित किया गया है, उस स्थान पर बेगी-बालक का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से मसान हट जाता है। जब मसान हट जाय, तब उसके १५ दिन बाद इस यन्त्र को बालक के गले से खोल कर तब्या गुग्गुलु की धूप देकर, किसी नदी आदि में उवाहित कर देना चाहिए।

विरोधकारक यन्त्र- मेढ़ा के रक्त में ब्रह्मशान के कोयले को मिलाकर, ब्रह्मशान के कपड़े (कफन) के ऊपर कोयले के पंख की कलम से बाँई ओर उदशित यन्त्र को लिखकर पूजन करें, फिर उसे उस मार्ग में ८ अंगुल गहरा गड्ढा जितने दोनों मित्र आते-जाते हों तो इसके प्रभावसे उनमें परस्पर विरोध हो जायगा।



मिर्गी (हृगी) रोग-नाशक यन्त्र-

नीचे बाँई ओर उद्विगति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लियकर, लौहे के ताबीज में भरकर गुग्गुलु की धूष दें। तत्पश्चात् स्त्री-रोगी इसे अपनी बाँई भुजा में तथा पुरुष-रोगी दाँई भुजा में अथवा स्त्री-पुरुष में से कोई भी कंठ में धारण करलें। धारण करते से पूर्व यन्त्र की धूप, गंध, धूष, दीप आदि से पूजा भी कर लेनी चाहिए।

४६६२	४६६६	२	७
६	३	४६६६	४६६५
४६६८	४६६३	८	१
४	५	४६६४	४६६७

इस यन्त्र को धारण करते से मिर्गी (हृगी) रोग दूर होगा है। जब रोग पूरी तरह दूर हो जाय, तब ताबीज को उतार कर किसी नदी अथवा जलाशय के पानी में पुनर्वाहित कर देना चाहिए।

वाचास्तम्भन यन्त्र:- नीचे दाँई ओर उद्विगति यन्त्र को भोजयन्त्र के ऊपर, लालचंदन से लिखे। फिर उसका केसर, प्लव, सैंग तथा काले और पीले रंग के कुलों से पूजन करे, तत्पश्चात् एक ब्राह्मण को खीर खनं गुड़ का भोजन कराये। इस यन्त्र के पुमाव से वाणी का स्तम्भन होता है। यदि यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दिया जाय तो शत्रु कोई बुराई नहीं कर पाता। उद्विगति यन्त्र



(वाचास्तम्भन यन्त्र)

(मिर्गी रोग नाशक यन्त्र)

के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधु-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए

सूखारोग निवारण यन्त्र-

बाँई ओर उदक्षिप्त यन्त्र को प्रीपाल के पत्ते अथवा मोलपत्र पर, अनामकी कलम से, लाल-चन्दन द्वारा लिखें। इस प्रकार के चार यन्त्र लिखने चाहिए।

महा०

८	८	८
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४

७

७

७

(सूखा रोग निवारण यन्त्र)

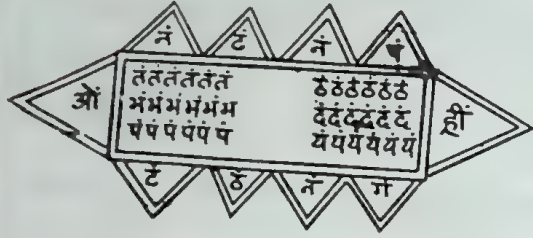
सकती है। सूखा-रोग ग्रस्त बच्चों के लिए योंही उपचार भी आवश्यक है। इसी के साथ यन्त्र-उपयोग भी करना चाहिए,

लेखनापरान्त सब यन्त्रों को धूप देकर, पहले सूखयन्त्र को जल से थोड़े तन्ना वह जल बच्चे की माता को पिलादे। दूसरे यन्त्र को पहले दिन, तीसरे यन्त्र को दूसरे दिन तथा चौथे यन्त्र को तीसरे दिन थोकर माता के दूध के साथ बच्चे को पिलाते रहें तथा सवा रुपये का धूरमा अथवा मीठे चावल बना कर, उसमें से थोड़ा सा हिस्सा पहले किसी साधु को देकर बैठवा दें, तदुपरान्त शेष बच्चे को स्वयं खोलें।

इस यन्त्र को बच्चों का सूखा रोग दूर करने में प्रभावकारी माना जाता है।

बच्चों के सूखा रोग में बच्चे का शरीर दिन-प्रति-दिन सूखता चला जाता है। हाथ-पाँव सब पतले पड़ जाते हैं; परन्तु घेरा जाड़ा बढ़ जाता है। उन्हीं तिल्ली-जिगर की शिकायत भी हो

सम्मान दाता यन्त्र - नीचे बाँई ओर उदमिति



(सम्मानदाता यन्त्र)

में गले लगा ताबीज की गुग्गुलु की धूँध देने के बाद दूसरी बाँई गुला में तथा स्त्री उधरी बाँई गुला में धारण करले। स्त्री-पुरुष यदि चाहें तो वे इसे गुला में धारण करने के स्थान पर, कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं।

इस यन्त्र को धारण करने वाला स्त्री-पुरुष जहाँ भी जाता है, वही उसको सम्मान प्राप्त होता है।

बच्चे का रोना बन्द करने का यन्त्र - जो बच्चा

निरन्तर रोना ही रहता हो, कोई शारीरिक-कष्ट न रहने पर भी जिसका रोना बन्द न होता हो, उसके लिए निम्नलिखित विधिसे दाँई ओर उदमिति 'वन्दुहिया यन्त्र' का प्रयोग करना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से बच्चे का रोना कम या रुक-रुक कर हो जाता है।

एक स्वच्छ सफेद कागज लेकर, उसके ऊपर केसर द्वारा नीचे कोणों वाले एक यन्त्र को लिखें तथा उसके कोणों में क्रमशः २, १, ४ (पहली पंक्ति में); ७, ५, ३ (दूसरी पंक्ति में) तथा ६, १, ८ (तीसरी पंक्ति में) लिखें। इस प्रकार वन्दुहिया यन्त्र तैयार हो जाएगा।

२	८	४
७	५	३
६	१	८

लेखने के बाद इस यन्त्र का गुग्गुलु, पुष्प कादि से पूजन करें तथा ताबीज में गले गुग्गुलु की धूँध दें। कि। उस ताबीज को बालक के गले में बाँध दें। इससे उसका रोना बन्द हो जाएगा।

धन-लाभ का यन्त्र-

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

सर्वप्रथम एक छोटे की पानी से भरकर रखें। पचा एक दण्ड नया नया कोरा होना चाहिए। तत्पश्चात् आम के पत्ते पर सोली बिछाकर, अनार की फलम द्वारा बाँई ओर उदरिण ८ कोणकों वाला यन्त्र लिखें, जिसके पहले कोणक में ६, दूसरे में ४८, तीसरे में १८, चौथे में ३६, पाँचवें में २४, छठे में १२, सातवें में ३० तथा नव्वे में ४२ के अंक लिखें। (आठवें को ठक को खाली रहने दे।)

यन्त्र को लिखते समय "श्री गार्ग्यनाथाय नमः" — इस मन्त्र का जप करने रहना चाहिए। इस प्रकार जब यन्त्र-लेखन का कार्य पूरा हो जाय, तब — "३६ नमो कामदेवाय महाप्रभाय शीं कामेश्वरी स्वाहा" — इस मन्त्र का ७२ बार जप करना चाहिए। यन्त्र को जपने के बाद यन्त्र को मिरा दें, तद्परांत पुनः यन्त्र लिखें और पूजन तथा मन्त्र-जप आदि पूर्ववत् करें। इस प्रकार २४ बार इस यन्त्र को लिखना तथा पूजन, जप आदि की क्रियाएँ करनी चाहिए।

२४ वें यन्त्र को लिखने के बाद मन्त्र का २१ माला जप करें। इस निघन का पुरिदिन निघन रूप से वाला करते रहें। एक दिन के लिये यन्त्र को दूसरे दिन गेहूँ के आटे में थोड़ा सा ग्राह्य, ची और घृा मिला कर, गोली बाँधें तथा उन गोलीयों को तदी के पानी में बहा दें। स्वयं जी की रोटी तथा खिनामसक वाले बजुसा के साग का भोजन करें। घृष्वी पर शयन करें तथा शूठ न कोले। ७२ दिनों तक इस क्रिया को करते रहें। उस उपरिष्ठ सवालारव यन्त्रों का जप पूरा कर लें। जब साधन पूरा हो जाय, तब एक दिन होमादि करके ब्राह्मण-भोजन करावें। तत्पश्चात् निघन पुरि एक यन्त्र लिखिए, उसमें शूठ भाग भर लिये "७२ हके चलात बाजार दे" — फिर उसे आसन के नीचे रख कर ७२ बार मन्त्र का जप करें। इस प्रयोग से

आसन के नीचे छत्तिदिन ७२ टके आनाया करे । उनके विषय में किसी को बताने नहीं । अन्धका उगका आना बन्द हो जायगा । यदि आसन के नीचे टके नहीं आयेगे तो अन्ध किसी प्रकार से कुटुम्ब के बचर्चा लाभक धन प्राप्त होता रहेगा ।

रूपे मिल जाने के बाद यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर अपनी पगड़ी में रख लेना चाहिए तथा दूसरे दिन गोली बाँध कर नदी में बहा देना चाहिए । जो यन्त्र नदी के किनारे से आ लगे, उसे लाकर एक आले में बरबदे तथा उसके ऊपर एक सफेद बरत का कपड़ा डालदे तथा उस पर छत्तिदिन पुस्त्य चढ़ा कर धूप दे दिया करें ।

इसी यन्त्र की पुसलमानी विधि निम्नानुसार है—

सूर्योदय से पहले ही, सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से एक यन्त्र लिखें । यह कार्य महीने के पहले बृहस्पतिवार से आरंभ करना चाहिए । इसके बाद नर्मि के बराबर किसी नदी अथवा जलवाय के पानी में खड़ा होकर, पश्चिम की ओर मुँह करके १४४४ अथवा ३३३३ बार निम्नानुसार मन्त्र-पठ करे—

सर्वप्रथम एक बार— "विमिल्लाहिरिहमानिर्हीम"— कहे । फिर— "अजिबो या जिब्राइल बहकक या वासिलो"— पढ़ें । इस मन्त्र के आदि तथा अन्तमें ७१ बार दरुद पढ़ें, जो इस प्रकार है— "अल्ला हुम्मा सर्रो मुहम्मदिन व अल आले मुहम्मदिन व चारिफवसल्लाम"— इस प्रयोग को लगातार ७२ दिनों तक करते रहने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

यन्त्र को छत्तिदिन चाँगे में धरोकर, अपने स्थान के दरवाजे पर टाँग दिया करें तथा दूसरे दिन

आटे में गोली बाँधकर तथा गोली को बूरे में लपेट कर पन्ना को नदी में बहा आये। ७२ दिन पीछे एक पन्ना लिखा कर ७२ मंत्रों का जाप कर लिया करें। इस क्रिया को आरंभ करने के १० दिन बाद ही कही-न-कही से भूचल-योग के योग्य पन्ना की प्राप्ति होने लगती है। ७२ दिन बाद दस-बीस ब्राह्मणों अथवा ककरीयों को भोजन करा देना चाहिए।

स्त्री हित साधक पन्ना - यदि किसी छुट्टे में दो गुठलियाँ एक साथ निकल आये तो उन्हें लेकर सावधानी से सुरक्षित रख लें। फिर दीपावली की रात्रि में अनार की कलम द्वारा दाँड़ और उदरवर्ति पन्ना को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिखें, तत्पश्चात् भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर उसे धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजें। फिर प्रत्येक छुट्टे की दोनो गुठलियों को उस भोजपत्र पर निर्मित पन्ना में लपेट कर, बाँदी के तालीय में मढ़वा लें।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उक्त पन्ना प्ररित तालीय को धोकर पिलोने से कष्टा. स्त्री का कष्ट दूर होता है। नौक. स्त्री की कमर में बाँधा देने से उसे गर्भ ठहरता है। अपने पास रखने से वाण्डरवार में सम्मान प्राप्त होता है। इस पन्ना के उपाय से 'कहि-सिद्धि' प्राप्त होकर साधक की सभी मनो कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

(स्त्री-हित साधक पन्ना)

स्मरणीय है कि यह पन्ना 'पन्दुरिपा पन्ना' का ही एक स्वरूप है। पन्दुरिपा पन्ना के अनेक स्वरूप पाये जाते हैं; जिनमें से कुछ का उल्लेख पहले किया जा चुका है। यह पन्ना विभिन्न प्रयोग-विधि यों के माध्यम से विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करता है, उनमें से एक विधि का उल्लेख यहाँ किया गया है।

नीचे नाँव ओर उदगिति बतादिक. दोष - निवारण पन्ना इस्लामी पहुनि का करे से पूर्व शाह अब्दुल कादर जीलानी है

11	14	2	7
8	5	10	15
6	3	13	4
13	12	6	2

जब दीपक को जलाया जा चुके, तब रोगी-व्यक्ति से कहे 'और जमादे / जैसे ही भूलादि, दोब गला रोगी की दृष्टि दीपक की लौ को दूर हो जाएगा अर्थात् जो भूल, भ्रम, नवईस आदि रोगी व्यक्ति का भाग जाएगा और कि कभी भी उसे परेशान नहीं 'कोण' दुटका पर जीलानी के नाम पर बलाशे बँटवा देने चाहिए।

जब दीपक को जलाया जा चुके, तब रोगी-व्याधि से कहे कि वह अपनी हथि को दीपक की लौ पर जमादे। जैसे ही धूनादि, दोषग्रस्त रोगी की दृष्टि दीपक की लौ पर ठहरेगी, वैसे ही धूनादिक का दोष दूर हो जाएगा अर्थात् जो धूल, धूल, बगईस आदि रोगी व्याधि को पकड़े होगा, वह उसे छोड़ कर तुरन्त भाग जाएगा और फिर कभी भी उसे जरेखान नहीं 'कोण'। दुष्टका-रा मिल जाने पर श्राव अम्बुल कादर जीलानी के नाम पर बतारो बँटवा देने चाहिए।

बत्तीसा यन्त्र- नीचे काँई ओर उदरिति बत्तीसा यन्त्र

को कागज के ऊपर हल्दी से लिखे तथा नीचे अपना मनो

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

रथ भी लिखदे। फिर इसका वालीरा
बगाकर रविवार के दिन दीपक में जलोप
इस प्रकार ७ रविवारों तक साधन
करने से अभिलाषा पूरी होती है।

(बत्तीसा यन्त्र)

इस यन्त्र को लिखने के लक्षण ही

हल्दी की गाँठों की माला पर 'ॐ ह्रीं ह्र स्' - इस यन्त्र
का ११ माला जप भी करना चाहिए।

इसकी दूसरी विधि यह है कि रविवार को जात स्नान कर
काँसे की थाली में हल्दी से इस यन्त्र को लिखे, फिर उस पर
बगड़ी बत्ती का चौमुखा घृत का दीपक रख कर, वाली को
हाथ में लेकर सूर्य के सामने खड़े तथा पूर्वोक्त यन्त्र का
जप करता रहे। सूर्य के घूमने के साध- साध ही स्वयं भी
वाली लेका प्रयास जाप तथा सूर्योदय होने पर अर्घ्य देकर
जप को बोलदे। इस विधि से ७ रविवार तक करे। स्त्री की दृष्टि नये।

स्त्री- मोहन यन्त्र- नीचे काँई ओर उदरिति

यन्त्र स्त्रियों को मोहित करने वाला है। इसके विधि
निम्नायुसार है-

एक अविविधना मोहन

यन्त्र के टुकड़े पर ५ सीधी
(खड़ी) तथा पाँच आड़ी

(तिरछी) रेखाएँ खींच कर

१६ कोष्ठों वाले यन्त्र का

निर्माण करे। फिर उसके

कोष्ठों में 'कुम्भार' ५२, ६६,

२, ८, ४, ३, ६३, ६२, ६५, ६०,

८, १, ४, ६, ६१ तथा ६४ - इन अंकों को भरे। यन्त्र -

लेखन का कार्य स्त्री के स्तनों के दूध से तथा पुष्प

नक्षत्र में किया जाना चाहिए। लेखनोपान्त यन्त्र का

गन्ध, दुग्ध, घृणदि से पूजा करे। इसके उपास से साधन-

स्त्री मोहित होकर साधक के पाँवों पर आ गिरती है।

५६	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	६	१
४	६	६१	६४

अश्व-वशीकरण यन्त्र- नीचे बाँई ओर उदशित यन्त्र को किसी शुभ मास के पहले विवार को भोजन के ऊपर कपूर, कस्तूरी तथा केसर के मिश्रण से लावकर, सामान्य गंध, दुर्लभादि से पूजा कर, ताबीज में भरले तथा ताबीज को धूगल की धूनी देकर जोड़े के गले में बाँध दे तो वह सदैव स्वामी के वश में बग रहता है। कभी-धोरवा नहीं देता।

गो दुग्ध-वर्धक यन्त्र- नीचे बाँई ओर उदशित यन्त्र को केसर, कस्तूरी कुंकुम, गोरोचन द्वारा भोजन पर लावकर, तत्परा करे।

लेबने परान्त यन्त्र को एक ताँबे के ताबीज में भूँदे तथा ताबीज की गंध, दुर्लभादि से पूजा की और दुग्ध की धूप दे। फिर उसे गाय के गले में बाँध दे तो वह अधिक दूध देने लगती है।

२६	३३	२	७
६	३	३०	२६
३२	२७	८	१
४	५	२८	३१

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२६	८	१
४	५	३०	३३

बित्री वर्धक यन्त्र- नीचे उदशित दो यन्त्रों को शुभ तिथि तथा शुभ पक्षी-मुहूर्त में अलग-अलग भोजन भयना सकेद कागज के दो टुकड़ों पर अष्टगंध भयना काली स्फाली से लिखे। फिर एक को लो शाहद में बरखदे और बाँधने के प्राक्का-बूरे में डाल का किसी मीठे अन्तार के पेड़ से बाँध दे तथा दूसरे को दूकान के दरवाजे पर बाँध दे।

जिस यन्त्र को बाँई ओर ऊपर उदशित किया गया है, उसे लिखने के बाद शाहद में डाल देना चाहिए तथा दूसरे को दूकान के दरवाजे पर बाँधना चाहिए। इन यन्त्रों के उपयोग से दूकान में माल की बिक्री बढक होने लगती है।

८	११	१४	१
१३	१२	७	११
३	१६	६	६
१०	५	४	१५

व	अ	ह	ब
व	ह	अ	ब
अ	ब	ब	ह
ह	ब	व	अ

दूरगामी यात्रा यन्त्र

३	६	६१	१
३६	४३	३४	२४
६३	११	१२	६१
३४	५२	५६	५७

किसी दूरगामी अथवा निदेश यात्रा पर जाने समय उक्त यन्त्र को मोलपत्र के ऊपर केसर-कसूरी से लिख कर, ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजा में बाँध लेते यात्रा निर्निघ्न रातें सफल सम्पन्न होती है।

तीर्थाटन यन्त्र

४	५५	१	२४
८	७	८१	७५
८६	८	२	३
५	६	३२	७५

उक्त यन्त्र को मोलपत्र के ऊपर हल चक्र से लिख कर ताँबे के ताबीज में भर ले, फिर ताबीज को गुग्गुलु की धूँध देकर, दाँई भुजा में बाँध कर तीर्थाटन को जाँचते तीर्थ-यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न होती है।

सामान्य यात्रा यन्त्र

१	६५	१	६२
७८	६	२	५२
६७	२८	८७	६१
६	४	३६	४५

दोटी-मोटी यात्राओं पर जाने की जिन्हे 'प्राप्त' आवश्यकता होती रहती है, उन्हें उक्त यन्त्र को कागज या काली स्याही से लिख कर, ताबीज में भर कर, भुजा में बाँधे रहते से कभी कोई कष्ट नहीं होता,

नौका स्तम्भन यन्त्र

८	४४	८	५१
४७	४	४	५२
३	२८	७८	८१
८	५	३८	४५

उक्त यन्त्र को तांबे अथवा लोहे की चार पा खोद का, पुराण गंध आदि से पूजे, नदुपान्त से नौका में बांधे तो उसका स्तम्भन होजाता है अथवा वह मालागर्भक पानी पर नहीं तैर पाती।

सर्प-स्तम्भन यन्त्र

८	६४	८	१६
६४	१४	६४	५४
४६	५१	१२	१२
४४	१५	६५	६५

उक्त यन्त्र को ओणयन्त्र के ऊपर लाल-चन्दन से लिखका, गंध-पुष्पादि से पूजा करे। फिर तांबे के नाबीज में भर का अपने कंठ में धारण किए रहे तो सर्प का भय नहीं रहता।

हिसंक-पशु स्तम्भन यन्त्र

८	४४	८	५१
७४	४	४	५२
३	२८	७८	८१
८	५	३८	४५

उक्त यन्त्र को ओणयन्त्र के ऊपर अलंगंध से लिखका तांबे के नाबीज में भर का उगुल की छूट दे, नदुपान्त अपनी भुजा में पहने रहे तो मार्ग में कहीं हिसंक पशु का भय उपस्थित नहीं होता।

अग्नि स्तम्भन यन्त्र

७	७४	६	५६
६	६	१७	३७
४७	२६	२	६
२	५	३६	५७

उक्त यन्त्र को पत्थर की पट्टियाँ पर हल्की अच्छा गेरू से लिपक पूजन करें फिर उस पट्टियाँ को काँचे भीतर गड़। खोद का गाढ़ दे लें। इस स्थान पर कभी अग्नि का अथ उपलब्ध नहीं होता।

चौरादि स्तम्भन यन्त्र

७	४७	४	७
६	६	१७	३७
६७	६२	२६	४
५	२	२	५७

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसा से लिपक। अच्छा काँचे के यन्त्र में खुदवा का काँचे के भीतर खोदने से वहाँ 'चौरा' का उद्देश नहीं होता। यन्त्र को प्रति दिन धूप अवश्य देते रहना चाहिए।

वाणी स्तम्भन यन्त्र

७	४६	६	६६
६	४	१७	७६
६७	६२	२	६
२	६	६३	७५

उक्त यन्त्र को गौरीचमन द्वारा भोजपत्र पर लिखें। तत्पश्चात् गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गुग्गुलु की धूप दें, नाकीय में भर कर भुजा में पहने लें। प्रतिवारी की वाणी स्तम्भित हो जाती है।

पारिवारिक-सुखदाता यन्त्र

६०	७२	८	८
८	६	७	६०
७७	२७	८	१
७	५	७६	७४

उक्त यन्त्र को प्रथमि तिथि के दिन ताम्रपत्र पर खुदवाकर उसे घर में बानने तन्वा प्रतिदिन धूप देते रहने से पारिवारिक-सुख की वृद्धि होती है। सबमें छैन बना रहता है।

कृष्ण-भोचक यन्त्र

८५	५६	१	१२
६	६०	६२	१३
४६	४	१८	६१
४१	६६	२८	५८

उक्त यन्त्र को मंगलवार के दिन ताम्रपत्र पर खुदवाये। कि नित्य पूजन करा रहे तन्वा मंगलवार का प्रत्यक्ष कृ " भौं भौं माध नमः " इस मंत्र का एक माला जपकर तो कर्ज से छुटकारा मिलता है।

आजीविका-दाता यन्त्र

८५	६५	६	२१
६	३०	६२	१३
६४	५	८८	११
५	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को गुरुवार के दिन प्रातः काल केसर द्वारा भोषपत्र पर लिख कर, पूजनोपरान्त लौं के तानीय में भर कर ढाँड़ मुजा में धारण काले तो सुख पूर्वक आजीविका कालाप्त होता रहता है।

आरोग्य-वर्द्धक यन्त्र

५	४५	१७	२४
८	७	७१	७५
६४	५२	२६	४
५	६	३२	७५

उक्त यन्त्र को गोपीचन्दन द्वारा भोज-
यन्त्र के ऊपर लिखें। यन्त्र शुभमुहूर्त में तथा
शुभ काल लिखना चाहिए। लिखने के बाद
धूप दीप देकर यन्त्र को कंठ में धारण कर
ले तो आरोग्यवर्द्धक बना रहता है।

आयु-वर्द्धक यन्त्र

६	४४	६	५१
४	४	२	५२
८७	२८	८७	६१
६	५	३६	४५

उक्त यन्त्र को गोरोचन द्वारा किसी
लिखि को शाल काल भोजयन्त्र के ऊपर
लिखकर पूजन करें। फिर दिनभर
गलक, दूसरे दिन नाकीर में भूकर भुज्जा
में धारण की तो आयु की वृद्धि होती है।

सुखवर्द्धक यन्त्र

७	५५	१	५१
८	४	८	५७
८	७८	२	१
५	६	२३	७५

उक्त यन्त्र को चाँदी के पत्र पर
पुष्पनक्षत्र में खुदवाये। फिर पूजन
काके का के किसी आले आदि में राख
दे और निजहास दीपदान करते रहें तो
सुख की वृद्धि होती है।

विद्या-वर्द्धक यन्त्र

७	४	७५	३२
५२	६	६२	५२
४५	५४	१	११
३५	२६	२३	२५

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र पर वसंत पंचमी के दिन लिखे तत्पश्चात् सरस्वती देवी के साथ ही यंत्र का पूजन कर, इसे तावीज से भर कर कंठ में धारण करले तो विद्यालाभ होगा।

बुद्धि-वर्द्धक यन्त्र

७	४५	६	२२
३	५	७७	१६
२७	६२	२	२
६	५	३६	७५

भाद्रपदमास की गणेश-चतुर्थी को जातः काल स्नानादि से पवित्र हो, यह यंत्र को भोजयन्त्र पर (ताम्रचंदन से लिखे कि गंध पुष्पादि से पूजन कर तावीज में भर का गुण में धारण करे तो बुद्धि बढ़ती है।

सम्मान-वर्द्धक यन्त्र

५	४५	६	२४
२	७	५२	७५
६४	५२	२६	४
५	६	३२	७५

उक्त यन्त्र को एकादशी के दिन पान के पत्ते पर केसर से लिखे, कि (उपयान को स्वयं ही रखा कर, जहाँ भी जाय, वही सम्मान की जाय होगी। एकादशी को पहला प्रयोग को। अन्य प्रयोग चाहे कर सकते हैं।

विवाद-विजय पन्ना

७७	५३	४	६
६	६	२५	३५
६७	६२	६	२
७	५	७४	२

उक्त पन्ना को ओजपत्र के ऊपर अलगगण से लिखकर धूप, दीप दे, कीलेडोरे में लपेट का अपनी कगड़ी, रोपी अथवा जेबमें रखकर न्यायालय में जाय तो मुकद्दमे में विजय प्राप्त हो।

शास्त्रार्थ-विजय पन्ना

६६	४७	४	७
६	६	१७	७३
६७	६२	२	६
५	२	६	५७

उक्त पन्ना को ओजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी रखकर के मिश्रण से लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर, कि इसे भुजा में बाँधकर शास्त्रार्थ करने जाय तो विजय प्राप्त होती है।

प्रतिपोगिता-विजय पन्ना

७६	५२	६	५४
६	४२	६२	१५
५७	७२	२५	११
२	३२	२४	२५

उक्त पन्ना को हल्दी कारा मक्केड कागज पर लिखकर, गुग्गुलु की धूप दे, तदुपाय पन्ना को अपने कंधे में धारण कर किसी प्रतिपोगिता में भाग लेने को वरुंये तो उसमें विजयी हो।

क्रोध-शमन मन्त्र

६६	७२	३	३
७	६	७	६२
७५	१७	२	१
७	५	५७	७५

जिन लोगों को क्रोध अधिक आता हो, उन्हें ७ बुधवार मन्त्र भोजन के ऊपर केसर एवं कसूरी से लिखकर (अथ) लौ के तालीज में भर कर अपनी युवा में धारण करने चाहिए। इससे क्रोध शान्त होता है।

रोग-शमन मन्त्र

६७	७४	२	७
४१	६३	५३	७३
७६	२१	३२	५
५	५	२२	७५

उक्त मन्त्र को भोजन के ऊपर भस्म रूप से सोमवार, वृहस्पतिकार अथवा शुक्रवार के दिन लिखकर, धूप-दीप दे, तालीज में भर कर रोगी-व्यक्ति की दूर भुजा में बाँध दे। रोग से शीघ्र छुटकारा मिलता है।

चिन्ता-हरण मन्त्र

६८	३७	२	२
२	६	२७	२६
२७	२७	१	२
७	५	७७	६४

उक्त मन्त्र को भोजन के ऊपर केसर कागद लिपि, एकादशी अथवा शनिवार के दिन लिखकर, धूप-दीप दे, तालीज में भर कर रोगी-व्यक्ति की दूर भुजा में बाँध दे। चिन्ताओं से छुटकारा मिल जाता है।

मन्दिर-निर्माण का पन्ना

६७	७५	१	२६
१	४६	६२	१६
५४	५	२७	६१
२	२६	६२	५२

उक्त पन्ना को मोलपन्न के ऊपर केसर कारा मोरकाल भी कागज से लिख का का के भील ह्मपावित का निच दीध हात काते रहते से मन्दिर-निर्माण का संकल्प पूरा होता है।

जलाशय-निर्माण का पन्ना

६६	४७	३	७
६	३	७	२७
५७	१७	२	१
७	५	७१	४७

उक्त पन्ना को मोलपन्न के ऊपर केसर से लिखे तथा गंध-दुष्पादि से पूजन कर किसी जलाशय में उपाहित करें। २१ दिनों तक ऐसा ही करते रहेंगे से जलाशय-निर्माण का संकल्प पूरा होता है।

गृह-निर्माण का पन्ना

६७	५२	१	५४
५	२	६२	५१
६५	२	२५	११
२	२३	४२	२५

उक्त पन्ना को ताम्रपत्र पर खुदवा कर, विधिमत पूजन करें। कि गृह-निर्माण हेतु जिस भूमि का-वजन किया हो, उसमें गड्ढा खोद का गाढ़ दें सो कुछ ही दिनों में वह गृह-निर्माण कार्य पूरा हो जाता है।

भक्ति-लाभ का मन्त्र

६३	२६	१६	१८
३६	४३	३४	४६
४६	११	१२	६१
४४	५२	६५	७५

उक्त मन्त्र को नाममन्त्र पर अंकित करवाकर गंगा, पुष्प, धूप आदि लिये पूजन करते रहने तथा अपने इष्टदेव का स्नान आदि, उक्त मन्त्र-जप करते रहने से भक्ति-लाभ होता है।

पुण्य-लाभ का मन्त्र

६	४४	६	५१
७४	४	४	५२
३	२८	२७	६१
७	५	३६	४५

उक्त मन्त्र को मोलमन्त्र के अष्ट अष्ट गंधकारा १०८ की संख्या में लिपि लिखें कि उक्त गंध-पुष्पादि से पूजन को और नदी की पार में बरोह/२१ दिनों तक बहकाने से पुण्य का लाभ होता है।

आलोचनाकारक मन्त्र

६३	६०	१८	१६
३६	४३	३४	४६
६४	११	२१	६१
४४	५२	५६	५७

उक्त मन्त्र को केसर, कस्तूरी, कथूर तथा कुंकुम के मिश्रण से मोलमन्त्र पर लिखकर, धूप-दीप आदि से पूजन कर, ताबीज में आकर दौड़ भुजा में धारण करने से आलोचना का लाभ मिलता है।

पदोन्नति दाता यन्त्र

६३	३३	१५	४६
४३	४	४	५२
४४	२२	२७	६१
४५	५	६३	५४

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करावा का, तिलक पुस्तक, गंधा, धूप-दीप आदि से पूजा करते हुए उष्ट देव का स्तुति करते तथा उष्टी का मन्त्र जपे तो महीन ही पदोन्नति का लाभ मिलता है।

स्थानान्तरण कर्ता यन्त्र

६०	७४	०	६
६	६	७१	७३
६७	८६	८	६
५	८	६३	७

उक्त यन्त्र को भोजयन्त्र के ऊपर लालचन्दन द्वारा १०८ बीं हाथों से लिखें, तदुपान्त उष्टे पूजन करके किसी नदी में प्रवाहित करें। २१ दिनों तक ऐसा करते रहने से स्थानान्तरण हो जाता है।

वाहन-प्राप्ति का यन्त्र

६३	२३	६१	१७
३६	४३	३७	४५
६३	११	१२	६१
२४	२५	५६	७५

उक्त यन्त्र को भोजयन्त्र के ऊपर गोरोचन द्वारा पंचमी तिथि को लिखें, फिर पूजन कराना उष्टे ताम्रपत्र में भरकर अपनी दाईं भुजा में बांधा कि पुरटे तो कुछ ही दिनों में वाहन का लाभ होता है।

कला-क्षेत्र में सफलता का पन्ना

३६	२७	८	८
८	६	७	२६
२७	७२	८	१
७	५	६७	७४

जो लोग अभिजात, संगीत, चित्रकारी आदि कला के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें 'उक्त पन्ना' के साथ जग भोजपत्र पर लिखकर, ताबील में बांध करके अपनी दाईं मुठामे धारण करना चाहिए।

धरोहर की सुरक्षा का पन्ना

३६	३३	५२	४६
१४	३६	५३	६१
४	११	३२	७५
५४	४५	२२	४

यदि आप किसी के पास अपनी कोई वस्तु धरोहर के रूप में रख रहे हों तो उसके साथ ही 'उक्त पन्ना' को काली हजारी कागज में बांध लें और उसे 'इससे आपकी धरोहर सुरक्षित बनी रहेगी'।

धन की सुरक्षा का पन्ना

३६	३३	२५	४६
४१	६३	५३	६१
४१	११	३२	७५
६४	४५	२२	४६

'उक्त पन्ना' को अष्टगंध कागज भोजपत्र पर लिख कर, पीले धागे से 'जपेट' कर, अथवा ताबील में बांध कर 'रुपयों-पैसों आभूषणों' आदि के साथ रख देने से वे सुरक्षित बने रहते हैं'।

स्नेह-वृद्धि यन्त्र

६३	५८	१	३८
१	६	६२	६१
८७	४५	१	८
८	५	३३	५२

उका यन्त्र को चौड़ी की अंगूठी पर खुदवाकर, उसे गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजित के बाद अपने हिसाबिद यन्त्र को उसे पहना। दिवायाएगा। उसके साथ स्नेह की अग्नि बृद्धि होती रहेगी।

प्रेमी-मिलन यन्त्र

५८	३७	६	८
७८	६	२	५२
५४	५	८७	६१
७	३६	६३	५८

उका यन्त्र को मोटापत्र के ऊपर अष्टगंधद्वारा पूर्णिया निधि को जातकाल लिखें तथा उसदिन वारा रात को अपने प्रेमीका चित्रान करें। साधकाल यन्त्र को ताबीजमें भाँक कंठमें धाएँ काले तेलो मिलाकर

प्रेम में सफलता का यन्त्र

६५	६५	१	४५
७	२३	३२	५१
६५	८	२५	११
८	८३	७४	८५

उका यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित कराकर, शुक्रवार के दिन जातकाल ले पूजना आरंभ करें। कि। निम्न जातकाल यन्त्र की पूजा करें। एवं अपनी कामना का चयन करते हों तो प्रेम सफलता मिलती है।

यन्त्र
२
२

साकेदारी में सफलता का यन्त्र

३८	५७	१	८
१	६	६२	२१
८०	२७	१	८
८	५	३३	६५

उक्त यन्त्र को अष्टमंथ कहा
जायगा। दो दुकानों में लिखें। फिर
(बटन) प्रयोग की, अलग अलग ताबीलों में
आपने नया दोनो साकेदारी एक एक यन्त्र
उक्त में लगाए। कि हों तो साकेदारी सफल हो

दुकानें-निषाहि का यन्त्र

३८	६५	१	२१
०	३६	६२	१६
४५	५	८१	६१
८	६६	२८	५८

उक्त यन्त्र को कुंडुम कहा
कहा जाय। दो दुकानों में अलग
अलग लिखें। फिर उक्त दो ताबीलों में
आपने-आपनी क। धूप दें। ताबिलों को दोनो
मित्र एक एक ताबील पहने हों तो मैत्री दृढ़ रहेगी।

शृण से घुटकोर का यन्त्र

३८	६६	१	१७
०	१३	६२	५३
४५	४१	८१	१७
८	२५	५६	७५

उक्त यन्त्र को नाम यन्त्र कहा जाय।
मंगलवा के दिन से शास्त्र का प्रयोग करे
को। गिला निषाहि रूप से प्रयोग करे। हरे
पर छोड़े ही दोनो में चढ़ा ले घुटकोर
मिल जाना है। मंगलवा की ताबीलें तो अलग

महा

परीक्षा में सफलता का मन्त्र

३८	८५	१	३२
५	६	६२	५२
४५	५४	१	११
८	८६	८	५

इस मन्त्र को भोजन के ऊपर
 भोजन करने के लिए के लिए
 रोज़ाना १०८ से १०८ बार
 पढ़ें। इससे आपको
 परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

निर्वाचन में सफलता का मन्त्र

१६	१५	३६	१८
२६	४३	३४	६३
७४	११	२१	६४
४४	५२	५६	४५

इस मन्त्र को भोजन के ऊपर
 भोजन करने के लिए के लिए
 रोज़ाना १०८ से १०८ बार
 पढ़ें। इससे आपको
 निर्वाचन में सफलता प्राप्त होगी।

वृद्धावस्था में सुख-लाभ का मन्त्र

३७	७४	८	६
६	६	७१	७६
७६	८८	८	६
५	८	३६	७५

इस मन्त्र को भोजन के ऊपर
 भोजन करने के लिए के लिए
 रोज़ाना १०८ से १०८ बार
 पढ़ें। इससे आपको
 वृद्धावस्था में सुख-लाभ प्राप्त होगा।

सन्तति-मुख दाता मन्त्र

८३	५६	१	३५
२६	४३	३४	६३
७४	११	२१	६४
४४	५२	५६	४५

उक्त मन्त्र को बिरीजा के दिन भोजन के फण, मण्डप में ले लिखकर पूजा करें। फिर ताबीज में भर कर अपनी दाहिनी ओर भुजा अथवा कंधे में धारण किए रहें तो सन्तान द्वारा सुख प्राप्त होता है।

विवाह कारक मन्त्र

८७	६७	३	८
८	६	४२	२५
७८	७२	६	८
७	५	३६	३५

जित लैंगों का विवाह नहीं हो पा हो उन्हें उक्त मन्त्र भोजन के फण केसर-करतूरी से लिखकर पूजा के बाद ताबीज में भरकर कंधे में धारण करना चाहिए। इससे विवाह शीघ्र होगा।

पुत्र-प्रदाता मन्त्र

८५	६५	६	४५
६	२३	२६	१५
६५	८	८५	११
८	८३	७४	८५

उक्त मन्त्र को भोजन के दो टुकड़ों पर केसर, कस्तूरी तथा कपूर द्वारा अलग-अलग लिखें। तदुपरा पूजा का के दो ताबीजों में भर कर दाहिनी-पली एक ताबीज कंधे में धारण किए रहें तो पुत्र कालाप्त होता है।

रौद्र वस्तु मिलने का पन्ना

८०	६४	२१	१७
३६	१३	६४	५३
६६	६१	१२	११
६४	२५	५६	६५

यदि रौद्र वस्तु वक्रोर्ण हो तो उक्त पन्ना को काली स्थाही द्वारा संकेद कागज पर लिखकर, रात के समय अपने मिरहोने रख कर सोने से, रविवार में उसके मिलने के विषय में हात हो जाता है।

गौरी व्यक्ति को लौटाने का पन्ना

७७	५५	०	६
६	६	४५	५३
७६	३६	६	८
७	५	७४	५४

उक्त पन्ना को भोजपत्र के एक अष्टगंध से लिखें। नीचे साधन-वाक्य का नाम भी लिखें। कि पन्ना को चाबिका दावका-चाबिका उल्टा चलोषें। ७ दिन तक ऐसा करें तो गधा चाबिका घुलित लौट आता है।

राजदण्ड भय नाकाक पन्ना

८०	१२	८	६
४३	६४	७१	७४
६४	१२	८	६५
४४	५५	५५	७५

उक्त पन्ना को अष्टगंध द्वारा भोज पर लिखकर, निम्न जालक काल पूजने से राजदण्ड शास्त्रिका भय दूर होता है। इस पन्ना को निम्न नम्रा लिखकर पूजना चाहिए, जब तक कि काम शान्त हो जाय,

मन्त्र
३३८

कुटुम्ब-वृद्धि यन्त्र

५६	८	१	४५
५	२३	६२	१५
६५	८	५८	११
८	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को नामपत्र पर अंकित करवा कर, जहाँ से किसी पवित्र स्थान पर रखें तथा यन्त्र को तिल गंध, पुष्प, धूप, दीप देकर पूजते रहें तो कुटुम्ब की अभिवृद्धि होती है।

भ्रातृ-सुख वृद्धि यन्त्र

५६	५७	६	८
६	८	४५	४३
७६	३	८	८
७	२	७५	५४

उक्त यन्त्र को भोगपत्र के ऊपर सफेद और लाल चंदन तथा केसर-कस्तूरी के मिश्रण से लिखवा, ताकीज में भर लें, फिर उसे गुग्गुलु की धूप देकर दौड़ भुजा में बाँधे रहें तो भ्रातृ-सुख की वृद्धि हो।

कन्या-विवाह यन्त्र

५६	५७	६	८
६	४	६५	५३
७६	२३	८	८
७	५	७६	५४

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोगपत्र पर लिखवा, धूप-दीप आदि से पूजा करें, फिर ताकीज में भृगु का विवाह योग कन्या के कण्ठ में पहिना दें तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

महा।

गठे धन की प्राप्ति का मन्त्र

४८	७५	१	२१
६	२३	६२	५३
५४	५	२७	३१
८	६६	५६	२५

उक्त मन्त्र को ताम्रपत्र में खुदवाकर गंध-पुष्पादि से पूजन कर, गरुडपान में गाढ़ दें, जहाँ गढ़ धन होने की संभावना हो। मन्त्र के प्रभाव से स्वप्न में उसके लक्षण से सही जमानकारी मिल जानी है।

आकस्मिक धन-लाभ का मन्त्र

४३	२६	१	२५
८	३	४२	२५
७८	७२	३	५५
७	५	३६	८

उक्त मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसा-कपूर तथा कुंकुम का लिखकर पूजे। कि। ताकीज में भूकर अपनी पुजा अथवा कण्ठ में धारण किए रहे। तो आकस्मिक रूप से धन-लाभ होला रहता है।

ऋण-प्राप्ति का मन्त्र

४६	१	२५	२५
८	३	२२	२५
२७	२७	३	५५
७	३	३६	८

उक्त मन्त्र को सफेद कागज के अणु काली हवाही से लिखकर पूजा करें, कि। उसे किसी नदी में उवाहित कर दिया करें। २१ दिनों तक ऐसा करते रहने से ऋण सुविधा पूर्वक मिल जाता है।

शत्रु को जूती लगाने का मन्त्र-

किसी बराबर महीने के आखिरी (अंतिम) मंगलवार को कौलाद की छुरी से कच्ची ईंट पर बाँई ओर उदयति मन्त्र को एक ओर लिखे तथा ईंट के दूसरी ओर शत्रु का नाम लिख कर, आधी रात के समय उस पर घी का दिया बरसकर, फूल मिठाई और इत्र चढ़ाये। मन्त्र को लिखने के बाद एक बार श्री विमिल्लाह नीचे लिखे अनुसार पढ़े -

"विमिल्लाहिरिहमानिर्हीम।"

इसके बाद ४१ बार दहद पुनः पढ़नी चाहिए -

"अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आलेही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।"

इसके बाद निम्न लिखित मन्त्र को १००० बार पढ़े, पन्ध्र हर बार १०० मन्त्र पढ़ने के बाद बैरी के नाम पर ५ जूती मारनी चाहिए -

"या कह हारो या इतराइलो या दौराइलो या अमवाकि-लो 'अमुके' की श्री देह और हूँट को मेरी जूती की चोट से पायल करो बहुक्क या कह हारो।" - इस मन्त्र में जहाँ 'अमुके' शब्द आया है, वहाँ दुश्मन के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र-जप के अन्तमें ४१ बार दहद पुनः पढ़नी चाहिए।

द	स	म	म	म	ल	ब	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	व	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	न	अ	य	न	ग
अ	अ	म	ब	त	ब	व	ह	ल
य	ब	अ	अ	द	य	त	व	त

पायल करो बहुक्क या कह हारो।" - इस मन्त्र में जहाँ 'अमुके' शब्द आया है, वहाँ दुश्मन के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र-जप के अन्तमें ४१ बार दहद पुनः पढ़नी चाहिए।

पहले मन्त्र को सिद्ध करने के लिए केवल १० दिन तक नित्य १०,००० की संख्या में मन्त्र को जपना चाहिए तथा अन्त में जप का दशांश होना चाहिए। इस प्रयोग से शत्रु के ऊपर धूँटे पड़ते हैं तथा उसका काट मिलाता है।

मह.

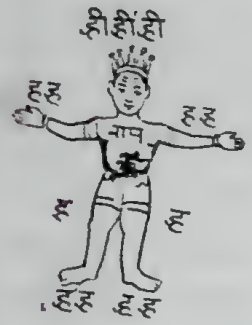
बैरी को जेर करने का प्रयोग- बैरी को जेर करने के प्रयोग में पहले मन्त्र को सिद्ध करना पड़ता है।

मन्त्र इस प्रकार है-

"ॐ नमो हनुमंत कलवंत माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ चवंत आओ गद किल्ला तोरंत आओ लंका जाल बाल भस्म करि आओ ले लायूं लंगूर ते लपटाय सुमिरते परका ओ चन्द्री चन्दावली भवानी मिल गावे मंगलचार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ पी तुम आओ सात पान का बीड़ा चढ़ाईत मसाक सिन्दूर चढ़ाओ आओ मंदोदरी के सिंहासन डुलंता आओ यहाँ आओ हनुमान माया जागें नृसिंह माया आगे भैंरं किल्लिकलाय ऊपर हनुमंत गाते दुर्जन को डार दुष्ट को मार संहार बाजा हमारे सत गुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति कुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

विधि (१) - सर्वप्रथम मन्त्र को सिद्ध करने के लिए उसका १०,००० की संख्या में जप करे। जप को २१ सप्ताह ४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। मंगलवार के दिन ७ पान के बीड़ा तथा ७ लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। अन्य दिनों में एक पान का बीड़ा तथा ७ बत्ताशों का भोग नित्य लगाना चाहिए। जप के अन्त में नित्य धूप, दीप नैवेद्य आदि से विधि पूर्वक हनुमान जी का पूजन करना चाहिए तथा हनुमान जी पर सिन्दूर का जाला चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है, अब जिस दुश्मन को जेर अर्थात् बर्बाद करने के लिए मन्त्र-साधन किया जाता है, उसमें संकलता जाया होती है।

विधि (२) - पृथ्वी के ऊपर शत्रु की एक मूर्ति लिये तथा उसमें यथास्थान बीज-मन्त्र लिखकर उसकी धाती में शत्रु का नाम लिखे (जैसा कि बाईं ओर के चित्र में दिखाया गया है) इसके बाद मंत्र की प्रकृति हुए मूर्ति के सिर में दो छूते मोरे लगे इस प्रयोग से बीरों का सिर फूटता है तथा उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है अर्थात् वह बाबला हो जाता है। पृथ्वी पर पुतला बनाने समय मौसम की चार कीलें बनाकर, उन्हें मन्त्र से अभिमन्त्रित करके चारों कानों में गाढ़ देना चाहिए तथा हनुमान जी को वीर का भोग लगाना चाहिए।



विधि (३) - पूर्वोक्त मूर्ति की भाँति मौसम का एक पुतला बनाकर, लाल, लाल, लाल, लाल लिखे हैं; उन सबको उस पुतले में यथास्थान लिखें। बीज लिखें। फिर मुँह की हड्डी की कील को पुतले की धाती में ठोक कर, पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उस इमशान भूमि में गाढ़ दें तथा मुँह की हड्डी को गरम से ठँक दें।

उका प्रयोग के प्रभाव से शत्रु बाबला, पागल तथा बीमार हो जाता है। तब तक पुतले को उखाड़ नहीं। गाढ़ा उस पर विपत्तियाँ, मँडरानी रहती हैं और अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है। समाप्ति है। के इस राक्षस की प्रत्येक क्रिया को करते समय मन्त्र का पाठ अक्षरशः करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित ४ कोलों की शत्रु के चार की चारों दिशाओं में गाढ़ देने से उसका रतम्भन होता है।

कैंदी को छुड़ाने का यन्त्र-

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
य हाफिज	३३२	३३४	२३६
र र	३३७	३३०	३३५
कैंदी का नाम कैंदी के पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

(कैंदी को छुड़ाने का यन्त्र)

बालभय नाराक यन्त्र- कैंदी और प्रदर्शित यन्त्र को अच्छे गंध द्वारा मोड़ यन्त्र के ऊपर लिखकर, गंध पुष्प, धूप, दीप आदि से यथा विधि पूजा करें, तदुपरान्त उसे 'जिलोट' के तारबिण (सोना-चाँदी तथा ताँबा मिश्रित) में भर कर बालक के गले में बाँध दें। इस यन्त्र के प्रभाव से उसका दुःख तथा बुरे चाल दूर हो जायगा। तारबिण को काले डोरे में पिरोना चाहिए।

यदि कोई मनुष्य कैंद (जेल या ऐसे ही अन्य बन्धन) में पड़ा हो और उसे छुड़ाना अभीष्ट हो तो बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र का निम्नानुसार उपयोग करना चाहिए -

रविवार के दिन राक जंगली काला कबूतर लाकर उसके गले में इस यन्त्र को केशर द्वारा मोड़ यन्त्र पर लिख कर बाँध देना चाहिए तथा कबूतर को उड़ा देना चाहिए।

प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह कैंदी तथा उसके पिता का नाम लिखने का उल्लेख है, वहाँ साधक-व्यक्ति अर्थात् कैंदी और उसके पिता का नाम लिखना चाहिए तथा यन्त्र लिखने के बाद उसका विधिपूर्वक पूजा भी अवश्य करना चाहिए, उसके बाद ही यन्त्र को कबूतर के गले में बाँधना चाहिए। इस प्रयोग से कैंदी बन्धन मुक्त हो जाता है।

या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता

बवासीर का यन्त्र - बाँये प्रदक्षिण यन्त्र को अष्टगंध

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

द्वारा भोजपत्र पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन कर, ताँबे अथवा त्रिलोह (सोना, चाँदी, ताँब) के ताबीज में भूकर दौरे भुजा में बाँधने से रक्ती तथा बारी-दोनों प्रकार की बवासीर में लाभ होता है।

चेचक का यन्त्र -

१	२१६६	११	८
११	७	२	१२६८
६	६	३१७६	३
३१७	४	५	१०

बाँई और प्रदक्षिण यन्त्र को केसर, कस्तूरी तथा गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे, फिर किसी जेरे में लपेटकर रोगी की भुजा में बाँध दे तो चेचक रोग का प्रकोप जाता हो जाता है।

पित्ती का यन्त्र - दाँई और प्रदक्षिण यन्त्र को

रविवार के दिन पुष्प नक्षत्र में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर गंध-पुष्पादि से पूजन करे। फिर गूगल की धूनी देकर ताबीज में भूकर बाँधे तो पित्ती निकलना बन्द होता है।

७०	७७	२	७
६	३	७४	२३
७६	७१	८	९
४	५	७२	७५

आधासीसी का यन्त्र - दाँई और प्रदक्षिण यन्त्र

को केसर, कस्तूरी, अष्टगंध आदि किसी भी शुभ गंध से भोजपत्र पर लिखकर, यन्त्र का पूजन करे, फिर उसे आधासीसी के रोगी के मस्तक पर बाँध दे तो उसका रोग दूर हो जाता है।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	९
४	५	१२	१५

घाया भस्म करने का यन्त्र

नीचे उद्विग्न यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उसका गंध, पुष्प आदि से यथाविधि पूजन करें तथा गूगल की धूप दें। तत्पश्चात् यन्त्र का पलीता (बत्ती) बनाकर जला दें।

२५	१६	२०	१	२८	३६	३०
२६	२७	१८	६	७	४७	३८
३७	३४	२९	१७	८	९	४९
४४	३९	३४	२४	४९	१४	५
५	४४	४२	३३	२५	१५	१३
१२	३	४३	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४८	४०	३१	२२

इस यन्त्र का पलीता जलाने से घायामस्म हो जाती है।

प्रेत दूर करने का पलीता यन्त्र

नीचे उद्विग्न यन्त्र को कागज के ऊपर कारी स्याही से लिखकर, गूगल की धूप दें। यदि यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी, गौरौचन आदि किसी गंध से लिखा जाय तो अधिक अच्छा रहता है।

यन्त्र को लिखते तथा उसका पूजन करने के बाद उस व्यक्ति को सुँघावे, जिसे प्रेत ने जकड़ कर रखा है।

इस यन्त्र के प्रभावसे प्रेत बौलने लगता है तथा जो कुछ छुछा जाय, उसका जलाव देता है। अन्तर्मे स्व-गुत्स व्यक्ति को छोड़कर भागभी जाता है।

अ	बू	हि	ज	ज	त्र	०	०	०
ट	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

पन्ना
१०८

व्यवसाय-वृद्धि के यन्त्र - नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को

एक बड़े भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर, गंध, गुण, धूप-दीप आदि से पूजन करें, तदुपान्त उस भोजपत्र को धीरे धीरे में मढ़कर यन्त्र को दूकान अथवा गद्दी या कार्यालय के किसी स्थान में टाँग दें तथा निम्न धूप देते

६६	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

रहे तो व्यवसाय में बहुत वृद्धि होती है।

इस यन्त्र को घृत में सिन्दूर मिलाकर, दूकान गौदाम, कार्यालय आदि की दीवार पर भी लिखा जा सकता है। दीपावली

के अवसर पर जहाँ 'श्रीगणेशाय नमः', 'श्री महालक्ष्म्यै नमः' आदि मन्त्र तथा पञ्चहिंसा अथवा बीसा यन्त्र लिखे जा चुका हो, वहीं यह यन्त्र को भी अवश्य लिखना चाहिए यह भी व्यवसाय-वृद्धि में सहायक सिद्ध होता है।

धूतविजय यन्त्र - नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को एक

भोजपत्र के दुकी पर केसर, कहलूरी, कझर तथा गौरोचन द्वारा लिखकर धूप दे, तदुपान्त ताँबे या चाँदी के ताबीज में भर कर अपनी दाँर पुजा में बाँध कर पुजारी के लिये जाय तो उसे धूप में विजय जापा होती है कभी हारना नहीं है।

१	२५॥	२३॥	२३
३१॥	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८	२४॥	१६॥
२६॥	१॥	५॥	४॥

पानी बढ़ करने का यन्त्र - नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को

कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, बूझ के जेड़ में बाँध देने से पानी बरसना बढ़ हो जाता है। जब आनश्यकता से अधिक पानी बरस रहा हो, तभी यह यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

११	१८	२	८
७	३	३४६	३०५
३४८	३६३	६	१
४	६	३४४	३६७

(पानी बढ़ करने का यन्त्र)

अथ यन्त्र महार्णव (पञ्चम खण्ड)

महो

'यन्त्रमहार्णव' के पिछले खण्डों में विविध कामनाओं की पूर्ति करने वाले जिन यन्त्रों का उल्लेख किया गया, वे हिन्दू-पद्धति के थे। इस खण्ड में इस्लामी पद्धति के यन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है, साथमें कुछ अन्य लोक-प्रचलित मन्त्र भी इसमें संकलित किए गए हैं, जिनका फलदायकत्व आस्था और विश्वास पर ही निर्भर करना है, परन्तु उनके बहु-प्रचारित होने में कोई सन्देह नहीं है।

बिस्मिल्लाह का मन्त्र - प्रत्येक फारसी मन्त्र-यन्त्र प्रयोग के आरंभ में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने का नियम है। बिस्मिल्लाह के बाद दरुद पढ़ी जाती है, अतः इनके विषय में जान लेना आवश्यक है। बिस्मिल्लाह का मन्त्र इस प्रकार है - "बिस्मिल्लाहि र्हिमानि र्हिमी"।

दरुद का मन्त्र - दरुद का मन्त्र इस प्रकार है - "अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आले ही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।"

प्रत्येक मुसलमानी मन्त्र के आदि में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बाद 'दरुद' के मन्त्र को स्मरण, प्यार अथवा इक्कीस बार पढ़ना चाहिए। मन्त्र के अन्त में भी इसे इसी ही बार पढ़ना आवश्यक है।

अज़मत का मन्त्र - दरुद के बाद कही: कही 'अज़मत' पढ़ने की भी आवश्यकता होती है। अज़मत का मन्त्र इस प्रकार है - "बिस्मिल्लाहि र्हिमानि र्हिमी अल्ला हुम्मा इन्नी अस अल्लो का बिह क्के इस्काइकल व सिफातिफल उलघा या रज्जाको या समीओ अनत कदो हाजो अकसमो

अलैकुम । या अईयो हलूम लायक तिल मय विकलतो अल हाजिल हुरु फितामाति ताहिरात या दरदा-
- ईलो या किलकाईलो बिहबके सई यदि कुशका अमीनिकुम अल अजीमान नहायू सो मगायू सो इन्नमा
अमरुह इजा आरादा शैयन अनयफूलो लहू कुन यफ कुनफ सुबहान ललाणी ये यदुहिन कूलोकुलपशा
अइन अलै हेतुर्जकुन ।"

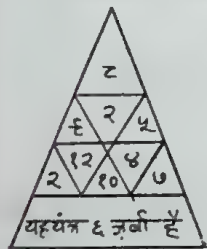
सबसे पहले 'बिसमिल्लाह', फिर ७, ११ अथवा २१ बार 'दरुद' तदुपरान्त एक बार 'अजमत' पढ़े।
इसके बाद ही कारवाही के किसी अक्षर-मन्त्र अथवा अन्य मन्त्र को पढ़ना चाहिए।

बीसा यन्त्र - बीसा यन्त्र कई प्रकार के होते हैं। आगे कुछ बीसा यन्त्रों के स्वरूप उद्घृष्ट किए जाएंगे, जिन्हें हिन्दू-पद्धति के अनुसार लिया जाता है। यहाँ मुसलमानी पद्धति के अनुसार बीसा यन्त्र-
साधन की विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

मुसलमानी-मत में यन्त्र किसी भी प्रकार का क्यों न हो, उसे पृथ्वी पर पीली मिट्टी बिछाकर
उसके ऊपर अँगुली से पहले लिखना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र को लिख-लिखकर मिटाते जाँय। २१, ११
या ७ यन्त्र लिखें। अन्तिम यन्त्र की फूल, मिठाई, धूप, दीप से पूजा करें। यदि कोई सम्बन्धित
मन्त्र हो तो उसका भी जाप करना चाहिए। फिर उस यन्त्र को मिटाकर पृथ्वी पर पानी डाल दें तथा
वहाँ की मिट्टी को उठाकर नदी में डाल दें।

यन्त्र के साथ किसी मन्त्र के जाप का विधान भी हो तो पहले मन्त्र को निश्चित संख्यामें
जाप कर सिद्ध कर लेना चाहिए, तत्पश्चात् यन्त्र-लेखन आदि के कार्य करने चाहिए।

नीचे उद्धृति 'बीसा यन्त्र' को लिखते समय श्रावणी मास की आठ्या अपने हृदय में ले लेनी चाहिए। इस यन्त्र को चालीस दिनों तक लिप 20 की संख्या में लिखना चाहिए तथा दीपक जलाकर, लोबान की धूती देनी चाहिए। बीसवें यन्त्र को कागज पर लिखकर उसका पूजन करना चाहिए। सर्वप्रथम एक बार पूरी 'विस्मिल्लाह' पढ़कर, चालीस बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। बड़ा मन्त्र इस प्रकार है—



... " या जिब्रिल या दर दारिल या रफाईल या तन्काफील बहक या बुदूह।"
इस बड़े यन्त्र को पढ़ने के बाद छोटा यन्त्र — " या बुदूह " — पढ़ना चाहिए। फिर ४० बार पहला यन्त्र पढ़ना चाहिए तथा चार पक्षी दिग रहे, तब ४०० बार बड़ा मन्त्र पढ़ लेना चाहिए। मन्त्रों का पाठ यन्त्र को सामने रखकर ही करना चाहिए। सप्ताह के समय यन्त्र की गोली बाँधकर नदी में बहा देना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

यन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रतिदिन एक यन्त्र लिखकर १०१ बार बड़ा यन्त्र पढ़ना चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार जब किसी मन्त्रार्थ की सिद्धि के लिए यन्त्र को लिखे, तो पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करके २० हजार बार " या बुदूह " पढ़ना चाहिए। मन्त्रार्थ-साधन के समय यन्त्र को जब लिखा जाए उस समय यन्त्र के नीचे अपने मन्त्रार्थ को भी लिख देना चाहिए। बाद में यन्त्र को धूल में गड़ देना अपना शिल के नीचे दबा देना चाहिए।

बीसा यन्त्र के अल्पसंख्यकों के निम्न में आगे लिखा जाएगा है। साधनविधि यही है^{११}।

१० जर्ब बीसा यन्त्र- नीचे दाँई ओर उदक्ति
बीसा यन्त्र १० जर्ब है। इस यन्त्र को
लिख-लिखकर दही या में बहना चाहिए।
इस यन्त्र की साधन विधि पिछले यन्त्र
की भाँति ही है।

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	६	२
७	४	५	४

८ जर्ब बीसा यन्त्र- नीचे उदक्ति बीसा यन्त्र
८ जर्ब है। इसे रात के समय पीपल के पत्ते के ऊपर
अमरपत्र संख्या में लिखते रहते रहे किसी दिन यन्त्र की
अगुहता निकल जाती है, उस समय चार मुक्किकल

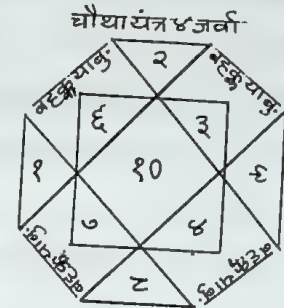
८	२	१०
६	७	४
३	११	६

हाजिर होते हैं।
यन्त्र को लिखते समय
पूर्वोक्त बड़े मन्त्र का
जप करते जाना चाहिए-
इस तथा अन्तिम यन्त्र
को लोभान की धूनी

देकर एक बार पूरी 'बेस्मिल्लाह' पढ़ कर दो हफ्ता
बार 'या बुदूह' मन्त्र को पढ़ना चाहिए। मन्त्र के आदि
ओर अन्त में 'चालीस-चालीस बार बड़ा मन्त्र पढ़ना
चाहिए। अन्य सब विधियाँ पहले यन्त्र की भाँति ही
समझनी चाहिए।

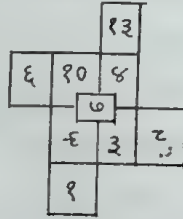
४ जर्ब बीसा यन्त्र- नीचे दाँई ओर
उदक्ति बीसा यन्त्र ४ जर्ब
है।

इस यन्त्र को लिखने तथा
साधन करने की विधि भी
पहले यन्त्र के समान ही
समझनी चाहिए। यन्त्र
के चारों कोनों में 'बहबक
या बुदूह' यन्त्र पूरा मन्त्र
लिखना चाहिए। उदक्ति यन्त्र
में इसे लिखने में लावा गया है, अतः पूरा करने चाहिए।



६ जर्बी बीसा यन्त्र - नीचे बाईं ओर प्रदर्शित यन्त्र ६ जर्बी बीसा यन्त्र है। इस यन्त्र की प्रयोग एवं साधन

पांचवां यन्त्र ६ जर्बी



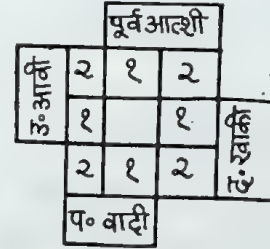
विधि भी पूर्व वर्णित यन्त्रों की भाँति ही है। इन सभी यन्त्रों को लिखते समय आदि तथा अन्त में ७, ११ अथवा २१ वार 'दरुद' अवश्य पढ़नी चाहिए।

'दरुद' पढ़ने से पैगम्बर साहब की मदद पहुँचती है। 'दरुद' एवं बिस्मिल्लाह के मन्त्रों का उत्तेरन पहले ही किया जा चुका है।

यन्त्र की दिशाएँ - उत्प्रेक यन्त्र की चार दिशाएँ तथा चार बिदिशाएँ (कोण) होती हैं। दिशा का बाँया कोना दिशा में सम्मिलित किया जाता है, जैसे कि पूर्व का बाँया अर्न्तकोण पूर्व दिशा में शामिल किया जाता है। इस प्रकार उत्प्रेक दिशा के दो ढर हो ते हैं।

नीचे के चित्रों में यंत्र को दिशाओं तथा प्रकारों को प्रदर्शित किया गया है --

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर	—	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैऋत



सोलह कोठे के यन्त्र - सोलह कोठे के यन्त्रों को मारण-वशीकरण आदि षट् कर्मों के लिए बनाया जाता है।

८	११	१४	पहला
१३	२	७	१२
३	१६	६	६
१०	५	४	१५

इसमें मर लिप्य है कि जिस नाम का यन्त्र बनाया जाय, उसके नामाक्षरों के अंकों को जोड़कर, उसमें से ३० घटाकर जो अंक शेष रहे, उसकी चौथाई में दूरा अंक आना चाहिए अर्थात् अन्धा चौथाई अंक न आवे। उस अंक को पहले की ठे में रखकर शेष १५ कोठी में शक-रक अंक बढ़ाकर रखना चाहिए।

याबुदूह यन्त्र- बीई ओर उदासीन 'या बुदूह' यन्त्र को किसी कुत्र महीने के पहले वृहस्पतिवार को अपना गृह या दीपावली की रात में लिखना चाहिए। निम्न निम्नानुसार है-

बी	ई	ओ	उ
आ	इ	ए	ऊ
अ	अ	अ	अ
अ	अ	अ	अ

चमेली का तेल एक दीपक में भरे। फिर उस दीपक में बत्ती डाल कर जलावे। सवा पाव मिठाई तथा सुगन्धित रत्न रखें तथा लोकान की धूनी दें। इसके बाद बीई ओर प्रसक्ति यन्त्र को १६ बार, जैंगुली द्वारा पृथ्वी पर लिखें। एक-एक यन्त्र लिख कर उस पर एक-एक ब्रह्माणा तथा फूल चढ़ावे तथा साध-की-साध ही यन्त्र को मिटाते ही जाँय। यन्त्र लिखते समय 'या बुदूह' यन्त्र को पढ़ते रहें।

जब बीसवाँ यन्त्र कागज पर लिखें, तब बत्ती हुई मिठाई, फूल, रत्न आदि को उस पर चढ़ावे तथा दीपक की लौ पर यन्त्र को रख कर, दीपक के आगे लोकान की धूनी दें। फिर एक बार 'विरिमल्लाह' पढ़कर २१ बार 'दरुद' तथा, ४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ें। फिर २०,००० (बीस हजार) बार छोटा मन्त्र पढ़ कर, ४० बार बड़ा मन्त्र तथा २१ बार 'दरुद' पढ़ कर, यन्त्र को सोने अथवा चाँदी के तांबे में भर कर दाँये हाथ में बाँधें तथा प्रतिदिन तांबे की लोकान की धूनी देते रहें, साध ही दो हजार बार 'या बुदूह' मन्त्र पढ़ लिजा करें तो निना किसी संदेह के बोली जाफा होती है।

उदर-प्रति के लिए इस यन्त्र को प्रतिदिन एक बार लिख कर धूप, दीप, नैवेद्य, फूल आदि से पूजन करके, उस पर अपनी दृष्टि जमावे रहे तथा पानी भरे बर्तन के सामने १००१ बार प्रतीका मन्त्र का जप करें तो बीबी खुल जाती है और उदर-प्रति होती है।

पन्नाहिया मन्त्र - पन्नाह के मन्त्र की सुसामग्री नीचे निम्नानुसार है -

इस पन्नाह के मन्त्र के लिए ८ कोठों वाला चक्र तैयार कर, उसमें बाँई ओर उदरिणी तन्त्र के अनुसार अंक भरे तथा मन्त्र लिखें। प्रत्येक कोठे का अलग-अलग मन्त्र निम्नानुसार है। चक्र का स्वरूप बाँई ओर के चित्र में उदरिणी दिखाया गया है।

बाबुह ६	बारजाके ७	बाबुह २
यामनाह १	याहारियो ५	याहारियो ६
याहलीयो ८	यानामि ३	यादाइमो ४

साधन विधि - उत्तममहीने के पहले बृहस्पतिवार को कूर्ममन्त्र के अनुसार आसन बिछा कर वार, दिशा, चन्द्रमा आदि का विचार

अजबो या इसाफिल बहक्क या अल्लाहो ॥१॥
अजबो या जिब्राइल बहक्क या बुद्ध ॥२॥
अजबो या किलकाइल बहक्क या जामिडो ॥३॥
अजबो या दरदाइल बहक्क या दाइमो ॥४॥
अजबो या दौदाइल बहक्क या हादियो ॥५॥
अजबो या रफताइल बहक्क या रज्जाको ॥६॥
अजबो या सरफाइल बहक्क या बुद्ध ॥७॥
अजबो या तन्काफिल बहक्क या हलीमो ॥८॥
अजबो या इसमाइल बहक्क या नाहियो ॥९॥

करके बैठें। योगिनी पीठ सीधे रहे। कलत्रा और दीपक सामने रहे। लोबात की धुनी दें, फिर मन्त्र को लिखें। चालीस दिन तक पन्नाह - पन्नाह मन्त्र लिखें। प्रत्येक कोठे को लिखते समय उसके मन्त्र का उच्चारण करते जाँय।

आरिणी मन्त्र पर कुल, मिठाई, इत्र आदि को सभी कोठों पर रखें तथा रातबार श्री निस्मिल्लाह पढ़ कर, एक-एक मन्त्र को १०१ बार पढ़ें। मन्त्र के आदि तथा अन्त में 'ग्यारह-ग्यारह दहद' पढ़ें तो ४० दिन के भीतर कोसा भी मनोरथ को न हो, पूरा हो जाता है। साधन-समाप्त होने के १५ दिन के भीतर ही काम पूरा हो जाता है।

अलिफ का मन्त्र और यन्त्र-

पहले ही उष्कर एक बार पूरी बिरिमल्लाह पढ़े, तब पुराना ११ बार 'बुद्ध' पढ़े। फिर १४१ बाद बिरिमल्लाह को इस प्रकार पढ़ना चाहिए--" या इसाफील बहबक या अलिफ या अल्लाहो " इसके बाद एक हजार

बार--" या अलिफ " पढ़े, परन्तु हर सैकड़े के बाद ब्रह्मसिद्ध मन्त्र को १० बार पुनः पढ़ना चाहिए। तथा--" आजिबो या इसाफील बहबक या अलिफ या अल्लाहो " - इसे १२ बार पढ़े। फिर--

" अस्सलाम सलैकुम या इसाफील बहबक या अलिफ या अल्लाहो बिरिमल्लाह अलाबैर रिवाकली मुहम्मदिन ब आलही अजमईन " - इस मन्त्र की परिधि एक हजार बार पढ़े।

जप करते समय यन्त्र का पूजन करना चाहिए। यन्त्र के स्वरूप को बाँई ओर खड़ा किया गया है। इसे सफेद कागज के चौकोर टुकड़े पर, काली स्याही से लिखना चाहिए तथा मन्त्र जप करते समय यन्त्र को सामने रख कर, उसी पर अपनी हथि के निक्षेप रखनी चाहिए।

इसके साथ ही फारसी-लिपि में १००० बार 'अलिफ' को कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर लिखकर, उन्हें आटे में बंद कर, गोली बाँध कर, दरीया (नदी) में बहा देना चाहिए। इससे कार्य सिद्ध होता है तथा यन्त्र मिलता है।

याजिब्राईल	याअल्लाह	याअल्लाह	याअल्लाह	याबुद्ध
याजिब्राईल	२६	५	३४	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील
याजिब्राईल	२६	२२	१३	याइस्त्राफील

(या इसाफील बहबक या अलिफ या अल्लाहो मुझे यन्त्र और दोलत दे या बुद्ध)

७८६ का यन्त्र - नीचे बाँई ओर उद्विग्न यन्त्र

१६८	२०२	२०५	१६१
२०४	१६२	१६७	२०३
१६३	२०७	२००	१६६
२०१	१६५	२६४	२०६

को 'बिस्मिल्लाह' मन्त्र के सिर पर लिखा जाता है। इस यन्त्र की पूजा आदि की विधि पूर्व यन्त्रों की जैसी ही है।

यन्त्र लिखने से पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़े। फिर १००१ बार निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ना चाहिए -

" या अल्लाहो या रहमनो या रहीमो या हैयो या कैयूमो। "

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ग्याह-ग्याह बार 'दरुद' भी पढ़नी चाहिए।

उक्त यन्त्र को किसी बृहस्पतिवार के दिन सुबह कागज के ऊपर काली स्याही से लिखना चाहिए।

इस यन्त्र के साधक को रोपी-रोटी की चिता नहीं करनी पड़ती। वह उसे जाफा होती रहती है।

यश प्राप्ति का यन्त्र - नीचे दाँई ओर उद्विग्न

यन्त्र को समेक चौकोर कागज के ऊपर काली स्याही से लिखें तथा पुष्प, धूप, दीप आदि से यथाविधि पूजा कर, यन्त्र को सामने रखते हुए निम्न लिखित मन्त्र का निम्न एक हुआ की संख्या में 'जप करें' -

८	११	१६	१
३८८	२	७	१२
३	३६१	६	६
१०	५	४	३६०

" या इलाइल बहुक्क या ले या तव्वावो। "

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ग्याह-ग्याह 'दरुद' भी पढ़नी चाहिए।

उक्त यन्त्र को किसी शुभ महीने के पहले बृहस्पतिवार को प्रातः काल लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने से स्नान का के वस्त्र धारण करने चाहिए तथा पश्चिम दिशा की ओर मुँह का के यन्त्र का लेपन तथा मन्त्र का जप करना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रयोग से यश तथा सम्मान मिलता है।

६२	२०	२	७
०	२०	४७	४६
४६	४४	८	१
४	५	४५	४८

३	२	७	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

राज्य-सम्मान पाने का यन्त्र

बाँई ओर उद्विगति यन्त्र को कपूर तथा कस्तूरी से भोजपत्र पर लिख कर, गंध, पुष्पादि से पूजन कर अपने पास रखने से राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होगा रहता है।

नजर न लगने का यन्त्र

बाँई ओर उद्विगति यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल-चन्दन से लिख कर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर तथा धूप दे, राक्षस में भर कर बालक के गले में बाँध देने से उसे नजर नहीं लगती और लगी हो तो दूर हो जाती है।

बलाप दूर करने का यन्त्र

बाँई ओर उद्विगति यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध अथवा लालचन्दन द्वारा-चार दुकानों पर अलग-अलग लिखे तथा उन्हें चारों कानों में गाढ़ दे तो हर प्रकार की बलाप दूर होती है।

आधासीसी नाशक यन्त्र

बाँई ओर उद्विगति यन्त्र को रत्नधार के दिन सफेद अथवा लालचन्दन या केसर से लिख कर रोगी के मस्तक पर बाँध देने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाती है। प्रातः एक दिन में ही लाभ होगा।

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
३	७५	६८	६
३६	५	४	१५

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

हं.	सं.	पं.	कं.
खं.	पं.	पं.	जं.
नं.	पं.	मं.	०
वं.	०	मं.	दं.

नं.	दं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	दं.	जं.	छं.
दं.	नं.	जं.	हं.

काली देवी की प्रसन्नता का मन्त्र

बाँई ओर उदश्रिति मन्त्र को
कनेर के वृक्ष के नीचे बैठ कर
भोजपत्र के टुकड़ों पर, लाल
चन्दन द्वारा लिखने से भगवती
कालिका देवी प्रसन्न हो कर
अभिलाषा-प्रति करती है।

हनुमान्जी की प्रसन्नता का मन्त्र

बाँई ओर उदश्रिति मन्त्र को
भोजपत्र अथवा सफेद के
टुकड़ों पर सिम्पूर (धृत में
मिला हुआ) द्वारा सवालान
की संख्या में लिखने से हनु-
मान्जी प्रसन्न होकर मनोकामना
पूरी करते हैं।

भूत, यक्ष, देवी प्रसन्नता कारक मन्त्र

बाँई ओर उदश्रिति मन्त्र को
सिरस के वृक्ष के नीचे बैठ कर
भोजपत्र या कागज पर केसर आदि
से अथवा धूप की धुँएँ की कलश
से सवालान लिखने पर भूत, यक्ष
तथा देवी की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अलिगन्धा यक्षिणी का मन्त्र

बाँई ओर उदश्रिति मन्त्र
को कागज अथवा भोजपत्र
के ऊपर सवालान के रस से
सवालान की संख्या में लिखने
पर अलिगन्धा यक्षिणी प्रसन्न
होकर साधक को अभीष्ट फल
उदान करती है।

तं.	तं.	तं.	तं.
पं.	पं.	पं.	पं.
दं.	दं.	दं.	दं.
लं.	लं.	लं.	लं.

लं.	पं.	दं.	लं.
लं.	तं.	पं.	दं.
सं.	पं.	दं.	लं.
पं.	दं.	मं.	नं.

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

उ	मं		प
द	त	को	म
त	र	लं	प
	यु		ग

प्रसिद्धि प्राप्त करने का पञ्च
बाँई ओर उदभित्ति पञ्च
को भोजपत्र के ऊपर केसर,
कहूरी, लाल चंदन अथवा अण्ड
गंध द्वारा सवालाल की संख्या
में लिखने से साधक को लोक
में प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

विघ्न-विनाशक पञ्च
बाँई ओर उदभित्ति पञ्च
को मालकांगुली के रख से
कागज के ऊपर लिखकर, गंध
दुग्ध, धूप दे, ताबीज में भर कर
काष्ठ में बाँधने से विघ्न नष्ट
होते हैं तथा दूर प्रकार का भय
दूर हो जाता है।

गर्ववस्तु आने का पञ्च
दाँई ओर उदभित्ति पञ्च
को हड्डी की कलम से, कनेर
वृक्ष की धागा में बँध कर,
हथेली के ऊपर सवालाल की
संख्या में लिखने से गर्ववस्तु
वस्तु नाशित आ जाती है।

सर्वरक्षाकर पञ्च
दाँई ओर उदभित्ति पञ्च
को कहूरी, चंदन तथा कपूर
से भोजपत्र के ऊपर लिख
कर, धूप-दीप दे, दाँईगुला
में बाँधने से सभी प्रकार के
संकटों से रक्षा होती है। पञ्च
को ताबीज में भर कर बाँधें।

हं.	हं.	हं.	हं.
इं.	इं.	इं.	इं.
जें.	जें.	जें.	जें.
हीं.	हीं.	हीं.	हीं.

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ए	ऐ
लृ	लृ	र	र
ओ	औ	अं	अः

विष्णु-बुद्धि दायक पन्ना

किसी भी मासकी चतुर्थी से शुरू कर बाँई ओर उदयवर्ति पन्ना को उल्लिखित चन्दन अथवा केसर द्वारा एक निश्चित संख्या में लिखते रहने से विष्णु एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

स्त्री-वशीकरण पन्ना

बाँई ओर उदयवर्ति पन्ना को छुपान पत्र में, सीक द्वारा पान के पत्ते पर लिखें। फिर वह पान जिस स्त्रीको रियास दिना जायगा, वह पान रियास के वाले पुरुष के वशीकृत होजाती है। इससे किसी भी स्त्रीको वश में करें।

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४१	३८	८	१
४	५	३६	४१

शीत-पर्व-नायाक पन्ना

बाँई ओर उदयवर्ति पन्ना को किसी शुभ मुहूर्त में भोजन के उपर लाल चंदन से लिखकर, धूप दे। फिर इसे रोगी के गले में बाँध दे तो शीत पर्व होजाता है।

३	४	७	१७
१	६	१०	६
१४	४	३	७
७	३	१४	४

पुरुष वशीकरण पन्ना

बाँई ओर उदयवर्ति पन्ना को व्याध के रस से रोटी पर लिखकर पुरुषको खिलाते से वह पन्ना को लिखते वाली स्त्री के वशीकृत होजाता है। इस उपयोग से किसी भी पुरुषको वश में करें।

७	२१	२	७
६	३	१६	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

७६	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	६	१
४	६	८१	८४

शत्रुबल-नाशक मन्त्र
बाँई ओर उदक्षिति मन्त्र
को चतुरे के रस से भोजपत्र
के ऊपर लिखकर लोबान की
धूप दे। तब पान्ना मन्त्र को गले
में बाँधें तो शत्रु का बल
नष्ट हो जाता है।

४२	४६	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

शत्रु-मारण मन्त्र
बाँई ओर उदक्षिति मन्त्र
को हाथी के नख द्वारा चतुरे
के रस से, कागज पर लिखकर
ब्रह्मशान में गाढ़ देने से शत्रु
की मृत्यु हो जाती है। मन्त्र
के नीचे शत्रु का नाम भी अक्षर
लिखना चाहिए।

शत्रु-मारण मन्त्र

दाँई ओर उदक्षिति मन्त्र को
धामासे की कलम द्वारा कागज
के ऊपर, चतुरे के रस से
लिखें। मन्त्र के नीचे शत्रु का
नाम भी लिखें। फिर मन्त्र को
ब्रह्मशान में गाढ़ दें तो शत्रु मरे।

७६	८६	२	८
७	३	८२	८२
८५	८०	६	१
४	६	८३	८४

शत्रु के शरीर को गलाने का मन्त्र

दाँई ओर उदक्षिति मन्त्र
को किसी पशु के चमड़े पर
लोहे की कलम से, शत्रु के
नाम सहित लिखें। फिर उसे
गूगल की धूप देकर नमक
में गाढ़ दें तो शत्रु का शरीर
गल जाता है।

८३	६०	६	८
७	३	८७	८६
८६	८६	६	१
४	६	८५	८

२२	२६	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	६	१
४	६	२४	२१

कान दुरके का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को भोजन के ऊपर अकार के रूप से लिखकर, धूप-दीप दे लड्डुपाना उसे पीले धागे में लपेट कर कान में बाँध दें तो कान का दर्द बंद हो जाता है।

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४८	८	१
४	५	५०	४३

धनंजय वायु का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को नाम यन्त्र पर अंकित करवा कर गंधा, दुग्ध, धूप, दीप आदि से पूजा कर रोगी के गले में बाँध देने से धनंजय वायु का रोग दूर होकर, रोगी व्यक्ति जल्दी ही स्वस्थ हो जाता है।

आधा सीरी का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को रविवार के दिन कागज पर स्याही से अपना भोजन पर के रूप से लिख कर धूप दे, रोगी के सिर पर बाँध देने से आधा सीरी का दर्द दूर हो जाता है।

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	६

महा०

शत्रु का शरीर फटने का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को शत्रु के नाम सहित घोड़ी के कपड़े धोने की बिला पर लोटे की कलम द्वारा लिखने और उस पर घोड़ी द्वारा कपड़े धोने से शत्रु का शरीर फट जाता है।

६०	७१	२	१
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६६

१४	२१	८	२८
७	३	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४	६	९	९

धावरा-रोग नाशक यन्त्र
 बाँई ओर उददिशि यन्त्र
 को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के
 ऊपर किसी शुभ मुहूर्त में लिखें।
 फिर यन्त्र का पूजन कर, धूप दे,
 ताबीज से भर कर रोगी के कंठ में
 बाँध दें तो धावरा रोग दूर होगा।

८५	६२	२	८
७	३	६६	८८
६१	६६	९	१
४	६	८७	६०

बकड़वाय का यन्त्र
 बाँई ओर उददिशि यन्त्र को
 भोजयन्त्र के ऊपर अङ्गुली से
 रस से लिख कर, यन्त्र को
 धूप-दीप दे, गंध-पुष्पादि से
 पूज कर रोगी के सिरहाने रख
 देने से बकड़वाय से दूरकारा
 मिल जाता है।

धावरा रोग नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज के
 ऊपर काली स्याही से लिख कर
 धूप-दीप दे, ताँबे के ताबीज में
 भर कर रोगी के कंठ में बाँध
 देने से धावरा रोग दूर होता
 है। यन्त्र सोमवार को लिखें।

१०	१७	२	८
७	३	१४	१३
१६	१	९	१
४	६	११	५

काँच निकलने का यन्त्र

बाँई ओर उददिशि यन्त्र
 को केसर अथवा लाल चंदन
 द्वारा भोजयन्त्र पर लिख कर
 अष्टगंध-पुष्पादि से पूजन
 करे, फिर उसे रोगी-बालक के
 गले में बाँध दे तो काँच
 निकलना बंद हो जाता है।

७६	८२	२	८
७	१	७०	७६
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

१	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	६	९
४	६	११	१४

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	६	९
४	५	३२	३४

स्तन न पकने का यन्त्र

बाँई ओर उदरिणि यन्त्र को
भोजयन्त्र के ऊपर उमड़ी के रस
से लिखे, तबु पराना उसे धूप
देकर स्त्री के गले में बाँधदे
तो स्त्री के स्तन गठी पकते। यन्त्र
को तानीज में भर देना चाहिए।

सर्प न आने का यन्त्र

बाँई ओर उदरिणि यन्त्र को
माल काँयुनी के वस्त्र से भोजयन्त्र
पर लिखकर भूगल की धूप दे।
क्रि यन्त्र को ऊपर के भीतर किसी
सुरक्षित स्थान पर रख दे तो वहाँ
सर्प नहीं आते। यह यन्त्र जहाँ
रहेगा, वहाँ सर्प नहीं आवेगा।

भूत न लगने का यन्त्र

बाँई ओर उदरिणि यन्त्र
को भोजयन्त्र अथवा कागज के
ऊपर दूधी (कुड़ी बूटी) के रस
से लिखकर, धूप-दीप दे,
तानीज में भरकर कालक के गले
में बाँध देने से भूत नहीं लगता।

भूत-प्रेत-भयनाशक यन्त्र

बाँई ओर उदरिणि यन्त्र
को सुफेद कागज के ऊपर
काली स्याही से लिख कर, धूप
दीप दे, तानीज में भरकर
गले में बाँध दे तो भूत-प्रेत का
भय नहीं रहता। यह हिस्सों के
लिए विशेष हितकर है।

८६	६६	२	८
७	३	६५	१२
४२	३७	६	९
४	६	६१	६४

५५	६२	२	८
७	३	५६	५८
६२	५६	६	९
४	६	५७	६०

७६	७६	२	७
६	३	२३	२४
२५	२०	२१	१
४	५	२१	२४

२३	२०	२	२
७	७	७७	७३
७६	७४	६	१
४	६	७५	७४

कलह होने का यन्त्र
 बाँई ओर उदश्रिति यन्त्र को
 कुम्हार के आगे की ठीकरी पर
 गेरु अथवा बबड़िया से लिख
 कर जिसके पार में डाल दिया
 जाता है, उसके पार में कलह
 होना आरंभ हो जाता है।

नपुंसकता कारक यन्त्र
 बाँई ओर उदश्रिति यन्त्र को
 रेशम के वस्त्र पर केसर या
 अष्टगंध द्वारा साधन-पुरुष
 के नाम सहित लिख कर कुसुम
 के वृक्ष के नीचे गाढ़ देने से
 साधन-पुरुष नपुंसक हो
 जाता है।

विरोध होने का यन्त्र
 बाँई ओर उदश्रिति यन्त्र
 को तंबौली की झुंडी के पानी
 द्वारा कागज पर लिखे, फिर
 उसे गूगल की धूप देकर शत्रु
 के पार में गाढ़ दें तो उस पार
 में विरोध होना आरंभ हो जाता है।

कामना-नाशक यन्त्र
 बाँई ओर उदश्रिति यन्त्र
 को पुष्पनक्षत्र में अष्टगंध
 द्वारा भोजयत्र पर लिखे, फिर
 उसे धूप-दीप देकर, ताबीज
 में भर कर अपनी बाँई भुजा में
 धारण कर ले तो कामना से
 तट हो जाती है।

४८	६५	२	७
६	३	६२	६१
६४	६६	२	१
४	५	६०	६३

७५	२२	२	२
७	३	७६	७२
६१	७६	६	१
४	६	७७	२०

४३	५०	२	७
६	३	४७	४८
४६	४४	८	१
४	५	४५	४७

४९	९८	९९
१०	२०	३०
१६	२३	३२

राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र को
कपूर तथा कस्तूरी के मोलपत्र
पर लिखकर घुण्ड, गंध, धूप
दीप आदि से पूजन कर, तामील में
भरकर दाँई मुखा में धारण करने
से राजसभा में सम्मान मिलता है।

प्रीति-नाशक यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र
को मोलपत्र के ऊपर अष्टगंध
से लिखने। यदि अष्टगंध न हो
तो चतुरे के रास से लिखे। कि
यन्त्र की बत्ती बगाकर उसे सरसों
के तेल में जलावे तो प्रीति
नष्ट होती है।

सभा-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

दाँई ओर उदयिनि यन्त्र को
अष्टगंध द्वारा मोलपत्र पर
लिखकर सोना, चाँदी अपवा
ताँबे के तामील में भरकर,
कण्ठ में धारण करने से सभा में
सम्मान प्राप्त होता है।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५६
६२	५७	६	१
४	५	५८	६९

प्रीति-नाशक यन्त्र

दाँई ओर उदयिनि यन्त्र
को कटेली के पत्ते पर चतुरे के
रास से लिखकर बूगल की धूप
देते तथा जितना व्यक्ति की प्रीति
नष्ट करनी हो उसके सोने के त्पत्र
पर, यन्त्र को सुवाक, सोतेबुध
पर डालदे तो प्रीति नष्ट होगी।

४९	९८	९९
२०	३०	९०
२३	३२	९६

तिजारी-नाशक यन्त्र

बाँई ओर उदयति यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर, यन्त्र लिखित मोमयन्त्र को गंध, पुष्प धूप आदि से पूजे, फिर उसे रोगी की भुजा में बाँध दे तो तृतीयक चर (तिजारी) दूर होता है।

६	२	७
४	६	८
५	१०	३

जीति-उत्पादक यन्त्र

बाँई ओर उदयति यन्त्र को मोमयन्त्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर, धूप-दीप देकर पूजन करे, तदुपरांत उसकी बत्ती बनाकर कुलेल में डालकर जलाये तो साधु-पक्षि के घर में जीति उत्पन्न होती है।

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०

बौध-प्राप्ति यन्त्र

बाँई ओर उदयति यन्त्र को शुक्ल-पक्ष में जिस दिन श्रवण नक्षत्र हो, उस दिन केसर डारा कांसे की धाली में लिखे फिर उस धाली में रबीर भर कर रोज़े तो बौध की प्राप्ति हो।

६३	६१	२	८
७	३	६८	६६
६०	७४	६	१
४	६	६५	६६

व्यवहार-प्रतिष्ठा यन्त्र

बाँई ओर उदयति यन्त्र को दीपाली की रात्रि में, सिद्ध में धृत मिलाकर अमरीपूजन काचलिप अथवा कारलोम की दीवाल पर लिखने से व्यवहार में 'प्रतिष्ठा आती है' तथा व्यवसाय में लाभ होता है।

७४	८१	२	७
६	३	७६	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

सर्व कार्य सिद्धि पन्ना

बाँई ओर उदयित पन्ना को बाँस की कलम द्वारा पृथ्वी के ऊपर सवालाब की संख्या में लिखने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। पन्ना को किसी शुभ घुहूर्त में लिखना आरम्भ करना चाहिए।

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	६	६	१
४	६	१०	१३

सर्व कार्य सिद्धि पन्ना

बाँई ओर उदयित पन्ना को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के टुकड़ों पर सवालाब की संख्या में लिखने तथा अनाम लिखने पन्ना का निधिवर पूजा करने से सभी मनोमिलायाए पूर्ण होकर सब कार्य सिद्ध होते हैं।

६६	१०	२	८
७	३	६७	६०
५०	४५	६	१
४	६	६५	६८

सर्व कार्य सिद्धि पन्ना

बाँई ओर उदयित पन्ना को सिद्ध, कुंकुम तथा कस्तूरी द्वारा तीनों के पात्र पर लिखकर पूजा करने तथा इष्टदेव का चण्डा चार कउती का जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

६७	७३	२	८
७	३	७१	६६
७२	६८	६	१
४	६	६८	७२

सर्व कार्य सिद्धि पन्ना

बाँई ओर उदयित पन्ना को किसी शुभ घुहूर्त में पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर बाँस की कलम से पृथ्वी पर लिखना आरम्भ करें। सवालाब की संख्या में लिखने से सब कार्यों की सिद्धि होती है।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१६	१४	६	१
४	६	१५	१८

८	५	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

मनोभिलाषा प्रक यन्त्र

बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को पीछल के वृक्ष के नीचे बैठ कर, सीसे की कलम से पृथ्वी पर सवालाल की संख्या में 'लिनके' से मनोभिलाषा की वृत्ति होती है। शुभ मुहूर्त में लिखना आरंभ करें।

६१	१००	२	८
७	३	६७	६६
६६	६४	६	१
४	६	६५	६८

उद्योग-सिद्धि यन्त्र

बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर लिख का उसका गंध-पुष्प आदि से पूजन करें तथा ताबीज में भर का दाँई भुजा में धारण किए रहे तो उद्योग सिद्ध होता है।

उद्योग-सिद्धि यन्त्र

दाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को अष्टगंध आदि के द्वारा भोजयन्त्र ऊपर कागज पर सवालाल की संख्या में 'लिनके' से उद्योग सिद्ध होता है। यन्त्र के साग ही उद्योग का नाम भी लिखना चाहिए।

३६	४३	२	७
६	३	४०	३६
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

वचन-सिद्धि यन्त्र

दाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को कुल्लिणन के रस से भोजयन्त्र पर लिख का, गंध-पुष्प, चूष दीपादि से पूजन का, ताबीज में भर का अपनी मुखा में धारण करने से वचन-सिद्ध होती है।

६६	६३	२	८
७	३	६०	६६
६१	६४	६	१
४	६	६५	६८

८४	६४	२	८
७	३	६१	६१
६३	८८	६०	१
४	६	८६	६२

अनारफल आने का मन्त्र

बाँई ओर छदशति मन्त्र को
जंभीरी के रस से कण्डक काग
ज अपना भोजपत्र के ऊपर
लिखकर, घूब-दीप दे अनार के
घोघे पत्र बाँध देने से उस पर फल
अधिक आते हैं।

८८	६५	२	८
७	३	६२	६१
६४	८६	६	१
४	६	६०	६१

आम पर फल आने का मन्त्र

बाँई ओर छदशति मन्त्र को
भोजपत्र के ऊपर आम के रस
से लिखकर, गंध-कुष्मादि से
पूजन कर, पीले रंग के डोरे में
लपेट कर आम के वृक्ष पर बाँध
देने से उसमें आम के फल
अधिक आते हैं।

स्वप्न में ऊँट दीखने का मन्त्र

दाँई ओर छदशति मन्त्र को
आधा नक्षत्र में ऊँट की हड्डी
पर लिख कर घातु के पार में
गाढ़ देने से स्वप्न में ऊँट-
ही-ऊँट दिखाई देते हैं। यह
बड़ा मन्त्रोरंजक मन्त्र है।

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	६	१
४	६	१३	१६

स्वप्न में वानर दीखने का मन्त्र

दाँई ओर छदशति मन्त्र
को वानर की हड्डी पर लिख
कर घातु के पार में गाढ़ देने
से उसे स्वप्न में बन्दर-ही-
बन्दर दिखाई देते हैं। यह बड़ा
ही मन्त्रोरंजक मन्त्र है, जो
अपना प्रभाव बखूबी दिखाता है।

१२	१६	२	८
६	३	१३	१४
१८	१२	६	१
४	६	१४	१७

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	६	१
५	६	६	६

स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र
बाँई ओर उदयित यन्त्र को
कागज के ऊपर केनई के रस
से लिखकर, जो व्यक्ति अपने
सिरहाने रख कर सोता है, उसे
रात्रि में स्वप्न के समय भूत-ही-
भूत दिखाई देते हैं।

६३	६६	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

गणमुष्णको लौटाने का यन्त्र
बाँई ओर उदयित यन्त्र को
किसी जलाशय अथवा चाली
परात आदि में भरे हुए पानी में
अपनी बीच की अँगुली से लिख
कर, पानी में कोड़ा मारने से गया
हुआ मनुष्य अपने घर लौट
आता है।

स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र
बाँई ओर उदयित यन्त्र को
भोजन के ऊपर गिलोय के
रस से लिखकर, जो व्यक्ति अपने
सिरहाने रख कर सोता है, उसे
रात्रि में स्वप्न में भूत-ही-भूत
दिखाई देते हैं।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	६	६	१
४	६	६	१२

गण पशु को लौटाने का यन्त्र
बाँई ओर उदयित यन्त्र को
सेही के काँटे काटों उस खूँटे
पर लिखें, जिसपर पशु को बाँधा
जाता रहा हो। यन्त्र लिखने के
बाद खूँटे को पचासपान गाढ़ दे तो
गया हुआ पशु वापिस लौट कर
आ जाता है।

१६	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	६	१
१	६	२१	२३

७६	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	६	१
४	६	७३	७६

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	६	१
४	६	८२	८२

शुक्र-स्तम्भन यन्त्र

बाँई ओर उदयित यन्त्र को स्वातिन यन्त्र में भोजयन्त्र के ऊपर धूर के दूध से लिखकर अपनी कमर में धारण करके मैथुन-कर्म में प्रवृत्त हो तो बहुत देर तक कीर्ति स्वरलित नहीं होता।

मसान जगने का यन्त्र

बाँई ओर उदयित यन्त्र को प्रमथान की ठीकरी पर मदिरा डार। लिख का, उसके ऊपर मदिरा की धार चढ़ाने से मसान जगता है अर्थात् प्रमथान भूमि में हाहाकार का शब्द होने लगता है। शब्द को मसान में ही करते हैं।

नाडा टूटने का यन्त्र

बाँई ओर उदयित यन्त्र को गिलहरी की पूँछ के बालों की कलम द्वारा भोजयन्त्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर मार्ग में डाल दे तो जो व्यक्ति उस रास्ते को ताँचेगा, उसका नाडा टूट जाएगा।

५	१२	२	८
७	३	६	७
११	६	६	१
४	६	७	११

बहुत भोजन करने का यन्त्र

बाँई ओर उदयित यन्त्र को केकड़े के रक्त तथा सेही के काँटे से भोजयन्त्र या कागज के ऊपर लिखकर चूल्हे के पीछे गाढ़ दे तो उस चूल्हे पर बतने वाली रोहिणों को, खाना खाने वाला अत्यधिक संख्या में खाता है।

७८	७५	२	८
७	३	८२	१८
८४	८६	६	१
४	६	८	१०

२४	६०	२	७
६	३	२२	२६
२६	२४	२	१
४	५	२५	२२

अन्न सड़ने का यन्त्र
 बाँई ओर प्रदक्षिणी यन्त्र के
 केसर अथवा हल्दी द्वारा गोले
 के बीच पर लिखकर अन्न की
 राशि (ठेर) में गाढ़ देने से वह
 सड़ जाता है तथा उससे दुर्गन्ध
 आने लगती है।

७०	७७	२	७
६	३	७४	७३
७६	७१	२	१
४	५	७२	७५

चाक से बर्तन न उतारने का यन्त्र
 बाँई ओर प्रदक्षिणी यन्त्र
 को कुम्हार के चाक के ऊपर
 खैर (कच्चा) के कोमले द्वारा
 लिखने से कुम्हार के चाक से
 बर्तनों का उतारना बन्द हो जाता
 है। यदि उतारे भी जाँच लो वे
 चाकाल के आने योग्य नहीं होते।

कमान न चढ़ने देने का यन्त्र
 दाँई ओर प्रदक्षिणी यन्त्र
 को कागली के धरंज पर, पीछे
 के बाल की कालम से हल्दी
 या केसर द्वारा लिखने से साधन
 व्यक्ति की कमान (चपुष)
 नहीं चढ़ पाती।

१६	२६	२	२
७	३	२०	२०
३२	१७	६	१
४	६	१२	२१

कुत्ता के भौंकने का यन्त्र
 दाँई ओर प्रदक्षिणी यन्त्र
 को हल्दी अथवा केसर द्वारा
 कुत्ते के कात के ऊपर लिख
 देने से वह चारों ओर भौंक
 ला हुआ घूमता-फिरता है।
 जब तक यन्त्र मिट नहीं जाता,
 उसका भौंकना चालू रहता है।

६	७५	२	२
७	३	७२	७१
७४	७०	६	१
४	७०	११	७३

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५१	५५

व्यवहार घनिष्ठता यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र को अष्टगण्य द्वारा भोजयन्त्र पर लिखकर अथवा केसर द्वारा बिला-सम्पुट पर लिखकर घर के दरवाजे पर गाढ़ देने से व्यवहार में घनिष्ठता की वृद्धि होती है।

१५	२६	२	८
७	३	१६	१८
२१	१६	६	१
४	६	१७	२०

शत्रु-आमक यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र को शिकरे के घंवर पर केसर अथवा पीली हल्दी से लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से शत्रु बिलकुल डराने से - उधर भटकना रहना है कि ही एक जगह टिक कर नहीं रह पाता।

स्त्री कष्ट-मुक्ति यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र को केसर द्वारा काँसे की चाली में लिखकर धूप-दीप देकर उस चाली में जोड़ना पानी डाल कर यन्त्र का घोल करित स्त्री को बिलावे तो कष्ट दूर होगा।

२८	३५	२	७
७	३	३२	३१
३४	२६	६	१
४	६	३०	३२

शत्रु-नाशक यन्त्र

बाँई ओर उदयिनि यन्त्र को नदी के तट पर बैठकर लोहे की कलम से धूपकी पर एक हजार आठ बार लिखने से शत्रु का नाश हो जाता है। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम भी लिखना चाहिए।

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	६	१
४	६	६६	७२

रुत्री-वशीकरण यन्त्र

बाँई ओर उपदिशि यन्त्र को
केसर, कहलूरी, चंदन, अष्टगंध
अथवा किली भी लेवन-द्रव्य द्वारा
रुत्री के बाँचे पाँव के तलवे में
लगा देने से वह लिखनेवाले
पुरुष के वशीभूत हो जाती है।

५८	४५	२	८
७	३	६२	५१
५४	५६	६	१
४	६	५०	६३

सर्व वशीकरण यन्त्र

बाँई ओर उपदिशि यन्त्र
को कुंकुमवसिष्ठ द्वारा लोटे
के तले में (नीचे) लिखकर,
उस लोटे में पानी भर का जिस
व्यक्ति को पिलाया जाता है, वह
पानी पिलाने वाले के वशीभूत
हो जाता है।

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	६	१
४	६	६३	६१

सर्व वशीकरण यन्त्र

बाँई ओर उपदिशि यन्त्र
को अथवा नक्षत्रों में केली केसर
से भी यन्त्र पर लिखे, फिर
उसे पानी में डाल दे। उस
यन्त्र को पानी को जो भी
व्यक्ति पिनेगा, वही वशीभूत होगा।

६३	६६	२	८
७	३	६६	६५
६८	६३	६	१
४	६	६४	६७

शत्रु वशीकरण यन्त्र

बाँई ओर उपदिशि यन्त्र
को लाल-चंदन द्वारा नगाड़े के
ऊपरी भाग (खाल) पर लिखे,
फिर जिस शत्रु के नाम से
वह नगाड़ा बजाया जाएगा
वह बजाने वाले के वशीभूत
हो जाएगा।

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	६	१
४	६	२४	२३

५७	६४	२	७
६	२	६१	६०
६३	५८	८	१
४	५	५६	६२

मट्टी फूटने का यन्त्र
 बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को भुट्टे के दिलके पर चहारे के रस से मंगलवार के दिन लिखका गूगल की चूनी देकर कलाल की मट्टी में डाल देने से मट्टी फूट जाती है।

२४२	२४१	२४०	२३६
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
झीं	हीं	लं	शीं

गर्भ-रक्षा का यन्त्र
 बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को केसर, कस्तूरी, चंदन, शण्खवा अष्टगंध द्वारा भोजयन्त्र पर लिख कर, चूष-दीप आदि देकर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गर्भ की रक्षा होती है और कोई कष्ट नहीं होता

ढोल फूटने का यन्त्र
 बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को तालाब की मिट्टी द्वारा शनिवार को जल-काल ढोल बजाने वाले को ढोल पर लिखे और गूगल की चूष दे तो ढोल फूट जाता है

६६	७६	३	७
६	३	७	७२
७५	७०	८	१
४	५	६६	७

कष्टा-स्त्री का यन्त्र
 बाँई ओर उदक्षिति यन्त्र को केसर के द्वारा बाँसे की पाली में लिखे, फिर उसे चूष दे। तदुपरान्त पाली को पानी से धोकर स्त्री को पिला दे तो वह बलवत्त्वला हो जाती है तथा कष्ट दूर होता है

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
६	६	१५	४

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५६	५७	८	९
४	५	५५	५६

बैरी के जूता मारने का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को तच्चार करने की विधि इस प्रकार है

श्रातिवार के दिन ठाकुर अथवा तेलीजाति के मुर्दे की कमर के नीचे से, अर्थात् जब मुर्दा चिता के ऊपर जल रहा हो, तब उसकी

कमर के नीचे से एक अंगार लेकर, उस पर मध (शाब) अथवा तैल-पानी का कुल्ला कर दे। फिर अंगार को उठा का चले। पीढ़े की ओर मुड़ का न देखे। तत्पश्चात् उस कोयले को गूगल की धूनी देकर, एक बगशा अग्नि के ऊपर राखे तथा फूल चढ़ाये। इसके अंत प्रसन्न होग। फिर उस कोयला तथा हराल को मिला कर एक टुकड़े कपड़े अथवा कपटन के टुकड़े पर उक्त यन्त्र को लिख कर नीचे बैरी का नाम लिख कर पूरे मोर तो वे पूते बैरी के माथे पर लोंगे।

गाय का यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को केसर, गोदोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर, गूगल की धूनी दे, गाय के गले में बाँध दे तो वह अधिक दूध देने लगती है।

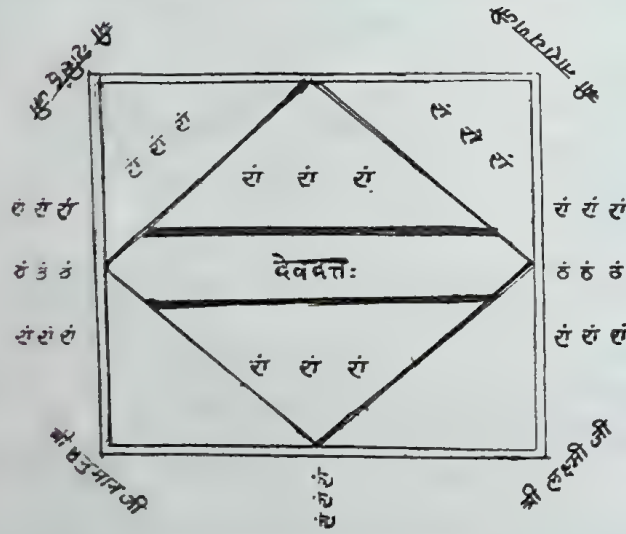
मनोरथ दाता यन्त्र

बाँई ओर उदमिति यन्त्र को अनार की कलम द्वारा, भोजपत्र के ऊपर, आष्टगंध से, बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ कर ४००० की संख्या में लिखे तो मनोरथ पूरा होता है। यंत्र लिखते समय मनोथ का ध्यान करें।

२८	३५	१	७
६	३	३२	३१
३४	२६	८	९
४	५	३०	२३

९	५	६
८	३	४
२	७	६

बाल रक्षा पन्ना



बाँई ओर
पुदवित्तपत्र
को पीपल
के पत्ते पर
अष्टगंध
से लिखकर
गंध, मृत्त
आदि से
पूजाकर
गुग्गुलकी
धूनी दे
फि लात
अपवा

पीले रंग के जोरा में बाँध कर तीन गाँठ लगाये। उल्टेक
गाँठ लगाये समस्त मात बार मन्त्र का जप करना चाहिए।

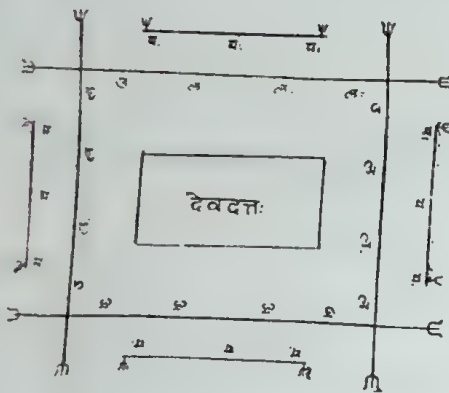
पुदवित्तपत्र के बीच में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है,
वहाँ साधक- बालक का नाम लिखना चाहिए।

उक्त विधि से निर्मित पन्ना को बालक की
कॉई (बाँई लाड़की हो तो बाँई भुजा से अपवाकंठ से
बाँध देने से नजर, भूत-प्रेत आदि के दोष दूर होजाते
हैं। परन्तु पन्ना लिखने से पूर्व निम्नलिखित मन्त्र को सिद्ध
कालेना आवश्यक है -

"ॐ महावीर हनुमंत वीर तेरे तरकर में सौ सौ तीर
खिंण बाएं खिंण दाहिने खिंण खिंण आगे होय
अचल गुसाई सेवता काया मंग न होय
इन्द्रासन दी बाँध के बारे धूमें मसाण
इस काया को दलछिड काये तो हनुमंत तेरी आण ॥"

उक्त मंत्र को मंगलवार के दिन हनुमन्त जी
की पूजा करके १०८ बार जपना चाहिए। सात मंगल-
वारों तक लगातार जप करते रहते से मन्त्र सिद्ध
हो जाता है।

शत्रु-नाशक यन्त्र



(शत्रु-नाशक यन्त्र)

बाँरे ओर उदशिति
यंत्र को लिखने की
विधि निम्नानुसार है-

रविवार के दिन
शमशान भूमि से
सुखा भूक कोयला
लाये। फिर उसे

हरताल के साथ
पाती में पोल कर
रोटी के ऊपर

उसके द्वारा उदशिति
को लिखें। सुपुत्रान

वसाखा और गुगुल

को अग्नि पर रख कर यंत्र को धूनी में रखकर धूनी के
समक्ष आगे लिखें मन्त्र का १०८ बार जाप करे -

मन्त्र -

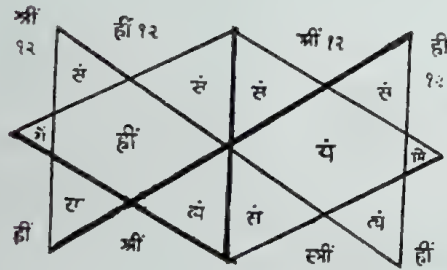
"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शमशान वीराम अमुकस्य नाशाय
नाशाय निधनं सय निधनं सय स्वाहा।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है,
वहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा
उदशिति यंत्र के चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है,
वहाँ शत्रु के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र का जाप करने के बाद यंत्र को शमशा-
न में अथवा मार्ग के चौदावें पा गाढ़ दे लें। इस यंत्र
के उमाव से तीन महीने की अवधि में ही शत्रु का
विनाश हो जाता है।

यह शत्रु-नाशक यंत्र अत्यंत उमावकारी
कहा गया है, अतः इसका उपयोग दुष्ट शत्रु के लिए
ही करना चाहिए। सामान्य शत्रुता के मामलों में
इसे यन्त्र-मन्त्र के उपयोगों को कहा वर्जित है,
अथवा स्वयं को ही हानि पहुँच सकती है।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र - नीचे बाँडे ओर



जय हेर/

मूल इस प्रकार है—

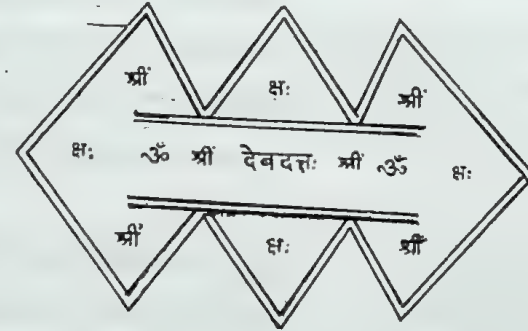
'ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं' सर्वजितस्य हृदये मम वशये
 कुरु कुरु न्याहा।"

उका मन्त्र का जप तथा चन्त्र का लेखन-पूजन करने के बाद चन्त्र को अपनी पगड़ी से ढरले से सब लोगों का वशीकरण होता है।

नीचे बॉर्डर ओर
उद्विग्न चक्र को
दीपानली की रात्रि में
भोजपत्र के ऊपर
अष्टगंध से लाल
कर गंध, पुष्प, धूप,
दीप आदि से पूजा को
तत्पश्चात् निम्नलिखित
मन्त्र का १०८ बार

स्वामी वशीकरण यन्त्र

नीचे उद्दिष्ट पन्थ को भोजपन्थ के ऊपर गोरोक्ष से लाल का शराव-सम्पुट (मिट्टी के दो शक्तीयों के बीच) में रख कर अग्नि में इस प्रकार से तपावे कि पन्थ



जल कर मस्म हो जाय । फिर श्रावण-सम्पुट के उंचा हो जाने पर यन्त्र की शरव को निकाल का पानी में धोल कर पी जाने से 'स्वामी' (मालिक) का वशीकरण होता है । उदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति अर्थात् स्वामी का नाम लिखना चाहिए ।

५१	२	४२	७
४२	२	५०	२
५	४७	३	५३
७	५३	२	४६

१६	२	बुवार
२	५११	है
अज	कुंन	मलमा

बूढ़े भगाने का यन्त्र

बाँई ओर उदक्षिति पन्ना
को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध
अथवा केसर से लिखकर पुष्प
धूप-दीप आदि से पूजा कर, घर
में बरबदे लो पत्र से ओर खेत में
बबबे लो खेत से बूढ़े भाग जाते हैं।

पेट-दर्द दूर करने का यन्त्र

बाँई ओर उदक्षिति पन्ना
को केसर द्वारा कांही के पत्र
(पाली आदि) में लिखकर, फिर
उसे पानी से धो दें तथा उस
पानी को पी जाँय तो पेट का
दर्द दूर हो जाता है। यह यन्त्र
श्रील उभाव उदक्षिति करता है।

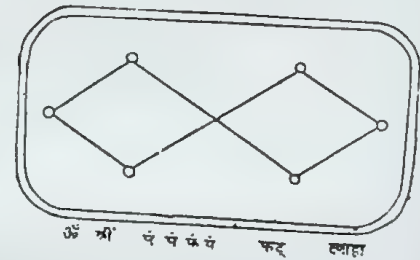
टिड्डी भगाने का यन्त्र

नीचे दाँई ओर उदक्षिति
पन्ना को शनिवार के दिन
भोजपत्र अथवा कागज के
ऊपर नील से लिखकर खेत में
गाढ़ देने पर, उस खेत से
टिड्डियाँ दूर भाग जाती हैं।

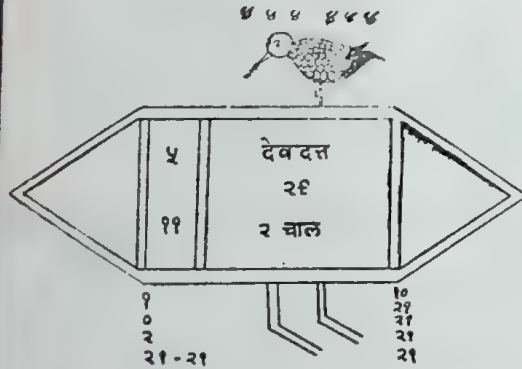
६	५	५
२१	६	१६
४		३

धर्म न डिगने का यन्त्र

दाँई ओर उदक्षिति पन्ना
को दीपावली की रात्रि में
भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध
द्वारा एक काँस में लिख
कर कमर में बाँध लेने
से बाँधने वाले का धर्म
नहीं डिगता।



काले कौवे का पत्र - यदि किसी को काला कौआ, छिसे
गोल-वाल की भाषा में
'काला-कलना' भी
कहा जाता है, लगा
हो तो बाँई ओर
उदक्षिति पत्र को
अष्टगंध द्वारा भोज-
पत्र के ऊपर अना
की काम से लिये
तथा लेजने परान्त



धूप, दीप, गंध, पुष्प आदि से पत्र का पूजा करे।
उदक्षिति चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध
व्यक्ति अर्थात् रोगी का नाम लिखना चाहिए। नदुपाय
पर पत्र रोगी पुष्ट हो तो उसकी बाँई ओर रखी हो
तो बाँई भुजा में बाँध देना चाहिए। इस पत्र को बाँधने
से काला कौआ उतर जाता है।

शीतला का पत्र

बाँई ओर उदक्षिति पत्र को
भोजपत्र के ऊपर चंदन अथवा
अष्टगंध से लिये, नदुपाय
पत्र का पूजा करके गले में
बाँध दे तो चेन्चक नहीं निकलती
और यदि निकली हो तो शान्त हो
जाती है।

श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं

सिजारी का पत्र

बाँई ओर उदक्षिति पत्र
को अष्टगंध अथवा जालचंदन
द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप
दे। फिर सिजारी (तीखरे-दिग आगे
वाला पत्र) के रोगी के गले में बाँध
दे तो पत्र टूट हो जाता है।

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

मुद्राएं- देवी-देवताओं के यन्त्र मन्त्र प्रयोग में विभिन्न प्रकार की मुद्राएं प्रदर्शित करने का निपस है। साधकों की जानकारी के लिए यहाँ कुछ मुद्राओं के चित्र प्रदर्शित किए जा रहे हैं।



(लिङ्ग मुद्रा)



(योनि मुद्रा)



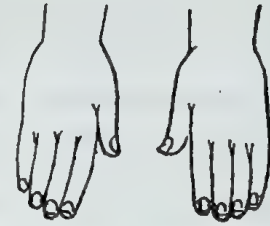
(मत्स्य मुद्रा)



धेनु (सुरभि) मुद्रा



(कीर्तिक मुद्रा)



(शक्ति मुद्रा)



(वहनी मुद्रा)



(कर्म मुद्रा)

विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ



(वदन मुद्रा)



(शंख मुद्रा)



(अन्धोमुख मुद्रा)



(समपाना मुद्रा)



(गुणित मुद्रा)



(शक्ति मुद्रा)



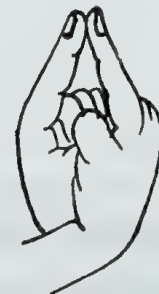
(सुक्ष्म मुद्रा)



(सुदृढ़ मुद्रा)

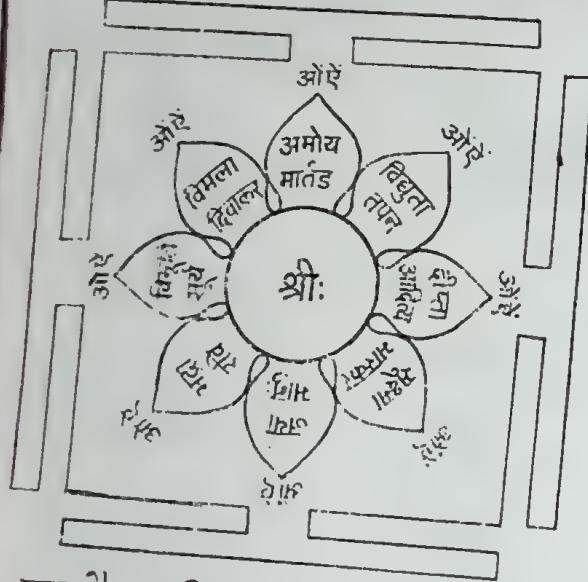


(आनका अहलि)



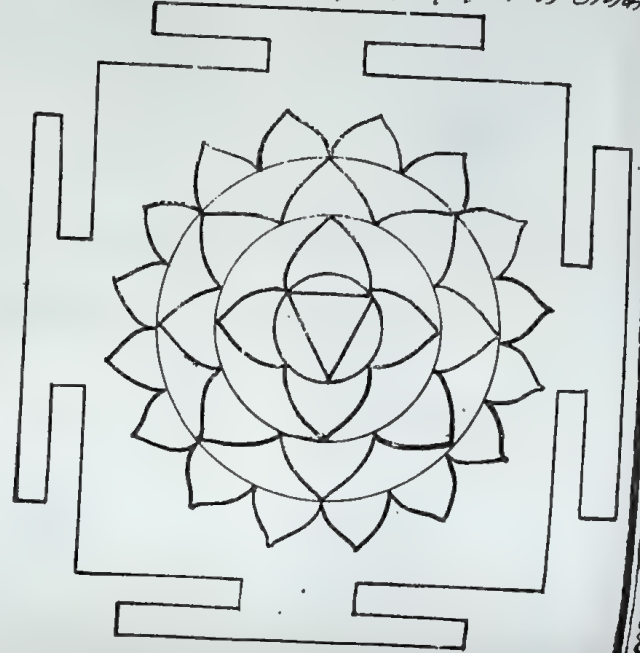
(निर्वाण मुद्रा)

सूर्य यन्त्र- नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को अष्टगंध
कारा भोजयन्त्र पर लिखकर , गंध-पुष्पादि से पूजन
कर ऊँ "ॐ स्वस्ति नमः" इस यन्त्र का यथाशक्ति संस्कार



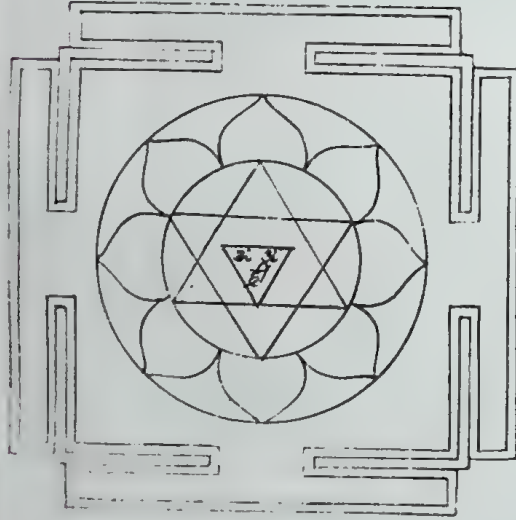
में लिख जग
करते रहते से
सूर्य देवता
पुसना हो कर
स्वाध्यास की
मनोभिलाषाओं
की पूर्ति करते हैं।
किरीपरलक्ष
में सूर्य-पूजा
के लिए यन्त्रका
उल्लेख किया जा

लक्ष्मी यन्त्र- नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को अष्टगंध
कारा भोजयन्त्र के ऊपर लिखें अथवा रामयन्त्र पर संक्षिप्त
करा कर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजा करें
तदुपरान्त "श्री" इस यन्त्र का ३ लाइन की संख्या में जगको



लो भगवती
लक्ष्मी स्थापक
की मनोभिला-
षाओं की पूर्ति
करती है। जो
व्यक्ति इस यन्त्र
का निरूप पूजा
करता है तबका
श्री यन्त्र का जग
करता है, उसके
घर में लक्ष्मी का
निवास रहता है।

वह्नि-पूजन यन्त्र

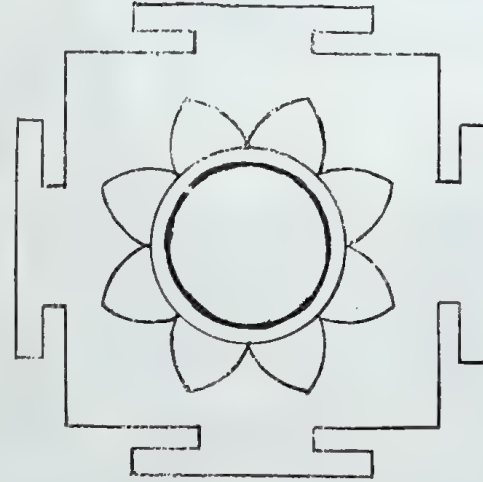


त्रिकोण, चतुष्कोण,
आष्टदल अथवा
चतुष्कोण यन्त्र
बना कर उसके
मध्य में "ॐ ह्रीं
ॐ" लिख कर,
घीरे पूजन किया
जाता है। मण्डक
से लेकर पराशर
तक घीरे देवता
एवं जथा आदि
घीरे शक्तिपों का

पूजन करके, बाद में आसन देकर विभिन्न उपायों से
पूजन करते हैं। वह्नि-स्थापन के लिए यन्त्र निर्माण
का स्वरूप यहाँ प्रदर्शित है।

मधुमती-पूजन यन्त्र

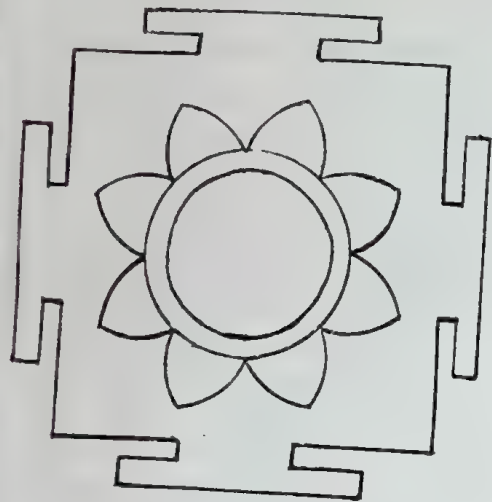
मन्त्र- "ॐ ह्रीं क्रों वलाँ हूँ ॐ स्वाहा" यद्वा



मधुमती देवी का
मन्त्र है। इसकी
जप श्रवण ८ लाख
है। जप के बाद
बेलपत्रों से दशांश
होम करना चाहिए।
मन्त्र के सिद्ध
हो जाने पर काम्य-
उपयोग करने चाहिए,
लाल कमलों का
होम करते से साधक

शाला तथा मन्त्रियों को पक्ष में कर सकना है। पायस
के होम के अनेक भोग मिलते हैं तथा ताम्बूल के होम से
स्त्री वश में हो जाती है। देवी के पूजन का यन्त्र कदापि धारा नहीं

वटयक्षिणी देवी यन्त्र - वटयक्षिणी देवी का प्रजा
यन्त्र नीचे प्रदर्शित है। इसे पा हो ताम्रपत्र पर खुदवाले
अथवा अष्टगंध द्वारा ओषधित पर लिखकर तपाव

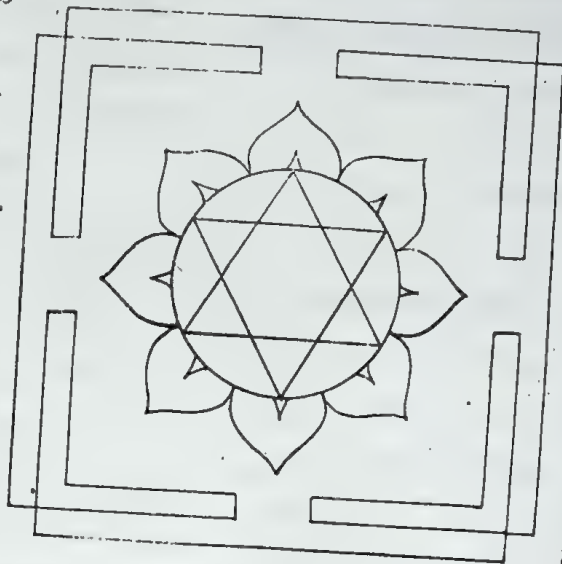


करले'। देवी का
मन्त्र इस प्रकार है—
"इष्टे हि यष्टि यष्टि
महायष्टि नट वृक्ष
निवासिनि शीघ्रं मे
सर्वसौख्यं कुरु कुरु
स्वाहा।"

इस मन्त्र का
दो लाइन की संख्या में
जप करना चाहिए

तथा बन्धूक पुष्पों से दशांश होम करना चाहिए।
इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर बटमक्षिणी देवी साधक
की समस्त मनोभिलाषाओं को पूर्ण करती है।

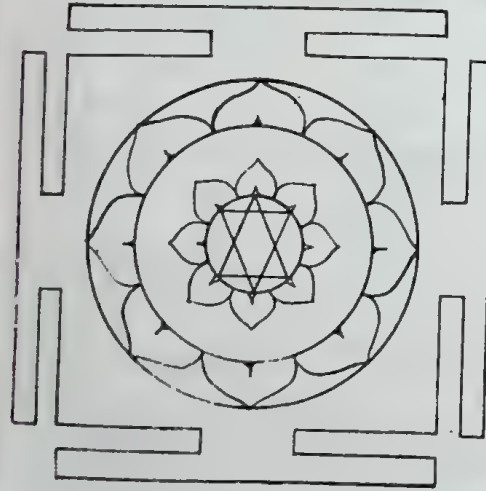
स्वर्णाकर्षण मैरव यन्त्र- स्वर्णाकर्षण मैरव के
यूजन का यन्त्र नीचे उदशित है। इसे घाते अष्टगणक
से लिपिकर भोजपत्र
पर लटकाए करे।



अथवा नामपत्र पर
अंकित करवाले।
मन्त्र स्मृताएँ—
" ॐ ऐं व्रीं व्लीं
वृं क्रीं ह्रीं मूं
वं आपदुद्धारणाय
स्वर्णाकर्षण भैरवाय
मम दारिद्र्य विदोष-
णाय ॐ श्री महाभै-

रवाय नमः ।" - इस मन्त्र का एक लक्षण की संख्या में एक
तथा एक का दशांश होम करे । मन्त्रसिद्ध हो जाने का भी
की कृपा से दाढ़ीला दूर हो जाती है ।

चण्डी पूजन यन्त्र- चण्डी पूजन का यन्त्र नीचे
उद्विष्ट है। इसे घाते ताम्रपत्र पर अंकित करवाले
अथवा अष्टगंध या लाल-चन्दन द्वारा भोजपत्र पर



अंकित करले। देवी
का मन्त्र इस प्रकार है-
" ओं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै
विद्महे । "

इस मन्त्र का चार
लारव की संख्या में जप
करना चाहिए। जप का
दशांश होम तथा
उसका दशांश तर्पण,
उसका दशांश मार्जन
तथा उसका दशांश ब्राह्म

ण भोजन करना चाहिए। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर देवी लाखों
की समस्त मनोकामनाओं को पूरा करती है।

कार्तवीर्यार्जुन पूजन यन्त्र- कार्तवीर्य के पूजन-

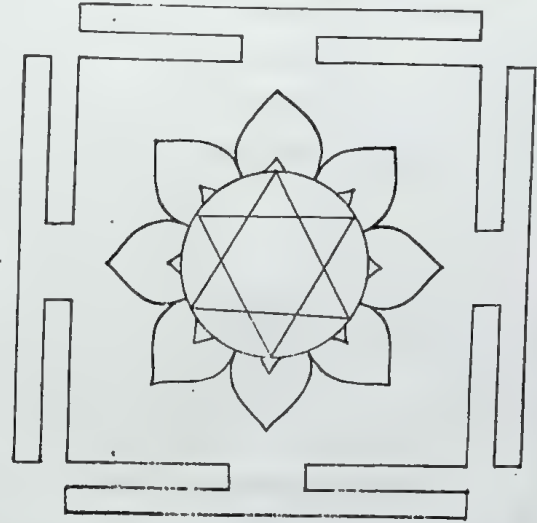
यन्त्र का स्वरूप नीचे उद्विष्ट किया गया है। इसे घाते
ताम्रपत्र पर खुदवाले अथवा अष्टगंध से भोजपत्र पर
'लिख कर' लप्यार-

करले। मन्त्र इस
प्रकार है-

" ओं क्रीं क्लीं त्रूं
आं ह्रीं क्रीं श्रीं हुं
फट् कार्तवीर्यार्जुनाय
नमः । "

इस मन्त्र का जप
एक लारव करना
चाहिए। जप का
दशांश होम करे।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर व्यापक भी समस्त मनोभि-
लाषोष्टि पूर्ण होती है। यह वशीकरण भी करता है।



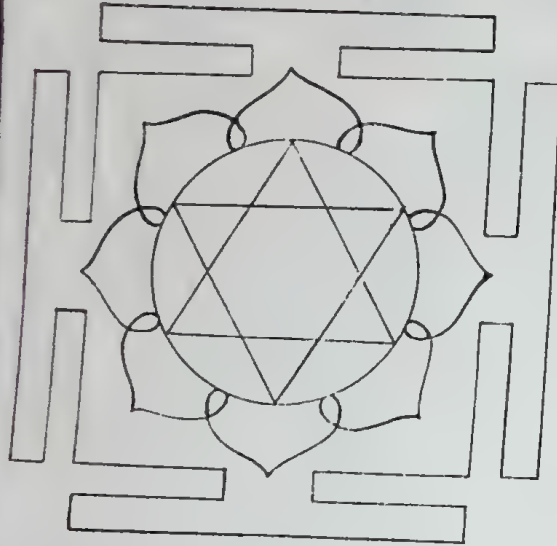
गोपाल पूजन यन्त्र -

गोपाल-पूजन यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में यदि बरकोण न बनाया जाय तो भी कोई हानि नहीं है। (यन्त्र उस विधि से भी पूर्ण रहेगा। मन्त्र निम्नानुसार है -

"गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।"

इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए जप का दशांश होमादि करे।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जातक को स्वर्ग, पुत्र, धन आदि का लाभ होता है। यह वशीकरण का एक भी है।



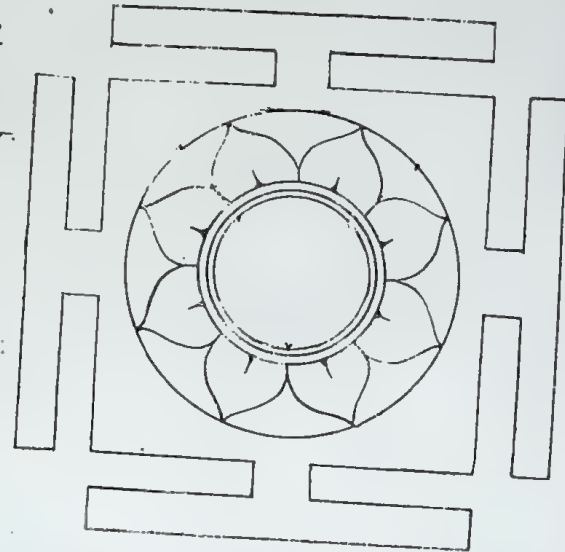
चरणायुध-पूजन यन्त्र -

चरणायुध अर्थात् कुक्कुट के पूजन यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है। इसे या तो अष्टगंध

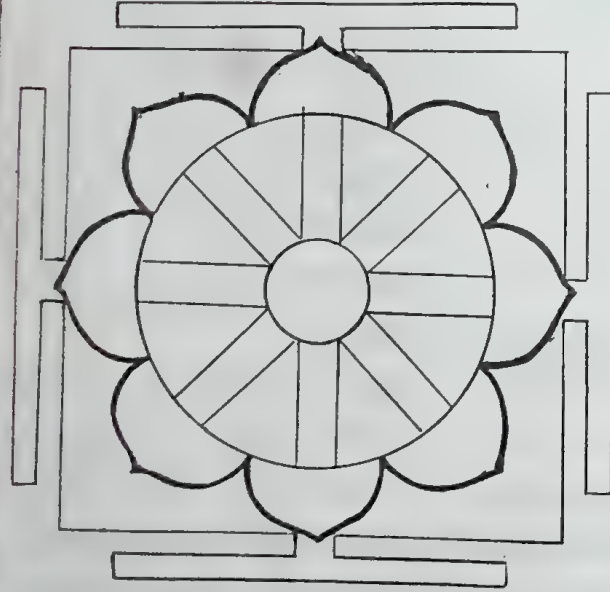
द्वारा भोजन पर लिख कर तत्पश्चात् करे अथवा नाम यन्त्र पर अंकित करावे। मंत्र शुभकार है -

"धूं को लि धूं को लि वां ह्रीं धूं को लि धूं को लि चु वा आं को।"

इस मन्त्र का 9 लाख जप करे। जप का दशांश होम करे। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर धन-ऐश्वर्य का लाभ होता है। न्याय में सब संकट दूर हो जाते हैं।



देव-पूजन यन्त्र- किसी भी देवता का पूजन करने



के लिए जब उसके यन्त्र का स्वरूप ज्ञात न हो, तब बाईं और उदरित यन्त्र के द्वारा उसका पूजन किया जा सकता है।

इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित कराकर

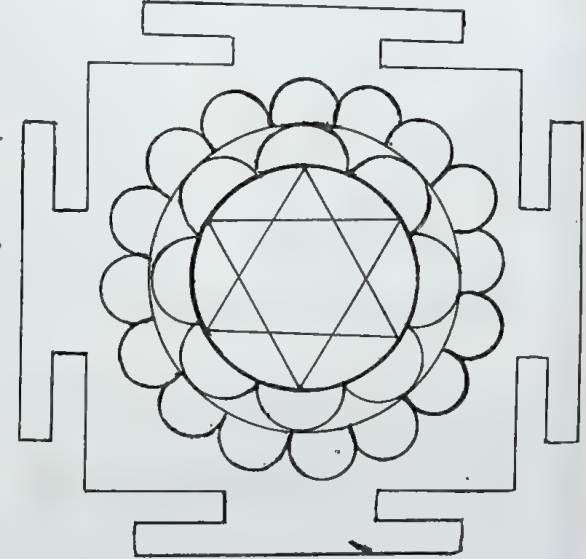
रख लेना चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार प्रयोग में लाना चाहिए। इसे अष्टगंधसे भोजपत्र पर भी लिख सकते हैं।

देवी-पूजन यन्त्र- किसी भी देवी का पूजन करने के लिए जब उसके यन्त्र का स्वरूप ज्ञात न हो,

तब बाईं और उदरित यन्त्र के द्वारा उसका पूजन किया जा सकता है। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित कराकर रख लेना चाहिए

तथा आवश्यकता-नुसार प्रयोग में लाना चाहिए। इसे अष्टगंधद्वारा

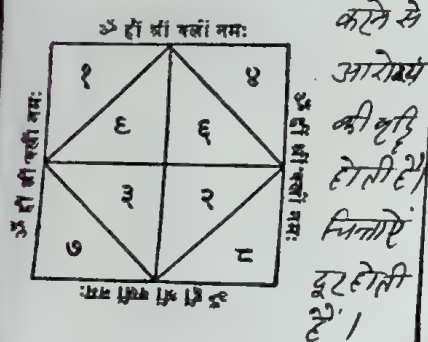
भोजपत्र पर लिखकर भी ताम्रपत्र किया जा सकता है परन्तु भोजपत्र पर अंकित यन्त्र स्थायी नहीं बन पाता।



बीसा यन्त्र-

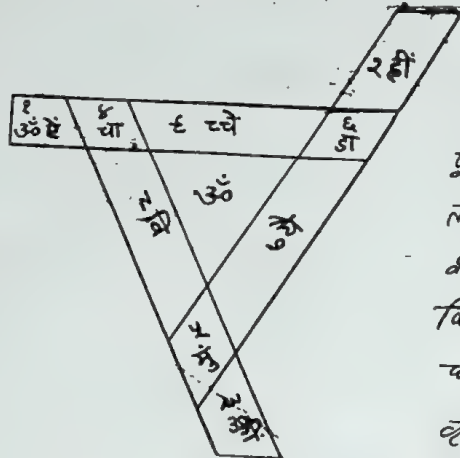
'बीसा यन्त्र' केवल हिन्दुओं के प्रत्येक वर्ग-सम्प्रदाय में ही नहीं, अपितु सिख, जैन, बौद्ध, पारसी तथा मुसलमान आदि अन्य धर्मावलम्बियों के यहाँ भी सम्माननीय, आराध्य तथा श्रद्धेय है। इस यन्त्र के अनेक स्वरूप पाये जाते हैं तथा अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए राक्षस प्रयोग किया जाता है। यहाँ बीसा यन्त्र के कुछ स्वरूपों तथा उनकी प्रयोग-विधियों का उल्लेख किया जा रहा है।

चण्डी बीसा यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को नन्दुगा के दिनेश में चैत्र अथवा आश्विन मास में भोज यन्त्र पर लिखकर पूजा करते से आरोग्य की वृद्धि होती है। चिन्ताएं दूर होती हैं।



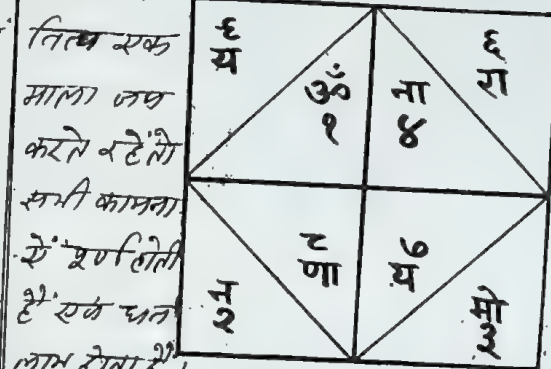
(चण्डी बीसा यन्त्र)

श्रीदुर्गा नकार्ण बीसा यन्त्र- इस यन्त्र को किसी भी मास की द्वितीया तिथि को अलग्गले भोज यन्त्र पर लिखकर पूजा करते रहे तथा दुर्गा सप्ताशी का पाठ किया करें तो यन्त्र-धान्यकी वृद्धि होकर सुख प्राप्त होता है।



(श्रीदुर्गा नकार्ण बीसा यन्त्र)

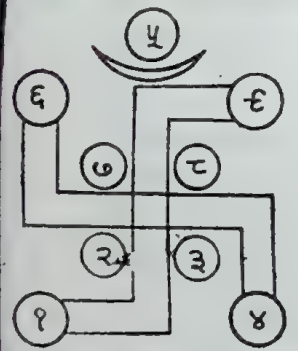
श्रीविष्णु बीसा यन्त्र- नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को केसर (र) भोज यन्त्र पर लिखें तथा 'ॐ नमो नारायणाय' इस मन्त्र का



(श्रीविष्णु बीसा यन्त्र)

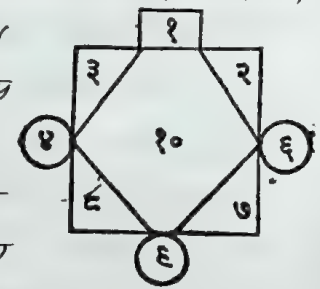
पन्ना ३४६

स्वास्तिक बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को केसर-कस्तूरी



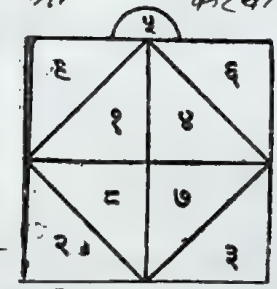
कारा भोजन पर लिखा पञ्चांगि गंध, पुष्प से पूजन करें यदि चाहें तो इस यन्त्र को नामयन्त्र पर भी अंकित करा जा सकता है। इस यन्त्र का निम्न पूजन करते हुए इष्टदेव के मंत्र की 9 माला का जप करते रहेंगे तो सब प्रकार का लाभ मिलता है तथा यन्त्र की वृद्धि होती है।

सिद्धि दाता बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को केसर, कपूर तथा कुंकुम के मिश्रण



से भोजन पर लिखें। फिर यन्त्र का पूजन करते हुए धूप, दीप आदि इसके वाद विधि जप करें निम्न "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए।
उक्त प्रयोग से साधक की समस्त मनोकामनाएँ सिद्ध होती हैं तथा सब प्रकार के संकटों से दूरकारा मिलता है।
इस यन्त्र को त्रिलोह अथवा लौहे के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में भी धारण किया जा सकता है। यह सब प्रकार की सिद्धियाँ देने वाला यन्त्र है।

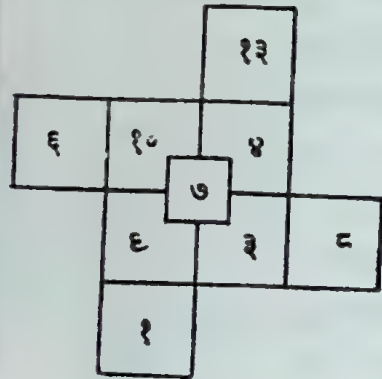
मनोरथ दाता बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को लौहे के पत्र पर अंकित करवाले और उसका निम्न



धूप, गंध, दीप आदि पूजन करते रहें लौहे के में भरने के लिए अष्टगंध द्वारा भोजन पर भी लिखा जा सकता है।
यन्त्र निर्माणोक्तान्त उसका निम्न पूजन करते रहेंगे अथवा धारण किए रहेंगे तो साधक के सभी मनोरथों की पूर्ति होती है। यह वही प्रभावकारी यन्त्र है।

महा०

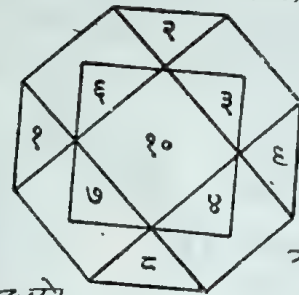
धनदाता बीसा यन्त्र - नीचे उद्वर्णित बीसा यन्त्र को दीपावली बीराजि में अष्टगंध द्वारा भोजन पर लावन कर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यथा विधि पूजन करें



नया भगवती लक्ष्मी के किरीटी में नका गुरुवार जाप करें तो लाभक

को धन का लाभ होता है। इसे सिंदूर द्वारा या अथवा दूध का बीजांजलि भी लावन जा सकता है।

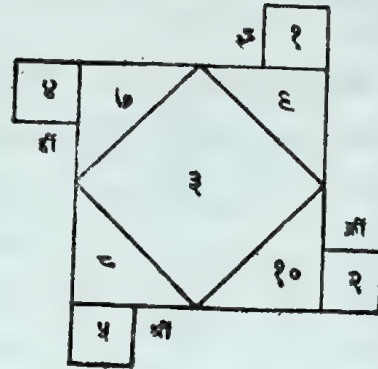
विद्या-प्रदायक बीसा यन्त्र - नीचे उद्वर्णित बीसा यन्त्र को हल्दी अथवा कैसा का सफेद कागज अथवा गोपत्र के ऊपर लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करें। यन्त्र का पूजा करते समय सरस्वती के चित्र अथवा धूर्ति यन्त्र के रखना पूजन का समय भगवती साधना



पूजा करने की कामना करनी चाहिए। ४१ दिनों तक गोत्र निषमिन् रूप से उका उजोग करते रहने पर विद्या का उत्तम लाभ मिलता है।

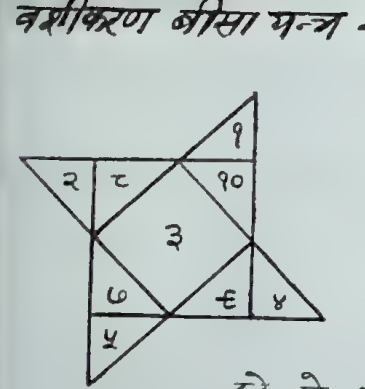
उक्त यन्त्र का पूजा करने के बाद भगवती साधना

सम्मानदाता बीसा यन्त्र - नीचे उद्वर्णित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन के ऊपर चमेली की लकड़ी की कालस के लिये नया धूप दीप



पुष्प आदि देने के बाद इसे नवीज में गा

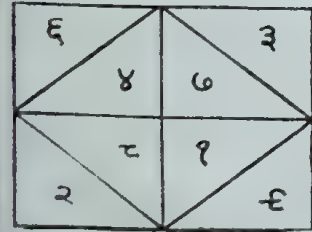
का अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करते नया नित्य धूप देना रहे तो साधक जहाँ भी जा रहे वही उसे सम्मान प्राप्त होता है।



वशीकरण बीसा यन्त्र - बाईं ओर उदगिति बीसा यन्त्र को भोजयन्त्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा चमेली की कलम से लिखकर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजन करो। फिर यन्त्र को तिलोह के ताबीज में भर कर कण्ठ या भुजा में धारण

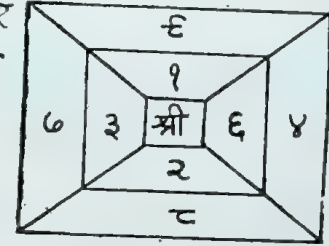
करो तो साधक-ज्योति 21 दिन के भीतर वशीभूत होकर समीप चला आता है।

शत्रु-नाशक बीसा यन्त्र -

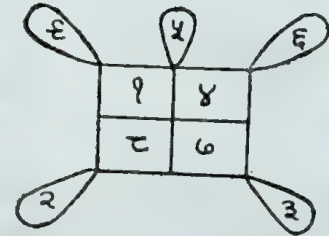


नीचे बाईं ओर उदगिति बीसा यन्त्र को कोरे की पंख की कलम से, धतूरे के रस द्वारा बहेड़े के पत्ते पर लिख कर गूगल की धूप दे, घृषवी के भीत (गड्ढा) खोद कर गाढ़े दे तो शत्रु का नाश होता है।

चिन्ताहरण बीसा यन्त्र - नीचे उदगिति बीसा यन्त्र को भोजयन्त्र के ऊपर केसर, कटहूरी, मोरोचन तथा कपूर के मिस्रण द्वारा लिखकर 21 दिनों तक निप जात। काह गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर गणेश जी का ध्यान धरता रहे तथा 22 वें दिन यन्त्र को किसी नदी में धुवाहित कर दे तो सब प्रकार की चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।

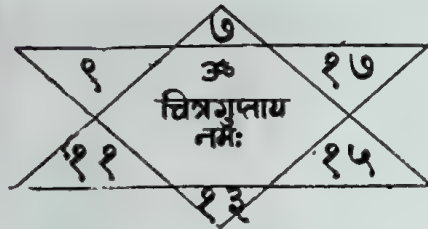


विजय प्रदाता बीसा यन्त्र - नीचे उदगिति बीसा यन्त्र को केसर-कटहूरी द्वारा भोज यन्त्र के दुकड़े पर लिखकर उसे ताबीज में भर कर धूप दे। फिर ताबीज को अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण कर न्यायालय आदि में जाए तो विजय प्राप्त हो।



चित्रगुप्त यन्त्र-

चित्रगुप्तजी यमराज के मुख्य दरबारी हैं। वे विश्व-कुहाड़ के सभी जीवों द्वारा किए गए अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं। उनके लिखे-जोखे के आधार पर ही यमराज मृत्यु के बाद प्राणी को, उसके लिए उचित दण्ड अथवा शुभफल का निर्धारण करते हैं। अतः चित्रगुप्तजी का विशेष महत्व है।



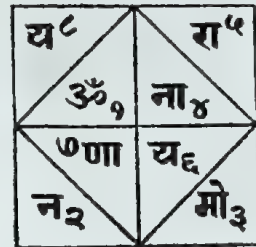
बाईं ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखकर धूप-बिंदु प्रज्ज्वल करके, धूप दे तब अपनी दाईं भुजा परात कण में धारण करते हैं। चित्रगुप्तजी की कृपा प्राप्त होती है। तब यमराज की कृपा के अनेक प्रकार के निन्दन हो जाते हैं। इस यंत्र का प्रयोग करने से राज-धन्य एवं गरव-साहिब का प्राप्ति होती है।

व्यंकटेश यन्त्र-

भगवान् व्यंकटेश श्रीविष्णु के ही प्रतिरूप हैं। दक्षिण भारत में इनकी पूजा-उपासना विशेष रूप से प्रचलित है।

दाईं ओर प्रदर्शित श्रीव्यंकटेश यंत्र को किसी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिख कर 21 दिनों तक निम्न प्रातःकाल गंध, अक्षत, धूप, धूप, दीप आदि से पूजा कर "ॐ नमो नागय-णाय" इस मन्त्र का प्रमाण पाठ

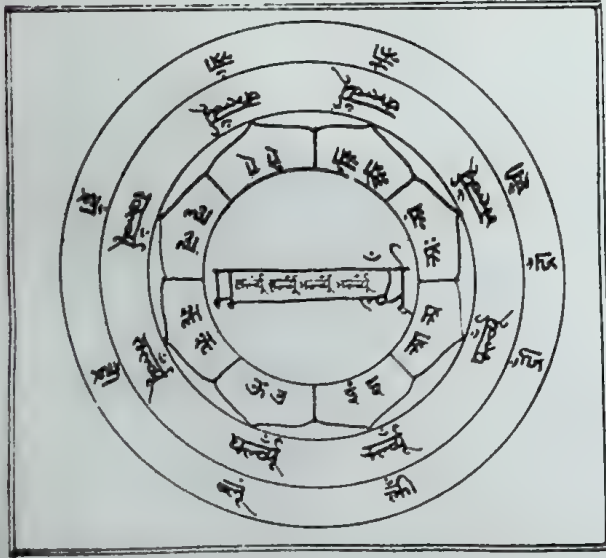
श्री.व्यंकटेश यंत्र



कृता रहे तो समस्त पाप नष्ट होते हैं तथा सत्यक की समाप्ति माने कामगोएं पूर्ण होती हैं।

21 दिन तक पूजा करने के बाद बाईं हाथ में यह यंत्र को निचोड़ के नाभिय में भर कर अपनी दाईं भुजा अथवा कण में धारण कर लेना चाहिए। इससे सब संकटों से सर्वत्र सुरक्षा मिली रहती है।

ज्वालामालिनी यन्त्र - नीचे उदाहरण यन्त्र
भगवती ज्वालामालिनी का है। इसे पाण्डितासुख पर
अंकित काले अथवा अष्टमंगसे भोजयन्त्र पर लिखले।



कि। देवी के मंत्र
का १०८ जाल की
संख्या में लपके।
मन्त्र इस प्रकार है -
" ॐ नमो भगवते
ज्वालामालिनी
देवि सर्वभूत
संसारकारिके जगत्
वेदसि ज्वालान्ति
पुष्पाङ्गति ज्वाल
ज्वाल ज्वाल
हुं रं रं हुं कट ॥ "

मन्त्र पढ़ लेने पर देवी जल्दी काम करे प्रार्थना करनी है।

शतचण्डी यन्त्र - नीचे उदाहरण शतचण्डी यन्त्र
को भोजयन्त्र के ऊपर गालचंदन से लिखे जायवा ता।
यन्त्र पर खुदवाले।

इस यन्त्र का
विशेष पूर्वक
चुलन करके
'दुर्गा सप्तशती'
का निम्न एक
बार, १५ नौदुर्गा
के दिनो में प्रब
पाठ करने से
सब सकल से
दुःखकारा मिताह
ताया सभी काम
नारों प्रक होती
है।

शतचण्डी का व्यालीस का सिद्धि यन्त्र

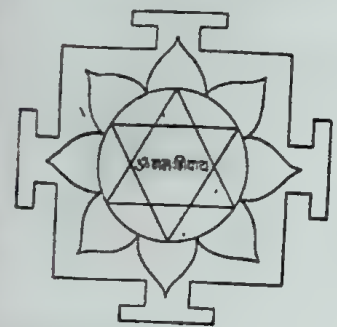
४	१४	९	१५
७	१७	६	१२
१३	३	१६	१०
१८	८	११	५

यन्त्र
महा

शिव पंचाक्षरी यन्त्र-

नीचे उदाहरण यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन पर लिखें अथवा नाम यन्त्र पर अंकित करा कर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजा करें। तदुपरांत शिव के पंचाक्षरी

शिवपंचाक्षरी यंत्रम्।



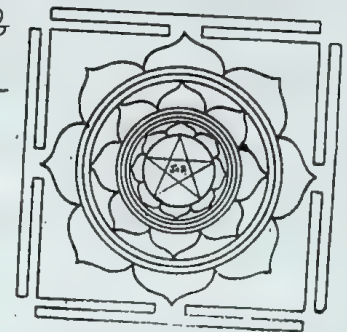
मन्त्र- " ॐ नमः शिवाय " का एक लाघ से पाँच लाघ तक की संख्या से, सामर्थ्यानुसार जाप करें। जाप के अन्त में दशांश होम बेल की समिधाओं से करें तथा होम का दशांश नर्वण, नर्वण का दशांश मार्जित गुवं मार्जित का दशांश ग्राहण भोजन करायें।

कि। २१ सोमवारों तक शिवजी का पुन रावे सन खेलपन चपोंत दुप लिङ्ग- पूजन करते रहें। एह उपोवास से शिव जी उज्जल होकर साधक की समस्त मनो कामनाओं को पूरा करते हैं तथा सभी निकटों से रक्षा करते हैं।

महामृत्युंजय यन्त्र-

नीचे उदाहरण यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजन के अर्प लिखे अथवा नाम यन्त्र पर अंकित कराते। कि। यन्त्र का गंध, पुष्पादि से पूजन का महामृत्युंजय मन्त्र का १ लाख की संख्या में जाप करें। जाप का मन्त्र निम्नादि है

महामृत्युंजय यंत्रम्।

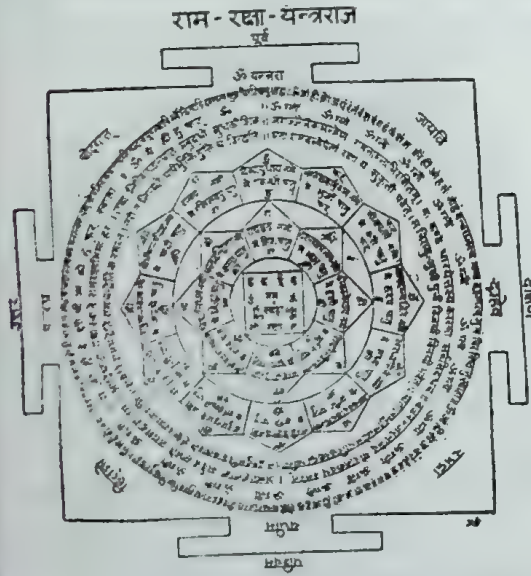


" ॐ ह्रीं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वरं तस्मै उर्वारकमिव अन्नमाप्नु- त्ते भूर्भुवः स्वः शं जूं सः ह्रीं ॐ । "

जाप का दशांश होम बेल फल, तिल, खीर, घी, दूध, दही, दूर्वा, बट की समिधा, पलाश की समिधा ११११ खेर की समिधा को घी, शाल तथा शवक में डुबाकर को। इस उपवास से अकाल मृत्यु का संकट दूर हो जाता है तथा साधक दीर्घायु प्राप्त करता है।

महा

रामरक्षा यन्त्र- नीचे उद्दिष्टि यन्त्र को अष्टांग
से भोजन पर लिखे अथवा रामयन्त्र पर अंकित कालों



यन्त्र के तत्पर हो
जोने पर - "ॐ रामाय
नमः" - इस मन्त्र

मन्त्र का तीव्र तारक
की संख्या में जप
करें। जप के पूरा
हो जाने पर दशांश
होम तथा उसका
दशांश कुंभशर्पण
मार्जन एवं ब्राह्मण-
भोजन करावें। इस

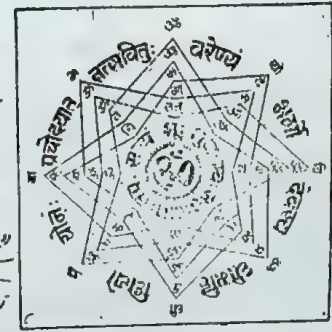
प्रकार मन्त्र सिद्ध होगा

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक को समस्त मनो कामनाएं पूरी
होती हैं। यन्त्र के मध्य भाग के साधक का नाम लिखें।

गायत्री यन्त्र- गायत्री को 'महामन्त्र' कहा गया

है। यह मोक्षदायक, आत्मोन्नतिकर्ता एवं सब प्रकार
की सम्पत्तियों को देने वाला है। नीचे उद्दिष्टि गायत्री
यन्त्र को अष्टांग द्वारा भोजन पर लिखें, ताकीप
में भरे तथा उसे कंठ अथवा मुखा में धारण करें।
धारण करने से पूर्व यन्त्र का

गायत्री यन्त्रम्

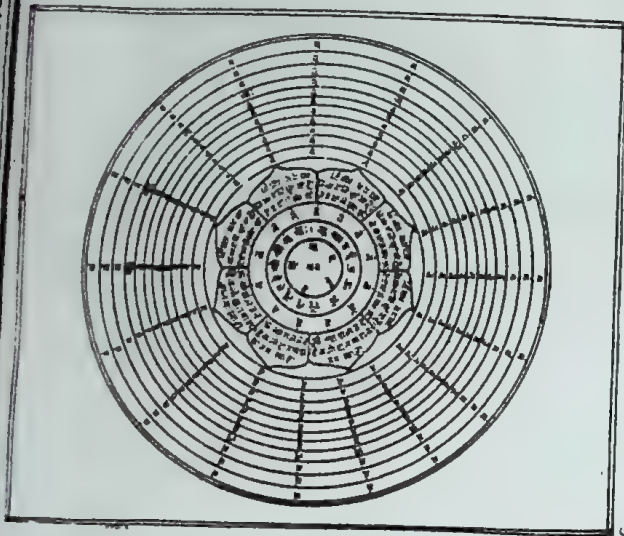


विधिपूर्वक पूजन करने का
चाहिए। फिर निम्न अपनी साम-
र्थ्य के अनुसार - "ॐ भू-भुविः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धियो यो नः प्रचोदयात्" -
इस गायत्री मन्त्र का एकत्रिंशत्

संख्या में जप करने रहना चाहिए। इस यन्त्र का दस
लाख की संख्या में जप पूरा हो जाने पर दशांश होम
करना चाहिए। जिसका अधिक जप किया जाए, (यन्त्र
ही अधिक उत्तम होगा) समस्त कामनाएं पूर्ण होंगी।

ग्रह-रक्षाकर, पुत्रदायक यन्त्र- नीचे उद्दिष्टि चक्र
को अष्टगंध अथवा केसर-कहलूरी द्वारा भोजयन्त्रको
ऊपर लिखकर, गंध, दुग्ध, धूप, दीप आदि से पूजा करे

॥ हर रत्नक पुत्र दायक यंत्र ॥



न दुपरात त्रिलोच
के ताबीज में भर
कर अपने कंठ
अथवा भुजा में
धारण करे। हिमो
को बाँई भुजा में
धारण करना चाहिए।
यन्त्र को उद्दिष्टि
प्रातः काल धूप देते
रहे। इसके प्रभाव से
दुष्ट ग्रहों से रक्षा होती
है तथा वध्या-स्त्री
को पुत्र लाभ होता है। निःसन्तान पति-पत्नी दोनों ही इसे धारण करें।

१८० का यन्त्र- नीचे उद्दिष्टि १८० का यन्त्र
अथवा प्रभावकारी बताया गया है। इसकी उपयोग
विधि यह है-

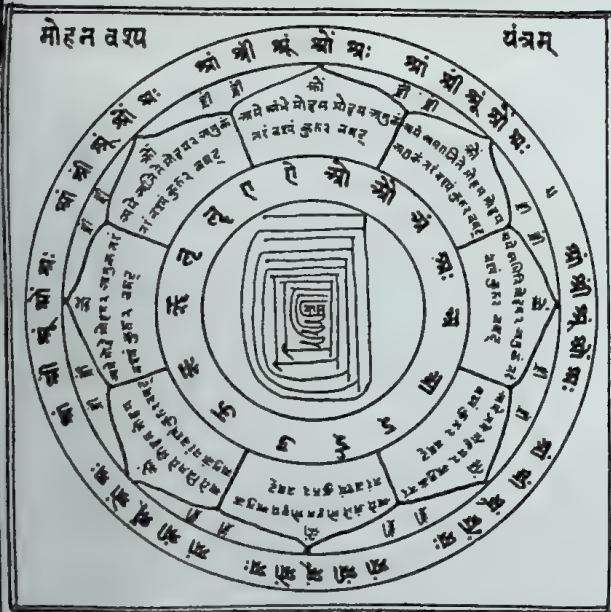
भोजयन्त्र के ऊपर

महा प्रभाविक शतरिंशय यंत्र

अष्टगंध अथवा
(गोल-चंदन) द्वारा
बाँई ओर उद्दिष्टि
यन्त्र लिखकर,
उसका विधि पूर्वक
पूजा करे तथा
धूप देकर, नाँव के
ताबीज में भरकर
कंठ अथवा भुजा में
धारण करे तो
स्वास्थ्य अपने मन
में जो भी इच्छा करता है, उसकी पूर्ति होती है।

२५ ह	५० र	सि	१५ हुं	५० हः
२० स	४५ र	प	३० सुं	७५ सः
सि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ल	३५ र	स्वा	६० हुं	५ हः
५५ स	१० र	हा	६५ सुं	४० सः

मोहन-वशीकरण यन्त्र- नीचे उद्विहित यन्त्र को



अष्टगंध द्वारा चमेली की कलम से भौजयंत्र के ऊपर किसी शुभपुर्न में लिखें। यन्त्र के मध्यभाग में साधक-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

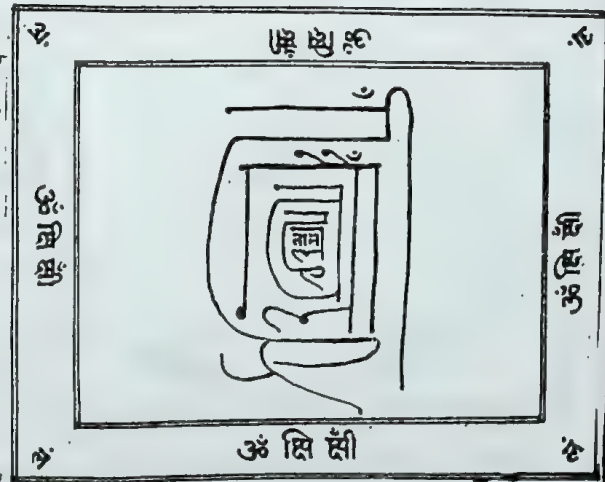
लेक्नोपरान्त यन्त्र का पूजन कर, धूप दे, तानीय में भरकर अपनी भुजा

अथवा कर ४ में धारण करें। यन्त्र में जहाँ-जहाँ 'अं कुं' शब्द है, वहीं साधक-व्यक्ति का नाम लिखें तो २१ दिन में उसका वशीकरण होता है।

गति, जिह्वा एवं क्रोध स्तम्भन यन्त्र- नीचे उद्विहित

यन्त्र को मंगल अथवा रविवार के दिन छत, कात, लालचंदन द्वारा अनार की कलम से भौजयंत्र पर लिखकर गंध-पुष्प आदि से पूजा कर गूगल की धूप दे। यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'नाम' लिखा है, वहाँ साधक-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

॥ गति जिह्वा और क्रोध स्तम्भन यंत्र ॥



लेक्नोपरान्त यन्त्र को धूप दे के बगल में गढ़ा खोद का गाढ़ दे।

साधक-व्यक्ति की गति, जिह्वा (कांठी) एवं क्रोध का स्तम्भन होता है और वह साधक के अनुकूल बन जाता है।

यन्त्र
२५

योगिनी-स्थापन यन्त्र- चिह्नित मांगलिक कार्यों के समस्त योगिनीयों की स्थापना की जाती है। योगि-
निर्णयों कुल ६४ हैं। इनके नामों को 'नन्त' ग्रंथों के
अनुष्ठान से जाना जा सकता है।

६४ योगिनीयों की स्थापना का यन्त्र

१	२	६२	६१	६०	५९	७	८
९	१०	५४	५३	५२	५१	१५	१६
४८	४७	१९	२०	२१	२२	४२	४१
४०	३९	२७	२८	२९	३०	३४	३३
३२	३१	३५	३६	३७	३८	२६	२५
२४	२३	४३	४४	४५	४६	१८	१७
४९	५०	१४	१३	१२	११	५५	५६
५७	५८	६	५	४	३	६३	६४

बाँई ओर उद्विग्न
चक्र में यह बताया गया
है कि किस स्थान पर
किस कुम-संख्या वाली
योगिनी को स्थापित करना
चाहिए।

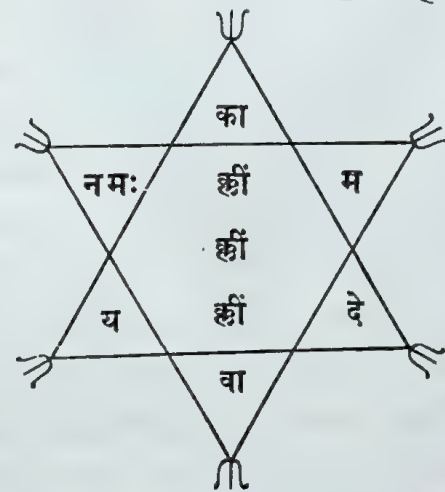
योगिनीयों की कुम-संख्या
का ज्ञान भी उनके नामों
के कुम के आधार पर
ज्ञात किया जा सकता है।

यह विषय विस्तृत रूप से दुःख है, आगे बढ़ते समय संक्षेप
में उल्लेख मात्र किया जाएगा।

कामदेव यन्त्र- नीचे उद्विग्न यन्त्र को चमेली
की कलम द्वारा अष्टगंध से मोलपत्र के ऊपर लिखें।
यन्त्र-लेखन का कार्य यदि पूर्णता की दृष्टि से किया
जाय तो अत्युत्तम रहेगा, अथवा आवश्यकानुसार
किसी भी शुभालोक में
किया जा सकता है।

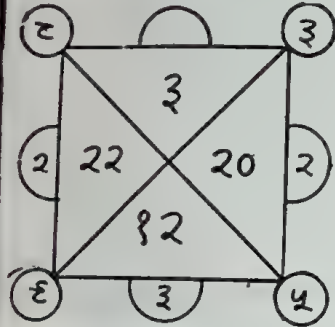
यन्त्र को लिखने के
बाद गंध, पुष्पादि से
शुद्ध कर धूप देकर
उत्सेजित हो के प्राचीनमें
भर कर अपने कंठ अथवा
बाँई भुजा में धारण कर
"तमः कामदेवाय" इति
मन्त्र का १० हजार की

संख्या में जाप कर, कशांश होम कर तो कामदेव की शक्ति
जो प्राप्त होती है तथा प्रियजन से मिलन होता है।



महा

परमानन्द-प्रदाता यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केसर-कस्तूरी द्वारा भोजयन्त्र के १० हजार टुकड़ों पर अलग-अलग लिखे तथा प्रत्येक यन्त्र को लोचनोपासना पूजन का धूप दे। प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में यन्त्र लिखने का नियम बना ले तथा प्रतिदिन लिखने यन्त्र लिखने, उन सबको पूजन करने के बाद किसी नदी

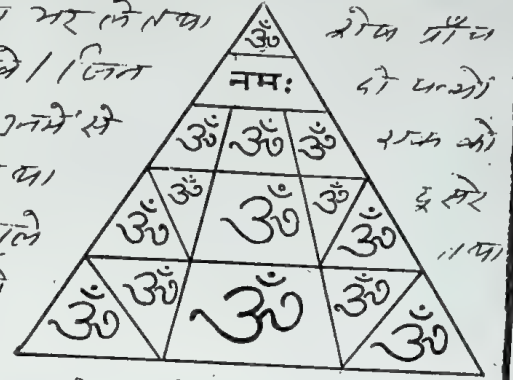


अथवा जलाशय में प्रवाहित कर दिया करे।

अन्तिम दिन के आखिरी लिखे यन्त्रको पूजन करने के बाद तालीय में भरकर अपनी भुजा या कंठ में धारण कर ले तो आजीवन परमानन्द की प्राप्ति होती है।

भव-भय-मोचक यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्रको भोजयन्त्र के सात टुकड़ों पर अलग-अलग अष्टगंध से लिखे तथा लेखनोपरान्त सभी यन्त्रों का धूप, धूप, दीप, गंध आदि से विधिपूर्वक पूजन करे तदुपरान्त उनमें से दो यन्त्रों को त्रिलोह के दो ताली-जों में अलग-अलग भर ले तथा

यन्त्रों को अलग रखे। जिन तालीयों में भरा हो, उनमें से अपनी दाईं भुजा में तथा कंठ में धारण कर ले शीघ्र पाँचों यन्त्रों को नदी के जल में प्रवाहित करे तो सांसारिक-भय से मुक्ति मिल जाती है।

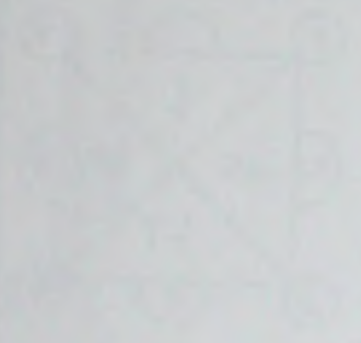


॥ इति श्री विष्णुविरचित, देवह-चरितस्य आदि अनेकैक उपाधिनिर्दिष्ट सहस्राधिक गुंथ प्रणेता आचार्य पं. राजेश दीक्षित सम्पादिते मन्त्रमहर्षि वै पंचम स्कण्डः ॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

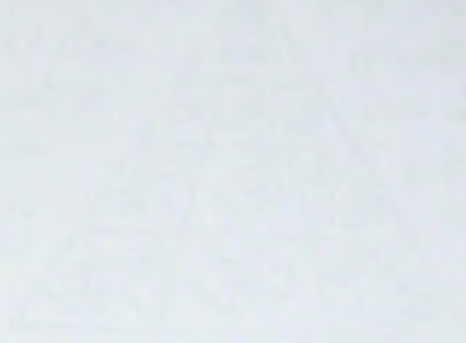




Handwritten text at the top of the page, likely a title or introductory paragraph, which is mostly illegible due to fading.



Handwritten text in the middle section of the page, continuing the narrative or providing details related to the diagram.



Handwritten text at the bottom of the page, likely a conclusion or a final note.

